देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
August 2023
Vol.-18, Issue-2(1)

Impact Factor
7.523

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

In Collaboration with

प्रधान सम्पादक :
डॉ. सिस्टर मर्सी पी.

विशेषांक सम्पादक :
डॉ. सीहेच. वी. महालक्ष्मी

विशेषांक सह-सम्पादक :
डॉ. पायल लिल्हारे

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 18 **ISSUE-2(1)** **(अगस्त 2023)** **ISSN : 2395-7115**

प्रेरणा :
चौ. एम. सिहाग

विशेषांक सम्पादक :
डॉ. सीहेच.वी.मालक्ष्मी

विशेषांक सह-सम्पादक :
डॉ. पायल लिल्हारे

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट
एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल-एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
डी.लिट् (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल
विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं शोध निर्देशक
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर-335001 (राज.)

प्रकाशक :
गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.bohalsm.blogspot.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

Disclaimer :

1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

बोहल शोध मंजूषा परिवार*

मानद संरक्षक

प्रो. राधेमोहन राय
पूर्व उप प्राचार्य,
राजकीय स्नातकोत्तर महा.,
अलवर, राजस्थान।

डॉ. राजेन्द्र गोदारा
परीक्षा नियंत्रक,
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

डॉ. विनोद तनेजा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गुरूनानक वि.वि. अमृतसर
पंजाब।

सम्पादक मण्डल

सह सम्पादिका :
डॉ. रेखा सोनी
उप प्राचार्या, शिक्षा विभाग
टाटिया वि.वि. श्रीगंगानगर।

सह सम्पादिका :
डॉ. सुशीला आर्या
हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल
विश्वविद्यालय, भिवानी।

प्रबंध सम्पादक :
समुन्द्र सिंह
भिवानी, हरियाणा।

विधि विशेषज्ञ

डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट
जिला न्यायालय
भिवानी, हरियाणा।

अजीत सिहाग, एडवोकेट
पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट,
चंडीगढ़।

चरणवीर सिंह, एडवोकेट
जिला न्यायालय
पटियाला, पंजाब।

विषय विशेषज्ञ/परामर्शदात्री/शोधपत्र निरीक्षण समिति

माई मनीषा महंत
किन्नर अधिकार ट्रस्ट
भूना, जिला कैथल, हरियाणा

डॉ. विश्वबंधु शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बाबा मस्तनाथ वि.वि. रोहतक

डॉ. संजय एल. मादार
विभागाध्यक्ष, पी.जी. केन्द्र
द.भा.हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद।

डॉ. गीता दहिया, प्राचार्या,
नैशनल टीटी कॉलेज फॉर गर्ल्स
अलवर, राजस्थान

डॉ. विनोद कुमार
हिन्दी विभाग, लवली प्रोफेशनल
यूनिवर्सिटी, पंजाब

डॉ. मो. रियाज़ खान
बीएमएस वूमैन कॉलेज आटोनोमेस
बेगलूरू

डॉ. वनिता कुमारी
च. दादरी (हरियाणा)

श्री सहदेव समर्पित
सम्पादक, शान्तिधर्मी, जीन्द

डॉ. अंजली उपाध्याय
उत्तर प्रदेश

डॉ. लता एस. पाटिल
राजीव गांधी बीएड कालेज
धारवाड़, कर्नाटक

प्रो. अमनप्रीत कौर
गुरू तेग बहादुर खालसा कॉलेज
फॉर वूमैन, दसूहा, पंजाब

डॉ. वर्षा रानी
संस्कृत विभाग, डॉ. भीमराम
अम्बेडकर, वि.वि., आगरा

प्रो. कमलेश चौधरी
राजकीय रणबीर महाविद्यालय
संगरूर, पंजाब

डॉ. किरण गिल
दीनदयाल टी.टी. महाविद्यालय
बारी, जिला सीकर, राज.

डॉ. सविता घुड़केवार
पीजी विभाग, दक्षिण भारत
हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

डॉ. परमजीत कौर
बरेली कॉलेज बरेली,
उत्तर प्रदेश।

डॉ. राजकुमारी शर्मा
नेपाल

डॉ. श्रीविद्या एन.टी.
श्री शंकराचार्य संस्कृत वि.वि.
केरल।

डॉ. बी. संतोषी कुमारी
पी.जी.विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी
प्रचार सभा, मद्रास

श्री राकेश ग्रेवाल
सन जॉस,
कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

डॉ. पंडित बन्ने
भारत महाविद्यालय,
सोलापुर (महाराष्ट्र)

डॉ. पायल लिल्हारे
अमरशहीद चंद्रेशेखर आजाद
शा.स्ना.महा. निवाड़ी, मध्यप्रदेश

श्री राकेश शंकर भारती
यूक्रेन।

डॉ. उमा सैनी
आई.ए.एस.ई. विश्वविद्यालय
सरदारशहर, राजस्थान

डॉ. मनमीत कौर
राधा गोविन्द वि.वि.,
रामगढ़, झारखण्ड।

डॉ. रीना उन्नीयाल तिवारी
शिक्षा संकाय, डी.ए.वी. पीजी
कालेज, देहरादून

डॉ. सुरजीत सिंह कस्वां
डीन फिजिकल एजुकेशन
टांटिया वि.वि., श्रीगंगानगर,

डॉ. शबाना हबीब
त्रिवन्तपुरम, केरल

डॉ. शिवकरण निमल
राजस्थान

डॉ. राधाकृष्णन गणेशन
वाराणसी

डॉ. मानसिंह दहिया
हरियाणा

डॉ. नीलम आर्या
उत्तर प्रदेश

डॉ. रवि सुण्डयाल
जम्मू कश्मीर

प्रो. नरेन्द्र सोनी
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. रोहतास
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. सत्यबीर कालोहिया
पूर्व प्राचार्य, कैलिफोर्निया।

डॉ. इस्पाक अली
प्राचार्य, लाल बहादुर शास्त्री
शिक्षा महाविद्यालय, बेंगलूरू

प्रो. रेखा रानी
गवर्नमेंट कॉलेज
संगरूर, पंजाब

डॉ. के.के. मल्हौत्रा
पूर्व विभागाध्यक्ष
गवर्नमेंट कॉलेज, गुरदासपुर

डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा
शासकीय महाविद्यालय,
लवकुश नगर, मध्य प्रदेश

डॉ. परमानन्द त्रिपाठी
एचओडी एजुकेशन, एल.एन.डी.
कालेज, मोतिहारी, बिहार

डॉ. करमजीत कौर
प्राचार्या, दशमेश गर्ल्स कॉलेज
चक आला, मुकेरिया, पंजाब

*सम्पूर्ण बोहल शोध मञ्जूषा परिवार/सम्पादक मण्डल अवैतनिक है।

शोध-पत्र प्रकाशन के लिए निर्देश मंजूषा

गुगनराम सोसायटी (पंजीकृत) द्वारा शोधार्थियों व अध्येताओं के शोध/अनुसंधान की गतिविधियों को प्रोत्साहित करने हेतू बोहल शोध मंजूषा ISSN 2395-7115 नामक बहुभाषिक अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। कला, संस्कृति, विज्ञान, वाणिज्य, मानविकी, प्रबंध, प्रौद्योगिकी, विधि, भूगोल, शिक्षा, पत्रकारिता पर केन्द्रीत इस शोध पत्रिका को विषय विशेषज्ञों तथा मनीषी विद्वानों की सक्रिय सहभागिता प्राप्त है। पत्रिका का वार्षिक शुल्क 1100 रु. है।

आप अपना शोध पत्र कम्प्यूटर से मुद्रित फोन्ट साईज 14, कृतिदेव-10, कृतिदेव-21 में व अंग्रेजी के Arial, Times New Roman में पेज मेकर या माइक्रोसोफ्ट वर्ल्ड में हमारी Email ID : grsbohal@gmail.com पर भेजें। शोध पत्र प्रेषित करने से पूर्व दिये गये सन्दर्भ, मात्रा आदि की पूर्णतया जाँच कर लें।

नोट :- उर्दू, पंजाबी आदि भाषा के शोध पत्र पेपर साईज 7x9.5 पर टाईप कराकर JPG या PDF फाईल हमारी ईमेल आई.डी. पर भेज सकते हैं।

हमारी पत्रिका में शोध पत्र लेखक के फोटो सहित प्रकाशित किये जाते हैं। इसलिए आप अपने शोध पत्र के साथ पासपोर्ट साईज फोटोग्राफ, सम्पर्क सूत्र : टेलीफोन, मोबाईल नं., ई-मेल तथा पिनकोड सहित पत्र व्यवहार का पूरा पता (हिन्दी व अंग्रेजी) कम्प्यूटर द्वारा टाईप करवाकर भेजें।

★ शोध पत्र 2000-2500 शब्दों (4-6 पेज) से अधिक नहीं होनी चाहिए, यदि शब्द सीमा अधिक होती है तो सम्पादक को अधिकार होगा यथा स्थान संक्षिप्तीकरण कर दें। अस्वीकृत शोध पत्र की वापसी संभव नहीं है।

★ पत्रिका में प्रकाशित श्रेष्ठ शोध पत्र को हमारी सोसायटी/पत्रिका की ओर से बहुउपयोगी श्रीमती गिना देवी शोधश्री सम्मान प्रदान किया जायेगा।

★ शोध पत्र में व्यक्त विचार लेखकों के स्वयं के विचार हैं। उनसे सम्पादक, प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है। शोध पत्र में प्रयुक्त किए गए तथ्यों के प्रति संबंधित लेखक उत्तरदायी होगा। पत्रिका में शोध आलेख प्रकाशन के लिए भेजने से पहले सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करना लेखक का दायित्व है। प्रत्येक विवाद का न्यायक्षेत्र भिवानी (हरियाणा) होगा।

★ सम्पादकीय पद अव्यावसायिक और अवैतनिक हैं। पत्रिका में केवल शोध पत्र ही प्रकाशनार्थ भेजें। शोध पत्र का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय व प्रकाशित समस्त शोध पत्रों का सर्वाधिकार समिति/सम्पादक के पास सुरक्षित होगा।

नोट :

सहयोग/सदस्यता राशि 1100/- रू. का ड्राफ्ट/चैक/आई.पी.ओ. 'गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी' के नाम भेजें तथा ऑनलाईन बैंक में सहयोग जमा राशि की रसीद की फोटोप्रति अपने आलेख के साथ हमें मेल कर सूचित करने का कष्ट करें ताकि समय पर रसीद भेजी जा सके। ऑनलाईन सहयोग राशि के साथ 50/- रू. अतिरिक्त अवश्य जमा करवायें। प्रकाशन सहयोग शुल्क वापिस देय नहीं।

बैंक का नाम	:	पंजाब नैशनल बैंक, हालु बाजार, भिवानी (हरियाणा)
खाता धारक का नाम	:	गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी
बैंक खाता संख्या	:	1182000109078119
IFSC Code	:	PUNB0118200
MICR CODE	:	127024003

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

9 772395 711007

ISSN : 2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Publisher : Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Table 2

Methodology for University and College Teachers for calculating Academic/Research Score

(Assessment must be based on evidence produced by the teacher such as: copy of publications, project sanction letter, utilization and completion certificates issued by the University and acknowledgements for patent filing and approval letters, students' Ph.D. award letter, etc,.)

S.N.	Academic/Research Activity	Faculty of Sciences /Engineering / Agriculture / Medical /Veterinary Sciences	Faculty of Languages / Humanities / Arts / Social Sciences / Library /Education / Physical Education / Commerce / Management & other related disciplines
1.	**Research Papers in Peer-Reviewed or UGC listed Journals**	08 per paper	10 per paper
2.	**Publications (other than Research papers)**		
	(a) Books authored which are published by ;		
	International publishers	12	12
	National Publishers	10	10
	Chapter in Edited Book	05	05
	Editor of Book by International Publisher	10	10
	Editor of Book by National Publisher	08	08
	(b) Translation works in Indian and Foreign Languages by qualified faculties		
	Chapter or Research paper	03	03
	Book	08	08
3.	**Creation of ICT mediated Teaching Learning pedagogy and content and development of new and innovative courses and curricula**		
	(a) Development of Innovative pedagogy	05	05
	(b) Design of new curricula and courses	02 per curricula/course	02 per curricula/course

अगस्त 2023

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. सीहेच. वी. महालक्ष्मी	10–10
	सम्पादकीय	पायल लिल्हारे	11–11
2.	Message from Correspondent...	Mother Ernestine Fernandes	12-12
3.	Message from the Principal.....	Dr. Sr. Mercy. P	13-13
4.	*Message from the Vice - Principal.....*	Sr.MariaChristia.L	14-15
5.	*Message*	Dr. R. Madhavi	16-16
6.	प्रवासी कविता में महिला लेखन का परिदृश्य	Dr. Seena Kurian	17-21
7.	तेजेंद्र शर्मा की कहानियों के विषयों का बहुरंगी वितान	पीयूष कुमार दुबे	22–27
8.	तेजेंद्र शर्मा की कहानियों में प्रवासी जीवन	रेखा कुमारी	28–33
9.	अर्चना पैन्यूल की कहानी 'हैप्पी बर्थडे गोल्डन होम' में प्रवासी वृद्ध	जाधव नीता बाबू	34–36
10.	प्रवासी साहित्य : अवधारणा और स्वरूप	डॉ. ललिता कुमारी	37–41
11.	राहुल सांकृत्यायन का यात्रा साहित्य	प्रो. अनिल अर्जुन अहिवले	42–44
12.	प्रवासी हिन्दी साहित्य	डॉ. इन्दुबालाबेन हरिसिंहगढ़वी	45–47
13.	प्रवासी हिंदी साहित्य में मानवीय संवेदना भूमंडलीकरण और समकालीन हिंदी यात्रा साहित्य (यात्रा–जापान की – ममता कालिया के संदर्भ में)	प्रा. डॉ. बळवंत बी. एस	48–50
14.	प्रवासी साहित्य में भारतीय संस्कृति	डॉ. ज्योति पटेल	51–54
15.	सुषम बेदी के कथा साहित्य में प्रवासी भारतीय नारी	डॉ. आलपाटि भानु प्रसाद	55–57
16.	हिन्दी प्रवासी साहित्य और डॉ. कमल किशोर गोयनका	कमलेश कुमार मेहरा	58–63
17.	प्रवासी हिंदी कहानियों में सांस्कृतिक संवेदना	डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी	64–66
18.	प्रवासी साहित्य : अवधारणा, स्वरूप एवं लेखन प्रक्रिया	डॉ. पटेल माजिद भिकन	67–70
19.	प्रवासी साहित्य और जय वर्मा की साहित्यिक दृष्टि	कु. मिथलेश स्नेही	71–75

20.	वैश्विक परिदृश्य में प्रवासी हिंदी साहित्य	सविता शं. कोल्हे, प्रो. डॉ. अनिता नेरे	76–80
21.	प्रवासी हिंदी साहित्य में स्त्री संवेदना	एम. सुब्रमण्यम	81–83
22.	तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों का विषय वैविध्य और 'ग्रीन कार्ड'	डॉ. रूचिरा ढींगरा	84–87
23.	ప్రవాసాంధ్ర కవితా సాహితీ - ఒక పరిశీలన	పేరు : నెమళ్ళూరి భవాని	88–90
24.	'అమెరికా వంటింటి పద్యాలు'- సత్యం మందపాటి వారి చలోక్తులు	డా.కొలిపాక అరుణ	91–96
25.	**Cultural duality as a Major Vagary in the Indian Diaspora – Reflections from the Select novels of Shobhan Bantwal**	**M.K. Padma Lata, Prof S. Prasanna Sree**	**97-101**
26.	विदेशों में हिन्दी साहित्य सृजन	कविता अहिगारे	102–107
27.	विष्णुचित्तसूरेः 'भट्टनाथः' इत्यभिधानप्राप्तिवैभवम्	Dr. B. Keshavaprapanna Pandey	**108-109**
28.	प्रवासी साहित्य और उषा राजे सक्सेना	डॉ. प्रसेन जीत सागर	110–113
29.	सुषम बेदी के उपन्यासों में सांस्कृतिक संवेदना	शीला	114–118
30.	प्रवासी कथा साहित्य में विविध पक्षों पर स्त्री चिंतन	पिंकी	119–121
31.	प्रवासी साहित्य के संदर्भ में मॉरीशस की कहानियों में संवेदना के नये स्वर	डॉ. सविता मसीह	122–125
32.	अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में चित्रित प्रवासी जीवन की समस्याएँ	अनुज कुमार चौहान	126–132
33.	**Anita Desai as Diasporic Writer with Reference to "Bye Bye Black Bird"**	**Sonia Priyadarshini. R**	**133-138**
34.	మాచిరాజు సావిత్రిగారి' అనుబంధం' కథ -పరిశీలన	**Y. Aruna Jhansi Rani**	**139-144**
35.	प्रवासी साहित्य सुषमा बेदी के उपन्यासों के विशेष संदर्भ में	**Smt. K.V. Shyamala Devi, Dr. R.N.V.S. Raja Rao**	**145-150**

विशेषांक सम्पादक की कलम से.....

सीहेच.एस.डी. सेट थेरेसा महिला महाविद्यालय महिला शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी संस्थान है। 1953 में इटली के सेंट एन आफ प्रविडेंस की मठ कन्याओं की अग्रणी संघ द्वारा मुटठीभर छात्राओं के साथ स्थापित संस्था है। जिस समय महिलाओं की शिक्षा को तिरस्कार की दृष्टि से देखा जाता था, उस समय औरतों की शिक्षा हेतु स्थापित संस्था है सेंट थेरेसा कालेज। आज यह कलाशाला शिक्षा के क्षेत्र में एक ट्रेंड. .. सेंटर के रूप में विकसित हुआ है, और उन छात्राओं के लिए एक प्रतिष्ठित गंतव्य बन गया है जो सफलता की सीढी चढने की इच्छा रखती है। 1987 में यूजीसी के द्वारा स्वयत्तता प्रदान किए जाने के बाद इस संस्था ने ईमानदारी से खुद को शिक्षार्थियों की गतिशील आवश्यकताओं के अनुरूप ढाल लिया है। 1998 से लगातार चार बार नाक द्वारा ए ग्रेड प्रदान किया जाना और 2006 में यूजीसी द्वारा सीपीई अनुदान आदि शिक्षा के प्रति संस्था के दूरदर्शी नेतृत्व और प्रतिबद्धता के मजबूत संकेत हैं। इस प्रकार सेंट थेरेसा कॉलेज का बीज 70 साल पहले इटली से भारत तक, यानी भारत के सुदूर हिस्से, एलूरू शहर में सिस्टर्स आफसेंट एन के संगठन के संस्थापकों द्वारा बोया गया था। इस प्रकार हमारे कॉलेज के संस्थापक प्रवासी थे जो 70 वर्ष पहले एक महान उद्देश्य को लिए इटली से भारत आए थे।

70 साल बाद ऐसे प्रवासों से स्थापित हमारी इस कलाशाला में आज प्रवासी साहित्य पर चर्चा की गयी। इसी संदर्भ में हमें यह घोषणा करते हुए गर्व हो रहा है कि इस वर्ष हम प्लाटिन मजूबिली मना रहे है। इसी प्लाटिन मजूबिली वर्ष में हमने पहला कार्यक्रम प्रवासी साहित्य पर सेमिनार किया। प्रवासी साहित्य एक स्थापित साहित्य है जिसे दरकिनार नहीं किया जा सकता है। प्रवासी साहित्यकारों की वजह से आज हिंदी अंतरर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना ली है।

प्रवासी साहित्य ने गत दो दशकों से अपनी विशिष्ट पहचान बना ली है। जिस तरह कोई भी साहित्य समाज की तस्वीर पेश करता है, उसी प्रकार प्रवासी साहित्य भी भारतीयों की मुश्किलों के अलावा उनके जीवन संघर्ष की गाथा प्रस्तुत करता है। नयी पीढी के लोग प्रवासी साहित्य के बारे में ज्यादा नही जानते हैं। संगोष्टी मे आए विविध पत्रों के द्वारा प्रवासी साहित्य का विस्तृत रूप प्रस्तुत हुई। मेरे उद्देश्य से प्रवासी साहित्य के विचार...विश्लेषण से यह कमी सफलता पूर्वक दूर हो गयी।

इस संदर्भ में मैं पहले अपने प्रधानाचार्या डॉ. सिस्टर मर्सी को अपना धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने मुझ पर विश्वास रख कर मुझे इस सेमिनार का कार्यभार सौंपा। मैं अपने उप प्रधानाचार्या सिस्टर मरिया क्रिस्टिया के प्रति अपना आभार व्यक्त करना चाहती हूँ जिन्होंने मुझे नैतिक बल देकर संगोष्ठी की व्यवस्था करने में अपना पूर्ण सहयोग दिया है। साथ ही गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसाइटी और गीना देवी शोध संस्थान के सचिव डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट जी और समस्त कार्यकारिणी का भी आभार व्यक्त करना चाहती हूँ जिनके सहयोग ने मुझे इस कार्य में धीरज संभाला। प्रवासी साहित्यकार श्री तेजेद्र शर्मा जी, श्री राकेश शंकर भारती, श्री दीपक पांडेय ने इस सेमिनार में भाग लेकर इसकी शोभा बढायी। उनके प्रति मैं आभारी हूँ जो विद्वज्जन, हमारे इस संगोष्ठी में भाग लेकर प्रपत्र समर्पण किया है, उसके फलस्वरूप यह पुस्तक निकली है।

धन्यवाद।

-डॉ. सीहेच. वी. महालक्ष्मी,

विभागाध्यक्ष, हिंदी और तेलुगु विभाग, सीहेच. एस.डी. सेट थेरेसा कालेज।

विशेषांक सह-सम्पादक की कलम से.

वर्तमान समय में प्रवासी साहित्य ने एक महत्वपूर्ण विमर्श के रूप में हिंदी साहित्य की मुख्य धारा में अपना स्थान बनाया है। प्रवासी साहित्य प्रवासी भारतीयों की अस्मिता व अस्तित्व को जीवित रखते हुए नया सृजनात्मक वितान खड़ा करती है। आज संपूर्ण विश्व में प्रवासी साहित्य के विकास व संवर्धन से हिंदी भाषा का निरंतर विस्तार हुआ है जिससे हिंदी एक अंतरराष्ट्रीय भाषा बनने की ओर अग्रसर है। आज विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिंदी का सर्वत्र बोलबाला है। विश्व के अनेक देशों में विश्व भाषा हिंदी का अध्ययन–अध्यापन किया जा रहा है। प्रवासी हिंदी साहित्य ने पूरे विश्व में हिंदी का परचम लहराया है। हिंदी अब सिर्फ गिरमिटिया देशों व खाड़ी देशों तक सीमित न रहकर वैश्विक स्वरूप धारण कर चुकी है। विश्व के अनेक देशों में विश्व हिंदी सम्मेलन हो रहे हैं। प्रवासी हिंदी लेखकों का भारत में सम्मान होने लगा है। प्रवासी साहित्य पर राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन हो रहा है। प्रवासी भारतीय दिवस मनाया जाने लगा है। प्रवासी भारतीयों की कृतियों का प्रकाशन भारत में होने लगा है और उनके सृजनात्मक लेखन पर विमर्श भी होने लगा है। जहां ब्रिटिश राज में भारतीय किसानों व मजदूरों को जबरन आर्थिक गतिविधियों में संलग्न करने के उद्देश्य से विवश करके ब्रिटिश उपनिवेशों में श्रम करने हेतु जबरन भेजा गया था वहीं अब शिक्षा, रोजगार तथा अन्य कारणों से प्रवास किया जा रहा है। गिरमिटिया मजदूरों को एग्रीमेंट के तहत भेजा जाता था अतः यही एग्रीमेंट शब्द कालांतर में गिरमिट हो गया और बाद में गिरमिटिया रूप धारण कर गया। भारतवंशियों ने हिंदी साहित्य को मॉरीशस, फ़िजी, गुयाना, त्रिनिदाद, दक्षिण अफ्रीका, अमेरिका, इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया, नीदरलैंड, नॉर्वे, डेनमार्क, चीन जापान आदि देशों में पहचान दिलाई है।

प्रवासी साहित्य : विविध आयाम विशेषांक गुगनराम एजुकेशनल एंड सोशल वेलफेयर सोसाइटी भिवानी, हरियाणा द्वारा प्रकाशित बोहल शोध मंजूषा के माध्यम से प्रवासी साहित्य की अवधारणा, स्वरूप, दशा एवं दिशा को समझने का प्रयास किया गया है। इस विशेषांक को अपने शोध पत्रों से समृद्ध करने वाले शोधार्थियों, प्राध्यापकों, समीक्षकों का मैं दिल से शुक्रगुजार हूँ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह अंक प्रवासी साहित्य पर शोध कार्य करने वाले शोधार्थियों व प्रवासी साहित्य को जानने समझने की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण होगा तथा इस विशेषांक को पढ़कर सुधी हिंदी प्रेमी पाठक प्रवासी साहित्य पर चिंतन मनन करने हेतु प्रेरित होंगे। इस विशेषांक में प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी महानुभावों की में आभारी हूँ।

–डॉ. पायल लिल्हारे

From :

Sr. Ernestine Fernandes
Superior and Correspondent
St. Ann's Convent,
Gauravaram
Eluru

Dear Mrs. Dr. Ch. V Mahalakshmi.

I wish to thank you for communicating to me the good news of the proposed International Conference and for the accompanying request for a message from me for the Souvenir to be released in this connection. I was truly overjoyed to learn that the Departments of Hindi and Telugu are jointly launching on this initiative of the International Conference in collaboration with Gina Devi Research Institute, Bhiwani, on the theme **Diasporic Literarture: Different Approaches.**

In this Platinum Jubilee Year of the existence of the College, this Conference will certainly mark another great milestone on the College's journey to continued progress and success.The proposed International Conference being prepared for, with great eagerness, enthusiasm and expectation will undoubtedly remain a red-letter day in the annals of the history of this prestigious Institution of learning.

With a very relevant and significant theme, this Conference will undoubtedly have a far reaching and lasting impact in the years to come and be a very rewarding and enriching experience both for the participants and the organizers.

I take this opportunity to congratulate the Convenor, the Co-ordinator, the Speakers and all the Members of the Department of Hindi and Telugu for launching out on this endeavour with the challenging theme.I implore the blessings of the Almighty on all those connected with this programme and pray for the success of this historical event.

With prayerful best wishes.

Sr. Ernestine Fernandes

Message from the Principal.....

I am extremely delighted that the Department of Languages under the leadership of Dr. Ch.V. Mahalakshmi has collaborated with the Gina Devi Research Institute, Bhiwani, Haryana to conduct the International Conference "Diasporic Literature: Different Approaches" on 2nd August, 2023. Such collaborative efforts, I am sure leads to a greater dissemination of knowledge and learning about current issues and trends to academia around the world.

The issues which are to be deliberated upon in this conference, I hope will bring about greater peace and understanding amidst our brethren settled in distant climes.

Our diaspora are the wealth of our nation and it is our duty to remember their resilience, fortitude and excellence they have been displaying. I am happy that diasporic Literature belonging to English, Hindi, Telugu, and Sanskrit will be examined, re-read and re-interpreted in the light of various approaches and theories.

I wish the organizers Dr. Rekha Soni, Dr. Naresh Sihag Advocate and Dr. Ch.V. Mahalakshmi all the very best in the conduct of this innovative conference that will, I am sure, open new vistas of learning.

Dr. Sr. Mercy. P

Principal

Ch.S.D.St.Theresa's College for Women (A)

Message from the Vice - Principal.....

IT BRINGS ME GREAT PLEASURE TO PEN DOWN THESE WORDS IN RESPONSE TO THE REQUEST OF DR.CH.V. MAHA LAKHSHMI, THE ESTEEMED COORDINATOR OF THE INTERNATIONAL CONFERENCE. THIS CONFERENCE SERVED AS A REMARKABLE ANTHOLOGY OF INTELLECTUAL EXPLORATION, NUANCED ANALYSIS, AND DIVERSE PERSPECTIVES, ALL STEMMING FROM THE ENLIGHTENING DISCUSSIONS HELD DURING THE EVENT THEMED "DIASPORIC LITERATURE: DIFFERENT APPROACHES." THIS SIGNIFICANT GATHERING, OPERATING IN A HYBRID FORMAT, WENT BEYOND GEOGRAPHICAL BOUNDARIES TO FOSTER A UNIFIED PLATFORM FOR SCHOLARS, RESEARCHERS, AND LITERATURE ENTHUSIASTS FROM ACROSS THE GLOBE. TOGETHER, THEY DELVED INTO THE INTRICATE TAPESTRY OF DIASPORIC NARRATIVES, UNRAVELING THE LAYERS OF THEIR MULTIFACETED INTERPRETATIONS. THIS CONFERENCE ACTED AS AN INTELLECTUAL CROSSROADS WHERE PARTICIPANTS ENGAGED IN SPIRITED DIALOGUES, SHEDDING LIGHT ON THE VARIOUS LENSES THROUGH WHICH DIASPORIC LITERATURE CAN BE APPROACHED, INTERPRETED, AND APPRECIATED.

THE ARTICLES PRESENTED HERE ARE NOT MERELY ACADEMIC CONTRIBUTIONS; THEY ARE BRIDGES CONNECTING DIVERSE CULTURAL BACKGROUNDS, CRITICAL METHODOLOGIES, AND ANALYTICAL FRAMEWORKS. EACH PIECE OFFERS A UNIQUE VANTAGE POINT INTO THE INTRICATE INTERPLAY OF DIASPORA, MEMORY, IDENTITY, AND REPRESENTATION, FOSTERING A DEEPER UNDERSTANDING OF THE HUMAN EXPERIENCE ACROSS BORDERS.

THE SUCCESS OF THIS INTERNATIONAL CONFERENCE AND THE ENSUING JOURNAL IS A TESTAMENT TO THE COLLECTIVE DEDICATION AND INTELLECTUAL EXCHANGE OF NUMEROUS INDIVIDUALS. I EXTEND MY SINCERE GRATITUDE TO THE ORGANIZING COMMITTEE, WHOSE METICULOUS EFFORTS ORCHESTRATED AN EVENT THAT TRANSCENDED PHYSICAL BOUNDARIES, ALLOWING FOR A RICH DISCOURSE TO UNFOLD IN THE VIRTUAL REALM. I ALSO EXTEND MY

APPRECIATION TO THE ESTEEMED KEYNOTE SPEAKERS AND PRESENTERS, WHOSE INSIGHTS ENRICHED THE DISCUSSIONS AND INSPIRED NOVEL WAYS OF APPROACHING DIASPORIC LITERATURE. A SPECIAL THANKS TO THE COORDINATORDR.MAHALAKHSHMI, WHOSE METICULOUS PLANNING AND TIRELESS EFFORTS ENSURED THE SEAMLESS EXECUTION OF THE SEMINAR, TRANSCENDING THE CHALLENGES POSED BY DISTANCE.

THIS JOURNAL SERVES NOT ONLY AS A CHRONICLE OF THE SEMINAR BUT ALSO AS A CATALYST FOR FUTURE DIALOGUES AND COLLABORATIONS. THE IDEAS SHARED HERE HAVE THE POWER TO TRANSCEND BORDERS, INSPIRE CROSS-CULTURAL UNDERSTANDING, AND PAVE THE WAY FOR INNOVATIVE SOLUTIONS TO GLOBAL CHALLENGES.

I INVITE OUR READERS TO IMMERSE THEMSELVES IN THE THOUGHT-PROVOKING ARTICLES THAT FOLLOW, TO ENGAGE WITH THE MYRIAD PERSPECTIVES AND METHODOLOGIES THAT ILLUMINATE THE REALM OF DIASPORIC LITERATURE.

MAY THE INSIGHTS SHARED WITHIN THESE PAGES INSPIRE FURTHER EXPLORATION, ENCOURAGE CROSS-CULTURAL UNDERSTANDING, AND CELEBRATE THE RICH MOSAIC OF HUMAN NARRATIVES THAT TRANSCEND BORDERS.

SR.MARIACHRISTIA.L
THE VICE PRINCIPAL
ST.THERESA'S COLLEGE FOR WOMEN (A).

Message

Diasporic literature has almost always held a certain aura of alienation, loss and expatriation as central themes in the bulk of writings. The quest for identity, uprooting, insider and outsider syndrome, nostalgia are some of the characteristic features ofdiasporic writings. The literature produced by Indian diaspora functions as a substitute for the homeland, India, on a global platform and traverses across historical periods and geographicalboundaries. This physical detachment on the one hand and psychological attachment towards homeland, indeed makes compelling reading. The International Conference "Diasporic Literature: Different Approach" 2ndAugust 2023 is a stepforward towards bringing together of different ideologies of diasporic writers from Hindi, English, Telugu and Sanskrit literature.

I congratulate the Gina Devi Research Institute Bhiwani, Haryana, which has collaborated with Ch.S.D.St.Theresa's College for Women(A), Eluru for conducting this International Conference. My Kudos to Dr. Mahalakshmi & Dept of Telugu for organising the Conference with meticulous detailing of the blended modalities of participation & presentation of papers.

Dr. R. Madhavi,
Dean, Languages,
H.O.D English,
Ch.S.D.St.Theresa's College for Women, Eluru.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 17-21

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी कविता में महिला लेखन का परिदृश्य

Dr. Seena Kurian

Assistant Professor, St. Michael`s College, Cherthala, Kerala

हिन्दी साहित्य के विशाल वटवृक्ष की अनेक समृद्ध और सशक्त शाखओं में से एक है प्रवासी साहित्य। प्रवासी शब्द उन लोगों के लिए प्रयुक्त होता है जो अपना देश छोड़कर एक बेहतर ज़िंदगी की तलाश में दूसरे देश में जा बसे। प्रवासी साहित्य हिन्दी साहित्य की एक नवीन विधा एवं चेतना है, जो प्रवासियों के मनोविज्ञान से जुड़ी है। भारतीय मूल के विदेशों में रहने वालों के सृजनात्मक लेखन को हम प्रवासी साहित्य कहते है। प्रवासी साहित्य पाठकों को प्रवास की संस्कृति एवं उस भू–भाग से जुड़े लोगों की स्थिति से अवगत कराने का कार्य कर रही है। डॉ. रामदर्श मिश्र के अनुसार "प्रवासी साहित्य ने हिन्दी को नई जमीन दी है और हमारे साहित्य का दायरा दलित विमर्श और स्त्री विमर्श की तरह विस्तृत किया है"।

प्रवासी हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण खूबी यह है कि वहां महिला साहित्यकारों की भागीदारी पुरुष साहित्यकारों से अधिक है। वे खुलकर सब कुछ बताते है। वह भारतीय महिला लेखन की भांति हाशिए पर नहीं खड़ा है। अपनी विषय वैविद्य के कारण मुख्यधारा में सम्मानित है। वह केवल स्त्री संवेदना को व्यक्त नहीं करती, बल्कि पाश्चात्य परिवेश में जूझ रहे प्रत्येक व्यक्ति की संवेदना को स्वर प्रदान करती है।

प्रवासी साहित्यकार विदेश के धरती पर रहकर भारतीय संस्कृति एवं समाज को चित्रित करने का सफल प्रयास किया है। भारतीय प्रवासी कवयित्रियों की दिल और दिमाग में अब भी भारत को उसकी संस्कृति को सभ्यता को अपने सीने में धड़कता हुआ पाते है। इसी दर्द की झलक अनेक कविताओं में दिखाई देते है। इनमें कुछ कवयित्रियों का नाम उल्लेखनीय है। वे विदेशों में रहकर अपनी भारतीयता की पहचान स्थापित की है। प्रवासी कविता में जानी मानी प्रमुख महिला हस्ताक्षर है– सुदर्शन प्रियदर्शिनी, सुधा ओम ढींगरा, देवी नांगरानी, इला प्रसाद, अंजना संधीर, शशि पाधा, शार्दल नोगजा और राजश्री आदि।

सुदर्शन प्रियदर्शिनी एक मंजी हुई कवयित्री है। वह ज़िंदगी के हर पहलू को अपने कविताओं के माध्यम से अभिव्यक्त करने की कोशिश करती है। 'चांद' कविता के द्वारा अपने परिवेश से दूर किसी बिछुड़े को याद करते नारी मन को अभिव्यक्त किया है।

"खिड़की के रास्ते
उस दिन
चांद मेरी देहरी पर
मीलों की दूरी नापता

तुम्हें छू कर आया।"

भारत के जालंधर में जन्मी सुधा ओम ढींगरा अब अमेरिका में एक सामाजिक एकटिविस्ट के रूप में जानी जाती है। वे अपने परिवेश में जो कुछ देखा, महसूस किया गया और भोगा गया उसे विषय वस्तु बनाकर अपनी कविता को सुसज्जित करती है। देश–परदेश की भूली बिसरी यादों को जीवंत करती है। 'देस की छांव' कविता एक परिपक्व मन की संवेदना भरी अभिव्यक्ति का नमूना है।

"साजन मोर नैना भर–भर हैं आवें
देस की याद में छलक– छलक हैं जावें
याद आवे
वो मंदिर
वो दुरुद्वारा
वो धर्मशाला
वो पुराना पीपल का पेड़।"

सुधाजी विदेश में रहते हुए भी अपनी मिट्टी से जुड़ी हुई संवेदनशील रचनाकार है। जो परिवार, संबंधों और परिवेश को विषय वस्तु बनाकर अपनी रचनाओं द्वारा पाठक को अनुभव सागर से जोड़ लेती है। 'यह वादा करो' कविता में ऐसा ही भाव देखते है।

"यह वादा करो
कभी नया उदास होंगे
सृष्टि के कष्ट चाहे सब साथ होंगे
प्रसन्नता के क्षणों को
एकांत से नया सजाना
हम ना रही
कुछ लोग खास होंगे।"

'चक्रव्यूह' कविता में नारी शक्ति और सोच दिखाई देते है।

"लड़ाई लड़ रही हूं मैं भी अपनी
शस्त्र उठाये बिन, खुद को मारकर
जीवन चिता पर लेटे लेटे।"

'धूप से रूठी चांदनी' कविता में सहज अभिव्यक्ति के माध्यम सशक्त चिन्तन प्रस्तुत करती है। इसमें स्त्री को सशक्त कर उस परंपरा में न बांधने की छटपटाहट जो स्त्री को केवल मां, बहन, पत्नी के रूप में देखती है :–

"मैं ऐसा समाज निर्मित करूंगी
जहां औरत सिर्फ मां, बेटी
बहन, पत्नी, प्रेमिका ही नहीं
एक इंसान

सिर्फ इंसान हो।"

यहां नारी के मन की अंतर्द्वन्द्व को चित्रित किया है।

प्रवासी कवयित्री इला प्रसाद की कविताएं मानव संघर्षों के इतिवृत्त को लक्षित करती हुई आगे बढ़ती है जहां सुख के क्षण और दुख के क्षण भी है, जहां असफलता के साथ–साथ हौसला भी है, वहीं गिर कर उठने का साहस भी है। जिसका प्रभाव उनके 'पत्ते' कविता में दिखाई देते है।

"वक्त की शाखों से
गिरते हैं पत्ते
दिनों के
आज, कल, परसों
हर पत्ते के साथ ही
मुरझाता जाता है मन।"

आज प्रवासी दोहरा जीवन जीने के लिए त्रस्त है। वह भारत से विस्थापित हो चुके है। परंतु सांस्कृतिक लगाव के कारण उन पर भारतीयता का प्रभाव है। 'प्रवासी का प्रश्न' कविता में इलाजी इसको बखूबी ढंग से चित्रित किया है :–

"हम
जो चले गए थे
अपने जडों से दूर
लौट रहे हैं वापस
अपनी जड़ों की ओर।"

प्रवासी एक तरह से अपनी जड़ों से कटकर भी अपने भीतर की गहराईयों में नई शक्ति, नई संवेदना और नई चेतना विकसित करते हैं। यह चेतना अपने मूलबोध को बचाए रखने की है या अपने अस्तित्व को बचाए रखने की है।

भारतीय प्रवासी कवयित्रियों की दिल ओर दिमाग में अब भी भारत को उसकी संस्कृति को अपने सीने में धड़कता हुआ पाते है। इसी दर्द की झलक अनेक कविताओं में दिखाई देते है। इलाजी 'दूरियां' कविता में अपने दर्द की पीड़ा इस अभिव्यक्त कर रही है :–

"सब कुछ बड़ा है यहां
आकार में
इस देश की तरह
असुरक्षा, अकेलापन और डर भी
तब भी लौटना नहीं होता
अपने देश में।"

इन शब्दों में यह सच हमारे सामने पेश करती है।

अंजना संधीर के 'चलो, फिर एक बार' कविता में एक भारतीय नारी जीवन से जुड़े भारतीय संस्कारों,

मानवीय संवेदना एवं मानवीय मूल्यों को बहुत अच्छे ढंग से चित्रित किया है।

"चलो
फिर एक बार
चलते हैं
हकीकत में
खिलते हैं फूल जहां
महकता है केसर जहां
सरसों के फूल और लहलहाती है फसलें।"

आगे कवयित्री कहती है –

"उलाहनों से दूर
करते हैं अनदेखा खामियों को
भूलते हैं एक दूसरे के फेंके हुए
दर्द भरे, चुभते आग से तीरों को
क्योंकि जीवन
जीने का नाम है
गुजारने का नहीं, बहुत गुजार लिया।"

यहां अंजना संधीर ने प्रवासी नारी के अस्तित्व को अनूप और अनोखा सकारात्मक रूप देकर प्रस्तुत करने की कोशिश किया है।

शार्दुला नोगजा ने 'प्यार का रंग बदला' कविता में अपने अस्तित्व को कायम रखने की जद्दोजहद प्रयास दिखाई देते है।

"आम का पकाना, रास्ता ताकना
पगडंडी का घर घर रुकना
कोयल का पंचम सुर गाना
हर महीने पूनम का आना
आर कहो ! कब व्रत है अलग?
तीज, चौध कब्र कब बदला
क्या कहते हो सब कुछ बदला
गांव का मेरे ढंग ना बदला।"

यहां नोगजा ने भारतीय संस्कार, अपनी मिट्टी, पर्यावरण, त्यौहार को याद करके अपनी जड़ों की ओर वापस जाना चाहती है।

राजश्री की 'बूंद और शब्द' कविता में इस प्रकार कहा है–

"भावों के किनारें भावनाओं का नार
आम, जामुन, कास, बबूल की निधियां

सुनहले दुपट्टे से चूड़ियों के गीत
राग अनुराग भयद्वेष के अभेद्य किले
चेतना करुणा प्रज्ञा प्रीत के मंदिर
अश्रुजल से घुलते घाट जनघट
अंतराचल पर कल कल शब्दसरिता बही।"

उनकी कविताओं में संवेदनाओं की बेचैनी मन की अकुलाहट, व्यवस्था के प्रति विद्रोह की भावना और परिवर्तन की पुकार की अभिव्यक्ति दिखाई देती है।

हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि प्रवासी साहित्य ने हिन्दी को वैश्विक रूप प्रदान किया है। प्रवासी भारतीय कवयित्रियां अपने परिवार, परिवेश, समाज को एक तार में भारतीय संस्कृति और सभ्यता के सहारे बांधकर रहती है। चाहे वह यहां भारत में हो, या भारत से बाहर प्रवास स्थान पर हो। वह अपना कार्य अच्छी तरह संभालते है। प्रवासी भारतीय लेखिकाओं की कविताएं हमारे दिलों पर अपनी अमिट छाप अंकित कर पाने में सक्षम है। इस प्रकार हिन्दी का प्रवासी साहित्य भारतेतर देशों को भारत से जोड़ने का एक सेतु बनता है।

Seenakurian04@gmail.com
8547637591

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 22-27

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

तेजेंद्र शर्मा की कहानियों के विषयों का बहुरंगी वितान

पीयूष कुमार दुबे
शोधार्थी, दिल्ली विश्वविद्यालय।

शोध सार :-

वरिष्ठ साहित्यकार तेजेंद्र शर्मा की कहानियाँ विषय और संवेदना दोनों के धरातल पर व्यापक विविधता का संयोजन किए हुए हैं। भारत के साथ–साथ अनेक अन्य देशों के पात्र और परिवेश को लेकर तेजेंद्र ने बहुत–सी कहानियाँ लिखी हैं। इस रूप में भारतीय पाठकों के लिए उनकी कई कहानियों के विषय एकदम नए से भी हैं। तेजेंद्र शर्मा की कहानियों में निहित इसी विविधता और नवीनता का अन्वेषण और विश्लेषण करने का प्रयास इस शोध आलेख में किया गया है।

प्रस्तावना :-

1980 में 'प्रतिबिम्ब' नामक कहानी से अपने कथा–लेखन का आग़ाज़ करने वाले तेजेंद्र शर्मा की कहानियों में समय के साथ कथ्य के स्तर पर व्यापक परिवर्तन दिखाई देते हैं। देखा जाए तो तेजेंद्र शर्मा के समग्र कथा–साहित्य के विषयों के तीन स्रोत प्रतीत होते हैं। एक, जो खुराक जीवन से उन्हें मिली यानी जो उन्होंने खुद भोगा; दो, जो उन्होंने अपने इर्द–गिर्द घटित होते देखा; और तीन, जब अन्यान्य माध्यमों से प्राप्त किसी जानकारी या ख़बर ने उनके मन को सहज ही ऐसी संवेदना से भर दिया कि उस पर बिना लिखे रहना उनके लिए संभव नहीं रह गया। इनमें दूसरे और तीसरे तरह के विषय ऐसे हैं जिनमें कहानी की खोज और विरचना वही लेखक कर सकता है जिसमें संवेदना की सूक्ष्म दृष्टि विद्यमान हो। लेखक की संवेदनात्मक दृष्टि, एक गतिशील मछली का जल प्रतिबिम्ब देखकर उसकी आँख वेधने जितनी सामर्थ्य से युक्त होनी चाहिए, क्योंकि ऐसी दृष्टि होगी तभी लेखक उससे दूर कहीं घटित किसी घटना के विषय में किसी अन्य माध्यम से जानकारी पाकर, उसमें मछली की आँख की तरह ही, कहानी की संभावना को लक्ष्य कर सकता है।

इस संदर्भ में तेजेंद्र शर्मा की कहानी 'देह की कीमत' का उल्लेख समीचीन होगा। भारत और जापान, इन दो देशों के बीच तैरती इस कहानी में तेजेंद्र शर्मा ने न केवल अर्थ–संचालित पारिवारिक संबंधों के खोखलेपन को उघाड़ा है, बल्कि अपनी अयोग्यता के भार में दबे भारतीयों के एक तबक़े के विदेशी कमाई के आकर्षण में वैध–अवैध ढंग से विदेश जाने की स्थिति को भी बाखूबी उजागर किया है। इस कहानी का विषय कैसे ज़ेहन में आया, इस पर तेजेंद्र शर्मा का कहना है कि वायुसेवा के ही एक मित्र ने दो–तीन लाइन में इस प्रकार की एक घटना उन्हें सुनाई थी, जिसके बाद उनके मन में यह कहानी आकार लेने लगी। अगल–बगल बैठे लोगों में उन्हें इस कहानी के पात्र नज़र आने लगे थे। इस तरह यह कहानी बन पड़ी।

अपने जीवनानुभवों से कोई विषय उठाकर उस पर कहानी लिखना ऐसा कर्म है जो एक मायने में सरल भी है और एक मायने में कठिन भी। सरल इसलिए है कि विषय के स्तर पर लेखक से कोई पहलू छुपा नहीं रहता, वो छोटी–छोटी बातों से भी अवगत रहता है; और कठिन इसलिए कि सब पहलुओं से अवगत रहने के कारण उन सबको कहानी में ढाल देने की चाह चुनौती की शक्ल लेकर खड़ी हो जाती है और इस क्रम में यह भी ध्यान रखना पड़ता है कि कहानी कहीं यथार्थ का कोरा कथन बनकर न रह जाए। यह तेजेंद्र शर्मा का कथा–कौशल ही है कि अपने जीवनानुभवों पर कई कहानियाँ लिखने के बावजूद वे इस कठिनाई से अपनी कहानियों को बचाने में कामयाब रहे हैं। यहाँ 'कैंसर' कहानी का ज़िक्र करना ज़रूरी है। इसमें पत्नी के स्तन कैंसर से ग्रस्त हो जाने के बाद पति के हृदय और परिवार में व्याप्त त्रासदियों और विकृतियों की कथा कही गयी है। तेजेंद्र शर्मा को जानने वाले जानते हैं कि वे स्वयं इस कहानी की त्रासदी को कटुतम स्वरूप में भोग चुके हैं। अपने इस भोगे हुए यथार्थ पर कथा–वितान बुनते हुए भी तेजेंद्र शर्मा ने अपनी क़लम को जिस ढंग से भावनाओं के आवेग में बहने नहीं दिया है और कहानी के कहानीपन को सुरक्षित रखा है, वो उनके समर्थ कथा–कौशल का ही सूचक है।

विषयों की विविधता और नवीनता :-

तेजेंद्र शर्मा का पहला कथा–संग्रह 'काला सागर' जो 1990 में प्रकाशित हुआ था, की कहानियों के विषय मोटे तौर पर पारिवारिक रिश्ते–नातों, महानगरों में जीवन की जद्दोजेहद और विमानन क्षेत्र से सम्बंधित विषयों पर आधारित हैं। इस प्रकार के विषय कोई संयोग नहीं थे, बल्कि ये उस वक्त तक लेखक को मिली मानसिक खुराक का परिणाम थे। अड़तीस साल का एक युवा जिसका बचपन अभाव से अधिक परिस्थितियों के कारण संघर्षमय रहा था, के मन में पारिवारिक रिश्तों के प्रति हल्के रोष की भावना होनी स्वाभाविक ही है। परिवार के प्रति एक युवा का यह हल्का रोष, अर्थ–संचालित पारिवारिक रिश्तों के खोखलेपन का शिकार समाज के अन्य लोगों से जब एकाकार हुआ होगा तभी संभवतः 'रिश्ते', 'दंश' और 'कड़ियाँ' जैसी कहानियों ने आकार लिया होगा। ऐसे ही, विमान सेवा में कार्य करते हुए जब किसी दुर्घटना के पश्चात् कोई विद्रूप दिखा होगा, तो विमान दुर्घटना पर आधारित हिंदी की पहली कहानी 'काला सागर' की रचना हुई होगी। यूँ ही विमान सेवा की मशहूर चरित्र 'एयर होस्टेस' की चुनौतियों को देखते–देखते जब किसी दिन लेखक का हृदय द्रवित हुआ होगा तो एयर होस्टेस पर केन्द्रित हिंदी की पहली कहानी 'उड़ान' रची गयी होगी। पत्नी के साथ मुंबई में एक अदद घर के लिए जद्दोजेहद करनी पड़ी तो लेखक का मन–मस्तिष्क 'ईंटों का जंगल' लिखने को आकुल हो उठा होगा।

ग़ौर करें तो नये विषय तो तेजेंद्र शर्मा की प्रवास से पूर्व की कहानियों में भी हैं, परन्तु प्रवास के पश्चात् इस नयेपन को और अधिक विस्तार मिला है। अनेक ऐसे विषय और पात्र, जो तेजेंद्र शर्मा के साथ–साथ समग्र हिंदी कहानी के लिए भी एकदम अपरिचित थे, का समावेश प्रवास बाद की उनकी कहानियों में दिखाई देता है। यहाँ वरिष्ठ साहित्यकार राजेन्द्र यादव का कथन उल्लेखनीय होगा, "तेजेंद्र ने बहुत अच्छी कहानियाँ लिखी हैं। मैं कहूँगा कि उन्होंने हिंदी कहानी में एक नए तरह के कथानक और नए तरह के पात्र लाए हैं, जिनका क्षेत्र देश भी है और विदेश भी...उनकी कहानियों में लंदन का व अन्य देशों का परिवेश है, वहाँ के संबंध हैं, वहाँ की समस्याएँ हैं, वहाँ के लोग हैं और ये चीज़ हिंदी साहित्य की मूल धारा को काफ़ी समृद्ध और संपन्न करती है।" लन्दन प्रवास के बाद तेजेंद्र शर्मा कहानियों में विषय के स्तर पर व्यापक बदलाव स्पष्ट रूप से देखे जा सकते

हैं। 'अभिशप्त', तेजेंद्र शर्मा द्वारा लंदन प्रवास के बाद लिखी गयी पहली कहानी है। यह भारत से अच्छे जीवन की उम्मीद में लन्दन जाकर बस गए रजनीकांत की कहानी है जो वहाँ भी सुख नहीं पाता। भारत में बीए करने के बाद यहाँ कथित छोटे काम वो नहीं करता, लेकिन लन्दन में बोझा ढोने का काम करने में उसे कोई हिचक नहीं होती। अपने से बड़ी लड़की से विवाह करता है और धीरे–धीरे उसके द्वारा उपेक्षित होने लगता है। जल्द ही ये उपेक्षा और उदासी ही उसका जीवन बन जाती हैं। इस कहानी में प्रवासी भारतीयों के दर्द के साथ–साथ ब्रिटेन की पृष्ठभूमि में पुरुष–विमर्श का एक वितान भी बुना गया है। भारत में पत्नी की इच्छा–अनिच्छा के प्रति पतियों की जो बेपरवाही प्रायः देखने को मिलती है, ब्रिटेन में रजनीकांत के प्रति उसकी पत्नी की वही बेपरवाही हम देखते हैं। निशा, पति के रूप में अपेक्षित कोई सम्मान और अधिकार रजनीकांत को नहीं देती, मगर रात को बिस्तर पर उसे भोगे बिना उसको नींद भी नहीं आती।अपनी इच्छा–अनिच्छा को भूल रोज़ बिस्तर पर पत्नी को संतुष्ट करना भी रजनीकांत का एक काम है। भारत में लिखी कहानियों में ऐसी दशा स्त्री की मिलती है, ब्रिटेन में इसका पात्र एक पुरुष है। चर्चित लेखिका डॉ. प्रीत अरोड़ा ने इस कहानी को पुरुष–विमर्श का सशक्त उदाहरण बताते हुए लिखा है, "इस कहानी के माध्यम से कहानीकार ने पुरुष–मन के भीतर आर्थिक स्वावलम्बन, अधिकार–चेतना, व्यक्तित्व की महत्ता व स्वतंत्र जीवन दृष्टि आदि जैसी भावनाओं को प्राप्त न कर पाने की टीस को प्रस्तुत कर पुरुष–विमर्श को एक नया आयाम दिया है।"

'क़ब्र का मुनाफ़ा' कहानी भी उल्लेखनीय होगी। यह एक ऐसी कहानी है, जिसका विषय और कथानक भारतीय पाठकों की कल्पना से भी परे होने जैसा है। धन के आगे कैसे मानवीय संबंधों से लेकर खुद मनुष्य तक का अस्तित्व बौना होता जा रहा है, इस सामाजिक विसंगति को 'क़ब्र का मुनाफ़ा' कहानी माँ बड़े अनूठे ढंग से प्रस्तुत किया गया है। कहानी के दोनों प्रमुख पात्रों खलील और नजम, जिन्होंने अपने देश से दूर एक विदेशी कंपनी को बढ़ाकर काफ़ी पैसा कमा लिया है, द्वारा जब अपने लिए क़ब्र की बुकिंग करवाई जाती है, तो पाठक चकित रह जाता है। नज़म, खलील से कहता है– ""भाई! आपने कब्र बुक कर ली है या नहीं? देखिए उस कब्रिस्तान की लोकेशन, उसका लुक और माहौल एकदम यूनिक है..... अब जिंदगी भर तो काम, काम और काम से फुर्सत नहीं मिली। कम से कम मरकर तो चौन की जिंदगी जिएंगे।"

'क़ब्र की बुकिंग' कहानी की शुरुआत में ही आने वाली यह बात किसी भी भारतीय पाठक को चकित करने के लिए काफी है। खलील और नज़म क़ब्र की बुकिंग करते हैं ताकि मरने के बाद उन्हें पूरी शानो–शौकत के साथ दफनाया जाये और उनकी क़ब्र भी पूरी आलिशान बने, जिससे वे थकान भरे जीवन के ख़त्म होने पर मौत के बाद आराम से रह सकें। इस दौरान शिया मुसलमानों के लिए अलग से 'रिजर्व्ड क़ब्रिस्तान' की चर्चा के जरिये मुस्लिम समुदाय में मौजूद ऊंच–नीच के भेदभाव को भी लेखक ने हल्के से छू लिया है, "यार ये साला कब्रिस्तान शिया लोगों के लिए एक्सक्लूसिव नहीं हो सकता क्या?.. वरना मरने के बाद पता नहीं चलेगा कि पड़ोस में शिया या सुन्नी या फिर वो गुजराती टोपी वाला।... मेरा बस चले तो एक कब्रिस्तान बनाकर उसपर बोर्ड लगा दूं– शिया मुसलमानों के लिए रिजर्व्ड।" अधिक पैसा आदमी को किस हद तक संवेदना और भावना से हीन तथा दम्भी बना देता है, यह कहानी इसको शानदार ढंग से अभिव्यक्त करती है। सबसे बढ़कर इस कहानी का जो तथ्यपरक ढंग से व्यंग्यात्मक अंत लेखक ने किया है, वो इसे हिंदी की श्रेष्ठ कहानियों में शुमार कर देता है। इस विषय में वरिष्ठ व्यंग्यकार ज्ञान चतुर्वेदी को उद्धृत करना समीचीन होगा, "कहानी (क़ब्र का

मुनाफ़ा) का अंत एक सपाट व्यंरग्यकार द्वारा रचा अंत है और कहानी को नये अर्थ देकर नई ऊँचाई भी देता है। जीवन ऐसा हिसाबी–किताबी हो गया है कि 'क़ब्र का मुनाफ़ा' कमाया जा सकता है और मरने जीने को भी एक नये धंधे में तब्दील किया जा सकता है।"

कोख का किराया, ये क्या हो गया, पासपोर्ट का रंग आदि भी तेजेंद्र की कुछ उल्लेखनीय कहानियाँ हैं। कोख का किराया सरोगेसी के मुद्दे पर व्यापक परिप्रेक्ष्यों में बात करती है। 'पासपोर्ट का रंग' कहानी में मुख्य पात्र बाऊजी की पीड़ा यह है कि उन्हें लन्दन में बसे बेटे के साथ रहने की मजबूरी में भारत की नागरिकता छोड़ उस ब्रिटेन की नागरिकता लेनी पड़ रही है, जिसके ख़िलाफ़ आज़ादी की लड़ाई में वे गोलियाँ खा चुके हैं। इस दौरान भारत सरकार की तरफ से यह ऐलान कि वो पाँच देशों के भारतीयों को दोहरी नागरिकता देगी, उन्हें खुशी से भर देता है। मगर, यह ऐलान सिर्फ ऐलान ही रह जाता है। सरकारें बदल जाती हैं, मगर इस ऐलान को अमलीजामा नहीं पहनाया जाता। इस कहानी में लेखक ने उन बुज़ुर्ग भारतीयों के देशप्रेम और प्रवास की विवशता के बीच के विकट द्वंद्व को तो चित्रित किया ही है, जो मजबूरी में अपनी जड़ों से अलग हो विदेशी धरती में जा बसे हैं, साथ ही प्रवासी भारतीयों के प्रति भारत सरकार की ढुलमुल कार्यप्रणाली को सामने लाने में भी लेख प्रभावी ढंग से सफल रहा है।

ब्रिटेन में बसने के बाद लिखी गयी तेजेंद्र शर्मा की कहानियों में दो बातों का विशेष रूप से प्रवेश नज़र आता है– मुसलमान और सेक्स। ऐसा नहीं है कि प्रवास पूर्व की कहानियों में ये बातें रही ही नहीं हैं, लेकिन प्रवास बाद की कथा–रचना में लेखक का इन विषयों पर विशेष ज़ोर दिखाई देता है। इस दौरान मुसलमान पात्रों को लेकर तेजेंद्र शर्मा ने तरक़ीब, होमलेस, दीवार में रास्ता आदि कई कहानियाँ लिखी हैं।

'तरक़ीब' कहानी का ज़िक्र ज़रूरी होगा। इसमें भारत–पाकिस्तान से ब्रिटेन में आकर बसे मुसलमान दम्पति अदनान और समीना को केंद्र में रखकर कथा का ताना–बाना बुना गया है। इस्लाम की मर्दवादी मान्यताओं और स्त्री को पुरुष का गुलाम बना देने वाले मज़हबी क़ायदों की इस कहानी में खूब ख़बर ली गयी है। अदनान के जुल्म और तानाशाही भरे बर्ताव से तंग आकर समीना जब उससे तलाक़ माँगती है, तो वह सोच में पड़ जाता है क्योंकि ब्रिटेन में तलाक़ देने पर वहाँ के क़ानून के मुताबिक उसे संपत्ति में बड़ा हिस्सा समीना को देना पड़ेगा। इस मुश्किल के हल के लिए वो कोई ऐसी तरक़ीब सोचने लगता है जिससे समीना से छुटकारा भी मिल जाए और संपत्ति में से कुछ देना भी न पड़े। कहानी के अंत में जो तरक़ीब सामने आती है, वो शरीयत की वहशी व्यवस्था को उजागर करने वाली है। वैसे तेजेंद्र शर्मा सिर्फ़ मुसलमानों के मज़हब की समस्याओं को ही सामने नहीं लाते बल्कि उनके जीवन की चुनौतियों और मुश्किलों पर भी बात करते हैं।

इस संदर्भ में 'दीवार में रास्ता' कहानी का उल्लेख उपयुक्त होगा जिसमें लेखक ने हिन्दू–मुस्लिम द्वंद्व का विषय उठाते हुए मुसलमानों के दु:ख–दर्द को रेखांकित करने का प्रयास किया है। ये कहानी अपने शीर्षक से लेकर कथानक तक रूपकाभिव्यक्ति का भी उदाहरण है। मोहसिन के घर के आगे संध्या ठाकुर की शह पर हिन्दुओं द्वारा रास्ता बाधित करने को खड़ी की गयी दीवार, सिर्फ ईंट पत्थरों का एक ढाँचा भर नहीं है, बल्कि दोनों समुदायों के बीच खड़ी अविश्वास और वैमनस्यता का प्रतीक है। मोहसिन छोटी जान के आने से उम्मीद लगाता है कि वे संध्या ठाकुर पर दबाव डालकर दीवार हटवा देंगी, मगर वे संध्या ठाकुर से बात करने के बाद कहती हैं, "देखो मोहसिन, मैंने संध्या जी से बात कर ली है। तुम मेरे पीछे इनसे मिलकर इनकी मदद माँग लेना।

अब यही तुम्हारी मुश्किल हल करेंगी।" यहाँ छोटी जान का चरित्र अविश्वास की दीवार में विश्वास के एक रास्ते जैसा प्रतीत होता है। '..इनसे मिलकर इनकी मदद माँग लेना' इस बात का व्यापक सन्देश यही है कि हिन्दू–मुसलमान को आपस में मिल–जुलकर अपने अविश्वास को दूर करना होगा और अपने मसले सुलझाने होंगे, दूसरा कोई मार्ग नहीं है।

अब जहाँ तक बात 'सेक्स' की है, तो ये विषय तेजेंद्र शर्मा की कहानियों में प्रायः स्त्रियों की एक दमित इच्छा के रूप में आया है। तेजेंद्र शर्मा की कहानियों की स्त्री अपनी शारीरिक इच्छाओं के प्रति उदासीन नहीं है। वो 'संभोग' को उसके वास्तविक अर्थ, जिसमें स्त्री–पुरुष दोनों को समान सुख मिले, में प्राप्त करना चाहती है। इसके लिए वो नैतिकता और मर्यादा के खाँचे को तोड़ने से में भी नहीं हिचकती। पराई औरतों में उलझे पति के सुख को तरसती 'तरक़ीब' की समीना हो या 'प्यार...क्या यही है?' की अपने से पंद्रह वर्ष युवा लड़के को भोगने वाली पूजा हो या 'अभिशप्त' में रोज़ रात को पति के बिना सो पाने में असमर्थ निशा हो अथवा सबसे बढ़कर पति द्वारा शारीरिक सुख न मिलने की स्थिति में घर में घुसे चोर के साथ संबंध में पड़ जाने वाली 'कल फिर आना' की रीमा हो – ये सभी स्त्रियाँ अपने शारीरिक सुख के प्रति अत्यंत सचेत और आग्रही हैं। 'कल फिर आना' की रीमा तो पति के मुँह पर कहती है, "कबीर आप पचास के हो गए तो इसमें मेरा क्या क़सूर है? मैं तो अभी सैंतीस की ही हूँ। जिस तरह पेट को भूख लगती है, कबीर, जिस्म को भी वैसे ही भूख महसूस होती है।" सेक्स को लेकर ऐसी 'बोल्डनेस' तेजेंद्र शर्मा की प्रवास पूर्व की कहानियों में नहीं दिखाई देती। यहाँ लिखना ज़रूरी होगा कि तेजेंद्र शर्मा की कहानियों में सेक्स तो है, लेकिन वो कहानी के ज़रूरी हिस्से की तरह है न कि तमाम लेखकों द्वारा क्षणिक लोकप्रियता के लिए चित्रित की जाने वाली पोर्नोग्राफी की तरह। तेजेंद्र की कहानियाँ 'संभोग' की ज़रूरत और उससे पूर्व की सामाजिक–मानसिक परिस्थितियों की जटिलता को विषय बनाती हैं, संभोग दृश्यों के चित्रण में नहीं डूब जातीं। ये प्रमुख कारण है कि यह कहानियाँ अपने विषय के साथ न्याय करने में सफल हैं।

निष्कर्ष :-

कुल बातों का मजमून यही है कि तेजेंद्र शर्मा ने उन्हीं विषयों पर लिखा जिनपर उनकी क़लम स्वाभाविक रूप से लिख सकी। साहित्यिक विमर्शों या चर्चादायक विवादों की लालसा से प्रभावित होकर उन्होंने अस्वाभाविक या जबरन कुछ भी नहीं लिखा। ऐसे में ये कह सकते हैं कि तेजेंद्र शर्मा की कहानियों की स्वाभाविकता ही उनकी सबसे बड़ी यूएसपी है और उन्हें स्वाभाविकता के रचनाकार के रूप में भीड़ से अलग करती है।

कथानक कोई भी हो, तेजेंद्र शर्मा की भाषा–शैली उसे रोचक बना देती है। जैसाकि वरिष्ठ व्यंग्यकार ज्ञान चतुर्वेदी ने लिखा है, 'तेजेन्द्र शर्मा के पास किस्सें भी हैं और क़िस्सागोई भी। भाषा से खेलना भी उन्हें बढ़िया आता है। उर्दू–हिन्दी के लोकभाषा तथा प्रवासी हिन्दी भाषी की अपनी अंग्रेज़ी हिन्दी का सटीक इस्तेमाल करके वे चुटीले संवाद बनाते हैं और कहानी की भाषा में वह रवानगी क़ायम रखते हैं जो पाठक को कथा से बाँधकर रखती है।' तेजेंद्र शर्मा की कहानियों की प्रस्तुति ऐसी है कि ये शुरू होते ही पाठक को बाँध लेती हैं। शुरू में किसी सूत्र का एक सिरा देकर उसके दूसरे सिरे की रहस्यात्मकता बनाए हुए अपनी बहती हुई सी भाषा–शैली के बलबूते वे पाठक को कथा के अंतिम बिंदु तक सहज लिए जाते हैं, जहाँ उसे शुरूआती सूत्र का दूसरा सिरा मिलता है और वो उस कथा–लोक से चमत्कृत–सा एक अलग अनुभव लिए हुए बाहर आता है।

संदर्भ सूची :-

1. तेजेन्द्र शर्मा विशेष : हंस के संपादक राजेन्द्र यादव का वीडियो संदेश। रचनाकार (rachanakar.org)
2. तेजेन्द्र शर्मा विशेष : 'अभिशप्त : एक पुनर्पाठ', डॉ. प्रीत अरोड़ा। रचनाकार (rachanakar.org)
3. नयी ज़मीन नया आकाश (समग्र कहानियाँ 2), तेजेन्द्र शर्मा, पृष्ठ 271, यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स
4. पूर्वोक्त, पृष्ठ 272
5. तेजेन्द्र शर्मा विशेष : ज्ञान चतुर्वेदी का संस्मरण–प्रवासी भारतीय जगत की कहानियाँ। रचनाकार (rachanakar.org)
6. नयी ज़मीन नया आकाश (समग्र कहानियाँ 2), तेजेन्द्र शर्मा, पृष्ठ 240, यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स
7. पूर्वोक्त, पृष्ठ – 214
8. तेजेन्द्र शर्मा विशेष : ज्ञान चतुर्वेदी का संस्मरण–प्रवासी भारतीय जगत की कहानियाँ। रचनाकार (rachanakar.org)

पता :– मकान संख्या – 302,
देव होम्स अपार्टमेंट, प्लॉट संख्या – 19/20, वेलकम सिटी,
निकट – राधा स्वामी सत्संग, शाहबेरी, गाजियाबाद।
यूपी – 201009
मोबाइल 8750960603, 7678425027

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 28-33

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

तेजेंद्र शर्मा की कहानियों में प्रवासी जीवन

रेखा कुमारी

शोधार्थी, हिंदी विभाग, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई।

प्रवासी साहित्य का मूल कथ्य परदेश में स्वदेश के मूल्य संस्कृति अनुभूतियों को अक्षुण्ण रखने वाले भारतीयों की मानसिक छटपटाहट है। प्रवासी साहित्य प्रवासी भारतीयों के द्वन्द्व को हिंदी पाठकों के सामने पूरी ईमानदारी से प्रस्तुत कर रहा है। भूमंडलीकृत समाज में प्रवासी साहित्य भारतेतर हिंदी साहित्य की एक नयी पहचान तथा एक नया साहित्यिक विमर्श बन कर उभर रहा है। हिंदी पाठकों के मन में भी प्रवासी सहित्य अनेक प्रश्न उत्पन्न कर रहा है कि प्रवासी देशों में भारतीयों का जीवन कैसा होगा पर देश में स्वदेश की कोई सत्ता या अनुभूति नहीं तथा उस देश का परिवेश जीवन प्रणाली संघर्ष सभी उसके जीवन को किस हद तक प्रभावित करते हैं।

साहित्य बुनियादी तौर पर देश और काल से जुड़े मनुष्य को पहचानने और परिभाषित करने की रचनात्मक प्रक्रिया है। मनुष्य को किसी भी तरह निरपेक्ष सन्दर्भ में नहीं पहचाना जा सकता। मनुष्य की पहचान का अर्थ उसके व्यक्तिगत और सामाजिक संदर्भों की पहचान है। व्यक्ति की व्यक्तिगत सत्ता पर ही नहीं बल्कि उसकी सामाजिक व्याप्ति पर भी स्त्री के प्रति उसके आपसी संबंधों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। स्त्री और पुरुष व्यक्तित्व के दो पूरक घटक हैं। सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का आस्वादन इन दोनों के आपसी संबंधों पर आधारित है।

तेजेंद्र शर्मा एक प्रसिद्ध हिंदी कथाकार हैं जिनकी कहानियाँ व्यापक विषयों पर आधारित होती हैं। उनकी कहानियों में स्त्री और पुरुष दोनों प्रमुख पात्र होते हैं और उन्हें अलग–अलग सामाजिक, राजनीतिक और पारिवारिक परिस्थितियों के द्वारा परीक्षण के सामने रखा जाता है।

लेखक की कहानियों में स्त्री–पुरुष संबंधों को मजबूती से पेश किया जाता है जहां समानता, सहयोग और संवेदनशीलता महत्वपूर्ण तत्व होते हैं। उनकी कहानियों में स्त्री चरित्र अक्सर साहसिक संघर्षपूर्ण स्वतंत्र और प्रगतिशील दिखाई देती है जबकि पुरुष चरित्र विभिन्न प्रकार के भूमिकाओं में दिखते हैं – पतियों, पिताओं, बेटों, भाइयों, दोस्तों और सामाजिक परिवेश के अन्य लोगों के रूप में।

लेखक की कहानियों में स्त्री–पुरुष के बीच जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे प्यार, संघर्ष, परिवार, सामाजिक मुद्दे समाज शास्त्रिय बदलाव स्वतंत्रता आदि कों पर प्रकाश डालती नज़र आती है।

"ढिबरी टाईट" कहानी संग्रह की कहानी 'धुंधली सुबह स्त्री और लेखक पुरुष के सामान्य से वैवाहिक जीवन में प्रेम और प्रेरणा को लेकर पैदा हुए द्वन्द्व पर केन्द्रित है। माता–पिता का घर छोड़ एक काल्पनिक दुनिया

में जीने वाले लेखक से शादी करके दिव्या को मिलता क्या है? जिस आदमी की कविताओं में वह अपने को उसकी प्रेरणा मानती थी उसकी कहानियों की नायिका मानती थी। शादी के बाद वह पाती है कि उसकी हर शहर में एक प्रेरणा है। जिसके लेखन पर वह मुग्ध हो कर मुस्कुराती थी, स्वप्न बुनती थी।

आज उसी लेखक की सपाट बयानी पर उसे आश्चर्य है। "मैंने तुममें अपना प्यार देखा था– तुम मेरी प्रेयसी थी मेरी प्रेरणा। ....जरा अपना चेहरा देखो!"[1] तुम्हे देख कर क्या कोई कविता या कहानी लिखने की प्रेरणा पा सकता है क्या यू बोर मी दिव्या" पति के लिए पत्नी एक बच्चे की माँ बनने के बाद नीरस हो गई है। उसे अपनी पत्नी से कई तरह की अपेक्षाएँ हैं। दिव्या उन अपेक्षाओं पर खरा उतरने की कोशिश भी करती है। कम बजट में घर को अच्छे से चलाती है किसी चीज़ की माँग नहीं करती बच्चे को भी अच्छे से पाल रही है। देर रात शराब पीकर आये पति से झगड़ती भी नहीं। सभी स्तरों पर वह अपने को एडजस्ट करती है। लेकिन पुरुष की आकांक्षाएँ बढ़ती जाती हैं। वह उसे कोई भौतिक सुख नहीं दे सकता। उसके गिरते स्वास्थ्य का ध्यान नहीं रख सकता पर अपनी इच्छाएँ भी नहीं मारता बल्कि पत्नी को दिए अभावों के जीवन में भी अपने लिए एक अतिरिक्त सुविधा की माँग करता है।

यहाँ संबंध में निभाने की चाह दिखती तो है पर स्त्री की ओर से ज्यादा, पुरुष की ओर से कम। वह नई प्रेरणाएँ तलाश कर लेता है। दिव्या का मन विद्रोह करता है। वह सब छोड़ने की सोचती है पर माँ–बाप को वह पहले ही छोड़ आई थी। उसे राह नहीं दिखती। वह सब कुछ को नियति मान कर स्वीकारने को बाध्य है। सामान्य से दैनिक जीवन में घटने वाली घटनाओं को अपनी सूक्ष्म दृष्टि से तेजेंद्र शर्मा जी देखते हैं और सम्वेदनात्मक ढंग से अपनी कहानियों में व्यक्त करते हैं।

लेखक की कहानियों में स्त्री और पुरुष दोनों को महत्वपूर्ण भूमिका मिलती है। उनकी कहानियों में स्त्री पात्रों को साहसिक प्रबल आत्मनिर्भर और सामरिक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। वे अपने अधिकारों के लिए लड़ने परिवार और समाज के जीवन में उनकी भूमिका में परिवर्तन लाने के लिए संघर्ष करती हैं।

स्त्री पात्रों का चित्रण लेखक की कहानियों में बहुआयामी होता है। वे परंपरागत रोल्स से ऊपर उठकर अपनी मर्ज़ी और आकांक्षाओं के साथ अपने जीवन का निर्माण करने की कोशिश करती हैं। उनकी कहानियों में स्त्री पात्रों को विभिन्न प्रकार के सामाजिक, पारिवारिक और मनोवैज्ञानिक मुद्दों का सामना करना पड़ता है, जैसे कि सामाजिक प्रतिष्ठा, पारिवारिक ज़िम्मेदारियाँ, प्रेम स्वतंत्रता, समानता आदि।

वहीं पुरुष पात्रों को भी उनकी कहानियों में महत्वपूर्ण भूमिका मिलती है। कहानियों में स्त्री और पुरुष दोनों के माध्यम से समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रकट किया जाता है। उनकी कहानियों में स्त्री और पुरुष चरित्रों को आपस में संवेदनशीलता, समरसता, सहयोग और समानता के माध्यम से जोड़ा जाता है। स्त्री और पुरुष के बीच प्रेम : लेखक की कहानियों में प्रेम के बारे में व्यापक विचारधारा प्रस्तुत की जाती है। वे दिखाते हैं कि प्रेम सिर्फ लिंग या स्त्री–पुरुष की बाधाओं से परे होता है और वास्तविक प्रेम में स्वतंत्रता और समानता की भावना होती है।

परिवार और संघर्ष :–

लेखक की कहानियों में पुरुष और स्त्री पात्रों को परिवारिक संघर्षों का सामना करना पड़ता है। ये कहानियाँ उनकी त्याग, संघर्ष और परिवार के प्रति समर्पण को दर्शाती हैं।

सामाजिक मुद्दे :–

उनकी कहानियों में स्त्री और पुरुष पात्रों को सामाजिक मुद्दों के साथ संघर्ष करना पड़ता है। कहानियों में स्त्री और पुरुष दोनों के बीच जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत किया जाता है। उनकी कहानियों में वे लोगों के संबंध, परिवार, प्यार, विवाह, सामाजिक मुद्दे और अन्य महत्वपूर्ण विषयों को ध्यान में रखते हैं।

कहानियों में स्त्री पात्रों को सामरिक, साहसिक, अद्यतन और स्वतंत्र दिखाया जाता है। वे अपनी भूमिका में मजबूत स्वाधीन और विचारशील होती हैं। इन कहानियों में स्त्री पात्रों का चित्रण उनकी स्वतंत्रता, साहस और उनके स्वप्नों और इच्छाओं के पीछे पटरी के रूप में किया जाता है।

दूसरी ओर पुरुष पात्रों को भी उनकी कहानियों में महत्वपूर्ण भूमिका मिलती है। वे अपने परिवार, प्रेमी और समाज के लोगों के साथ रिश्तों के बारे में संघर्ष करते हैं।

पारिवारिक बंधन :–

लेखक की कहानियों में पारिवारिक बंधन का महत्वपूर्ण स्थान होता है। स्त्री और पुरुष पात्रों को अपने परिवार के साथ वफादारी, प्रेम और समर्पण की भावना को दिखाया जाता है।

सामाजिक मुद्दे :–

लेखक की कहानियों में स्त्री और पुरुष द्वारा सामाजिक मुद्दों पर ध्यान दिया जाता है। ये मुद्दे समाज के अंधविश्वास, धार्मिक तकरार, सामाजिक विचारधारा आदि हो सकते हैं।

स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता :–

लेखक की कहानियों में स्त्री पात्रों को स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता के माध्यम से प्रशंसा की जाती है। वे अपने जीवन के नियंत्रण में होती हैं।

लेखक ने कहानियों में स्त्री और पुरुष चरित्रों को आपस में समानता, सहयोग और सामरस्य के माध्यम से दर्शाया जाता है। वे अपनी कहानियों में समाजिक और राष्ट्रीय मुद्दों, पारिवारिक रिश्तों, प्यार, स्वतंत्रता और आत्मानुभूति, धार्मिकता, साहित्यिक और कला सम्बन्धित विषयों को उठाते हैं।

"कोख का किराया" कहानी में स्त्री पुरुष संबंधों की पेचीदगी को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया गया है। पहली चीज़ इग्लैंडवासी हो कर भी अपने परम्पराओं और सीमाओं के साथ दोनों पुरुष बँधे रहते हैं। जया भारतीय और अंग्रेज़ी सभ्यता के सामंजस्य के साथ जीती है। वहीं मनप्रीत भारतीय होकर बन्धनों सामाजिक नियमों को मानती ही नहीं ज़िम्मेदारियों से उसका कम वास्ता है पर उसने शादी के बाद कभी गैरी को धोखा नहीं दिया। दोनों में बेहद प्रेम है। मैनी डेविड के प्रति आकर्षित है। जया के सेरोगेसी के प्रस्ताव को वो बिना आगे–पीछे सोचे स्वीकार लेती है। कारण है– डेविड के साथ यौन सम्भोग करने की पुरानी इच्छा का पूरा होना। मैनी खुशी में पागल है कि वह डेविड के बच्चे की माँ बनेगी जो महान फुटबॉल खिलाड़ी है। जिसकी मैनी सबसे बड़ी प्रशंसक है। उसका पैदा किया हुआ बच्चा जया–डेविड का वारिस बनेगा पर गैरी को मैनी का डेविड के बच्चे की माँ बनना नहीं भाता।

उसे लगता है कि उसकी पत्नी अपने साथ ग़लत कर रही है। वह उस प्यार से समझाता है। मैनी नहीं समझती। पर मैनी भी गैरी से प्यार करती है। सामान्य पत्नियों की तरह वह भी शेरिल और नीना के फ़ोन आने पर अपने पति पर शक करती है उससे झगड़ती है। पर मैनी की उच्छृंखलता से नाराज़ गैरी उसे जवाब देता

है– '"क्या नहीं दिया तुम्हें मेरे प्यार में मेरे समर्पण में क्या कमी रह गई थी मैनी। तुम्हारे और मेरे बीच कभी कोई दूसरी औरत आई थी मैनी। फिर यह बच्चा कैसे आ गया मैनी। क्यों आ गया, तुमने मेरे साथ ऐसा क्यों किया मैनी। आग लगा दी है तुमने इस घर की खुशियों में!2 "मैनी के ग़लत फ़ैसले की वज़ह से गैरी और उसके बच्चों की दूरियाँ उससे बढ़ जाती हैं। वह सच्चाई से बाद में रूबरू होती है कि इस सरोगेसी का असली मतलब क्या है पर तब तक सब उसे दूर जा चुके होते हैं।

तेजेंद्र शर्मा अपने नारी पात्रों की पूरी मानसिक स्थिति को बारीक़ी से कहानी में उकेरते हैं। धीरेन्द्र अस्थाना भी कहते हैं कि "पर काया प्रवेश में तेजेन्द्र को दक्षता हासिल है यानि स्त्रियों की यातना दुःख और हर्ष को तेजेन्द्र ने ठीक उसी तरह जिया है जैसे कोई स्त्री ही जी सकती है"। लेखक की कहानियों में स्त्री पात्रों को सामाजिक और पारिवारिक मामलों को संघर्षपूर्ण अवस्थाओं में दिखाया गया है। वे आपने स्वतंत्र विचारों, संघर्षों और अपने सपनों को पूरा करने के प्रयासों के माध्यम से दर्शाए जाते हैं। इन कहानियों में स्त्री पात्रों को अपने परिवार और समाज के साथ साझा बंधुत्व और गर्व का अनुभव होता है।

पुरुष पात्रों को भी उनकी कहानियों में महत्वपूर्ण भूमिका मिलती है। वे परिवार और समाज के मामलों में सामरिक न्यायपूर्ण और आदर्शवादी होते हैं। ये कहानियाँ पुरुष पात्रों की आत्मविश्वास, समर्पण और संघर्ष को दर्शाती है।

कहानियों में स्त्री और पुरुष चरित्रों को एकाधिकार से दर्शाया जाता है जहां वे सामान्य मानवीय मुद्दों को व्यक्त करते हैं। उनकी कहानियों में स्त्री पात्रों को आत्मनिर्भरता, सामरिकता, सामाजिक जागरूकता और स्वतंत्रता का प्रतिष्ठान दिया जाता है। वे अपनी संघर्षों, सपनों और संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करती हैं।

पुरुष पात्रों को भी उनकी कहानियों में महत्वपूर्ण भूमिका मिलती है। वे अपने परिवार, समाज और स्वयं के प्रति जिम्मेदारी और समर्पण के प्रतीक होते हैं। इन कहानियों में पुरुष पात्रों को आत्मविश्वास परिवार के प्रति प्रेम और समाजिक न्याय की प्रतिष्ठा का प्रतिनिधित्व किया जाता है।

स्त्री और पुरुष चरित्रों के माध्यम से लेखक एक संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं जहां समाज, परिवार और स्वतंत्रता के मामलों को समझा जाता है। कहानियों में स्त्री और पुरुष चरित्रों को सामरिकता, संघर्ष और मानवीयता के साथ दर्शाया जाता है। उनकी कहानियों में स्त्री पात्रों को समाजिक मुद्दों, परिवारिक बंधनों, प्रेम अपने सपनों की प्राप्ति और स्वतंत्रता के मामलों में दिखावा दिया जाता है।

लेखक की कहानियों में स्त्री पात्रों को सामाजिक बदलाव की मुख्य शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। उनकी कहानियों में स्त्रियां समाजिक परिवर्तन के लिए लड़ाई लड़ती हैं। अधिकारों की मांग करती हैं और पारिवारिक प्रतिबद्धता को मजबूती से दिखाती हैं।

पुरुष पात्रों को भी महत्वपूर्ण भूमिका मिलती है। वे स्त्रियों के साथ सहयोग करते हैं। सामाजिक न्याय के लिए लड़ते हैं और परिवार के लिए दायित्वपूर्ण होते हैं।

लेखक की कहानियों में सामाजिक यथार्थ बहुत महत्वपूर्ण है। उनकी कहानियाँ व्यापक रूप से समाज में मौजूद सामाजिक मुद्दों, जाति, धर्म, जात, स्त्री पुरुष भेदभाव, सामाजिक विचारधारा और व्यक्तिगत अनुभवों पर प्रकाश डालती हैं। ये कहानियाँ समाज की आवाज हैं और उनमें सामाजिक यथार्थ के मुद्दों को दर्शाती कहानियों में सामाजिक यथार्थ से संबंधित विभिन्न मुद्दे जैसे जाति–धर्म के भेदभाव लैंगिकता समाज की संवेदनशीलता

व्यक्तिगत स्वतंत्रता, आदिवासी मुद्दे, गरीबी और व्यापारिकरण के प्रभाव, भ्रष्टाचार और आतंकवाद आदि पर ध्यान केंद्रित होता है। इन मुद्दों को उठाकर वे सामाजिक, न्याय, सामाजिक सुधार और सद्भाव के प्रतीक की ओर इशारा करते हैं।

उनकी कहानियाँ सामाजिक यथार्थ को वास्तविकता के साथ प्रदर्शित करती हैं और पाठकों को सोचने और समाज के मुद्दों पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है।

उनकी कहानियों में प्रवासी जीवन के माध्यम से समाज के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया जाता है जैसे कि भाषा, संस्कृति, धार्मिकता, परंपरा, समाजी संरचना, आपसी संबंध और अपने निवासी देश के भावनात्मक आयाम।

कहानियों में प्रवासी जीवन के माध्यम से संघर्षों, अस्थायित्व, अस्तित्व के मामलों और आर्थिक असुरक्षा की मुद्दतों को उजागर किया जाता है। ये कहानियाँ विभिन्न प्रवासी समुदायों की जीवनशैली उनके संघर्ष व्यक्तित्व साहित्यिकता और उच्चतम मानवीय आदर्शों की महत्वपूर्णता को प्रकट करती हैं।

लेखक की कहानियों में प्रवासी जीवन का मुख्य उद्देश्य सामाजिक यथार्थ को स्पष्ट करना होता है। इन कहानियों में साहित्य बुनियादी तौर पर देश और काल से जुड़े मनुष्य को पहचानने और परिभाषित करने की रचनात्मक प्रक्रिया है। सामाजिक जीवन चूँकि निरंतर विकासशील है इसलिए मानवीय संबंधों और उसकी अभिव्यक्ति प्रणाली में भी अंतर आना सहज है।

"अभिशप्त" में रजनीकांत विदेश जाकर बसता तो है पर वहाँ की संस्कृति और सभ्यता में ढल नहीं पाता। वह अपने से तीन साल बड़ी उम्र की स्वछंद सोच वाली लड़की निशा से शादी करता है। पर निशा की सारी बातें मानने को विवश है। निशा के पास उसकी बातों को न मानने के अकाट्य तर्क हैं। बेटा होने के बाद वह उसे भी अपनी तरह अंग्रेज़ी क़ायदे सिखाती है। रजनीकांत अपने बेटे से आत्मीय संबंध नहीं बना पाता उसे अपना गाँव संस्कृति हमेशा याद आते हैं।" "वह किसी को भी दोष नहीं दे पाता। .....बस हालात.....!" सिर्फ अच्छा जीवन जीने की चाह में ये रास्ता उसने ही तो चुना था और जिसका परिणाम आज उसकी आँखों के सामने था।"

अजनबीपन, अकेलापन, संत्रास, कुंठा आदि भाव रजनीकांत को महानगरीय जीवन बोध से जोड़ते हैं। स्त्री पुरुष संबंधों के सन्दर्भ में यहाँ संबंध केवल नाम का होता है वह सिर्फ़ इस रिश्ते को ढोता है। तेजेंद्र शर्मा का यह मानना है कि 'विदेशी परिवेश में वैवाहिक बंधन व्यक्ति की अभिरुचि इच्छा व दृष्टिकोण के अलग–अलग होने के कारण अप्रासंगिक हो जाते है। अपनों से विलग होकर असहनीय पीड़ा को व्यक्ति अन्दर ही अन्दर महसूस करता है और प्रत्येक स्थिति को नियति मानकर भोगने के लिए अभिशप्त हो जाता है।

तेजेन्द्र की कहानियों के पात्र अपनी कमज़ोरियों, अच्छाईयों, बुराईयों और यहाँ तक कि अपनी बेशर्मियों और बदत्तमीज़ियों के साथ ज्यों के त्यों हमारे सामने आते हैं लेकिन इन्हीं साधारण पात्रों के असाधारण कहानियों के साथ तेजेन्द्र जब हमारे सामने आते हैं तो चमत्कृत करने के बजाए हमें सोचने पर मजबूर करते हैं कि कहाँ क्या ग़लत हो रहा है"।

निष्कर्ष :–

तेजेंद्र शर्मा की कहानियों में प्रवासी जीवन से निकलने वाले निष्कर्ष बहुतायत रहते हैं। यह कहानियां दर्शाती हैं कि प्रवासी जीवन में जीने वाले लोग किस तरह सामाजिक, आर्थिक और मानसिक संघर्षों का सामना

करते हैं कहानियों के माध्यम से हमें निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं :–

सामाजिक संघर्ष :–

प्रवासी जीवन की कहानियों में सामाजिक संघर्ष एक मुख्य विषय है। ये कहानियां दिखाती हैं कि प्रवासी लोग किस तरह नए सामाजिक परिवेश में अपनी पहचान ढूंढते हैं और अपनी स्थिति को स्थायी बनाने के लिए संघर्ष करते हैं।

भावनात्मक उत्कंठा :–

प्रवासी जीवन की कहानियों में भावनात्मक उत्कंठा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। ये कहानियां दिखाती हैं कि प्रवासी लोग अपनी मातृभूमि को याद करते हैं उससे जुड़े हुए भावों को व्यक्त करते हैं और अपने संबंधों को नए स्थानों में बनाते हैं।

आर्थिक समस्याएं :–

प्रवासी जीवन की कहानियों में आर्थिक समस्याएं भी मुख्य तत्व होती हैं। ये कहानियां दर्शाती हैं कि प्रवासी लोग किस तरह आर्थिक तंगी और उचित मूल्यक्रम के साथ निपटते हैं और अपने सपनों को पूरा करने के लिए कठिनाइयों का सामना करते हैं।

परंपरागत मूल्य :–

प्रवासी जीवन की कहानियों में परंपरागत मूल्य और संस्कृति का महत्व भी दिखाया जाता है। ये कहानियां दर्शाती हैं कि प्रवासी लोग किस तरह अपनी परंपरागत संस्कृति को जीवित रखते हैं, उसे अपनी पहचान का हिस्सा बनाते हैं और उसे आगे बढ़ाने का प्रयास करते हैं।

इन निष्कर्षों के माध्यम से तेजेंद्र शर्मा प्रवासी जीवन के सामाजिक यथार्थ को हमें समझने का मौका देते हैं और हमें यह दिखाते हैं कि प्रवासी लोग अपने जीवन के माध्यम से सामाजिक संघर्षों का सामना करते हैं। संकटों का सामना करते हैं और उच्चतम मानवीय मानदंडों को जीवित रखते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. तेजेंद्र शर्मा (ढिबरी टाईट)
2. तेजेंद्र शर्मा (कोख का किराया)
3. तेजेन्द्र शर्मा विशेष : 'अभिशप्त : एक पुनर्पाठ।

Email :- rc848n@gmail.com

Ph : 9176656887 / 733965880 (WA)

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 34-36

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

अर्चना पैन्यूल की कहानी 'हैप्पी बर्थडे गोल्डन होम' में प्रवासी वृद्ध

जाधव नीता बाबू

शोधार्थी, हिंदी विभाग, अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद ५००००७

आज का साहित्य विविध आयामों से जुड़ा हुआ साहित्य है। आज के साहित्य में किसी एक विषय अथवा किसी एक समस्या पर लक्ष केंद्रित नहीं किया जा सकता। आज का साहित्यकार समाज में फैली अनेक समस्याओं की ओर इशारा करता है। वर्तमान समय में विविध वर्ग अपने दुःख एवं पीड़ा को उजागर करने के लिए किसी एक विषय को केंद्र में रखकर लेखन कार्य करते हुए दिखाई देते है। इसके चलते साहित्य में अनेक विमर्शों ने जन्म लिया है – स्त्री साहित्य, दलित साहित्य, आदिवासी साहित्य, अल्पसंख्यांक साहित्य, वृद्ध साहित्य, प्रवासी साहित्य इत्यादि इसी की देन है। प्रवासी साहित्य से उन साहित्यकारों का संबंध होता है जो मूल तो भारतीय होते है, किन्तु किसी कारणवश किसी दूसरे देश में जाकर स्थित हो गए हो। अपने जीवन निर्वाह के लिए अथवा किसी ओर कारण से। एक भारतीय प्रवासी किसी दूसरे देश, दूसरी संस्कृति को अपनाने में किस मानसिक द्वंद्व से गुजरता है इसका चित्रण प्रवासी भारतीय साहित्य में विश्लेषित किया जाता है। एक भारतीय व्यक्ति को पराया देश पराये लोगों के बीच किस प्रकार अनुभव होता है, इन बातों का विस्तार से वर्णन प्रवासी साहित्य के अंतर्गत किया जाता है।

प्रवासी साहित्य का आरंभ मोहनदास करमचंद गाँधी के 'दक्षिण अफ्रिका' की यात्रा से माना जाता है। दक्षिण अफ्रिका में एक भारतीय प्रवासी के साथ किस प्रकार का व्यवहार किया जाता है। इस बात का ब्यौरा उनके अनुभव एवं उनकी लेखनी द्वारा प्राप्त हो जाता है। इस घटना के बाद भारतीय प्रवासी लेखक उभरकर सामने आने लगे। आज के समय में प्रवासी साहित्य एवं उसके साहित्यकार अलग तरह की साहित्यिक उंचाईयों को छूते हुए नज़र आते है। वर्तमान समय में कादम्बरी मेहरा, अरुणा सवरवाल, दिव्या माथुर, अनिल प्रथा कुमार, तेजेंद्र शर्मा, जकियाजुबैरी, अचला शर्मा, शैल अग्रवाल, पुष्पिता अवस्थी, हंसा दीप, इला प्रसाद, सुषम बेदी, नीना पॉल, अर्चना पैन्यूली आदि भारतीय प्रवासी साहित्यकार हैं। मारीशस, डेनमार्क, जापान, कनाडा, ब्रिटेन, अमेरिका आदि स्थानों को अपने कथा साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत करते है।

आधुनिक प्रवासी साहित्यकार 'अर्चना पैन्यूली' का जन्म 17 मई 1963 में उत्तर प्रदेश ज़िले के कानपुर नामक शहर में हुआ। उन्हें डेनिश की नागरिकता प्राप्त हो चुकी है। अर्चना जी व्यवसाय से अध्यापिका है, जो – नार्थसेलैंड इंटरनेशन स्कूल, डेनमार्क में अध्यापन का कार्य करती है। साथ ही साथ वे हिंदी साहित्य की

नवसाहित्यकार के रूप में उभर रही है।

इनकी एक भारतीय प्रवासी से जुड़ी कहानी 'हैप्पीबर्थडे गोल्डन होम' जिसका विषय है वृद्धावस्था विमर्श। इस कहानी में भारतीय एवं पाश्चात्य परिवेश दोनों की पृष्ठभूमि दिखाई देती है। इस कहानी की शुरुआत एक वृद्धाश्रम को सजाने से होती है। यह वृद्धाश्रम मुंबई के उपनगर अँधेरी पूर्व में स्थित है। इस कहानी के वृद्ध पात्र राघवन जो अवकाश प्राप्त आर्मी अधिकारी थे। यह इस वृद्धाश्रम के पहले वृद्ध थे जिन्होंने इस आश्रम में प्रथम प्रवेश किया था। इस आश्रम की शुरुआत हुई तब वृद्धों की संख्या बहुत अधिक नहीं थी। किन्तु देखते ही देखते इस आश्रम में वृद्ध बढ़ते जा रहे है। इस आश्रम की संस्थापिका इस बात से परेशान होती है कि सरकार की ओर से कोई आर्थिक मदत नहीं मिल पा रही है। यह वृद्धों की सेवा करना अथवा उनकी देखरेख करना यह एक सामाजिक कार्य होते हुए भी सरकार इस बात की ओर नजरंदाज करती हुई दिखाई देती है। इस बात की ओर लेखिका संकेत करती है।

राघवन इस आश्रम के पहले एवं सबसे अधिक बुजुर्ग वृद्ध है। एक समय जो अपने निर्णय खुद लेते है। अपनी मर्जी के हिसाब से जीते है। वृद्धाश्रम में आने के बाद उनमें काफी बदलाव आ गया है। राघवन ने अपना संपूर्ण जीवन अपने बच्चों पर निछावर कर दिया। उन्होंने अपने बेटों को पढ़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। पत्नी के मरणोपरांत बच्चों को माता–पिता दोनों का प्यार दिया। वे एक भरे–पूरे परिवार के सदस्य थे। दो बेटी एवं दो बेटे थे। दोनों बेटियों की शादी करा दी अथवा दोनों बेटों को पढ़ाया लिखाया इस काबिल बनाया कि वे आज अमेरिका जैसे देश में अच्छे पद एवं अच्छी तनखाह पाते थे। अच्छा कमा रहे थे, वही पर वे बस गए थे।

राघवन एक सेनानी होने के कारण वे सीमा पर उन्होंने दुश्मन की बंदूकों का सामना निडर हो कर किया, किन्तु जीवन के अंतिम पड़ाव में अपनों से मिले हुए दुःख को वे झेल नहीं पा रहे थे। इस पीड़ा को लेखिका इस प्रकार व्यक्त करते हुए लिखती है– "आह! दुश्मन की बन्दुक की गोलियां तो राघवन गावकर के सीने को छलनी नहीं कर पायी थीं परन्तु उनका दिल छलनी किया था उनके अपनों ने। राघवन गावकर चार संतानों– दो बेटियों व दो बेटों के पिता हैं। नियति की यह विडम्बना कि राघवन तीन बार सरहदों पर दुश्मनों से मुठभेड़ के बाद घर जीवित लौट आये।"

उपरोक्त कथन से राघवन के असहनीय दुःख को शब्दों में पिरोकर लेखिका व्यक्त किया है। इतना संपन्न परिवार के होने के बावजूद राघवन जी को पराएँ लोगों के बीच अकेले जीवन व्यतीत करना पड़ रहा है। इस अवस्था में अपनों की आवश्यकता होती है। किन्तु अपने ही पराये हो जाते है। इसी विडम्बना से जीवन जी रहे राघवन।

राघवन को बेटों की याद सताती थी और अपने देश से दूर जाने का दुःख भी उन्हें होता था। जब वे पहली बार अमेरिका में मेहमानों की तरह गए तो उनके दोनों बेटे एवं बहुओं ने उनका बड़ा सत्कार किया। उन्हें वहाँ बहुत अच्छा भी लगा। किन्तु दूसरी बार हमेशा के लिए वहां रहने चले जाते है उनके बेटों एवं बहुओं का उनके प्रति स्वभाव बदल जाता है। बड़े बेटे की बहु भारतीय थी किन्तु उनके छोटे बेटे की बहु विदेशी थी। जो विदेश में पली–बड़ी है। दूसरी बार हमेशा के लिए राघवन वहां बसने चले जाते है तब वह शुरूआती दिनों में अपने छोटे बेटे अनूप के पास रहते है। अनूप के पास रहते हुए उनको जो अनुभव आते है उसका उल्लेख लेखिका ने इस प्रकार से किया है– "शाम को जब परिवार सुने घर में लौटता तो राघवन गावकर चहक जाते

द्य फटाफट बिना किसी के बुलाये खुद ही डायनिंग टेबल पर सभी के साथ बैठ जाते। खाने की मेज पर सिर्फ अनूप ही उनके खाने का ख्याल रखता। वे कितने निवाले खा रहे हैं, खा भी रहे हैं या नहीं, कैथरीन को कोई मतलब नहीं। कैथरीन के लिए राघवन सिर्फ अनूप के पिता थे और यह अनूप की जिम्मेदारी थी कि वह खुद सपने पिता का ख्याल रहे। ...सभी गृहकार्य भी बंधे हुए थे। राघवन ने खुद ही अपने हिस्से में भोजन के उपरांत डायनिंग टेबल साफ़ करने व डिश वाशर में जूठे बर्तन लगाने का काम ले लिया था।"

उपरोक्त कथन से पाश्चात्य संकृति की झलक दिखाई देती है। किस प्रकार से एक बहु का रिश्ता अपने ससुर से न के बराबर दिखाई देता है। उसके ससुर उसके लिए जेवल अपने पति के पिता है। उसके पति के पिता की जिम्मेदारी सिर्फ और सिर्फ उसके पति की है। इस विचार का अनुकरण भारत में भी दिखाई दे रहा है। काम को बाटने की प्रवृति यहाँ पर भी दिखाई दे रही है। इसी प्रकार की बहुत सी चीजों का अनुकरण भारतीय समाज कर रहा है।

कर्नल इस तरह के जीवन से तंग आ चुके थे। अपना देश अपने लोगों से दूर आकर यहाँ बसने का उनका फैसला उन्हें गलत लगाने लगते है। वे तो अपने परिवार के लिए अपने बेटों–बहुओं अपने पोती–पोतों के लिए यहाँ आकर बसना चाहता थे। उनको ऐसा लग रहा था जिस तरह वे उन्हें याद करते है। इस तरह की कमी वे भी उनके लिए महसूस करते होंगे। लेकिन यहाँ आने के बाद उनका भ्रम तोड़ जाता है। उनकी जरूरत किसी को नहीं है। वह खुद को बे सहारा सा महसूस करते है।

एक दिन टहलते समय वे फिसल कर गिर जाते है। उनके बेटे उनकी जिम्मेदारी लेने की बजाय अपने पिता से ही कहने लगते है। आप की उम्र बढती जा रही है। आप दूसरों पर निर्भर होने लगे है। ऐसे में हम आपकी सेवा नहीं कर पाएंगे। हम हमारे जीवन में बहुत ज्यादा व्यस्त है। आप को वृद्धाश्रम भेजना ही उचित होगा। बेटों के यह शब्द सुनते ही खुद को असहाय से महसूस करते है। उन्हें युद्ध के मैदान में तोपों बारूद और बम के बीच भी इतनी असयता नहीं महसूस हुआ होगा जितनी असहायता बेटों के आलीशान घरों में उन्होंने महसूस की। यह पैसा यह देखाव किस काम जो अपनों का उनके दुःख में साथी ना बन पाए। भौतिकवादी सोच ने इन्सान को लालची बना दिया है। लालच के चलते इन्सान को कोई भी रिश्ता दिखाई नहीं दे रहा है। इसी का विश्लेषण कहानी के माध्यम से किया गया है।

कुछ दिन बाद दोनों बेटे उन्हें वृद्धाश्रम में रहने के लिए कहते है। राघवन गोरों के बीच में वृद्धाश्रम में रहने से अच्छा अपने देश जाकर रहूँगा यह सोचकर अपने देश लौट आते है। कुछ दिन अपने घर में अकेले रहते है। कुछ दिनों बाद जो नवीन वृद्धाश्रम खुला था वहां दाखिल ले लेते है। देखते ही देखते इस गोल्डन गोम को दस साल पूरे होने आए है। दिन–ब–दिन इसमें रहने वालों की तादाद बढ़ती जा रही है। पाश्चत्य देश से आई हुई वृद्धाश्रम कि कल्पना आज भारतीय लोगों के लिए आवश्यक वस्तु बनती जा रही है।

ई.मेल : jadhavnita358@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 37-41

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी साहित्य : अवधारणा और स्वरूप

डॉ. ललिता कुमारी

सहायक प्राध्यापिका आरकेडीएफ विश्वविद्यालय रांची,

अरगोडा कटहल मोड रोड, दीपाटोली, पुंदाग ऑपोजिट वॉटर टैंक रांची–झारखंड।

प्रस्तावना :–

हिंदी में प्रवासी साहित्य नवयुगीन साहित्य विमर्श है।

हिंदी मे इसका आरंभ प्रेमचन्द की 'यही मेरी मातृभूमि है' (1908) और शुद्रा (1926) के कहानियों से माना जाता है। इन कहानियों में अमेरिका से लौटे भारतीय प्रवासी तथा मॉरीशस ले जाए गए भारतीय बंधुआ मजदूरों की कहानियां है। साहित्य के विशाल वटवृक्ष के अनेक समृद्ध और सशक्त शाखाओं में से एक शाखा प्रवासी साहित्य की भी है, जो दिन प्रतिदिन अपनी रचनाधर्मिता हिंदी साहित्य को सघन बनाने के साथ–साथ पाठक वर्ग को प्रवास के संस्कृति संस्कार एवं उस भूभाग से जुड़े लोगों के स्थिति से अवगत कराने का कार्य कर रही है। प्रवासी हिंदी साहित्य हिंदी साहित्य में जुड़ती एक नवीन विधा एवं चेतना है, जो प्रवासियों के मनोविज्ञान से जुड़ी है जो न केवल एक नई विचारधारा है बल्कि एक नई अंतर्दृष्टि भी है जिसे अपनी जगह बनाने में पर्याप्त स्थान लगा है।

भारतीय प्रवासियों के अधिकारों की लड़ाई महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका से आरंभ किया। हिंदी साहित्य में मॉरीशस में रचित हिंदी साहित्य की एक अलग पहचान है उसके पूरोधाओ श में ग मॉरीशस के अभिमन्यु अनंत का नाम सर्वोपरि है।

इन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं कविता कथा साहित्य आदि की रचनाओं में प्रवासी साहित्य को सम्मिलित किया है। इनका लाल पसीना चर्चित उपन्यास है इसमें भारतवंशियों की वेदनाओं का मर्मस्पर्शी चित्रण है बंगाल के प्रसिद्ध कवि रविंद्रनाथ टैगोर के सुंदर शब्द मानस पटल पर बर्बस ही उभर आते हैं :–

'एक वटवृक्ष को जानने के लिए केवल उस मिट्टी को ही जानना काफी नहीं हैं जिसमें यह पनपता है बल्कि इसकी दूरस्थ अधिभूमि में इसकी बढ़ती विशालता को जानना भी जरूरी है तभी इसकी वास्तविकत जिजीविषा को समझ सकते हैं। वटवृक्ष की शीतल छाया भी अपनी जन्मभूमि से बहुत आगे तक जाती है। भारत पर देशों में भी जी सकता है और बढ़ सकता है राजनीति की भारत नहीं बल्कि आदर्श भारत।'

टैगोर ने इस अंतर को राजनीतिक बनाम आदर्श के रूप में परिभाषित किया है। एक प्रवासी भारतीय

अपने राष्ट्र रूप भारत के प्रति निष्ठावान नहीं हो सकता। क्योंकि उससे भारतीय नागरिक नहीं बनना है हालांकि उसमें भारत के लिए अपना तो और आत्मीयता का भाव जरूर पनपता है क्योंकि वह खुद को कहीं न कहीं अपने पूर्वजों के जन्म स्थान से और भारतीय उपमहाद्वीप के महान सभ्यताओं से जुड़ा हुआ महसूस करता है।

प्रवासी साहित्य की परंपरा बहुत पुरानी नहीं है फिर भी प्रवासी साहित्य की संवेदनात्मक रचना धर्मिता से साहित्य के क्षेत्र में जड़े जमा चुका है। भारत से दूर अन्य देशों में बसे भारतीयों के अथक प्रयासों से आज प्रवासी समृद्ध और सशक्त बन पाया है। प्रवास शब्द उन लोगों के लिए प्रयुक्त हुआ है जो शॉप क्या मजबूरी बस दूर देशों में बसा दिए गए थे या वे स्वयं रोजगार की तलाश में अन्य देशों की यात्रा पर निकल गए और वहीं बस गए लोगों ने अपने परिश्रम से वहां की आबादी में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्वयं को सक्षम बनाया। इस अक्षमता से पहले प्रवासियों को अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ा है यह लोग गुलाम के रूप में वहां ले जाए गए थे इसलिए इन्हें आर्थिक संकटों के साथ–साथ अपनी धरती से दूरी शारीरिक और मानसिक गुलामी और लोगों का बेगाना पन झेलना पड़ा है। उन्हीं में से कुछ लोगों ने अपनी व्यथा कथा को कलम बद्ध कर प्रवासी हिंदी साहित्य की नींव रखने का कार्य किया। 'प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन के अवसर पर मॉरीशस के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत अंधा युग नाटक पर एक बड़ी उपलब्धि मानी जाती है।

मोहन महा ऋषि द्वारा निर्देशित नाटक अंधा युग के दो प्रदर्शन हुए थे प्रथम प्रदर्शन धनवटे रंगमंदिर नागपुर के सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों और गणमान्य अतिथियों के लिए आयोजित किया गया था। दिवस के सत्रों के बाद शाम का नाट्य प्रदर्शन देखने के लिए हॉल दर्शकों से खचाखच भर गया'।

कुछ वर्षों बाद प्रवासियों का साहित्य के क्षेत्र में दखल बढ़ गया। अगले पड़ाव के साहित्यकार और प्रवासी वे लोग थे जो स्वेच्छा से प्रवास कर रहे थे। जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी थी और जो बंधुआ मजदूर के संताप और प्रलाप को छोड़ मानसिक रूप से स्वयं को स्थापित करने की मनोदशा बना चुके थे। पहले गए प्रवासियों से इनकी सोच कार्य और व्यवहार भिन्न थे इन्होंने अपनी अभिव्यक्ति के लिए एवं उसे सुरक्षित रखने के लिए रचना कर्म का सहारा लिया वहां की परिस्थितियों को देखकर मानसिक स्तर पर चेतन और सजग इन लोगों ने अपने संताप को अपनी साहित्यिक रचनाओं में अभिव्यक्त किया। इनमें से बहुत से लोग भारत में रहते हुए अपनी साहित्यिक गतिविधियों के लिए प्रसिद्ध थे, और जो केवल स्वान्तः सुखाय लिखते थे वे प्रवास की समस्याओं और संवेदनाओ से सहज जुड़ गए और अपनी रचनाओं द्वारा प्रवासी साहित्य के पुरोधा बनकर उभरे।

'अपनी भाषा में एक बात बोली,
तेहसे हमें बहुत है प्यार,
महतारी भाषा हमार।'

साहित्य उसे भाषा में लिखा जाता है जिस भाषा के संस्कार व्यक्ति को बचपन से मिलते हैं। यदि साहित्य की अभिव्यक्ति विदेशी भाषा में की जाए तो ऐसा साहित्य संवेदनशील नहीं होगा। विदेशों में बैठे हिंदी साहित्यकार ने अपने लेखन का माध्यम हिंदी चुना क्योंकि इसके माध्यम से वह अपने पीछे छूट चुके देश के आंतरिक संबंध

को बनाए रखना चाहते हैं। प्रवासी लेखक प्रवास के दुख दर्द की संवेदनाओं के साथ अपने देश में संस्कारों को जोड़कर में व्याप्त विषमताओं को कागज पर उतार देता है और यह संवेदनाएं सहज ही सब से जुड़ सबकी संवेदनाएं बन जाती हैं।

'फीजी मैं माता पिता अपने बच्चों को हिंदी इसलिए नहीं पढ़ाते कि इसमें रोजगार की संभावनाएं हैं, बल्कि इसलिए कि उनकी संस्कृति सुरक्षित रहे।'

आज फीजी की युवा पीढ़ी में यह सवाल उठने लग गया है कि हिंदी को लेकर उनका भविष्य क्या है? फीजी में रोजगार के सीमित अवसर और भविष्य में अवसरों की कमी उन्हें यह सोचने पर मजबूर कर देती है। 'इसी कारण आज फीजी का युवा हिंदी बोलने तक ही अपने को सीमित करता जा रहा है और हिंदी बोलचाल की हिंदी तक सिकुड़ती जा रही है। ये कुछ चुनौतियां हैं जिनसे फीजी के समाज, शिक्षा जगत और सरकार निपटना है'।

अपनी इन्हीं संवेदनाओं के प्रयास को प्रवासी साहित्यकारों ने जारी रखा और साहित्य की इस परंपरा को आगे बढ़ाने में अपना सहयोग दिया, उसी का प्रतिफल आज हमारे सामने है कि हम प्रवासियों के जिंदगी से सहज ही जुड़कर उनके प्रवास के अनुभवों को साझा कर रहे हैं। वर्तमान प्रवासी लेखकों से ये अपेक्षाएं की जा रही हैं कि वह समन्वय की रीति से कार्य करें और देश दुनिया के समस्त संकटों से उबर कर साहित्य में समन्वयात्मक दृष्टिकोण स्थापित करें।

'लेखक संस्कृतियों को निकट लाकर समन्वय वादी प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन दे सकता है। आर्थिक जगत में वैश्वीकरण की धारणा जिस प्रकार फलीभूत हो रही है और विश्व गांव का स्वप्न देखा जा रहा है। सूचना क्रांति इस स्वप्न को साकार करती दिखाई पड़ रही है, साहित्य जगत भी विश्व में इस प्रकार का नैकट्य लाया जा सकता है। समन्वय सदस्य साहित्य का सर्वोत्कृष्ट घूम रहा है। आज से लगभग 400 वर्ष पूर्व भक्तिकाल के शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास ने वर्ग वर्ग में बैठे समाज संप्रदायों और विचारधाराओं को समन्वित करने का युग परिवर्तनकारी कार्य किया था। अपनी विशिष्टता के कारण है रामचरितमानस शिवकालीन और सार्वजनिक ग्रंथ बन गया है। आंधी के महान घुमक्कड़ और विराट व्यक्तित्व के धनी साहित्यकार राहुल सांकृत्यायन ने देश–विदेश के अन्य क्षेत्रों का निरीक्षण किया और दार्शनिक दृष्टि से धारा पोस्ट किया है हिंदी साहित्य से बड़ी अपेक्षा समन्वय की हैं'।

वर्तमान में रचे जा रहे साहित्य में प्रवासी लेखक अपने देश के साथ–साथ संपूर्ण विश्व में अपने जुड़ाव को अभिव्यक्त कर रहे हैं। भारतीय प्रवासी लेखक भावनात्मक रूप से भारत से जुड़े हैं यही कारण है कि उन के साहित्य में प्रवासी भूमि के साथ ही अपने देश के प्रति प्रेम की भावना भी देखने को मिलती है। वस्तुतः आज के प्रवासी साहित्य की संपूर्ण दृष्टि भारत के रंग में रंगे हुई हैं उनके साहित्य में आधुनिक दौड और मानसिक द्वंद्व का यथार्थ रूप देखने को मिलता है। यही विभेदन–दृष्टि प्रवासियों के साहित्य को नवीनता प्रदान करती हैं।

हिंदी के लेखक प्रायः वे हैं जो धनार्जन व शिक्षा के लिए इन देशों में गए थे। वे अमेरिका में रहते हुए न तो अमेरिकी संस्कृति के अंग बन पाए ना शुद्ध रूप से भारतीय ही रह पाए इन भारतवंशी परिवारों के नई पीढी तो भारतीय होने की अपेक्षा अमेरिकी बनने के लिए लालायित हो गई, जिसमें इन भारतवंशी परिवारों की पुरानी पीढ़ियों में अपनी जड़ों को लौटने की आकांक्षा उत्पन्न हुई। अमेरिकी और यूरोप के हिंदी साहित्य की यह विशेषता है कि वह अपने जड़ों की, अपनी अस्मिता की तथा अपनी भारतीय पहचान को अभिव्यक्त करता है।

'इन देशों में भारतवंशी लेखक अंग्रेजी में भी लिख रहे हैं कुछ को तो विश्व में ख्याति और धन भी मिला है, भारत वंशी अंग्रेजी लेखक स्वयं को भारत में पैदा हुए 'अमेरिकी लेखक' मानते हैं और कैथरीन मेयो की 'मदर इंडिया' पुस्तक की तरह भारत का कलिया पूर्ण चित्र प्रस्तुत करते हैं। अमेरिका, इंग्लैंड आदि देशों के भारतवंशी हिंदी लेखक स्वयं को भारतीय संस्कृति को मजबूत आधार देते हैं।'

प्रवासी साहित्य की रचना के कारण चाहे जो भी रहे हों, उनमें चित्रित परिस्थितियां चाहे जैसी भी रही हो, किंतु आज का सत्य यह है कि प्रवासी हिंदी साहित्य भारतीय हिंदी साहित्य का अभिन्न अंग बन गया है। प्रवास की समस्याओं और संघर्षों की वास्तविकताओं से भरा यह साहित्य हमें मानव के जुझारू होने कु सीख देने के साथ ही सदैव प्रयत्नशील होने की सीख देता है। 'हिंदी के प्रवासी साहित्य ने अपना एक संसार रचा, जो चाहे छोटा ही था, परंतु उसने एक अलग साहित्य संसार की रचना की जो पूरे विश्व में निरंतर फैलता गया और हिंदी के प्रवासी साहित्य का एक बिंब निर्मित हुआ। और वह मॉरीशस तक सीमित ना था, उसका परिदृश्य वैश्विक बन गया उसकी संरचना में कई शक्तियां काम करती रही। विश्व के कई देशों में विश्व हिंदी सम्मेलन हुए। भारत के हिंदी लेखकों एवं प्रवासी हिंदी लेखकों का भारत में सम्मान होने लगा। देश की साहित्यक अकादमियों ने प्रवासी हिंदी साहित्य पर गोष्ठियां की, प्रवासी भारतीय दिवस आरंभ किए। प्रवासी लेखकों की कृतियां भारत में छपती रही, उन पर चर्चाएं हुई और हिंदी विश्व में प्रवासी हिंदी साहित्य की प्रतिष्ठा बढ़ी हिंदी को मुख्यधारा में उचित स्थान देने की मांग उठने लगी। हिंदी साहित्य का उपर्युक्त प्रयास श्लाघ्य है।'

1990 के दशक के बाद भारतीयों का हिंदी के प्रति उत्साह कई कारणों से यकीनन बड़ा है। एक तो अब भारतीयों का भारत से और उसके भाषाओं से इंटरनेट, व्हाट्सएप और फोन के कारण नाता गहरा हो गया। भारत में पिछले कुछ सालों में हिंदी के समाचार पत्रों और टीवी चौनलों में काफी वृद्धि हुई है। अंग्रेजी के कार्यक्रमों में अब पत्रकार को भी मोदी और केजरीवाल जैसे लोगों से हिंदी में ही प्रश्न पूछने पड़ते हैं। तीसरा कारण यह है कि अब भारतीय नेता अमेरिका के टाइम्स स्क्वेयर में खड़े होकर हिंदी में सार्वजनिक भाषण देने में गर्व करते हैं, शरमाते नहीं। अमेरिका के राष्ट्रपति ओबामा की अपनी भारत यात्रा के दौरान अपनी भाषा में कुछ हिंदी के वाक्यांश बोलने का प्रयास करते हैं जैसे 'मेरा प्यारा भारत नमस्कार' चौथा कारण है कि अमेरिका के अहिंदी भाषी भारतीय मूल के अप्रवासी भी हिंदी को अपनी पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा समझते हैं न्यूजर्सी के एक जाने–माने भारतीय मूल के भूतपूर्व एसेम्बली मैं अपनी दक्षिण भारतीय हिंदी में भाषण देते हुए बड़े गर्व से कहते हैं कि अमेरिका में हमारी भारतीय पहचान की भाषा हिंदी है, भले ही हमारे घर की भाषा गुजराती या तेलगू

हो। न्यूयॉर्क में आयोजित आठवें विश्व हिंदी सम्मेलन जुलाई 2007 में संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव महामहिम बान की मून ने, जो कोरियाई है, अपने भाषण में हिंदी के उपयोग और हिंदी के महत्व को रेखांकित करके दक्षिण कोरिया में हिंदी एवं भारत प्रेम की स्थापना की है।

प्रवासी हिंदी साहित्य लेखन की यह परंपरा दीर्घकाल तक यथावत बनी रहे। ताकि आने वाले समय की नई भारतीय पीढ़ी को प्रवास से संदर्भित सारी जानकारी सहज ही मिलती रहे। प्रवासी लेखक अपने लेखन की परंपरा को इसी प्रकार निभाते रहें और भारतवंशी होने के गर्व पर सदा अपनी लेखनी से उद्वेलित करते रहें, ऐसा कर प्रवासी साहित्यकार स्वयं को सहज परिभाषित कर सकेंगे।

संदर्भ सूची :-

1. प्रवासी भारतीयों में हिंदी की कहानी सुरेंद्र गंभीर पृ० 61, प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण– 2017
2. विश्व हिंदी पत्रिका 2010, संपादक– गंगाधर सिंह सुखलाल पृष्ठ– 29
3. विश्व हिंदी पत्रिका 2010, संपादक– गंगाधर सिंह सुखलाल पृष्ठ– 183
4. प्रवासी भारतीयों में हिंदी कहानी, सुरेंद्र गंभीर, प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण– 2017– पृ० 78,
5. हिंदी का प्रवासी साहित्य, डॉ कमल किशोर गोयनका, पृ०– 47, प्रकाशन अंतिम संस्करण, गाजियाबाद– 2011।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 42-44

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

राहुल सांकृत्यायन का यात्रा साहित्य

प्रो. अनिल अर्जुन अहिवले
शिवाजी तालीम के पास, फलटन, जिला– सतारा (महाराष्ट्र)

हिन्दी साहित्य में महापंडित राहुल सांकृत्यायन का नाम इतिहास प्रसिद्ध है तथा अमर विभूतियों में गिना जाता है। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले में पन्दहा नामक गांव में अपने नाना पं. रामशरण पाठक के यहां सन् 1893 ई. में हुआ था। इनके पिता पण्डित गोवर्धन पाण्डे एक कट्टर सनातनी ब्राह्मण थे। राहुल जी का बचपन का नाम केदारनाथ पाण्डेय था। पर बौद्ध धर्म में आस्था होने के कारण इन्होंने अपना नाम बदलकर राहुल रख लिया। संस्कृति गोत्र होने के कारण उन्हें सांकृत्यायन कहा गया।

महामण्डित राहुल सांकृत्यायन ने हिंदी भाषा और साहित्य में जो महान सेवा की उससे हम कभी उऋण नहीं हो सकते। हिन्दी में यात्रा साहित्य के ये प्रवर्तक माने जाते हैं। उनकी कृतियां हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है। राहुल जी विलक्षण प्रतिभा के धनी एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने घुमक्कड़ी को अपने जीवन का ध्येय बना रखा था। इसीलिये हम कह सकते है कि राहुल जी का समूचा जीवन घुमक्कड़ी का था। भिन्न–भिन्न भाषा साहित्य प्राचीन संस्कृत, पालि, पाकृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं का अनवरत अध्ययन मनन करने का अपूर्व वैशिष्ट्य उनमें था। प्राचीन और नवीन साहित्य की दृष्टि से जितनी पकड़ और गहरी पैठ राहुल जी की थी ऐसी बहुत ही कम देखने को मिलती है।

वास्तविकता यह है कि जिस प्रकार उनके पांव नहीं रुके, उसी प्रकार उनकी लेखनी भी निरन्तर चलती रही। विभिन्न विषयों पर उन्होंने 150 से अधिक ग्रंथों का प्रणयन किया है। विषय के अनुसार राहुल जी की भाषा–शैली अपना स्वरूप निर्धारित करती हैं राहुल जी बहुमुखी प्रतिभा–सम्पन्न विचारक है। धर्म, दर्शन लोकसाहित्य, यात्रा साहित्य, इतिहास, राजनीति, जीवनी कोश, प्राचीन तालपोथियों का सम्पादन आदि विविध क्षेत्रों में स्तुत्य कार्य किया है। राहुल जी ने प्राचीन खण्डहरों से गणतंत्रीय प्रणाली की खोज की। और बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में उन्होंने यात्रा वृतांत, यात्रा साहित्य तथा विश्व दर्शन के क्षेत्र में साहित्यिक योगदान दिया। इसीलिये इन्हें हिन्दी यात्रा साहित्य के पितामह कहा जाता है।

राहुल संकृत्यायन वास्तव में ज्ञान के लिये गहरे असंतोष में थे, इसी असंतोष को पूरा करने के लिये वे हमेशा तत्पर रहे। उन्होंने हिन्दी साहित्य को विपुल भण्डार दिया। उन्होंने हिन्दी साहित्य के अतिरिक्त भारत के कई अन्य क्षेत्रों के लिये भी शोध कार्य किया। वे वास्तव में महापंडित थे। राहुल जी की प्रतिभा बहुमुखी थी और वे सम्पन्न विचारक थे। उनकी रचनाओं में प्राचीन के प्रति आस्था इतिहास के प्रति गौरव और वर्तमान के प्रति सधी हुई दृष्टि का समन्वय देखने को मिलता है। राहुल जी ने प्राचीन और वर्तमान भारतीय साहित्य चिंतन को

पूर्ण रूप से आत्मसात् कर मौलिक दृष्टि देने का प्रयास किया। उनके उपन्यास और कहानियाँ बिल्कुल नये दृष्टिकोण को हमारे सामने रखते हैं।

राहुल ने अपनी यात्रा के अनुभवों को आत्मसात् करते हुये घुमक्कड़ शास्त्र भी रचा। वे एक ऐसे घुमक्कड़ थे जो सच्चे ज्ञान की तलाश में था और जब भी सच को दबाने की कोशिश की गई तो वह बागी हो गया। राष्ट्र के लिये राष्ट्र भाषा के वे प्रबल हिमायती थे। बिना भाषा के राष्ट्र गूंगा है ऐसा उनका मानना था। वे राष्ट्र भाषा तथा जनपदीय भाषाओं के विकास व उन्नति में किसी प्रकार का विरोध नहीं देखते थे।

हिन्दी को राहुल सांकृत्यायन ने बहुत प्यार दिया। उन्हीं के अपने शब्द है, ''मैने नाम बदला वेशभूषा बदली, खान–पान बदला लेकिन हिन्दी के सम्बन्ध में मैंने विचारों में मैंने कोई परिवर्तन नहीं किया। ''राहुल जी की प्रासंगिक हैं। उनकी उक्तियाँ सूत्र–रूप में हमारा मार्गदर्शन करती है। हिन्दी को खड़ी बोली नाम भी राहुल जी ने ही दिया था।

हिंदी के प्रति राहुल सांकृत्यायन की प्रतिबद्धता का अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि वे कभी भी रेडियो में कोई कार्यक्रम देने केवल इसलिये नहीं गये क्योंकि उसका कॉन्ट्रेक्ट पेपर अंग्रेजी में होता था। इसीलिये जब राष्ट्र भाषा का सवाल उठा तो राहुल सांकृत्यायन ने हिंदी–उर्दू मिश्रित हिंदुस्तानी जवान के बजाय हिन्दी का समर्थन किया।

राहुल सांकृत्यायन की कृतियां :–

राहुल सांकृत्यायन ने लगभग 150 ग्रन्थों की रचना की जिनमें से प्रमुख निम्न है–

1. **यात्रा साहित्य** – 1. मेरी लद्दाख यात्रा, 2. मेरी तिब्बत यात्रा, 3. मेरी यूरोप यात्रा, 4. यात्रा के पन्ने, 5. रूस में पच्चीस मास, 6. घुमक्कड़ शास्त्र, एशिया के दुर्लभ भू–खण्डों में आदि।
2. **कहानी संग्रह** :– 1. कनैला की कथा 2. सतमी के बच्चे, 3. बहुरंगी मधुपुरी 4. वोल्गा से गंगा आदि।
3. **आत्म कथा** :– मेरी जीवन यात्रा।
4. **धर्म और दर्शन** :– 1. बौद्ध दर्शन 2. दर्शन दिग्दर्शन 3. धम्मपद् 4. बुद्धचर्या 5. मज्झिमनिकाय आदि।
5. **कोश ग्रन्थ** :– 1. शासन शब्द कोश, 2. राष्ट्रभाषा कोश, 3. तिब्बती हिंदी कोश।
6. **जीवनी साहित्य** :– 1. नये भारत के नये नेता 2. महात्मा बुद्ध 3. कार्ल माक्स 4. लेनिन, स्टालिन 5. सरदार पृथ्वी सिंह 6. वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली आदि।
7. **उपन्यास** :– 1. मधुर स्वप्न, 2. जीने के लिये, 3. विस्मृत यात्री, 4. जय यौधेय, 5. सप्त सिंधु, 6. सिंह सेनापति, 7. दिवोदास आदि।
8. **साहित्य और इतिहास** :– 1. मध्य एशिया का इतिहास 2. इस्लाम धर्म की रूप रेखा 3. आदि हिन्दी की कहानियां 4. दक्खिनी हिन्दी काव्य धारा आदि।
9. **विज्ञान** :– 1. विश्व की रूपरेखाएं।
10. **देश–दर्शन** :– 1. किन्नर देश 2. सोवियत भूमि 3. जौनसार–देहरादून 4. हिमालय प्रदेश आदि।
11. **रेखाचित्र संस्मरण** :– 1. बचपन की स्मृतियां, 2. जिनका मैं कृतज्ञ 3. मेरे असहयोग के साथी।

इस प्रकार राहुल सांकृत्यायन जीवन यात्रा साहित्य के प्रवर्तक माने जाते है। पालि भाषा और साहित्य के प्रति भी उनका विशेष अनुराग था। उन्होंने अनेक प्राचीन पालि ग्रन्थों को प्रकाश में लाने का श्रम साध्य कार्य

सम्पन्न किया।

राहुल सांकृत्यायन के शब्दों में समदर्शिता घुमक्कड़ का एकमात्र दृष्टिकोण है और आत्मीयता उनके हर एक बर्ताव का सार है। जब वे कक्षा–2 या कक्षा 3 में पहुँचे तो उर्दू की नयी पाठ्य पुस्तक में उन्हें एक प्रेरणाप्रद गुरु मंत्र मिल गया। उन्हें एक नया शेर पढ़ने को मिला :–

''सैर कर दुनिया की गालिब जिन्दगानी फिर कहाँ?
जिन्दगानी अगर कुछ रही तो, नौजवानी फिर कहाँ?''

इस विषय में राहुल जी ने स्वयं लिखा है ''इस शेर ने मेरे मन और भविष्य के जीवन पर बहुत प्रभाव डाला।''

1907 में वे घर से भागकर चार मास तक कोलकाता में रहे और 1909 में हरिद्वार 16 साल केदार फिर कोलकाता भाग गये। काशी में रहकर संस्कृत का अध्ययन किया और 17वें वर्ष में वैराग्य को मानस बना लिया। वे पैदल ही अयोध्या होते हुये मुरादाबाद पहुँचे और वहाँ से हरिद्वार गये। हरिद्वार से हिमालय देव प्रयाग टेहरी, जमनोत्री गंगोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ की यात्रा की। फिर प्रयाग की प्रदर्शनी देखने के लिये घर से निकल गये। बनारस में रहकर इन्होंने संस्कृत अंग्रेजी और हिंदी का अध्ययन किया। इसके बाद परसा (बिहार) मठ के उत्तराधिकारी बने। वहाँ से भागलपुरी, रामेश्वर आदि तीर्थो की यात्रा की। तिरुमिशी गये वहां चार महीने रहे और दक्षिण भारत के तीर्थो के दर्शन किये। सर्वप्रथम तिरुपति बाला जी के दर्शन किये आगरा में रहकर अरबी भाषा का अध्ययन किया। वहाँ से लाहौर गये और इस प्रकार इन्होंने भारत की अनेक बार यात्राएं की। 1923 में उन्होंने पहली बार नेपाल की यात्रा की और वहाँ डेढ़ मास तक रहे। 1936 में और फिर 1953 में उन्होंने नेपाल की यात्राएं की। 1927 में वे श्रीलंका गये और वहां उन्नीस मास तक अध्यापन कार्य किया।

1960 में वे पुनः श्रीलंका गये और वहां रहकर अनेक ग्रंन्थों की रचना की। 1932 में यूरोप, 1935 में जापान, कोरिया, मंचूरिया, सोवियत भूमि और ईरान की यात्रा की। 1938 में अफगानिस्तान 1945 में ईरान और 1945 से 1947 तक पच्चीय मास लेनिन ग्राद विश्वविद्यालय रूस में प्राध्यापक कार्य किया। वे चीन भी गये और तिब्बत भी।

इस प्रकार उनका सम्पूर्ण जीवन एक यात्रा ही बना रहा। उन्होंने देश–विदेश के अनेकानेक स्थानों को न केवल देखा अपितु उन पर ग्रन्थों की रचना भी की। सन् 1923 से उनकी शुरू हुई विदेश यात्राओं का सिलसिला शुरू हुआ तो फिर इसका अंत उनके जीवन के साथ ही हुआ।

Email : anilahiwale99@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 45-47

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी हिन्दी साहित्य

डॉ. इन्दुबाला बेन हरिसिंह गढ़वी
असिसटेंट, प्रोफेसर इन हिन्दी (वर्ग २),
श्री भाईकाका गवर्मेंट आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज, सोजित्रा, आणंद (गुजरात), पिन–३८७२४०

हिन्दी के प्रवासी साहित्य की अपनी एक विशिष्टता है, जो उसकी संवेदना, परिपक्व जीवन दृष्टि और परिवेश में दिखाई पड़ती है। प्रवासी साहित्य हिंदी भाषा के वैश्विक पटल पर हो रहे विस्तार एवं चर्चा को समझने की एक दृष्टि भी विकसित करता है। प्रवासी साहित्य भारत से अपनी संस्कृति भाषा और समाज से कटकर जीविका के लिए विदेशों में संघर्ष करते भारतीयों की मनोदशा और आंतरिक पीड़ा को अभिव्यक्त करता है। अपने परिवार और समाज से दूर इन भारतीयों के लिए लेखन अपने एकांत को समाप्त करने का सबसे सशक्त जरिया है। इसके अध्ययन के दो मूल आधार होंगे। पहला आधार तो उन गिरमिटिया मजदूरों के वंशजों के लेखन का है जो अपने समाज से काटकर मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिडाड में आदि स्थानों पर बसा दिये गए। उन गिरमिटिया मजदूरों के दूसरी पीढ़ी जो वहीं पैदा हुई लेकिन अपने पूर्वजों की पीड़ा को भूला नहीं पायी और उस दर्द को कहानी, उपन्यास, कविता आदि माध्यमों में व्यक्त किया। दूसरा आधार, उन भारतीय लोगों का है जो जीविकोपार्जन के लिए एनआरआई के रूप में सुख–सुविधा की चाह विदेशों में बस तो गए लेकिन जल्द ही उन्हें एहसास हो गयी कि अपनी भाषा, संस्कृति और समाज की संवेदना उनसे छूट रही है। लिहाज़ा उन्होंने लिखना शुरू किया, मोरिशस, फिजी, सूरीनाम आदि देशों में भारतवासियों की दूसरी–तीसरी पीढी के साहित्य में उनका देश बोलता है जिस पर निश्चित ही भारतीय संस्कृति, दर्शन या मूल्यों का गहरा प्रभाव है। अमेरिका, ब्रिटन आदि देशों के लेखक पहली पीढी के हैं और इसी कारण उनकी रचनाओं में स्वदेश–विदेश दोनों हैं। इनकी रचनाओं में अमरिका एवं यूरोप के देशों की सुख–समृद्धि तथा तनाव एवं संघर्ष है और साथ ही स्वदेश की मिट्टी की मधुर स्मृति भी गुँथी हुई है। इस तरह दोनों ही प्रकार के प्रवासी साहित्य में भारत उपस्थित है, चाहे उसकी धर्म–संस्कृति के रूप में, चाहे नॉस्टेल्जिया अथवा अस्तित्व एवं अस्मिता की निर्माण के सूत्र की तलाश के रूप में भारत के हिन्दी समाज के लिए यह अपेक्षाकृत नई वस्तु है, जिसमें नये कथानक और पात्रों के माध्यम से प्रवासी भारतीयों के जीवन संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है। हिन्दी के इस प्रवासी साहित्य का संसार अब इतना व्यापक हो चुका है कि उसने अपना एक विशिष्ट स्थान बनाने में सफलता हासिल कर ली है। प्रवासी साहित्य आज ऐसे मुकाम पर पहुँच चुका है जहाँ वह हिन्दी साहित्य के व्यापक मानचित्र में उचित एवं सम्मानपूर्ण स्थान का मजबूत दावेदार बन बैठा है।

इधर के दो दशकों में ब्रिटेन में रहने वाले प्रवासी भारतीय साहित्यकारों ने तेजी से दुनिया भर में अपनी

रचनाओं से अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया।

आधुनिक हिंदी साहित्य के इतिहास में हिंदी प्रवासी साहित्य की उपस्थिति, उसका सर्वेक्षण और विवेचन उसके स्वतन्त्र अस्तित्व के साथ उसकी प्रतिष्ठा एवं महत्व का प्रमाण है। वास्तव में हिंदी प्रवासी साहित्य तो हिंदी साहित्य की एक शाखा है और यदि हम इस शाखा को काट देंगे तो हिंदी की जड़ें कैसे मजबूत हो सकेंगी। हिंदी भाषा और साहित्य की जड़ें चाहे स्वदेश में हो या परदेश में, वह मजबूत तभी होंगी जब उसकी शाखाएं फूलवती और फलवती होंगी। हिंदी प्रवासी साहित्य हिंदी के विराट संसार का अंग है।"

वैसे देखा जाए तो 'भारत में प्रवासी भारतीयों की चर्चा तथा उनके सम्बन्ध में गंभीर चिंतन मनन का शुभारम्भ महात्मा गांधी द्वारा दक्षिण अफ्रिका में व्यतीत किये गये लगभग इक्कीस वर्षों के उस संघर्षमयी जीवन यात्रा से माना जा सकता है जिसने पूरे विश्व का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। सही अर्थों में यह भारत के प्रवासी समुदाय से एकात्म स्थापित करने की एक ऐसी आरम्भिक पहल थी जिसनें जल्द ही विभिन्न देशों में रहने वाले गिरमिटिया बने भारतीय मजदूरों में एक नयी संचेतना का संचार किया। उनमें स्वत्व का भाव जागृत कर अपनी संस्कृति एवं भाषा को अक्षुण्ण बनाए रखने का भाव पुष्ट किया। उनकी इसी भावना की अभिव्यक्ति कालान्तर में साहित्य के जिस रूप से हुई उनमें प्रवासी साहित्य के आरम्भिक रूप की तलाश की जा सकती है। हिन्दी के प्रवासी साहित्य की स्थिति अंग्रेजी से तनिक भिन्न है। हिन्दी लेखन की शुरुआत पत्रकारिता से हुई। आज से लगभग 128 वर्ष पहले वर्ष 1883 में कालाकांकर नरेश राजा रामपाल सिंह के संपादन में पहला हिन्दी अंग्रेजी त्रैमासिक समाचार पत्र हिन्दोस्थान प्रकाशित हुआ।

हालांकि आगे चलकर 1884 में इंग्लैण्ड में यह केवल अंग्रेजी में निकलने लगा लेकिन भारत में 1885 से हिन्दी में प्रकाशित होने लगा। इसके बाद हिन्दी प्रचार परिषद, लन्दन के तत्वावधान में वर्ष 1964 में प्रवासिनी त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन होने लगा। इसका प्रकाशन ज्योति प्रिंटर, 40, स्टार स्ट्रीट, लन्दन से होता था और इसका कार्यालय था– 15, क्रॉच हॉल रोड, लन्दन एन– 8 पर। इसके संपादक थे श्री धर्मेन्द्र गौतम और पत्रिका में श्री राधेश्याम सोनी, श्री जगदीश मित्र कौशल, श्री बैरागी, श्री मोहन गुप्त, श्री विनोद पांडे, श्री सत्यंदेव प्रिंजा, अबू अब्राहम, कान्ता पटेल आदि का लेखकीय सहयोग होता था। इसके बाद जून, 1964 में श्री रमेश कुमार सोनी ने मिलाप वीकली पत्र का संपादन और प्रकाशन प्रारंभ किया तथा वर्ष 1966 से इसमें हिन्दी के भी दो पृष्ठ दिए जाने लगे। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि आठ पृष्ठों का यह साप्ताहिक समाचार पत्र अब भी प्रकाशित होता है और इस प्रकार ब्रिटेन में इसे उर्दू–हिन्दी का सर्वाधिक दीर्घ अवधि तक प्रकाशित होने वाला अखबार कहना उचित ही होगा।

श्री जगदीश मित्र कौशल के संपादन में 23 मार्च, 1971 को लन्दन से ही अमरदीप साप्ताहिक का प्रकाशन प्रारंभ हुआ और लगभग 32 वर्ष तक प्रकाशन के बाद यह वर्ष 2003 में बन्द हो गया। अमरदीप साप्ताहिक के महत्व को देखते हुए श्री जगदीश मित्र कौशल को भारतीय उच्चायोग की ओर से पहला आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हिन्दी पत्रकारिता सम्मान वर्ष 2006 के लिए दिया गया। पत्रिका चेतक का प्रकाशन भी श्री नरेश भारतीय के संपादन में कुछ समय के लिए हुआ। तत्पश्चात् वर्ष 1997 में त्रैमासिक पत्रिका पुरवाई का प्रकाशन, डॉ पदमेश गुप्त के संपादन में शुरू हुआ जो अभी तक जारी है। हिन्दी के लिए पूर्णतः समर्पित इस पत्रिका ने ब्रिटेन के हिन्दी रचनाकारों को एक मंच दिया। इस बीच, भारतीय उच्चायोग की छमाही पत्रिका भारत

भवन का प्रकाशन भी शुरू हुआ जो रुक–रुककर जारी है। श्रीमती शैल अग्रवाल ने लेखनी नामक एक मासिक वैब पत्रिका का प्रकाशन भी वर्ष 2008 से प्रारंभ किया है।

साहित्यिक रचनाओं में पहली प्रकाशित रचना डॉ. सत्येन्द्र श्रीवास्तव की है मिसेज जोन्से और उनकी वह गली। यह एक लंबी कविता है। इसके बाद डॉ. निखिल कौशिक का काव्य संकलन– तुम लन्दन आना चाहते हो, वर्ष 1987 में प्रकाशित हुआ। सच तो यह है कि ब्रिटेन के प्रवासी रचनाकारों का कुल इतिहास लगभग 30 वर्ष का है जिसमें कि उनकी रचनाएँ पुस्तकाकार प्रकाशित हुई हैं। प्रकाशन की गति से देखें तो ब्रिटेन में हिन्दी साहित्य का भविष्य काफी उज्ज्वल दिखाई देता है। अभी तक ब्रिटेन में कुल 106 काव्य संग्रह, 12 उपन्यास, 06 नाटक एकांकी, 06 निबंध जीवनियाँ, 07 यात्रावृत्त संस्मरण, 36 कहानी संग्रह, इतिहास दर्शन पर 05 ग्रन्थ, शोध हिन्दी् शिक्षण विविध ग्रन्थों के रूप में कुल 25 पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है।

ब्रिटेन के प्रमुख रचनाकारों में शामिल हैं– डॉ. सत्येन्द्र श्रीवास्तरव, श्री प्राण शर्मा, श्रीमती उषा राजे सक्सेना, डॉ. कृष्ण कुमार, श्री तेजिन्दर शर्मा, डॉ. कविता वाचक्नवी, डॉ. निखिल कौशिक, श्री मोहन राणा, श्रीमती दिव्या माथुर, (स्वर्गीय) डॉ. गौतम सचदेव, डॉ. पद्मेश गुप्ता, श्री महेन्द्र दवेसर दीपक, श्री रमेश पटेल, श्रीमती शैल अग्रवाल, श्री भारतेन्दु विमल, श्रीमती उषा वर्मा, श्रीमती कादम्बरी मेहरा, श्रीमती पुष्पा भार्गव, श्रीमती विद्या मायर, श्रीमती कीर्ति चौधरी, श्रीमती प्रियम्वदा मिश्रा, श्रीमती अरुणा सभरवाल, श्रीमती श्यामा कुमार, डॉ. इन्दिरा आनंद, श्री वेद मित्र मोहला, श्रीमती नीना पॉल, श्री नरेश अरोड़ा, श्रीमती अचला शर्मा, श्रीमती चंचल जैन, श्रीमती स्वर्ण तलवाड़, डॉ. कृष्ण कन्हैया, श्रीमती जय वर्मा, श्री धर्मपाल शर्मा, श्री सुरेन्द्रनाथ लाल, श्री रमेश वैश्या मुरादाबादी, श्री सोहन राही, श्रीमती रमा जोशी, डॉ. श्रीपति उपाध्याय, श्री एस. पी. गुप्ता, श्री जगभूषण खरबन्दा, श्री यश गुप्ता, श्री जे एस नागरा, श्री मंगत भारद्वाज, श्री जगदीश मित्र, श्री रिफत शमीम, श्री इस्माइल चुनारा, श्रीमती तोषी अमृता, श्रीमती राज मोदगिल, श्रीमती उर्मिल भारद्वाज, श्रीमती निर्मल परींजा आदि।

भारत के बाहर आज सारी दुनिया में भारतवासी फैले हुए हैं. इनके हिंदी रचना कर्म को आज प्रवासी हिंदी साहित्य के रूप में जाना जाता है। यदि अन्य विधाओं को छोड़ भी दें और केवल प्रवासी रचनाकारों की हिंदी कविता पर ही ध्यान दें, तो पता चलता है कि ऐसे कवियों की संख्या सैकड़ों में है।

संदर्भ सूचि :–

1. कमल किशोर गोयनका, विश्व हिंदी रचना, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, नई दिल्ली–2003
2. प्रवासी साहित्य : जोहान्सबर्ग से आगे, प्रधान संपादक, डॉ. कमल किशोर गोयनका, प्रकाशक–विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली, संस्करण–2015
3. कमल किशोर गोयनका : प्रवासी साहित्य गवेषणा (अंक–१०३), जुलाई–सितम्बर –२०१४, पृष्ठ. ११
4. डॉ. कमल किशोर गोयनका, हिंदी का प्रवासी साहित्य, प्रथम संस्करण 2011, अमित।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 48-50

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी हिंदी साहित्य में मानवीय संवेदना भूमंडलीकरण और समकालीन हिंदी यात्रा साहित्य

(यात्रा–जापान की – ममता कालिया के संदर्भ में)

प्रा. डॉ. बळवंत बी. एस

सहयोगी प्राध्यापक, कर्मवीर भाऊराव पाटिल, महाविद्यालय, पंढरपुर (स्वायत्त)

'सैर कर दुनिया की गाफिल,
जिंदगानी फिर कहाँ?
जिंदगी भर कुछ रही,
तो नौवजवानी फिर कहाँ?'

इस्माइल (मेरठ) ने ठीक कहा है कि–दुनिया में मानुष जन्म एक बार ही होता है। और जवानी भी एक बार ही आती है। साहसी और मनस्वी तरुण–तरुणियों को इस अवसर से हाथ नही धोना चाहिए। कमर बांध लो भावी घुमक्कड़ो। संसार तुम्हारे स्वागत के लिए बेकरार है। इस प्रकार पुराने लोगों ने ज्ञान प्राप्ति के लिए कुछ साधनों का विचार किया है। विद्वानों ने कहा की, पंडितो से मैत्री और सभाओं में संचार के साथ देशाटन–तीर्थटन का महत्व समझाया है। देश–विदेश का बदलता परिवेश और प्रकृति के विविध परिवर्तित रूपों का दर्शन करना आपने आप में एक अनूठा अनुभव है। जन–जन के जीवन की प्रेरणाओं को समझना उनके आस्था और विश्वासों को जानना ज्ञान प्राप्ति का साधन है। प्रवास से ही प्रकृति के नानारंग, गंधमयी, छवि का दर्शन होता है। अर्थात प्रवास मनुष्य की प्रगति का सोपान है।

'प्रवासी' यात्रा साहित्य का सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक स्तर पर अध्ययन किया जाता है। प्रवास मानव जीवन का अभिन्न अंग है। प्रवास साहित्य को विविध विद्वानों ने परिभाषा में बांधने की कोशिश की है–जैसे पंडित गणेश दत्त शास्त्री के अनुसार–प्रवास शब्द का अर्थ ""विजय की इच्छा से राजाओं का जाना, धावा करना, या देवता के उद्देश्य से एक प्रकार से उत्सव संपन्न करना माना जाता है।" "श्री.नगेन्द्र नाथ जी का मानना है कि "विजय इच्छा से कही जाना, चढ़ाई, पर्याय, व्रज्या, अभिनिर्याण, प्रस्थान, गमन, प्रस्थिति एक स्थान से दूसरे स्थान को जाने की क्रिया आदि लगाए है।"

प्रवास यात्रा एक घुमक्कड़ धर्म है प्रवास वर्णन का अध्ययन करते समय प्रवास वर्णन के कुछ तत्वों की मीमांसा भी महत्वपूर्ण होती है, जैसे प्राकृतिक सौदर्यं, इतिहास बोध, उदेश्य, शैली आदि। इसके द्वारा हमें देश–विदेश, प्राकृतिक सौन्दर्य, गांव–शहर, स्त्री–पुरुष, रहन–सहन, विश्वास आदि की झलक स्पष्ट दिखाई देती

है। इतना नहीं तो इससे मनोरंजन तो होता है, लेकिन प्रवास यात्रा साहित्य पढने वालों के मन में कुतूहल भी निर्माण होता है।

'प्रवासी' यात्रा साहित्य के आधार पर यात्रा के कई प्रकार भी हो सकते है, जैसे स्थल यात्रा, जल यात्रा, आकाश यात्रा, पशु पक्षियों की यात्रा, धार्मिक यात्रा, शिकारियों की यात्रा, सांस्कृतिक यात्रा, साहित्यिक यात्रा, ऐतिहासिक यात्रा, भौगोलिक यात्रा, राजनितिक यात्रा, प्रमोद यात्रा, आदि के कारण मनुष्य को देश–विदेश की जानकारी मिलती है। संस्कृति का आदान–प्रदान होता है।

ममता कालिया हिंदी साहित्य की प्रसिद्ध कहानीकार, उपन्यासकार, संस्मरण लेखिका है। साथ ही साथ कविता, नाटक और प्रवास वर्णन, यात्रा वर्णन, आदि विविध विधाओं में उन्होंने लेखन किया है। प्रस्तुत प्रवास जापान की यात्रा लेख में टोक्यो विश्वविद्यालय में विदेशी भाषा अध्ययन विभाग में आयोजित सम्मेलन तथा ओसाका विश्वविद्यालय के 2010 के अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेंलन में भाग लेने भारत की ओर से छह सदस्यों का प्रतिनिधि मंडल 24 अक्तूबर 2010 को इंदिरा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय विमान स्थल तीन पर पहुंचा। यह विमान स्थल विश्व का सबसे विशाल हवाई पड़ाव कहलाता है।

ममता जी ने विश्व के स्तर पर हिंदी भाषा का भूमंडलीकरण होने के कारण मानवीय संवेदना कैसे निर्माण होती है? इसे प्रस्तुत प्रवास यात्रा लेख के माध्यम से स्पष्ट करने की कोशिश की है। उन्होंने प्रवास लेख के द्वारा जापान और हिन्दुस्थान के बीच समन्वय स्थापित करके एक साथ कई विशेषताओं पर प्रकाश डाला है जैसे–जापान में सड़क और होटल दोनों एकदम प्रदूषण रहित है, बाजार में कोई शोर सुनाई नही देता। अतिथियों के स्वागत के समय पीने को गर्म पानी दिया जाता है। खुशबूदार चाय, स्वादिष्ट भोजन के कारण ऐसे लगता है, जैसे हम –शेरे पंजाब में बैठकर खाना खा रहे है।

जापानी मनुष्य में बसी हुई मानवीय संवेदना विशेषताए है, जिसका उल्लेख प्रवासी लेख में आया है जैसे–शालीनता जापान का गुण धर्म है। बिना अहसान जताए के लोग एक–दूसरे को मदद करते है। कम से कम शब्दों में आपस में संपर्क रखते है। जापानी लोगों के चेहरे इतने शांत और सौम्य और तेजोमय लगते है, मानो लगता है कि, गौतम बुद्ध का बोधिसत्व इन्हें मिला है। जापानी छात्र विदेशी भाषा विभाग में हिंदी में वार्तालाप कर रहे थे। प्रो. सुरेश तूपर्ण, प्रो. फुजिई ताकेशी, प्रो. तकासी, तोषियो तनाका, अकिरा ताकाहाशी हिंदी भाषा का प्रचार–प्रसार जापान में कर रहे है। वे खासतौर पर हिंदी फिल्मों, अनुवाद, सेमिनार के द्वारा शोध करने वालों की संख्या बढ़ाना और हिंदी के प्रति रूचि बढ़ाना आदि काम कर रहे है। जापान में रेल शिन्कान्सेन में बैठकर यात्रा का अर्थ है– 'न्यू–ट्रंक लाइन'। वह 170 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ती है। स्टेशन को 'इकी' कहते है। भारत के हर कोने में जैसे भारतीय नजर आता है। वैसे बिलकुल जापान में भी एक इलाहबादी नजर आता है। इसका उदाहरण विश्व प्रसिद्ध फिल्म 'स्लमडॉग मिलेनिअर' के लेखक उनकी पत्नी अपर्णा का मानना है कि, यह हिन्दुस्थान की तरह जापिस्थान है। इस तरह जापान के इन्डिक विभाग में हिंदी, अवधी, ब्रजभाषा, राजस्थानी, भोजपूरी, पहाड़ी भाषाओं की पुस्तकों का होना, सन् 1805 में प्रकाशित ग्रन्थ 'सिंहासन बत्तिशी' हिंदी भाषा का एक अर्थ से सम्मान ही नहीं तो यह हिंदी भाषा का एक तरह से हिंदी साहित्य का सम्मान ही है। 'टप्स' पुस्तकालय की विशेषता औए सुरक्षा जापान के विश्वविद्यालय की एक अहमियत सिद्ध करता है। देशी–विदेशी संस्कृति तथा सभ्यता का परिचय विश्व स्तर पर देने का मतलब है मानवी संवेदना और भूमंडलीकरण है।

सारांश :-

प्रवास यात्रा गद्य लेखन की नई विधा है। प्रवास यात्रा साहित्य के कुछ महत्वपूर्ण तत्व माने जाते है। प्रवास यात्रा के पीछे उदेश्य होता है। प्रवास यात्रा द्वारा ज्ञान की प्राप्ति होती है और मनोरंजन भी होता है। प्रवास मानव जीवन के विकास का एक अंग मानना चाहिए। हर दिन अलग–अलग लोग देश–विदेशों की यात्रा करते है। प्रवास मानव जीवन का एक अभिमान है। यह सत्य है कि, "प्रवास करने वालों की बुद्धि पानी पर पड़े तेल के बूंद के समान होती है और प्रवास न करने वालों की बुद्धि पानी पर पड़े घीं के बूंद के समान होती है।"

संदर्भ सूचि :-

1. वर्णनपरक साहित्य–डॉ विश्वास पाटिल।
2. यात्रा जापान की–ममता कालिया।
3. यात्रा साहित्यकार–गोविंद मिश्र–डॉ. प्रकाश मोकाशी।

मो. नंबर–9423803062

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 51-54

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी साहित्य में भारतीय संस्कृति

डॉ. ज्योति पटेल

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), शा0 स्नातकोत्तर महाविधालय, टीकमगढ़ (म.प्र.)

सार :-

प्रवासी हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत कविताएं, उपन्यास, कहानियाँ, नाटक, एकांकी, महाकाव्य, खण्डकाव्य अनुदित साहित्य, यात्रा वर्णन, आत्महत्या आदि का सृजन हुआ है। प्रवासी साहित्यकारों की संख्या भी श्लाघनीय है, इन साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं द्वारा नीति मूल्य, मिथक इतिहास सभ्यता के माध्यम से भारतीयता को सुरक्षित रखा है। हिन्दी को प्रवाहित रख, जिंदा रखा है। संगीत और साहित्य के माध्यम से उन्होने वरीयता को जिन्दा रखा है। हिन्दी के प्रचार–प्रसार में प्रवासी साहित्यकारों का खासा योगदान है।

हिन्दी को अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाने में प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों के योगदान की एक अलग प्रकार की संवेदना प्रकट होती है। क्योंकि मन तो भारतीय होता है पर प्रवास में निवास करने की बजह से उन्हें अलग–अलग चीजों को ग्रहण करना पड़ता है। प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों की रचनाओं में एक बेचैनी और उखुलाहट को बखूबी महसूस किया जा सकता है। फिर भी ऐसी परिस्थितियों में भी वे कालजई रचनाओं का सृजन करते हुए देखे जा रहे हैं।

भूमिका :-

भारत के लोग विश्व के विभिन्न देशों में निवास कर रहे हैं और वहीं रहते हुए वे लोग हिन्दी को, हिन्दी साहित्य को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य बखूबी निभा रहे हैं। ऐसे ही एक नाम ऊषाराजे सक्सेना का है, जिन्होने इंग्लैण्ड को अपनी साहित्यिक कर्मभूमि बनाया है। इनके साहित्य में भारत और भारतीय संस्कृति एवं भाषा के प्रति अधिक बल दिखाई देता है। वहीं प्रवासी हिन्दी साहित्य को आगे बढ़ाने में तथा उन्हें विकसित करने में मॉरीशस की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण रही है, क्योंकि वहाँ के लोगों ने अपने सांस्कृतिक विरासत के रूप में हिन्दी भाषा एवं साहित्य को स्थापित करने के साथ–साथ विकसित भी किया है। प्रवासी हिन्दी साहित्य ने न केवल पूरी दुनिया में अपना स्थान बनाया है बल्कि अपनी पहचान भी बना चुका है, जिसे दरकिनार नहीं किया जा सकता है। आज हिन्दी पूरे विश्व की भाषा बनती जा रही है। प्रवासी साहित्यकारों की बजह से आज हिन्दी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान भी बना रही है।

भारतीय संस्कृति अपनी समन्वयवादी प्रवृत्ति के कारण व्यापक और विशाल है। यह सदाचार, संयम त्याग जैसे गुणों से ओतप्रोत है। यह समाज कल्याण और विश्व बन्धुत्व की भावना से सरोकार है। नैतिकता और परोपकार इसकी नस–नस में व्याप्त है। नैतिकता संस्कृति की कुछ प्रमुख विशेषताओं का विवेचन विश्लेषण

प्रस्तुत है। भारतीय संस्कृति में सत्य दो अर्थो में प्रयुक्त होता है। एक ओर ज्ञानगत धर्म विशेष की प्रामाणिकता के लिये तो दूसरी ओर विषयगत धर्म विशेष की वास्तविकता के लिये। पहले अर्थ में सत्य ज्ञान के मूल्य का घटक होता है।

प्रवासी हिन्दी साहित्यकार अलका शर्मा 'वाईस ऑफ अमेरिका' में कुछ समय कार्यरत रही थी। बाद में लंदन में बीबीसी हिन्दी सेवा की अध्यक्ष है। इनके लेखन में भारतीय समाज की संवेदना की अभिव्यंजना दिखाई देती है। अर्चना पैन्यली, डेनमार्क में रहती है। इनकी रचनाएं पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है। ये अच्छी अनुवादक भी है। अमित कुमार प्रभा अमेरिका में रहती है। इनके लेखन में स्त्री की महत्वकांक्षा तथा उसकी त्रासदी अंकित हुई है। इला प्रसाद प्रौद्यौगिकी से जुड़ी है। उनके लेखादि वैज्ञानिक शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। उन्होंने 'इला नरेन' नाम से रचनाँए लिखी है उनके लेखन में लंदन में बसे हुए भारतीयों की पीड़ा का अंकन हुआ दिखाई देता है। उनकी 'टेम्स का पानी' 'मेरे पासपोर्ट का रंग' कविताँए बहुत चर्चित रही है। कृष्ण बिहारी अबुधाबी में वरिष्ठ हिन्दी अध्यापक है। इन्होंने अनेक एकांकी नाटक लिखे हैं। साथ ही निर्देशन भी किया है। स्पष्ट है कि प्रवासी साहित्य अव्यंत संपन्न है प्रवासी साहित्यकार भी अपनी अलग पहचान बनाकर सृजनरत है। इम इनके साहित्य को पढ़कर विदेशों के अनेक अनुभवो, भावनाओं, संवेदनाओं से जुड़ सकते है।

डॉ. लक्ष्मीमलन सिंघवी लंदन में भारतीय उच्चायुक्त रह चुके है। उनके वहाँ के कार्यकाल में हिन्दी भाषा और साहित्यिक सृजन में काफी परिवर्तन हुआ। 2000 ई. से वहाँ हिन्दी ज्ञान प्रतियोगिता के माध्यम से हिन्दी के प्रति सजगता हुई है। ऊषा वर्मा लंदन में रहती है। उनकी कविता संग्रह चार कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं साथ ही भारतीय तथा विदेशी पत्र–पत्रिकाओं में अनेक रचनाएँ छपी है।

अभिमन्यु अनन्त मॉरीशस आदि ऐसे अप्रवासी साहित्यकार है जिन्होने भारतीय संस्कृति को विदेशो में प्रचारित, प्रसारित किया है। मेरा प्रस्तुत लेख अप्रवासी अभिमन्यु अनंत के अपन्यासों पर केन्द्रित है।

'लाल पसीना' अपन्यास के स्वामी जी सत्य की प्रतिमूर्ति हैं। वे गाँव के लोगों को उनकी निर्धनता, शोषण, विवशता और बेबसी का अहसास दिलाते है। लोगो को प्रेरित करते हैं और अपने चारों ओर के घटाटेप अन्धेरे को दूर करता है। वह कभी एक जगह टिककर नहीं रहते। लोगों को उनकी वास्तविक दशा की सच्ची पहचान देते हुए कहते हैं– ''कलम'' तुम्हें छोड़कर आगे जा रहा हूँ। यह आगे जाना सदा मेरे जीवन का उद्देश्य रहा है। तुम्हें अपनी निजी पैरो पर खडे रखता है। धूप, वर्षा और तूफान में भी सूरज उगता रहेगा और डूबता रहेगा पर एक दिन तुम सभी देखोगे एक ऐसा सूरज उदित होते जिसकी किरणें तुम्हारी सराहना करेंगी और तुम्हें छलने वाले तुम्हें दबाने वाले तुम्हारे सामने घुटने टेककर तुमसे क्षमा याचना करेंगे।

'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में सहदेव ठाकुर हरि से कहते है कि इस देश में जो इतिहास लिखे जाते रहे हैं उनमें पक्षपात ही पक्षपात है। इतिहास लिखने वाले या तो किसी के निर्देशन पर लिखते रहे हैं या खुद इतिहास की सच्चाई पर झूठ की परतें चढ़ाते रहे है। इन इतिहासों में भारतीय मजदूर की सही तस्वीर सामने नहीं लाई गई है। यह इतिहास पूँजीपतियों, सरकारों, व्यापारियों तथा राजपालों की दुनिया का इतिहास है।

''शब्दभंग'' उपन्यास में लेखक ने रहीम की कविता के माध्यम से नशीली दवाओं का धंधा करने वाले इज्जतदार मौत के सौदागरों के आतंक की सच्चाई को व्यक्त किया है–

धर्म ग्रन्थों में अहिंसा परमोधर्म कहकर स्थान–स्थान पर अंहिसा के महत्व का प्रतिपादन किया गया है।

दण्ड का कठोर विधान करने वाले कौटिल्य ने भी अहिंसा को प्रमुख धर्म माना है। महर्षि दयानंद भी अहिंसा को परम धर्म मानते हैं। संस्कार विधि में उन्होंने अहिंसा को धर्म के लक्षण में गिना है। आर्य समाज मानता है कि ''अहिंसा जहाँ दूसरों को सताना मना करती है वहाँ स्वयं दीर्घ जीवन प्राप्त करने की ओर भी प्रेरणा देती है।

''एक बीधा प्यार'' उपन्यास में मानवीय सद्भाव के दर्शन होते है। उपन्यास की नायिका 'करूणा' जब अपने बीते दिनों के बारे में सोचती है तो अनायस ही कुछ धुंधली यादे झिलमिलाने लगी। वे अभाव के दिन थे मकई और कन्द पर गुजारा होता। असकी माँ और सोम की माँ में बहुत बड़ी घनिष्ठता थी। इसलिए सेाम की माँ कभी–कभी उस के घर कुछ न कुछ छोड़ जाया करती थी। तंगी में किसी परिचित व्यक्ति की मदद करना पारस्परिक सद्भाव के कारण ही सम्भव हो पाता है।

'तीसरे किनारे पर' उपन्यास में अभिमन्यु अनंत ने हिन्दू और मुसलमानों के बीच सद्भाव को उठाते हुये लिखा है कि 'सहदेव सिंह एकदम धार्मिक प्रवृत्ति के होते हुये भी फातमा के घर खाने में नहीं हिचकिचाते है। यही बात फातमा के बाप दाउद की ओर भी थी।'

'अपनी–अपनी सीमा' उपन्यास में सुमिया मौसी कहती है कि 'ईद, दीवाली हिन्दू और मुसलमान मिलकर मानते है' यह बात उनके परस्परिक सद्भाव का प्रतीक है।

''दार्शनिकता धरातल पर जिस एकत्व बोध को परम सत्य का साक्षात्कार कहा गया है, संस्कृति की धरातल पर उसे ही मानवता कहा जाता है। संस्कृति इसी मनुष्यता की साधना में सहयोग देती है।''

'अपना ही तलाश' उपन्यास में सोमू किसी भी कीमत पर वासु को खोना नहीं चाहता। जब वासु किसी भी तरह उसके साथ काम करने को तैयार नहीं होता तो वह अपनी पत्नी उसे समर्पित करता है। यह पुरूष की नैतिकता की चरम सीमा है। त्याग यद्यपि व्यक्तिगत गुण होते हुए भी भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण पहलू है। यह भाव एक ऐसी विशिष्टता लिये हुए है जो मानव को समाज में आदर और प्रतिष्ठा दिलाता है। किसी दूसरे के हित और कल्याण के लिए अपनी आवश्यक वस्तु का त्याग करना आदमी को आदमी के धरातल के ऊपर ले जाता है। त्याग करके वह दूसरों की नजरों में ऊँचा उठ जाता है। अभिमन्यु अनंत के उपन्यासों में अनेक पात्र इस श्रेष्ठ गुण से सम्पन्न है।

'लहरो की बेटी' उपन्यास की दुलारी, दया की प्रतिमूर्ति है। वह प्रत्येक जरूरतमंद की सहायता करती है। भारतीय संस्कृति प्राणीमात्र की मंगल कामना चाहती है, सभी सुखी रहे, सभी कल्याण के कार्य करें, कोई दुखी न हो इस तरह से परोपकार के अन्तर्गत उपनी सामर्थ्यनुसार दूसरे प्राणियों के लिए तन, मन और धन से सहायता करने का विधान निहित है। सब मनुष्यों के दुराचार, दुःख छूटे, श्रेष्ठाचार और सुख बढ़े, उसे करने को परोपकार कहा जाता है। अभिमन्यु अनंत के उपन्यासो के अनेक ऐसे पात्रो का चित्रण है जो परोपकार की भावना से ओत–प्रोत है।'

किसी सीमा तक सहनशीलता होना भारतीय संस्कृति में बहुत बड़ी विशेषता मानी गई है। अभिमन्यु अनंत के कथा साहित्य में यह विशेषता यत्र–तत्र घटनाओं और प्रसंगों में बिखरी मिलती है। भारतीय संस्कृति में चारित्रिक उच्चता को नैतिकता के अन्तर्गत माना गया है। 'नैतिक' शब्द मुख्यतः कर्म एवं शील का विशेषण है। कर्म और शील के विषय में सत् और असत् का विवेचन ही नैतिकता का प्रमुख प्रश्न है। भारतीय संस्कृति में अनेक संस्कृतियों को अपने में समाहित कर अपनी शक्ति को बढ़ाया है। यह संस्कृति महासागर के समान है

जिसमें अनेक नदियाँ आकर विलीन होती रहती है। इसमें एकीकरण और समन्वय की अपार ताकत हैं। सत्य अहिंसा, सद्भाव, मानवता, नैतिकता, त्याग, परोपकार, सहनशीलता आदि गुण इसे महान बनाते है। इस संस्कृति ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आदर्शो की स्थापना की है। सभी प्राणियों पर दया, सभी धर्मो का आदर करते हुए यह संस्कृति विश्वबंधुत्व की भावना से ओत–प्रोत है। यह आध्यात्मिक चेतना से परिपूर्ण धर्मपरायण संस्कृति है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. अतर्वशीं, ऊषा प्रियवंदा, वाणी प्रकाशन 2000
2. अप्रवासी, मंजू कपूर, रैण्डम हाऊस इंडिया।
3. उड़ने से पेशतर, महेन्द्र भल्ला, राजकमल प्रकाशन।
4. पथरीला सोना, रामदेव धुरंधर, हिन्दी बुक सेण्टर।
5. रूकोगी नहीं राधिका, ऊषा प्रियंवदा, राजकमल प्रकाशन।
6. हवन, सुषमा बेदी, पराग प्रकाशन।

मो.न.– 9399141045

मेल– drjyotipatel0906@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 55-57

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

सुषम बेदी के कथा साहित्य में प्रवासी भारतीय नारी

डॉ. आलपाटि भानु प्रसाद

हिन्दी प्राध्यापक, एस. आर. आर – शासकीय महाविद्यालय (स्वायत्त), विजयवाड़ा।

प्राचीन काल से मानव जिज्ञासु तथा घुमंतू प्रवृत्तिवाला रहा है। वह एक प्रांत से दूसरे प्रांत जाते अपना जीवन बिताता रहा। प्रवासी शब्द उस व्यक्ति से संबंधित है, जो व्यक्ति अपने देश को छोडकर किसी दूसरे देश में निवाश करता है। प्रवासी शब्द 'वासी' धातु में 'प्र' उपसर्ग लगाने से बनता है। 'वास' शब्द का अर्थ है रहना या बसना। 'प्र' उपसर्ग जोडने से इसका अर्थ जो अपनी जन्मभूमि को छोडकर विदेश में जाकर रहने वाला होता है। आर.एन.सिंह तथा एस.डि.मौर्य के अनुसार "किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह के द्वारा अपना स्थान छोडकर अन्य स्थान के लिए स्थाई अथवा अस्थाई रूप से किया गया परिवर्तन प्रवास कहलाता है।"[1] संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रवास की परिभाषा इस प्रकार दी गयी है कि– "प्रवास सामान्यतः निवास स्थान को बदलते हुए एक भौगोलिक इकाई से दूसरी इकाई के लिए भौगोलिक गतिशीलता का एक प्रतिरूप है।"[2]

सुषम बेदी हिन्दी साहित्य लेखन में एक प्रमुख लेखिका है। वे हिन्दी ड्रामा और रंगमंच की मंज हुई कलाकार थीं। सन् 1960 से 1970 तक भारतीय टेलिविजन की प्रसिद्ध अदाकारा और सलाहकार भी रही। सन् 1990–91 में उन्होने बी.बी.सी के साप्ताहिक कार्यक्रम 'Letters from Abroad" में अपना योगदान दिया जिसमें उसने न्यूयार्क की जिन्दगी के मसलों पर विचार–विमर्श की। विदेशों में बसे भारतियों की द्वंद्व मनःस्थितियों को अपने उपन्यासों तथा कहनियों के माध्यम से अभिव्यक्त करने में विशेष योगदान प्राप्त कर ली। 'हवन', 'लौटना', 'मोरचे', 'कतरा–दर–कतरा' आदि उपन्यसों में तथा 'चिडिया और चील कहानी संग्रह' में प्रवासी भारतीय नारियों की स्थिति का वर्णन किया।

सृष्टि का आधार स्त्री–पुरुष है। स्त्री–पुरुष के संयोग से ही इस सृष्टि का आविर्भाव हुआ है। पर समाज में पुरुष का जितना महत्व है उतना स्त्री का नहीं। स्त्री की महत्ता तथा स्त्री–पुरुष की पूरकता का विश्लेषण करते हुए डॉ. वल्लभपन्त तिवारी ने लिखा है कि– "पुरुष सत्यम है, प्रकृति माने स्त्री शिवम् तथा सुन्दरम् है। अतः स्पष्ट है कि प्राणी मात्र के जीवन में नारी की भूमिका पुरुष की अपेक्षा दोहरी है। प्रकृति पुरुष की चित्तवृत्तियों की संचालिका है। वह विराट शक्ति की शाश्वत प्रेरणा स्रोत है, वह उसका उद्‌गम है।"[3] स्त्री–पुरुष दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। किसी एक के बिना यह सृष्टि रुक जाती है।

वैदिक काल से आज तक स्त्री का महत्व कम होता जा रहा है। बेटी, बहन, पत्नी, माँ, सास आदि अनेक पात्रों के द्वारा अपना कर्तव्य निभाती रहती है। जिस देश में नारी की पूजा तथा आदर होता है, उस देश का विकास निरंतर होता जाता है। मनु ने नारी की महत्ता के बारे में स्पष्ट करते हुए अपना काव्य मनु संहिता में

व्यक्त किया –

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।
यत्रेतास्तु न पूज्यन्ते सर्वा स्तत्रा फल क्रिया।।"[4]

हमारी सभ्यता, संस्कृति तथा धर्म के निर्माण में नारी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पुरूष की अपेक्षा नारी अधिक माननीय तथा संवेदनशील है। वात्सल्य, स्नेह, ममता, क्षमत्व आदि गुण पुरुष की अपेक्षा नारी में ज्यादा पाई जाती हैं। नारी की महत्ता के बारे में बताते हुए आशारानी जी ने कहा– "जीवन के स्वस्थ विकास के लिए नारी का पुरुष से भिन्न तथा पुरुष से नैतिक गुणों में श्रेष्ठ होना आवश्यक है। नारी यह न भूलि कि पुरुष भी नारी के बिना अकेला नहीं चल सकता है। वह भी स्वयं में इतना ही अपूर्ण है जितना की नारी, बल्कि अधिक ही, इसीलिए की नारी की छाया में वह सदा माँ के आँचल की–सी छाया खोजता है। उसके बिना अधिक उच्छृंखल, अधिक अनियंत्रित हो जाता है। जब नारी उसे नियंत्रित करके श्रेष्ठ मानवता की ओर अग्रसर कर सकती है, तब पुरुष उससे भी श्रेष्ठ कैसे हो सकता है।"[5]

सुषम बेदी के कथा–साहित्य में प्रवासी भारतीय नारी के भिन्न–भिन्न रूप दिखाई देते हैं।

भारत की नारी ही नहीं पश्चिम के विकसित देशों में शिक्षित नारी भी शोषित है। इसका विवरण सुषम बेदी ने अपने साहित्य में किया है। नारी शिक्षित हो या अशिक्षित दयनीय जीवन बिता रही है।

नारी पत्नी के रूप में, बेटी के रूप में, पुत्र वधु के रूप में तरह–तरह के शोषणों का सामना कर रही है। पहले भारत की नारी केवल भारत तक ही सीमित थी। किन्तु आज प्रवास की प्रक्रिया के दौरान संपूर्ण विश्व को देखने के सपने को साकार कर रही है। किसी भी नारी का अपने पति के साथ विलायत जाना एक सपने के साकार होने का समान है। किन्तु जल्दी ही उसे इस बात का पता चलता है कि जो सपने उसने देखे थे वे शायद ही गलत है।

भारतीय पति पश्चिमी समाज में वास करने पर भी अपने पुरुषत्व का त्याग नहीं कर पाता। पत्नी का शोषण ही उसका एक मात्र ध्येय है। सुषम बेदी के कथा साहित्य में भारतीय पत्नी की दयनीय दशा का यथार्थ चित्रण मिलता है। उसके कथा–साहित्य की नायिकाएँ शिक्षित होने पर भी शोषण का सामना करती हैं। 'हवन' उपन्यास का नायक अनुज अपनी पत्नी तनिमा को माध्यम बनाकर अमेरिका पहुँचता है। वहाँ वह तनिमा को कभी पत्नी का दर्जा नहीं देता। यहाँ तक कि घर से बाहर और लड़कियों से रिश्ता बनाता है। जब तनिमा को इस बात का पता चलता है तो उससे यह बात सहन नहीं होती और अनुज से बिना पूछे अबार्शन करवा लेती है। जब अनुज को इसका पता चलता है तो बजाय तनिमा से प्रेमपूर्वक व्यवहार न करके उस पर हाथ उठाता है। तनिमा पर तमाचे जड़ते हुए कहता है– "हाऊ कुड यू डू दैट! मैं ने कल ही अपने ममी–पापा को खत में बधाइयाँ देते हुए लिखा है। क्या कहेंगे वे? हाऊ कुड यू वी सो इनह्यूमन!"[6]

विदेश में प्रवासी भारतीय नारी की स्थिति अत्यंत दयनीय है क्योंकि वह शारीरिक रूप से तो शोषित है ही, इसके साथ ही मानसिक रूप से भी शोषण भोग रही है। परिवार की एक महत्वपूर्ण सदस्य होने के बावजूद भी उसे वह स्थान नहीं मिल रहा जो मिलना चाहिए। पति के द्वारा शारीरिक और मानसिक रूप से घायल किए जाने से वह निराशा, तनाव और अकेलेपन का शिकार हो जाती है। अपने माता–पिता को तनाव से बचाने के लिए बहुत सारी नारियाँ विदेश में मानसिक रूप से शोषण सहती हैं किन्तु संकोचवश अपना मुँह नहीं खोलतीं।

भारत में रह रहे अपने माता–पिता को यह अहसास दिला देती हैं कि विदेस में वे एक खुशहाल जीवन व्यतीत कर रही हैं और असलमयत को कबी सामने नहीं आने देतीं। चिडिया और चील कहानी संग्रह की तीसरी दुनिया का मसीहा कहानी की नायिका शादी के पश्चात विदेश पहुँचती है जल्दी ही उसे स बात का एहसास हो जाता है कि उसे साथ धोखा हुआ है। किन्तु भारत में रह रहे अपने माँ–बाप को खत में बस इतना लिखती, "मैं ठीक हूँ, मजे में हूँ, मेरी फिक्र मत कीजिए।"[7]

पत्नी के रूप में ही नहीं बेटी के रूप में भी नारी का शोषण हो रहा है। चाहे परिवेश बदल जाए चाहे युग मानसिकता कभी भी बेटा–बेटी के अंतर को समाप्त नहीं कर पाएगी। आज भी अनेक प्रवासी भारतीय परिवारों में बेटी का कोई अस्तित्व नहीं है। आज भी उनके जीवन में अनुशासनात्मक नियंत्रण है, पर बेटों के लिए कोई नियम नहीं है। वह पहले की तरह आज भी स्वतंत्र है। इसका चित्रण सुषम बेदी के 'हवन' उपन्यास में चित्रण किया– "गुड्डो ने देखा अशोक अपनी गर्लफ्रेंड के साथ था। उसने गड्डो को उससे मिलवाया भी था। एमीलिया है उसका नाम। गुड्डो सोचती है राधिका कभी भी इस घर में अपना बायफ्रेंड न ला पाती, हिम्मत करती तो जीजा जी उसे कच्चा चबा जाते। कैसे हैं हम लोग, बेटियां के लिए दूसरे मूल्य, बोटों के लिए दूसरे। अगर राधिका को भी इस घर में स्वीकृति मिल जाती तो क्या तब ऐसा दर्दनाक कांटा होता।"[8]

पुत्रवधू का स्थान भारतीय परिवार में सर्वोपरि है। किन्तु यह बात भी सत्य है कि इस संबंध में जितना माधुर्य है, उतनी कडुवाहट भी है। यह कडुवाहट केवल भारतीय परिवारों में ही नहीं प्रवासी भारतीय परिवारों में भी विद्यमान है। विदेश में शिक्षित तथा नौकरीपेशा होने के बावजूद भी वह शारीरिक तथा मानसिक रूप से शोषित है। सुषम बेदी के कथा साहित्य में प्रवासी भारतीय पुत्रवधु का दयनीय चित्रण मिलता है। अपने पर हो रहे शोषण के कारण वह तनाव और निराशा का शिकार है। "तू ने मेरे पुत्र को बड़ा दुःख दिया है। तेरे खानदान को ऐसा कष्ट मिले कि तू तड़पती रहे। तू क्या समझती हो, हम तेरे कंट्रोल में हैं। लड़के वाले हैं, हम। हिन्दूस्तान में होती तो अभी पेट्रोल डालकर तुझ फूँक देती।"[9]

संदर्भ :–

1. डॉ. एस. डी. मौर्य–मानव भूगोल, पृ. 158.
2. डॉ. एस. डी. मौर्य–मानव भूगोल, पृ. 158.
3. स्वातंत्रोत्तर हिन्दी कहानियों में संबंध विघटन और नारी संघर्ष–चेतना – डॉ. सैय्यद मेहरून, पृ. 14
4. स्वातंत्रोत्तर हिन्दी कहानियों में संबंध विघटन और नारी संघर्ष–चेतना – डॉ. सैय्यद मेहरून, पृ. 18
5. भारतीय नारी : दशा, दिशा – पृ. 172
6. हवन, सुषम बेदी, पृ. 102
7. चिडिया और चील, सुषम बेदी, पृ. 70
8. हवन, सुषम बेदी, पृ. 104
9. मोरचे, सुषम बेदी, पृ. 93

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 58-63

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिन्दी प्रवासी साहित्य और डॉ. कमल किशोर गोयनका

कमलेश कुमार मेहरा

शोधार्थी, राजकीय महाविद्यालय, बून्दी, कोटा रोड़ पिंक सिटी, बून्दी (राज0)– 323001

शोध सार :-

साहित्यकार जिस परिवेश में फलता–फूलता है स्वाभाविक रूप से वह उसी परिवेश को लेकर साहित्य सृजन करता है। साहित्यकार के आंतरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व का निर्माण उसके परिवेश एवं भौतिक परिस्थितियों के द्वारा होता है और ये परिस्थितियाँ ही उसकी चेतना का निर्धारण करती है। साहित्यकार की रचना में जनता के विचार, संस्कार, भावनाएँ, सहसा जीवन को फोड़कर नहीं निकलते। इन सबकी स्थिति में इतिहास और समाज होता है और समाज का निर्माण किसी एक निश्चित संस्था या व्यक्ति द्वारा नहीं होता वरन् विभिन्न मनुष्यों के भावनात्मक संपर्कों और जीवनानुभवों के द्वारा होता है और साहित्यकार का काम मनुष्यों के इन भावनात्मक संपर्कों और जीवनानुभवों को एकजुट कर उसकी उदारता एवं कर्मशीलता को जगाना होता है। अतः समाज में व्याप्त विभिन्न स्थितियाँ, परिस्थितियाँ, साहित्यकार की रचना को विषय प्रदान करती हैं।

मुख्य शब्द :-

भावनात्मक, जीवनानुभव, कर्मशीलता, प्रवासी साहित्य, भूमण्डलीकरण, गिरमिटिया, डायस्पोरा आदि।

मूल शोध पत्र :-

प्रवासी कौन? विषय पर चर्चा के पहले प्रवासी शब्द की व्याख्या कर लेना उपयुक्त होगा। प्रवासी कौन हैं, वे जो वहाँ बस गये। 'प्रवासी' और 'भारतवंशी' में क्या अन्तर हैं? क्या इनकी भावनाओं और संवेदनाओं में भी अंतर हैं? प्रवासी साहित्य किसे कहेंगे? क्या भारतीय अर्थव्यवस्था के बदलते स्वरूप और भूमण्डलीकरण के कारण प्रवासी लेखन भी महत्त्वपूर्ण हो गया है? प्रथम प्रवासी कौन थे? गिरमिटिया का क्या अर्थ हैं? आज के समय में प्रचलित 'डायस्पोरा' (किसी भौगोलिक क्षेत्र के मूलवासियों का किसी अन्य भौगोलिक क्षेत्र में प्रवास करना।) शब्द का क्या अर्थ है? भारतीय प्रवासी दो संस्कृतियों के बीच में कैसे सामंजस्य स्थापित करते हैं? इत्यादि।

प्रवासी लेखिका उषा राजे सक्सेना के शब्दों में ''प्रवासी 'प्रवास' शब्द का विशेषण है। प्रवासी एक मनोविज्ञान है, एक अंतर्दृष्टि है, जिसे स्वतः फारम्यूलेट (कुछ करने की योजना बनाना) होने में बरसों–बरस लगते हैं।''[1]

प्रवासी कवि डॉ. कृष्ण कुमार ने भी 'प्रवासी' शब्द को परिभाषित करते हुए लिखा है– प्रवास शब्द 'वस'

धातु में 'प्र' उपसर्ग लगने से बनता है। 'वस' धातु का प्रयोग रहने के अर्थ में किया जाता है। 'प्र' उपसर्ग लग जाने से इसका अर्थ बदल जाता है। वामन शिवराम आप्टे के प्रामाणिक संस्कृत हिन्दी शब्दकोश के अनुसार 'प्रवास' शब्द का अर्थ है 'गमन', विदेश यात्रा, घर पर न रहना। अतः प्रवासी हिन्दी लेखन से हमारा सही तात्पर्य उस लेखक से होना चाहिएय जिसकी रचना अपने घर से दूर हुई हो, चाहे वह विदेश में हो या अपने ही देश में किन्तु घर से दूर। निष्कर्ष यह है कि प्रवासी शब्द का हिन्दी भाषा में व्यावहारिक प्रयोग सीमित अर्थों में ही लिया जा रहा है जो कि मेरे विचार से साहित्य के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है।

उपर्युक्त उदाहरणों को ध्यान में रखते हुए प्रवासी शब्द को परिभाषित करने का एक तरीका यह भी हो सकता है कि वह साहित्य जिसमें एक देश या स्थान से बिछड़ने का दर्द तथा दो सभ्यताओं के बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास हो, उसे प्रवासी साहित्य माना जा सकता है। चाहे इसके लेखक ने भारत से प्रवास किया हो या फिर उसकी पैदाईश वहीं की हो। इसके साथ ही विदेशी हिन्दी लेखक जिनकी रचनाओं में प्रवासी तत्त्व मौजूद है, उन्हें भी इस साहित्य के अन्तर्गत रखा जाना चाहिए।

सवाल यह है कि भारतीय विदेश जाते क्यों हैं? यहाँ से उन्हें क्या भिन्न लाभ मिलता है? इत्यादि। डॉ. एन. जयराम ने इस संदर्भ में लिखा है– ''विकसित देशों में (अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन) भारतीयों को इस कारण स्थान दिया जाता है क्योंकि सस्ते के साथ–साथ उनमें दक्षता भी है। इन देशों में प्रवासियों और नेटिव (मूल निवासी) में कोई खास भेदभाव नहीं किया जाता। भेदभाव है भी तो रंगभेद के स्तर पर। लेकिन अविकसित देशों में जहाँ अवसरों की कमी है, इसके कारण प्रवासियों और नेटिव में प्रतियोगिता बढ़ जाती हैं।''[2]

वे आगे लिखते हैं– ''कनाडा में भारतीय प्रवासियों के बीच आपस में भी गहरी विभिन्नता है, यहाँ तक कि प्रथम प्रवासी लोगों में भी। लेकिन इनकी ताकत, समुदाय का विकास, संस्थान और भारतीयों का कनाडा वासियों के साथ सौहार्दपूर्ण अस्तित्व हैं।''[3]

इस संदर्भ में धर्म महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह अक्सर देखा गया है कि जिस देश में प्रवासी गए होते हैं, उस देश की जनता और सरकार इस भोली–भाली जनता पर अपनी लगाम लगाना शुरू करती है। वह चाहती है कि वे उनके धर्म को स्वीकार कर लें, नहीं तो आगे चलकर उन्हें कोई परेशानी का सामना न करना पड़े। डॉ. एन. जयराम ने भी लिखा है– ''जमैका और त्रिनिडाड में भारतीयों को इसाई धर्म में शामिल करने के लिए अथक प्रयास किया गया। वे जमैका में सफल भी हुए क्योंकि वहाँ आर्य समाजी लोग कम संख्या में होने के कारण भारतीयों को बचा नहीं सके। वे त्रिनिडाड और टोबैगों में इसलिए असफल हो गए क्योंकि वहाँ भारतीयों की संख्या अधिक थी, जिसके कारण आर्य समाजी लोगों ने विरोध किया।''[4]

डॉ. एन. जयराम लिखते हैं– ''भारतीय परिवार से अलग होने के कारण, धर्म प्रवासियों का एक महत्त्वपूर्ण अंग बन जाता है, उन्होंने वैसे ही धर्म की स्थापना प्रवासी देशों में की जैसा भारत में था।''[5]

बहुसंख्यक प्रवासी जो कैरिबियन आये थे उनमें अधिकांश यूनाइटेड प्रोविन्स (संयुक्त प्रांत – उत्तर प्रदेश व बिहार को संयुक्त प्रांत कहते है) से थे। हिन्दू और मुसलमान के अनुपात के संदर्भ में एन. जयराम ने लिखा

है– हिन्दू और मुसलमान का औसत इस प्रकार था– 1901 का सेन्सस (आंकड़े) बताता है कि 85 प्रतिशत उत्तर प्रदेश के हिन्दू थे और 14 प्रतिशत मुस्लिम, जबकि बिहार से 92.7 प्रतिशत हिन्दू और 7.3 प्रतिशत मुस्लिम थे। इस प्रकार 1891 में त्रिनिडाड में 85.9 प्रतिशत हिन्दू थे और 13.44 प्रतिशत मुस्लिम।"[6]

जब प्रवासी हिन्दू कैरिबियन आये तो उन्होंने अपने धर्म को फिर से अपनाने का प्रयास किया और बदलती हुई चुनौतियों और परिस्थितियों में इसे स्थापित करने का प्रयास भी। किन्तु उन्होंने देखा कि कैरोल सोसायटी को इस पर शंका होने लगी है। इस प्रकार अपने अधिकार दिखाकर इसे रोकने का प्रयास किया। इन दोनों समुदायों के बीच धार्मिक अलगाव या विभेद और कभी–कभी कड़वाहट होने के बावजूद दोनों के बीच में पारस्परिक सम्मान भी था। दोनों के लिए धर्म उनकी पहचान का प्रमुख तत्व था। इस नये संसार में मातृभूमि से दूर, मातृभूमि से ज्यादा दूसरे को साथ लाने का जरिया था।

संस्कृति एक ऐसा गूढ़ विषय हैं वास्तव में संस्कृति को परिभाषाबद्ध करना भी एक जटिल प्रक्रिया है। यह काल और समय के परे हैं, क्योंकि किसी काल विशेष में संस्कृति के लिए जो परिभाषा और शब्द समायोजित प्रतीत होता है, कुछ समय बाद वह रूढ़ लगने लगती हैं। श्यामचरण दूबे के शब्दों में कहे तो– ''संस्कृति शब्द का प्रयोग भिन्न–भिन्न कालों एवं संदर्भों में भिन्न–भिन्न अर्थों में हुआ है।''[7]

मनुष्य की जैविकीय रचना में जो आवश्यकताएँ अनिवार्य रूप में निहित है उन्हें हम प्राथमिक आवश्यकताएँ कह सकते हैं। इस कोटि में जीवन– रक्षा, विशेष रूप से भूख–प्यास की तृप्ति तथा यौन–आवश्यकताओं को रखा जा सकता है। ये आवश्यकताएँ अनेक नई आवश्यकताओं को जन्म देती है। उदाहरणार्थ यौन–आवश्यकता की पूर्ति से संबद्ध गर्भाधान, संतानोत्पत्ति, पराश्रयी शिशु की देख–रेख और रक्षा आदि समस्याएँ अपने आप एक के बाद एक आती जाती है और शीत के प्रकोपों से रक्षा के लिए मानव गृह निर्माण करता है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, ऐसा कहा गया है। यदि मनुष्य सामाजिक है, तो उनके समाज के प्रति गहरे सरोकार भी होंगे। जब मनुष्य ने समुदाय या समाज में रहना सीख लिया होगा तो एक बड़ी जनसंख्या होने के कारण इसे एक सूत्र में बाँधना या बाँधे रखने के लिए एक नियम या कानून की जरूरत पड़ी होगी। समाज के रीति–रिवाज ठीक ढंग से संपादित हो सके इसके लिए एक 'संस्कृति' की जरूरत पड़ी होगी। यही बाद में सांस्कृतिक विमर्श, के रूप में स्थापित हुआ।

अब सवाल उठता है कि किस संस्कृति को श्रेष्ठ माना गया। क्योंकि हर देश की अपनी सभ्यता और संस्कृति है और सभी को अपनी संस्कृति पर गर्व होता है यहीं से एक गहरे Cultural Discourse (सांस्कृतिक विमर्श) की शुरूआत होती है। प्रगतिशील और रूढ़िवादी मूल्यों के बीच टकराव होता है। मान्यता, मूल्य और प्रतिमान टूटते हैं और बनते हैं ।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'सभ्यता और संस्कृति' शीर्षक लेख में 'सिविलाइजेशन' (सभ्यता) पर गम्भीर बहस की है। उनका मानना है कि सिविलाईजेशन से सामाजिक व्यवस्था के चार उपादानों का ज्ञान होता है–

(1) आर्थिक अवस्था

(2) राजनीतिक संगठन

(3) नैतिक परम्परा और

(4) ज्ञान एवं कला का अनुशीलन [8]

शुरूआत में, संस्कृति के निर्माण में कई कारक बाधक सिद्ध होते हैं। अस्तव्यस्तता, आशंका, डर आदि के कारण व्यक्ति इस नई चीज को समझ नहीं पाते। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी इस और संकेत किया है– ''अस्तव्यस्तता, सशंकता और आरक्षणीयता का जहाँ अंत होता है, सिविलाईजेशन या सभ्यता वहीं से शुरू होती है, क्योंकि जब भय का भाव बन जाता है और मनुष्य की कुतूहल वृत्ति और रचनात्मक प्रवृत्ति बंधन हीन होती है तभी मनुष्य पशु सुलभ प्राकृतिकता से ऊपर उठकर समझौते और सहानुभूति के जीवन की ओर अग्रसर होता है।''[9]

वास्तव में व्यक्ति सर्वप्रथम पशु तुल्य होता है। संस्कृति के प्रारम्भिक दौर में जब व्यक्ति की आवश्यकताएँ और साधन सीमित थे तो उनमें समाज के प्रति नैतिक जिम्मेदारियाँ भी कम रही होगी। बर्बरता, लूट, एक कबीले से दूसरे कबीले से लड़ाई के कारण कोई प्रजातांत्रिक मूल्य विकसित नहीं हुए होंगे। जिसकी लाठी उसकी भैंस सर्वमान्य सत्य के रूप में स्थापित रहा होगा। वैसी स्थिति में अर्थव्यवस्था, राजनीति, नैतिक मूल्य, ज्ञान और कला के बीच एक द्वन्द्व कायम हो गया होगा। ठीक आज की तरह ही भूमण्डलीकरण, उदारवाद और पश्चिम वर्चस्व के दौर में व्यक्ति समाज और देश किसका पक्ष ले। सभ्यता और संस्कृति में किस रूप को स्वीकार करे। क्या मनुष्य और संस्कृति में भी टकराव की स्थिति पैदा होती है। जैसा कि श्यामचरण दूबे ने मानव और संस्कृति पुस्तक में लिखा है– ''प्रारम्भ में मनुष्य संस्कृति का निर्माण करता है और फिर संस्कृति मनुष्य के व्यक्तित्व के अनेक पक्षों को निर्मित करने लगती है। संस्कृति का प्रभाव मनुष्य की शरीर–रचना तथा मनोभावों के गठन पर भी पड़ता है। व्यक्ति और संस्कृति दोनों एक–दूसरे को क्रमशः प्रभावित करते हैं।''[10]

अब हम यहाँ भारतीय संस्कृति की चर्चा करना चाहेंगे फिर विश्व संस्कृति के साथ तुलना करने के बाद यह स्पष्ट करना चाहेंगे कि विश्व संस्कृति के अवधारणात्मक मूल्य क्या हो सकते हैं? आदि। इस संदर्भ में हम प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल की पुस्तक 'संस्कृति, वर्चस्व और प्रतिरोध' की चर्चा करना वाजिब समझेंगे। उन्होंने लिखा है– ''भारतीय की पहचान को वर्तमान भौगोलिक राजनीतिक यथार्थ तक सीमित नहीं किया जा सकता। भारतीय संस्कृति, भारतीय परम्परा, भारतीय नारी सरीखे पदों में भारतीय शब्द का प्रयोग केवल सूचनात्मक ढंग से नहीं किया जा सकता। यहाँ 'भारतीय' शब्द एक विशेष मूल्यबोध और भाव भूमि की व्यंजना करता है।''[11]

उन्होंने आगे लिखा है– ''जिस भारतीय बोध से ये उत्तर उपजते हैं, उसमें निहित समझ कुछ इस प्रकार है– भारतीय की विशेषता है– समन्वय और सहिष्णुता। भारतीय संस्कार से उपजी संस्कृति सनातन काल से ही धर्माधारित रही है जबकि अन्य संस्कृतियों के केन्द्र में है– शक्ति (पॉवर) की अवधारणा। अन्य संस्कृतियाँ भौतिकता के पीछे पागल है, इसीलिए दमन और अत्याचार उनका स्वभाव है। भारतीय संस्कृति मोक्ष की खोज करती है,

इसीलिए उसमें निहित धर्म–भावना दूसरों के प्रति अपने कर्तव्यों, दायित्वों का निर्वाह करने में मूर्त रूप लेती है।''[12] जैनेन्द्र कुमार ने 'संस्कृति आस्था और तत्वदर्शन' पुस्तक में कुछ ऐसा ही विचार प्रस्तुत किया है– ''संस्कृति क्या है? वह हैं जिसमें मनुष्य पशु से अलग पहचाना जा सकता है। पशु भूख में सीधे शिकार पर झपट सकता है मनुष्य में उसके लिए खेती की सोच आती है। उसकी माँग और पूर्ति में एकदम सीधे तोर से तर्क का संबंध नहीं होता। अपने स्वार्थ को उसे परस्परता में से साधना सीखना होता है। इसी में से संस्कारिता को जन्म मिलता है।''[13]

उन्होंने आगे लिखा है– ''भारत की संस्कृति पहले भी कहा गया है, अमुक मत सिद्धान्त से बंधी–घिरी नहीं है। वह नागरिक मूल्यों पर आधारित संगम–समागम को स्वीकार करने वाली ऐसी संस्कृति थी और है, जिसमें अतीत की स्वीकृति एवं निजीय जातीय रीति–नीति की स्वतंत्रता है। इसी में नाना देवता, उपासना विधि, तत्वदर्शन और मठ–मंदिर आदि खड़े होते गए।''[14]

भारत की राजनैतिक और भौगोलिक अवस्था इस बात की सूचक है कि भारत पर सदियों से आक्रमण होते रहे हैं। भारत की उत्तर–पश्चिम सीमा की ओर से ग्रीक, शक, यमन, हूण, मंगोल और इस्लाम का आक्रमण हुआ तो समुद्री मार्ग से यूरोपवासियों का आक्रमण तथा विस्तार। इन सारी चीजों ने भारत में एक अस्तव्यस्तता के साथ–साथ सीखने और सिखाने का मौका भी प्रदान किया। इनकी बर्बरता, विस्तारवादी नीति और राजनीतिक सामाजिक पक्षों को छोड़ दिया जाये तो कला और संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस ओर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'सभ्यता और संस्कृति' शीर्षक निबंध में संकेत किया है– ''इस प्रकार मूल में भारतीय संस्कृति कई बलवती सभ्यताओं के योग से बनी हैं। आर्य–द्रविड़ और यक्ष नाग सभ्यता की त्रिवेणी से इस महाधारा का आरम्भ हुआ। बाद में अन्य अनेक सभ्य, अर्द्ध सभ्य और अल्प सभ्य जातियों की संस्कृतियाँ धर्म–मत, आचार, परम्परा और विश्वास उसमें घुसते गये। भारतीय–ज्योतिष, जो हमारी संस्कृति के निर्माण का एक जबरदस्त अंग है बहुत कुछ यवनों, बर्बरों, असुरों के विश्वास से प्रभावित है।''[15]

यह तो हुई दो या दो से अधिक संस्कृतियों के बीच संघर्ष और सामंजस्य की स्थिति। लेकिन दो संस्कृतियाँ जीवन व्यवहार में भी एक दूसरे से अलग होती है। यहाँ तक कि खान–पान, रहन–सहन, जीवन–व्यवहार, आराम फरमाने की स्थितियों आदि में भिन्नता होती है। संस्कृति के सभी घटक अंग एक–दूसरे से जुड़े होते हैं। उदाहरणतः समाज में आर्थिक कार्यकलाप के रूप और समाज की धार्मिक आस्थाओं के बीच संबंध होता है। बच्चों की शिक्षा–दीक्षा के कुछ विशिष्ट लक्षण भी आर्थिक कार्यकलाप के साथ जुड़े होते हैं।

निष्कर्ष :-

उपर्युक्त बातें सिर्फ दो देशों या महाद्वीपों के बीच नहीं देखी जाती बल्कि एक ही देश के दो भागों या प्रांतों में भी देखी जाती है। दक्षिण भारत के लोगों या प्रान्तों में भी देखी जाती है। दक्षिण भारत के लोगों का रहन–सहन, खान–पान उत्तर भारत के लोगों से अलग है। इसमें भूगोल के साथ–साथ जलवायु और परम्पराओं की कहीं प्रत्यक्ष तो, कहीं परोक्ष रूप में भागीदारी होती है। खाना–सोना, आराम करने के लिए मांसपेशियां ढीली

करना ये सभी क्रियाएँ मूलतः जैविक क्रियाएँ ही हैं। जैविक क्रियाओं के आधार पर अपनी संस्कृति का निर्माण करते हुए मानव ने सारतः एक समान क्रियाओं की पूर्ति के नाना उपाय खोजे हैं। इस प्रकार मानव समाज में जैव आवश्यकताओं की पूर्ति में सामाजिक–सांस्कृतिक रूप ग्रहण कर लिये हैं।

संदर्भ सूची :–

1. वर्तमान साहित्य, प्रवासी महाविशेषांक, जनवरी, 2006, पृष्ठ संख्या–47
2. डॉ. एन. जयराम, पुस्तक–भारतीय प्रवासी गतिकी और प्रवास, पृष्ठ संख्या–56 संस्करण, 2003
3. डॉ. एन. जयराम, पुस्तक–भारतीय प्रवासी गतिकी और प्रवास, संस्करण–2003, पृष्ठ संख्या 116
4. डॉ. एन. जयराम, पुस्तक–भारतीय प्रवासी गतिकी और प्रवास, पृष्ठ संख्या–53
5. डॉ. एन. जयराम, पुस्तक–भारतीय प्रवासी गतिकी और प्रवास, पृष्ठ संख्या–133–134
6. डॉ. एन. जयराम, पुस्तक–भारतीय प्रवासी गतिकी और प्रवास, पृष्ठ संख्या–133–134
7. श्यामचरण दूबे, पुस्तक मानव और संस्कृति, संस्करण 1960, पृष्ठ संख्या–207
8. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हजारी प्रसाद ग्रन्थावली संख्या–9, पृष्ठ संख्या–199
9. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हजारी प्रसाद ग्रन्थावली संख्या–9, पृष्ठ संख्या–19
10. श्यामचरण दूबे, पुस्तक– मानव और संस्कृति, संस्करण–1960, पृष्ठ संख्या–199
11. पुरुषोत्तम अग्रवाल, संस्कृति वर्चस्व और प्रतिरोध, पृष्ठ संख्या–27
12. पुरुषोत्तम अग्रवाल, संस्कृति वर्चस्व और प्रतिरोध, पृष्ठ संख्या–28
13. जैनेन्द्र कुमार, संस्कृति आस्था और तत्त्वदर्शन, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली प्रथम सं.– 2001 पृष्ठ संख्या–49
14. जैनेन्द्र कुमार, संस्कृति आस्था और तत्त्वदर्शन, पृष्ठ संख्या–46
15. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रन्थावली–9, पृष्ठ संख्या–198

ईमेल आई डी.– 45kamlesh@gmail.com

मो0 न0– 9785264045

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 64-66

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी हिंदी कहानियों में सांस्कृतिक संवेदना

डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी

सहायक प्राध्यापक (हिंदी), द्वारका दास गोवर्धन दास वैष्णव महाविद्यालय, चेन्नई।

भारतीय मूल के लोग समस्त विश्व में फैले हुए हैं। उन्होंने विदेशों को अपनी कर्मभूमि बनाया है। यह बात नवीन नहीं है। प्रवासी साहित्य भी नवीन नहीं है। परंतु बीसवी शती में प्रवासी भारतीयों ने भारतीयता की अस्मिता को जिंदा रखने की भरसक कोशिश की है। प्रवासी साहित्य जो पहले उपलब्ध था उससे आज का प्रवासी साहित्य एकदम अलग है। इन पैंतीस–चालीस वर्षों में नवीन विद्युत्यिकी के तकनीक विकसित हुए। प्रौद्योगिकी चरम सीमा लांघती गयी तो यह साहित्य भी अधिकाधिक जनप्रिय होता गया। जन–जन तक पहुँचता गया। प्रवासी भारतीय भारत से दूर होते हुए भी इस माध्यम से बहुत सान्निकट होते गए हैं। भारतीय मूल के विदेशों में रहनेवालों के सृजनात्मक लेखन को प्रवासी साहित्य कहा जाता है और जिन्होंने 'हिंदी' को केंद्र में रखकर या माध्यम बनाकर या हिंदी में लिखा है वे 'प्रवासी हिंदी साहित्यकार हैं तथा यह बहुत समृद्ध' प्रवासी साहित्य' है।

हमारा भारत वर्ष का एक अलग एवं अनोखा इतिहास रहा है। इसकी सभ्यता एवं संस्कृति सिर्फ भारत वर्ष में नहीं पुरे दुनिया में व्याप्त है। यह विश्व की प्राचीनतम एवं अधिक समृद्ध संस्कृति है। 'बसुधैव कुटुम्बकम्' भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र है। भारत के अनेक लोग विश्व के अलग अलग देशों में बसे है। वह सिर्फ आर्थिक रूप से एक–दुसरे के साथ सम्बन्ध नहीं रखते है। वह आर्थिक के साथ–साथ सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक रूप से एक–दूसरे के साथ सम्बन्ध बनाए है। प्रवासी साहित्यकारों को बहुत सारी कष्टों का सामना करना पड़ता है। जैसे कि प्रवास की पीड़ा, अपने धरती प्रति प्रेम, अपने भाषा एवं संस्कृति केलिए संघर्ष, नए देश एवं नए जमीन के लिए संघर्ष आदि। इतने कष्ट झेलने के बाबजूद भी उन्होंने अपने संस्कृति एवं मातृभूमि को नहीं भूले है। इसी सम्बन्ध में विक्रम विश्वविद्यालय की शोध–अध्यता स्वर्णलता खन्ना कहती है कि– "साहित्य उसी भाषा में लिखा जाता है जिस भाषा के संस्कार व्यक्ति को बचपन से मिलते हैं। साहित्य की अभिव्यक्ति यदि विदेशी भाषा में की जाए तो ऐसा साहित्य संवेदनशील नहीं होगा, इसलिए विदेश में बैठे हिंदी साहित्यकारों ने अपने लिखने का माध्यम हिंदी चुना, क्योंकि इसके माध्यम पीछे छूट चुके देश के आतंरिक सम्बन्ध को बनाये रखना चाहते थे।"[१]

प्रवासी भारतीयों को दो संस्कृति का समिश्रण करने में नई संस्कार, नए सोच, नए विचार, नए दृष्टिकोण से देखना पड़ता है। आधुनिकीकरण के प्रभाव में आज हम सब परिवार एवं समाज से दूर होते जा रहे है। संस्कृति के माध्यम से इसी सम्बन्ध को जोड़े रखने का काम प्रवासी साहित्यकारों ने किया है। आज अनेक प्रवासी

साहित्यकारों ने अपने रचना के माध्यम से सांस्कृतिक संवेदना को आज के पीढ़ी के अन्दर उजागर करने की कोशिश किए है।

प्रवासी साहित्य की प्रमुख लेखिका डॉ. सुदर्शना प्रियदर्शिनी की कहानी 'अखबारवाला' में भारतीय संस्कृति की झलक देखने को हमे मिलता है। 'अखबारवाला' एक छोटी कहानी है। परन्तु इसका चित्रण अत्यन मार्मिक ढंग से लेखिका ने किए है। इस कहानी में नायिका जया भारतीय संस्कार, संस्कृति, भावुकता एवं संवेदनशीलता को साथ लेकर विदेश में रहती है। वहां की संस्कृति एवं परिवेश से वह परेशान हो जाति है। वह लोगों से मिलना चाहती है। जया की एक पड़ोसी है, जो हमेशा अखबार उठाने आते है, एक दिन सुबह उनका निधन हो जाता है। परन्तु चारों और सन्नाटा है। उसके आस–पास दो अंग्रेजी आदमी खड़े है एवं शव ले जाने वाला गाड़ी था। जया उस अंग्रेजी आदमी से पूछने की आग्रह की परन्तु उसको कुछ मालुम नहीं था। जया विचलित हो जाती है, कारण भारत में मृत्यु की संस्कार अत्यंत अच्छे ढंग से किया जाता है। इसके सम्बन्ध में लेखिका कहती है कि– "चारों तरफ सन्नाटा था। एक भी व्यक्ति नहीं था। आसपास आने–जाने वाले भी भी फ्यूनरल वैन को देख कर रास्ता बदल रहे थे। कहीं किसी खिड़की से कोई चेहरा नहीं झाँका। किसी आगन में बंधा कुत्ता तक नहीं भौंका।"[२]

जन्म एवं मृत्यु मानव जीवन का परम सत्य है। कहा जाता है की मृत्यु हो जाने पर व्यक्ति की अंतिम संस्कार अच्छे होने पर उसके आत्मा को मुक्ति मिलती है। भारतीय लोगों की सोच है कि आत्मा को मुक्ति मिलने पर ही तो उसे पुनर्जन्म प्राप्त होता है। भारतीय भले ही अपने मज़बूरी के कारण विदेश में रहते हैं परन्तु संस्कार तो भारतीय है। इस कहानी के माध्यम से लेखिका यह कहना चाहती है कि विदेश में मृत्यु हो जाने पर उसको व्यक्तिगत मामला कह के उस बात को टाल देते है परन्तु एक भारतीय की संवेदना एवं उसकी संस्कृति हैं कि अपरिचित पड़ोसी की मृत्य की खबर सुन कर घंटे भर भूखे–प्यासें वंहा बैठे रहते है।

भारतीय संस्कृति एवं परम्परा को पुराने पीढ़ी के लोग ज्यादा महत्व देते है। नए पीढ़ी के बच्चे इस बात को काल्पनिक कह कर टाल देते है। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव इतने मात्र में लोंगों के ऊपर पड़ा है कि सही गलत का फरक भी वह नहीं जान पा रहे है। भारतीय संस्कृति जैसे लोप होते जा रहा है। सुषमा वेदी की कहानी 'चिड़िया और चिल' में इसका चित्रण देखने को मिलता है। इस कहानी में नायिका चिड़िया को उसके माता–पिता अच्छी संस्कार, अच्छा परिवेश, अच्छा भविष्य देना चाहते हैं। परन्तु जैसे चिड़िया बड़ी होती जाति है, उसके ऊपर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव पड़ता है। और वह स्वछन्द हो कर जीना चाहती है। खुलेपन से जीना चाहती है। मता–पिता के संस्कार को वह भूलना चाहती है। घर में सिर्फ पैसों के लिए संतान बनके रहना चाहती है। जब उसके मम्मी पैसे देने में मना कर देती है, तो चिड़िया बहुत कुछ बातें उनको सुनाने लगती है। इस सम्बन्ध में लेखिका कहती है कि– "ठीक है रख लो संभाल कर चिता पर रख कर साथ ले जाना जीते जी मुझे डिप्राइव करके सुख मिलता है तो लो.... मैं भी तुम दोनों के मरने का इंतजार कर लुंगी... माँ–बाप पता नहीं किस बात का बदला लेते हैं... ट्रस्ट का पैसा देंगे अपनी औलाद को नहीं।'[३]

इस कहानी के माध्यम से लेखिका यह कहना चाहती है कि पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से आज नए पीढ़ियों के अन्दर संवेदना कम होती जा रही है। अपने परिवार एवं समाज के प्रति कर्तव्य से लोग विमुख होते जा रहे है। आज हमें यह देखने को मिलता है कि जो पुराने पीढ़ी के लोग है वह भारतीय संस्कृति को जोड़

के रखना चाहते है। परन्तु आज के नए पीढ़ी के बच्चे वह सब जानने के लिए भी इनकार कर देते है। परन्तु इन प्रवासी साहित्यकारों ने भारतीय संस्कृति को जोड़ के रखते है।

सुषमा बेदी के और एक कहानी 'झाड' में हमें यह देखने को मिलता है कि कहानी का नायक सैम बानार्जी जिसका असली नाम समीर है। वह भारतीयता को ख़तम करना चाहता है। अपने आपको अमेरिकियाना बोलता रहता है। अपने माता–पिता के संस्कार को मानना नहीं चाहता है। बल्कि वह अपने माता–पिता को अमेरिकियाना जैसे बनने को कहता है। परन्तु उसकी माता उससे हिंदी सिखने के लिए मजबूर करती है। इस सम्बन्ध में लेखिका माँ एवं बच्चे की संवाद से यह स्पष्ट करते है कि– "नानी से हिंदी सिख लो।

भारतीय संस्कृति में पली–बढ़ी नारी कभी अपने संस्कृति को नहीं भूलेगी। अपने जीवन भर भी विदेश में रहे परन्तु अपने संस्कार, परम्परा, रीती–रिवाज को नहीं भूलती है। जितना भी कष्ट सहने को पड़े परन्तु वह कभी अपने पति के प्रति जो कर्तव्य है उससे विमुख नहीं होती है। ज़किया जुबैरी की कहानी 'बस एक कदम में इसका सही चित्रण देखने को मिलता है। इस कहानी की नायिका शैली खाना बनाने के बाद हमेशा अपनी पति का इंतजार करती है। आज तक भी कभी अपने पति से यह जानने की कोशिश नहीं करती है की उनके पगार कितना है। शैली की पति घनश्याम हर रोज घर भी नहीं आता है। फिर भी शैली यह जाने की कोशिश नहीं करती है की वह कहाँ रहता है। इस सम्बन्ध में लेखिका कहती है कि– "शैली को खाना बनाने, परोसने और खिलाने में विशेष आनंद की अनुभूति होती है। शायद इसलिए उसको हमेशा घनश्याम का इंतजार रहता था। जब मेज पर उसका छोटा सा परिवार भोजन के लिए बैठता वह सबके लिए गरमा–गरम फुलर हुए फुल्के बना कर परोसती है। भारतीय संस्कार में पली–बढ़ी लड़की...संस्कारों को समझती।'[४]

इस कहानी के माध्यम से लेखिका यह दिखानी की कोशिश किए है कि चाहे हम जितने भी हमारे कर्तव्य से विमुख हो जाए परन्तु भारतीय संस्कार एवं धर्म हमे सभी क्षेत्र में जुड़े रखने में सहायता करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. प्रवासी हिंदी साहित्य संवेदना के विविध सन्दर्भ– डॉ. प्रतिभा मुदलियार, पृ. सं. १०६
2. अख़बार वाला (उत्तरायण कहानी संग्रह) – सुदर्शना प्रियदर्शिनी, पृ. सं. ३
3. चिड़िया और चिल (चिड़िया और चिल– कहानी संग्रह)– सुषमा बेदी, पृ. सं. ६६
4. बस एक कदम (सांकल– कहानी संग्रह) – ज़किया जुबैरी, पृ. सं. ६१

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 67-70

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी साहित्य : अवधारणा, स्वरूप एवं लेखन प्रक्रिया

डॉ. पटेल माजिद भिकन
पोस्ट डॉक्टरल फेलो, (ICSSR), नई दिल्ली।

प्रवास की संकल्पना अत्यंत प्राचीन है। प्रवास शब्द 'वस्' धातु में 'प्र' उपसर्ग लगने से बनता है। वस् धातु का प्रयोग 'रहने' के अर्थ में किया जाता है। 'प्र' उपसर्ग लग जाने के कारण इसका अर्थ प्रवास शब्द का अर्थ होता है, विदेश गमन, विदेश यात्रा, घरपर ना रहना किसी दूसरे देश या बेगानी धरती पर वास करनेवाला व्यक्ति प्रवासी है। प्रवास का सामान्य अर्थ है – अपने जन्मस्थान से दूरवर्ती क्षेत्रों में कुछ समय के लिए या हमेशा के लिए प्रस्थान करना, निवास करना होता है।

'प्रवास' के लिए भिन्न–भिन्न शब्द कोशों में अलग–अलग शब्द निकलते हैं, जो प्रवास के प्रकृति के अनुसार उन्हें दिए गये हैं तथा प्रवास के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करते हैं।

बर्कल के अनुसार – ''प्रवासी एक व्यक्ति है, जो एक स्थान से दूसरे स्थान में स्थानान्तरण करता है।''[1]

Oxford Dictionary के अनुसार A Person who leaves his country to live in anothar."[2]

ई.एस.ली (E.S.Lee) ने प्रवास को परिभाषित करते हुए कहा है कि, ''प्रवास निवास स्थल में एक स्थायी अर्थ स्थायी परिवर्तन का नाम है।''[3]

प्रवासी वे हैं जो अपने देश को छोड़कर बेगाने या पराये देश में अनिश्चित समय के लिए जाते हैं, पर दूसरे देश में बस जाने का फैसला कर लेते हैं। प्रवासी वे हैं जो अपने देश की धरती से दूर विदेश में बसना अर्थात प्रवासन होता है।

प्रवास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपनी जन्मभूमि या अपने जन्म स्थान को छोड़कर किसी दूसरे देश में या विदेश में दूसरे देश की भूमि पर निवास करता है। इस प्रक्रिया के दौरान न जाने कितने देशों के मनुष्य ने एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण किया हुआ है। इस भ्रमण से ही संस्कृतियों के उदय और अस्त का सिलसिला आ रहा है। प्रवास की एक दीर्घकालिक परंपरा रही है। आदिकाल से मनुष्य कन्दमूल तथा सही मौसम की खोज में भौगोलिक क्षेत्र से अन्य सुदूर क्षेत्रों की तरफ प्रस्थान करता आ रहा है। अपनी घुमंतू प्रवृत्ति के कारण ही मनुष्य अपने अस्तित्व को बचा पाने में सक्षम हो पाया है।

प्रवास दो प्रकार का होता है, पहला वह जो स्वेच्छा से किया गया हो और दूसरा वह जो जबरदस्ती करवाया गया हो। प्रारंभ में प्रवास जिसमें मजदूर वर्ग गये थे कुछ मजदूर वर्ग को शर्तबंदी के आधार पर ले जाया गया था। पश्चात् एक वर्ग धन कमाने और भौतिक सुख–सुविधाओं को पाने की तलाश में जाने लगा। प्रारंभ में जानेवाला मजदूर वर्ग अधिक अनपढ था। जबकि वर्तमान में प्रवास किए जाने वाले लोगों में एक बहुत बड़ा वर्ग

अधिक पढ़ा लिखा है। जिसमें डॉक्टर, इंजीनियर आदि शामिल है।

बनारसीदास चतुर्वेदी के अनुसार, 'विश्व का सर्वप्रथम प्रवासी व्यक्ति 'मनु' है। मनु ने भारत से प्रवास करके मिस्र देश में वास किया। मनु प्रवास का प्रथम पुरूष है।''[4] धर्म प्रचारक तथा तीर्थ यात्रियों का भी प्रवास में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। ''भारत से लोगों का दूसरे देशों में जाकर बसना कम से कम दो हजार वर्षों से चला आ रहा है। लगभग आठ समुदाय ईसा–पूर्व दूसरी शताब्दी में तमिल–भाषी श्रीलंका गये जिप्सी नाम से विख्यात रोमानी लोग ईसा पूर्व चौथी शताब्दी के दौरान अफगानिस्तान की तरफ से टर्की होते हुए युरोप, अमेरिका, कनाडा, दक्षिण अमेरिका, न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया में फैल गए। भारत मूल के लोग पाँचवी शताब्दी और बीसवीं शताब्दी में इंडोनेशिया गये। उन्नीसवीं शताब्दी में सिंगापूर, मलेशिया, थाईलैण्ड, बर्मा, हांगकांग आदि सन 1834–1917 के दौरान शर्तबन्द भूमिका मॉरीशियस, रियूनिगयन, गयाना, त्रिनिदाद, सूरीनाम, ग्वाडालूप, फीजी, दक्षिण अफ्रिका आदि, उन्नीसवीं शताब्दी में पूर्वी अफ्रिका, उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में नेपाल और बीसवीं शताब्दी में यूरोप अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, न्यूजीलैण्ड, ऑस्टेलिया आदि देशों में भारतीयों का भारत से विदेश गमन और प्रवासन हुआ।''[5]

पीढ़ी–दर–पीढ़ी से प्रवास की प्रक्रिया, चली आ रही है। बेरोजगारी, धन लाभ तथा आवश्यकताएँ प्रवास का प्रमुख कारण रहे हैं। आज भारतीय विश्व के प्रत्येक देशों में देखे जा सकते हैं। एक समय ऐसा था जब कम शिक्षित वर्ग अपनी आकांक्षाओं और इच्छाओं को पूरा करने के लिए प्रवास करता था और आज इस कारण भारतीय लोग पूरे विश्व में अपना स्थान बनाकर बैठे हैं।

प्रवासी हिंदी साहित्य लेखन का अविर्भाव भारतवासियों तथा प्रवासी भारतीय जनमानस द्वारा किए जा रहे हैं संवेदनात्मक रचनाशील लेखन से हुआ। हिंदी भाषा एवं भारतीय जीवन तथा संस्कृति की वैश्विक धरातल पर पहचान एवं ख्याति दिलाने में प्रवासी हिंदी साहित्य लेखन की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। प्रवासी लेखक अपनी रचनाओं द्वारा हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने के साथ–साथ पाठक वर्ग को प्रवास की संस्कृति एवं प्रवासियों की स्थिति तथा उनके संघर्ष से अवगत कराने के साथ वहाँ की भौगोलिक, राजनैतिक एवं आर्थिक आदि परिस्थिति और विभिन्न समस्याओं को सामने लाने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं।

जो साहित्य विदेशी धरती पर जन्मे भारतीय निवासियों द्वारा लिखा गया है वहीं मूल रूप से प्रवासी हिंदी साहित्य माना जाता है। इस बात को ध्यान में रखकर प्रवासी साहित्य की दो श्रेणियाँ बनाई गई जो पहले भारत में रहकर लेखन करते थे बाद में विदेश में जाकर बस गए या बीच–बीच में नियमित रूप से भारत आते रहते हैं। इन्हें अर्थ प्रवासी साहित्य की संज्ञा दी जाती है। इसमें उषा प्रियंवदा, अचल शर्मा, अलका धनपत, टी,एन. सिंह आदि रचनाकार आते हैं। वही दूसरी श्रेणी में वह रचनाकार है जिनका जन्म विदेश में हुआ है और वहाँ रहकर वे हिंदी साहित्य लेखन कर रहे हैं। इस श्रेणी में अभिमन्यु अनत, डी. बीजेंद्र कुमार भगत, अजय मंगा, सुषम बेदी, डॉ. उदय नारायण गंगू, अजना संधीर, तेजेद्र शर्मा, अमित जोशी, वासुदेव पाण्डे, डॉ. पुष्पित, राज हिरामन, कृष्ण बिहारी आदि रचनाकार आते हैं जो अपनी कलम से हिंदी साहित्य को पूरे विश्व में फैलाकर समृद्ध एवं संपन्न बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

प्रवासी हिंदी साहित्य लेखन के संदर्भ में डॉ. कमल किशोर गोयनका लिखते हैं कि, ''हिंदी साहित्य में प्रवास प्रक्रिया का वैचारिक प्रारंभ मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'यह मेरी मातृभूमि' से माना जाता है कि पहली

कालजयी कहानी चंद्रधर शर्मा गुलेरी कि उसने कहा था में प्रवासी भारतीय सैनिकों की एक छवि प्रस्तुत की गई है, जो प्रथम विश्व युद्ध में राष्ट्रों की तरह से जर्मन सेनाओं के विरूद्ध लड़ रही है। 'गोदान' में धनिया–गोबर वार्तालाप में भी भारीच देश का उल्लेख है जो मॉरिशस का ही अपभ्रंश रूप है।''[6]

प्रवासी हिंदी साहित्य को विकसित करने में मॉरिशस, सूरीनाद, त्रिनिदान, ब्रिटेन अमेरिका, कनाडा आदि स्थानों पर लिखे गया हिंदी साहित्य महत्त्वपूर्ण है। जिसमें मॉरिशस की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। अभिमन्यु अनत यहाँ के मुख्य रचनाकार माने जाते हैं। इनका साहित्य प्रवासी जीवन एवं उनके संघर्ष को सामने लाता है। जिसमें इनकी कहानी 'खामोशी के चीत्कारें, इन्सान और मशीन (1978), वह बीच का आदमी तथा एक थाली समंदर (1988) और उपन्यास है– एक बीघा प्यार (1972), लाल पसीना (1977), तपती दोपहरी (1977) आदि महत्त्वपूर्ण है। मॉरिशस के दूसरे प्रमुख कहानीकार रामदेव धुरन्धर इनका कहानी संकलन 'विष मन्थन' (1995) प्रकाशित हुआ। पुजाबन्द सेन 'नया सफर सहने का (1972), दीपकचन्द बिहारी के दो कहानी संकलन सागरपार (1972) तथा 'स्वर्ग में क्या रखा है' 1978, महिला कथाकार में जिनका 'मिनिस्टर' (1980) में प्रकाशित हुआ और कृष्णलाल बिहारी ने पहला कदम (1960) में पहला मॉरिशस का उपन्यास लिखा। इसके अलावा रामदेव धुरन्धर ने 'छोटी मछली, बड़ी मछली' तथा 'पूछो इस मिट्टी' से आदि महत्त्वपूर्ण रचनाओं के माध्यम से प्रवासी जीवन के प्रत्येक पक्ष को देखा जा सकता है।

इसी प्रकार से इंग्लैंड के साहित्यकारों में उषाराजे सक्सेना का नाम अग्रनी है। उन्होंने इंग्लैंड को अपनी साहित्यिक कर्म भूमि बनाया है। उषा राजे सक्सेना की 'मिट्टी की सुगन्ध' और उषा वर्मा की 'साझी कथा यात्रा' यह महत्वपूर्ण रचना है। इसके अलावा विजय मायरा का 'रिश्तों का बंधन' और प्रतिभा डावर का 'वो मेरा चाँद और दो चम्मच चीनी' तथा भारतेंदु विमल का सोन मछली आदि उपन्यास महत्त्वपूर्ण है। जो इग्लैंड के प्रवासी जीवन और वहाँ की संस्कृति को सामने लाते हैं।

अब हम अमेरिका के हिंदी साहित्य लेखन की और नजर डाले तो यहाँ के साहित्य लेखन को विकसित कराने में उषा प्रियवंदा का नाम प्रमुख रूप से आता है। साठ के दशक के आस–पास लेखिका ने अपना लेखन आरंभ किया। तदुपरान्त कई लेखकों ने लेखन कार्य आरंभ किया जिसमें सुषम बेदी, सुदर्शन प्रियदर्शनी, पुष्पा सक्सेना, अनिता कपूर, देवी नागरानी, वेद प्रकाश आदि आते हैं। इन रचनाकारों ने हिंदी प्रवासी साहित्य के क्षेत्र में अपनी पहचान बनायी है।

सुषम बेदी की 'तीसरी आँख', रेणु गुप्ता राजवंशी की 'कौन कितना निकट', 'जीवन लीला' और सुधा ओम ढींगरा की 'कौनसी जमीन अपनी', 'कमरा नं. 103', इला प्रसाद की 'इस कहानी का अंत नहीं' और पुष्पा सक्सेना कृत 'माटी के तारे', 'वेलेंटाइन डे' तथा प्रतिमा सक्सेना की 'सीमा बंधन' आदि महत्त्वपूर्ण कहानियाँ है।

इसी प्रकार उपन्यास क्षेत्र में बेदी का 'हवन' तथा कतरा दर कतरा और सूर्यदर्शन प्रियदर्शनी के 'सुरज नहीं उगेगा', 'रेत के घर' और 'न भेज्यो विदेश' और सुधा ओम ढिंगरा का 'नक्कदार के बिनेट' और अशोक कुमार का 'सुबह का भूला' आदि उपन्यास महत्त्वपूर्ण है, जो अमेरिका का परिवेश वहाँ की संस्कृति तथा अपनी जन्मभूमि की यादें और नक्सलवाद आदि इनके साहित्य में बखूबी नजर आता है।

सूरीनाम में प्रवासी हिंदी साहित्य का उदय गिरमिटिया मजदूरों के माध्यम से हुआ। जिसमें पंडित लक्ष्मी प्रसाद बलदेव, मुन्शी रहमान खान, रणजीत सिंह बाबू चंद्रमोहन मंगल प्रसाद इत्यादी प्रमुख है। वर्तमान में विविध

विधाओं में लेखन कर साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं। अमरसिंह रमण कृत 'सूरीनाम बालक', 'साहस', आशा राजकुमार का 'टुकुर–टुकूर ताके', 'हिंदुस्तान', 'हम अकेले', मुंशी रहमान खान का –'निवेदन', 'सच्चा मित्र', राज मोहन का 'बुढ़ापे', 'सूरीनाम के प्रवासी' आदि रचनाएँ वर्तमान समय की समस्याओं पर उजागर करती है।

इन प्रवासी रचनाकारों ने लगभग सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलाकर प्रवासी जीवन के विभिन्न पहलुओं को अपने साहित्य द्वारा उजागर किया हैं। प्रवासी साहित्य में भारतीयों की प्रत्येक समस्या को किसी नए किसी रूप में प्रस्तुत किया है। यह रचनाकार कहीं यथार्थ रूप में तो कभी भावुक होकर प्रस्तुत कर रहे हैं।

निष्कर्ष :–

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि भूमण्डलीकरण और वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप एक बड़ी संख्या में भारतीयों का स्थानांतरण विश्व के अन्य देशों की ओर हो रहा है। प्रवास की संस्कृति अपने साथ अनेक विसंगतियों को भी साथ लाती है। सात समन्दर पार अनजाने लोगों के बीच अजनबी परिवेश तथा भाषिक संरचना के बीच विभिन्नताओं युक्त जीवनयापन अत्यंत कष्टदायक होता है।

प्रवासी हिंदी साहित्य के अनुभव प्राप्त रचनाकारों ने अपने साहित्य में बखूबी प्रवासी जीवन की समस्याओं को प्रस्तुत किया है जो हर पाठक को प्रवासी जीवन की वास्तविक स्थिति से अवगत कराती है।

संदर्भ :–

1. मानव भूगोल, अमित कुमार, विश्वभारती पब्लिकेशन, दरियागंज, नई दिल्ली, सं. 2013, पृ. 109
2. Oxford Advance Ledrneri's Dictionary, Dictionary Section, 7th Edirion-2005- P. No. 498
3. समाजशास्त्र : अवधारणाएँ एवं सिद्धांत, जे. पी. श्रीवास्तव, पी. एच. आई लर्निंग प्रावेट लिमिटेड पब्लिकेशन तृतीय सं., पृ. 60
4. सहाय कैलाश, प्रवासी भारतीयों की हिंदी सेवा, बनारसी दास चतुर्वेदी की परिभाषा (1944), पृ. 50
5. प्रवासी भारतियों में हिंदी कहानी संपादक – डॉ. सुरेन्द्र गंभीर, सहायक संपादक – डॉ. शर्मा, भारतीय ज्ञानपीठ, प्रथम सं. 2017, पृ. 13
6. प्रवासी हिंदी साहित्य : दशा एवं दिशा, प्रधान संपादक प्रो. प्रदीप श्रीधर, तक्षशिला प्रकाशन, प्रथम सं. 2018

मो. 8668397525

ई मेल –majeed.patel1@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 71-75

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी साहित्य और जय वर्मा की साहित्यिक दृष्टि

कु. मिथलेश स्नेही

शोधार्थी, हिन्दी अध्ययनशाला एवं शोध केन्द्र, महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, छतरपुर (म0प्र0)

वर्तमान हिंदी साहित्य जगत में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, किन्नर विमर्श के साथ–साथ प्रवासी साहित्य के मुद्दे को उठाना आज बहुत ही आवश्यक हो गया है। प्रवासी साहित्य का मतलब प्रवासी लोगों द्वारा लिखा गया साहित्य है। "प्रवासी शब्द में 'प्र' एक संस्कृत उपसर्ग जो गति, उत्कर्ष, उत्पत्ति, आरंभ, ख्याति, व्यवहार अर्थ के लिए प्रयोग किया जाता है। प्रवासी संधिमुक्त शब्द है जो प्र+वास=प्रवास में 'ई' प्रत्यय लगकर प्रवासी शब्द सृजन रहा है। प्रवास (संज्ञा पु.) संस्कृत शब्दार्थ है– 1. विदेश में वास करना, 2. अपना देश छोड़कर जाना, 3. विदेश, 4. यात्रा।"[1]

प्रवासी साहित्य के संदर्भ में डॉ. रेखा गौतम के विचार "प्रवासी लेखक का संवेदन संस्कार के रूप में अपने नये परिवेश को ग्रहण करता है, परिवेश बदल जाने से प्रवासी के जीवन में विशेषताएँ और जटिलताएँ आती हैं। जिस कारण उसके नए संस्कार, नया दृष्टिकोण, नए विचार, नई सोच और नई मान्यताएँ बनने लगती हैं। इन परिवेशों और परिस्थितियों को वे अपनी रचना का विषय बनाते हैं। इनके द्वारा रचित साहित्य प्रवासी साहित्य कहलाता है।"[2] प्रवासी साहित्य के संदर्भ में डॉ. विदुषी शर्मा का मत है कि "प्रवासी का अर्थ है भारत के अतिरिक्त कहीं और निवास करने वाले भारतीय ये मूल रूप से भारतीय हैं, परंतु उन्होंने अपनी कर्मभूमि विदेशों में बनाई है या इन्हें बनानी पड़ी है। इन भारतीयों के द्वारा जिस हिंदी साहित्य की रचना की जाती है, वह प्रवासी हिंदी साहित्य कहलाता है।"[3] डॉ. युसुफजई ने प्रवासी साहित्य को विविध भावनाओं की अभिव्यक्ति का मध्य मानते हुए कहते हैं–"प्रवासी साहित्य से हमारे मन मस्तिष्क में कई तरह के अर्थ और धारणाएँ उभरने लगती हैं। प्रवास में लिखा साहित्य, प्रवासी लेखक द्वारा लिखा साहित्य या ऐसा साहित्य जिनमें प्रवास के कारण उत्पन्न भावनाओं का उदात्त चित्रण है। प्रवास से उत्पन्न विस्थापन की त्रासदी, जीवन–संघर्ष, जय–पराजय का ऐसा चित्रांकन जो प्रवास के दर्द को अभिव्यक्त करता है।"[4]

राजकोट के ए. डी. चावला ने प्रवासी साहित्य को अस्तित्व बोध से जोड़ते हुए कहाँ है–"प्रवासी साहित्य उन भारतवंशी जन समुदाय की आवाज है, जो किसी कारण विदेशों की धरती पर गये, वहाँ जूझते हुए अपने आत्मबोध के साथ–साथ अस्तित्व बोध को रचनात्मक रूप प्रदान करते रहे।"[5] श्रीमती भूरिया सुशील प्रवासी साहित्य के संदर्भ में कहती हैं– "प्रवासी साहित्य यानी कि 'भारतीय मूल के विदेशों में रहने वालों का सर्जनात्मक लेखन' और जिन लोगों ने हिंदी भाषा को अपने लेखन का माध्यम बनाया या हिंदी भाषा को केंद्र में रखकर हिंदी में लिखा वे लोग प्रवासी साहित्यकार कहलाये हैं तथा उनके द्वारा लिखा गया साहित्य हिंदी का समृद्ध 'प्रवासी

साहित्य' है।"[6] ब्रिटेन प्रवासी लेखिका कादंबरी मेहरा अपने अनुभव से प्रवासी साहित्य को व्याख्यायित करते हुए लिखती हैं– "प्रवासी लेखक अपने अतीत से प्रेरित दिवंगत विषयों पर कहानियाँ लिख रहे हैं, जबकि भारत उनमें उभर चुका है, हो सकता है कि यह किसी को अखरता हो क्योंकि कुछ लोग दिवंगत को नहीं जानना चाहते परंतु हम प्रवासी जिस भारत द्वारा निर्मित हैं, उसे फटी कमीज की तरह कैसे उतार फेंक दें। वह बचपन, वह तरूणाई, वह परिवार प्रेम, जो हमें वीरान कर इसका कर्म क्षेत्र में साधे रहा, जिस भारत में हमारे मनोभाव सृजित हैं वह आज तीस–चालीस साल बाद भी जीवित है।"[7] डॉ. शशि भारद्वाज प्रवासी साहित्य को दो देशों की संस्कृति व संघर्ष से जोड़ते हुए कहती हैं– "विदेशों में रह रहे भारतीय जो वर्षों पूर्व अपना वतन छोड़कर चले गए थे, केवल भाषा और विकसित संस्कृति लेकर गए थे, उसको बचाए रखने में उन्होंने कितना संघर्ष किया और उनका यह संघर्ष उनके लेखन में कितना उभर कर आया है, उसका प्रतिफल यह साहित्य है।"[8]

उपरोक्त विद्वानों द्वारा प्रवासी साहित्य का उसके स्वरूप, लक्षण, वैशिष्ट्य आदि को देखते हुए परिभाषित करने का भरपूर प्रयास किया है। परंतु हिंदी साहित्य की अन्य विधाओं कहानी, उपन्यास, निबंध, नाटक, काव्य के जैसे 'प्रवासी साहित्य' की भी एक परिभाषा परिपूर्ण एवं सर्वमान्य नहीं हो पायी है। क्योंकि इसका भी दालान विस्तृत हो गया है।

सामान्य मनुष्य के समान ही प्रवासी साहित्यकारों के जीवन में भी अनेक समस्याएँ व्याप्त होती हैं। अपनी जन्मभूमि व अपने लोगों से दूर होने की पीड़ा उन्हें विदेशों में भी सालती रहती है। देश में बिताए जीवन व खट्टी–मीठी यादों में उसका मन उलझा रहता है। शिक्षा, नौकरी या विवाह किसी भी कारण से अपने देश से दूरी जहाँ उसे एक नए जहान से परिचय कराती है वहीं पुराने रिश्ते नाते फीके भी पढ़ने लगते हैं। सांस्कृतिक परिवर्तन भिन्न रीति–रिवाज अनेक बदलावों को प्रवासी व्यक्ति धीरे–धीरे स्वीकार कर पाता है। भारतीय समाज से विदेशी समाज प्रत्येक अर्थों में भिन्न है। वहाँ की परंपराएँ, रीति–रिवाज, वैचारिक दृष्टिकोण, भौगोलिक परिस्थितियाँ सभी भिन्न होती है जिससे मेल मिलाप व सामंजस्य बिठाने में थोड़ा समय लगता है। भाषाओं की भिन्नता के कारण कई बार अर्थ परिवर्तित हो जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रवासी जीवन में अनेक तरह की समस्याएँ व्याप्त होती हैं।

प्रवासी साहित्यकार अपनी रचनाओं के माध्यम से हमें वर्तमान जीवन शैली के विभिन्न पहलूओ से रूबरू करते हैं। प्रवास के कारण होने वाले विभिन्न अनुभवों को साझा करते हैं। प्रवासी साहित्यकारों में मॉरीशस के प्रथम हिंदी लेखक पंडित आत्माराम विश्वनाथ (1891) से लेकर कादंबरी मेहरा (ब्रिटेन), अंजना संधीर (अमेरिका), जय वर्मा (ब्रिटेन) आदि तक ने गहराई से अपने युग के परिवेश का चित्रण अपने साहित्य तथा कल्पना विलास को लेकर दिग्दर्शित किया है।

जय वर्मा प्रवासी साहित्यकार में उभरता हुआ नाम है। वे कवयित्री हैं, कहानीकार हैं, हिंदी एक्टिविस्ट हैं और नॉटिंघम में हिंदी की अध्यापिका भी रही है। वे निरंतर हिंदी के विकास के लिए हिंदी संस्था 'काव्य रंग' की गोष्ठियों का आयोजन करती हैं। जय वर्मा मूल रूप से भारत की निवासी है उनका जन्म भारत में उत्तर प्रदेश के अंतर्गत मेरठ जिले के जिवाना गाँव में हुआ। आपकी प्राथमिक शिक्षा रूद्रपुर, नैनीताल और उच्च शिक्षा (बी. ए.) रघुनाथ गर्ल्स कॉलेज मेरठ में संपन्न हुई। वर्ष 1971 में डॉ. महीपाल सिंह के साथ विवाह उपरान्त यू.के. के नॉटिंघम शहर में बस गई। अपने निरंतर कुछ नया करने की चाह में ब्रिटेन में बी.टेक., एडवांस डिप्लोमा एवं पोस्ट

ग्रैजुएट सर्टिफिकेट नॉटिंघम ट्रैंट यूनिवर्सिटी से पूर्ण किए। आप गोल्फ की भी विशेषज्ञ खिलाड़ी रही है। आपकी रचनाओं की ओर दृष्टि डाले तो कविता संग्रह 'सहयात्री है हम' (2009), कहानी संग्रह 'सात कदम' (2009) प्रकाशित हुई हैं। जय वर्मा को आगे 2007 नॉटिंघम के लॉर्ड मेयर ऑफ गेडलिंग द्वारा हिंदी कविता एवं निःस्वार्थ सेवा सम्मान प्राप्त हुआ। 2009 में उन्हें राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त मेमोरियल ट्रस्ट दिल्ली से काव्य संग्रह 'सहयात्री है हम' के लिये प्रवासी भारतीय साहित्यकार सम्मान प्राप्त हुआ। जय वर्मा को 2009 में भारत के शिक्षामंत्री श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक', उत्तराखंड के राज्यपाल श्री खंडूरी द्वारा देहरादून में सम्मानित किया गया। 2018 में उन्हें डॉ. हरिवंश राय बच्चन यूके हिंदी साहित्य सम्मान भारतीय उच्चायोग लंदन द्वारा सम्मानित किया गया है।

जय वर्मा का कविता संग्रह 'सहयात्री है हम' में विभिन्न प्रकार की कविताएँ संकलित हैं जिनमें से 'नारी' कविता में नारी के मनोभावों को अच्छी तरह से कवियत्री ने अभिव्यक्त किया है इसमें एक माँ अपने बच्चे को गोद में लेकर स्वयं को डॉक्टर के पास इलाज कराने जाती है परंतु स्वयं का इलाज न कराकर डॉक्टर से अचानक से अपने बच्चे को देखने का इशारा करती है कवयित्री ने उसकी अभिव्यक्ति इस प्रकार की है– "वह अपनी बीमारी भूलकर बच्चे को सहलाती है चुप कराने के लिए, खुश करने के लिए उसे देती है एक मुस्कराहट खूब सारा प्यार फिर भूल जाती है वो डॉक्टर के यहाँ स्वयं को दिखाने आयी थी मगर बच्चे की तरफ देखकर करुणा–भरी आवाज़ में कहती है संक्षेप में एक बात डॉक्टर मैं तो ठीक हूँ बस मेरे बच्चे का कर दो इलाज।"[9]

'पत्थरों के शहर में' कविता में जय वर्मा ने व्यंग्य को प्रतीकात्मक शैली में लिखा है। तथा इस कविता के माध्यम से पत्थर दिल होते इंसानों और मुखौटे पहने हुए चेहरों पर व्यंग्य किया गया है–"पत्थरों के इस शहर में हम घर ढूँढ़ें कैसे मुखौटों के पीछे छुपे हैं चेहरे इंसानों को पहचानें कैसे?"[10] 'तुम्हारी याद में' कविता में जय वर्मा भारत देश को याद करती है तथा यह भी दर्शाती हैं कि भारतीय लोग किसी भी देश में रहे वह कहलाते हिंदुस्तानी ही है–"यूँ तो तुम्हारी याद हर रोज़ आयी दूरी भी मगर हमें खूब भायी तुम्हारी याद में रह रह कर आँसू जो बहाये नदियाँ झरने और सागर भी शरमाएँ हे वतन अगर हम इतनी दूर न रहते रात और दिन तुम ख़्वाबों–ख़्यालों में न होते हर पहलू में हम वतन को ही अपनाते रहे कहीं भी हम हिंदुस्तानी ही कहलाते।"[11] 'फिर से रामराज्य' कविता में जय वर्मा मर्यादा पुरुषोत्तम राम को इस कलयुग में बुला रही हैं ताकि हिंसा, अधर्म और स्वार्थ मिटा सके–"हे मर्यादा पुरुषोत्तम राम मैं तुमसे आज कहती हूँ तुम्हें कलयुग में आकर देखना होगा हिंसा, स्वार्थ और अधर्म को मिटाना होगा राजनीति को फिर से संभालना होगा हनुमत को साथ लाना होगा वरना पूर्ण कैसे होंगे अधूरे सपने और कैसे होगा फिर से राम राज्य।"[12]

'सात कदम' कहानी संग्रह में 'कोई और सवाल', 'गूंज', 'गुलमोहर', 'सात कदम', 'किधर', 'फिर मिलेंगे' और 'गोल्फ' सात कहानियाँ संग्रहित हैं। यह सातों कहानियाँ जीवन के सात रंग व स्केच है। इनमें भारतीयता की खुशबू तो है ही तथा पाश्चात्यता का रंग भी है। 'कोई और सवाल' कहानी जय वर्मा की पहली कहानी है इसमें 'डोरीन' नामक स्त्री पात्र अपने वैवाहिक जीवन में एक लंबा समय पति पीटर के साथ बिताती है परंतु आपसी प्रेम का अभाव एवं अकेले गृहस्थी का भार उठाकर वह थक चुकी है। अंत में बेटे डेविट और बेटियों लूसी एवं एना के अपने काम में लग जाने पर वह अपना अलग रास्ता चुनती है वह अपने 'घर वापसी' की ओर यानी अपनी माँ के घर चली जाती है।

लेखिका लिखती है कि– "इस समय वह अपने बच्चों, समाज या किसी अंजाम के बारे में नहीं सोच रही थी, बस नये जीवन की तलाश में तेज गति से आगे बढ़ती जा रही थी।"[13] 'गुलमोहर' कहानी में वर्तमान युवा पीढ़ी पर भौतिकतावादी भावनाओं के हावी होने की विडंबना को दर्शाया गया है। कमला अपने पति सेठ ललित की आखरी निशानी गुलमोहर में अकेली रहती है। गुलमोहर की देखभाल करना ही मैं अपना सुख महसूस करती है कमला जी का पुत्र ध्रुव कनाडा में रहता है। वह अपना नया व्यवसाय शुरू करने के लिए 'गुलमोहर' को बेचकर माँ को कनाडा साथ ले जाने के लिए कहता है किंतु कहानी के अंत में ध्रुव माँ को एयरपोर्ट पर बिना बताए कनाडा चला जाता है ''बेटे की नीयत पर कैसे शक करूँ। संभवतः उसने ऐसी साजिश नहीं की होगी। वह हताश हो गई। सोचने की शक्ति उसमें बाकी नहीं बची थी। रूमाल निकालने के लिए जैसे ही हैंडबैग खोला कमला एक सफेद लिफाफा देखकर स्तब्ध रह गयी। वह सफेद लिफाफा उसने पहले कभी नहीं देखा था। घबराकर उसने काँपते हाथों से लिफाफा तत्क्षण खोला। वह चकित रह गयी कि लिफाफे में घर के ताले की चाबियों का एक गुच्छा और मुरादाबाद में आदर्श नगर में एक फ्लैट के बैनामे के कागज़ात कमला के नाम थे।"[14] लेखिका इस कहानी में यह भी दर्शाती है कि वर्तमान सामाजिक विसंगति यह कि माता–पिता की संपत्ति सभी को चाहिए लेकिन माता–पिता किसी को नहीं चाहिए। वृद्धावस्था की इस समस्या से संपूर्ण विश्व की संस्कृति जूझ रही है।

निष्कर्ष :–

इस प्रकार हम देखते हैं कि जय वर्मा की कहानियों और कविताओं में मानवीय संबंधों और सामाजिक सांस्कृतिक जीवन के यथार्थ का पूरी संवेदना के साथ चित्रण करती हैं। उन्होंने अपनी संवेदनशील रचना धर्मिता के माध्यम से समाज में उदात्त मानवीय मूल्यों की स्थापना तथा समाज को बेहतर बनाने का प्रयास किया है। स्त्री चरित्रों के मनोविज्ञान को चित्रित करने में उनकी गहरी पकड़ है उनकी कहानियाँ नायिका प्रधान है और स्त्री मन की संवेदना को बखूबी दर्शाती हैं। उनकी नायिकाएँ कमजोर या अबला नहीं है वे परिस्थितियों से जुझना जानती हैं और उनसे बाहर निकलना व उन पर काबू पाना भी। उनकी कविताओं में प्राकृतिक सुषमा का भी बड़ा मनोहारी चित्रण हुआ है। जय वर्मा करूणा, सहानुभूति और संवेदनाओं की कवयित्री हैं और भाषा की सरलता के कारण ये बोधगम्य भी हैं।

संदर्भ :–

1. डॉ. बापूराव देसाई, प्रवासी साहित्य का इतिहास : सिद्धांत एवं विवेचन, पराग प्रकाशन, कानपुर, वर्ष 2020, पृ. 13
2. डॉ. बापूराव देसाई, प्रवासी साहित्य का इतिहास : सिद्धांत एवं विवेचन, पराग प्रकाशन, कानपुर, वर्ष 2020, पृ. 15
3. डॉ. बापूराव देसाई, प्रवासी साहित्य का इतिहास : सिद्धांत एवं विवेचन, पराग प्रकाशन, कानपुर, वर्ष 2020, पृ. 15
4. डॉ. बापूराव देसाई, प्रवासी साहित्य का इतिहास : सिद्धांत एवं विवेचन, पराग प्रकाशन, कानपुर, वर्ष 2020, पृ. 15–16
5. डॉ. बापूराव देसाई, प्रवासी साहित्य का इतिहास : सिद्धांत एवं विवेचन, पराग प्रकाशन, कानपुर, वर्ष 2020, पृ. 16
6. डॉ. बापूराव देसाई, प्रवासी साहित्य का इतिहास : सिद्धांत एवं विवेचन, पराग प्रकाशन, कानपुर, वर्ष 2020, पृ. 16
7. डॉ. बापूराव देसाई, प्रवासी साहित्य का इतिहास : सिद्धांत एवं विवेचन, पराग प्रकाशन, कानपुर, वर्ष 2020, पृ. 16–17

8. डॉ. बापूराव देसाई, प्रवासी साहित्य का इतिहास : सिद्धांत एवं विवेचन, पराग प्रकाशन, कानपुर, वर्ष 2020, पृ. 17
9. जय वर्मा, सहयात्री है हम, अयन प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण 2020, पृ. 102–103
10. जय वर्मा, सहयात्री है हम, अयन प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण 2020, पृ. 36
11. जय वर्मा, सहयात्री है हम, अयन प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण 2020, पृ. 63
12. जय वर्मा, सहयात्री है हम, अयन प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण 2020, पृ. 120
13. जय वर्मा, सात कदम, अयन प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण 2020, पृ. 29
14. जय वर्मा, सात कदम, अयन प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण 2020, पृ. 52

ई–मेल – rajamithlesh208@gmail.com
मो0 –9179700516

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 76-80
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्विक परिदृश्य में प्रवासी हिंदी साहित्य

सविता शं. कोल्हे
पीएच.डी, शोधार्थी, हिंदी अनुसंधान केंद्र, म.स.गा. महाविद्यालय, मालेगांव (नाशिक)
(सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे)
प्रो. डॉ. अनिता नेरे
मार्गदर्शक, हिंदी अनुसंधान केंद्र (विभागाध्यक्ष), म.स.गा.महाविद्यालय, मालेगांव (नाशिक)

प्रस्तावना :-

ज्ञानार्जन का साधन है साहित्य। साहित्य द्वारा हमें जीवन जगत् का ज्ञान, कलात्मक आनंद, युग/आत्म प्रबोधन की उपलब्धि हो रही है। हिंदी साहित्य का विश्व में हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार एवं हिंदी के तेजी से बढ़ते प्रयोग में बहुत बड़ा योगदान रहा है। साहित्य हमें देश–विदेश की जानकारी, कार्य सभ्यता, परंपरा–संस्कृति, खानपान–पोशाख, उपलब्धि, समस्याएं, विचार, भाषाओं से परिचित होने का अवसर प्रदान करता है। हिंदी साहित्य में प्रवासी हिंदी साहित्य एक उभरता हुआ विषय है। प्रवासी साहित्य के अंतर्गत कविताएं, उपन्यास, कहानियां, नाटक, एकांकी, महाकाव्य, खंडकाव्य, अनूदित साहित्य, यात्रा वर्णन, आत्मकथा आदि है। भारतीय मूल के विदेशों में रहने वालों के सृजनात्मक लेखन को प्रवासी साहित्य कहा गया है। जिन्होंने हिंदी को केंद्र में रखकर या माध्यम बनाकर लिखा वे प्रवासी साहित्यकार है। हालांकि हिंदी में प्रवासी भारतीय साहित्य नवयुग का साहित्यिक विमर्श है, परंतु इसका आरंभ प्रेमचंद की 'यही मेरी मातृभूमि' (1908) तथा शूद्रा (1926) कहानियों से होता है। इन कहानियों में अमेरिका से लौटे भारतीय प्रवासी तथा मॉरिशस ले जाये गए भारतीय गिरमिटियां मजदूरों की कहानियाँ हैं। 'चाँद' जनवरी, 1926 में प्रकाशित प्रवासी अंक से प्रवासी साहित्य में अवतारणा हुई है। हालांकि प्रवासी साहित्य एक बहुत प्राचीन साहित्य नहीं है, लेकिन इसे नवीन साहित्य कहना भी अनुचित होगा। क्योंकि भारत से दूर देशों में जब भारतीय अलग–अलग देशों में गए, तब वे वहां पर अपनी दर्द–भरी दास्ता पंक्तियों में, कविताओं में सुनाते। जिससे यहां पर हिंदी साहित्य का सृजन होता गया और आगे प्रोद्योगिकी के बढ़ते दौर में यह साहित्य उभरता गया।

प्रवासी तोताराम सनाढ्य की "फ़िजी द्वीप में मेरे 21 वर्ष", अभिमन्यु अनत की "लाल पसीना" "गांधी जी बोले थे", "लहरों की बेटी" ऐसे चर्चित उपन्यासों से, रामदेव धुरंधर जी के ऐतिहासिक लेखन से हिंदी साहित्य की धारा और अधिक प्रबल होकर प्रवाहित हुई। मॉरीशस के उपन्यास सम्राट अभिमन्यु अनत की लगभग आधी शताब्दी की हिंदी–साधना से एक नई संवेदना तथा चिंतनधारा एवं परिवेश का साहित्य हिंदी–पाठकों तक पहुंचा, परंतु तब वह प्रवासी साहित्य के रूप में नहीं बल्कि मॉरीशस के हिंदी साहित्य के रूप में जाना जाता था। लेकिन

जब अमेरिका, इंग्लैंड आदि देशों के प्रवासी भारतीयों की हिंदी–रचनाओं और कृतियों के प्रकाशन का दौर शुरू हुआ तो इसके साथ प्रवासी भारतीय साहित्य की चर्चा आरंभ हुई।

आगे चलकर विभिन्न पत्र–पत्रिकाएं, किताबें प्रकाशित हुई जिससे प्रवासी साहित्य ने हिंदी साहित्य में एक नई दिशा खोजी और एक नया साहित्यिक संसार हमें प्राप्त हुआ है। प्रवासी भारतीयों के प्रवासी साहित्य ने एक नया विचार, नई संवेदना, नई जीवन दृष्टि तथा नया सरोकार प्रस्तुत किया। जिससे हिंदी पाठक को समृद्ध होने के साथ–साथ हिंदी के माध्यम से वैश्विक अनुभूति का अवसर भी मिला है। अब यह प्रवासी साहित्य हिंदी साहित्य का ही अंग है। हिंदी में अब प्रवासी साहित्य एक स्वीकृत तथा लोकप्रिय अवधारणा है।

हिंदी के लिए के अमेरिका में वेदप्रकाश 'बटुक', कुंवर चंद्रप्रकाश सिंह, रामेश्वर अशांत, गुलाब खंडेलवाल, विजय मेहता, उषा प्रियंवदा, सुषम बेदी, सुधा ओम ढींगरा, अंजना संधीर, देवेंद्रसिंह आदि प्रवासी साहित्यकारों ने अपना योगदान दिया है तथा निरंतर रूप से योदगन दे रहे है। इन प्रवासी साहित्यकारों द्वारा लिखित साहित्य से विश्व के कोने–कोने में हिंदी भाषा एवं प्रवासी भारतीय साहित्य की धारा प्रवाहित हुई है। इस साहित्य सृष्टि में प्रवासी साहित्यकारों, पत्रकारों ने अपने कलम से एक अलख जगाई है। जिसमें साहित्य के सृजन से हिंदी के भविष्य को सजाने का काम किया है।

प्रवासी हिंदी साहित्य को इस तरह से विभाजित किया जा सकता है :–

1. **गिरमिटिया मजदूरों के देशों का हिंदी साहित्य :–** इनमें मॉरीशस, फीजी, सूरीनाम, गयाना, दक्षिण अफ्रीका, त्रिनिदाद एवं टुबैगो आदि देश आते हैं।
2. **भारत के पड़ोसी देशों का हिंदी साहित्य :–** इन देशों में नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, श्रीलंका, म्यांमार (बर्मा) आदि देशों की गणना की जाती है।
3. **विश्व के अन्य महाद्वीपों का हिंदी साहित्य :–** इन महाद्वीपों को इस तरह से विभाजित किया जा सकता है,

(क) अमेरिका महाद्वीप :– संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, कनाडा, मैक्सिको, क्यूबा आदि।

(ख) यूरोप महाद्वीप :– रूस, ब्रिटेन, जर्मनी, फंस, बेल्जियम, हॉलंड, नीदरलैंड, नार्वे, डेन्मार्क, ऑस्ट्रिया, स्विट्जरलैंड, स्वीडन, फिनलैंड, इटली, पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया हंगरी, रोमानिया, बल्गारिया, उक्रेन, रोमन, क्रोशिया आदि।

(ग) मध्य एशिया के देशों का हिंदी साहित्य :– इनमें अधिकांश मुस्लिम देश है– इराक, ईरान, आबुधावी, टर्की आदि।

(घ) एशिया महाद्वीप :– चीन, जापान, कोरिया, थाइलैंड आदि।

(ड़) ऑस्ट्रेलिया :– ऑस्ट्रेलिया आदि।

गिरमिटियां देशों में हिंदी साहित्य की आधारशिला :–

प्रवासी देशों मे जब भारतीय मजदूर बंधुआ प्रणाली के तहत गए तब वे अपने साथ अपनी संस्कृति, अपने ग्रंथ को साथ लेकर गए। आगे उनके धर्मग्रंथ ही इन देशों में हिंदी साहित्य की आधारशिला बनीं। फीजी में "रामचरितमानस" ग्रंथ भारतीयों की रक्षा और हिंदी सीखने का माध्यम बना। जिससे प्रवासी भारतीयों की आवश्यकताओं की पूर्ति हुई। सुश्री कोमल जी अपने लेख में लिखती है, "प्रवासी हिंदी साहित्य में भारतीय

सांस्कृतिक मूल्यों को गढ़ने, तोड़ने और नव निर्माण की ओर अग्रसर करने की अपर संभावनाओं के साथ वैश्विक स्तर पर हिंदी साहित्य को एक नई सबल पहचान दिलाने में और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को प्रचारित प्रसारित करने की प्रबल क्षमता दिखाई देती है।" संस्कृति और भाषा हिंदी साहित्य की आधारशिला रहीं है। इन्हीं कारणों से फीजी में सन् 1913 में 'सैटलर' नमक अंग्रेजी पत्रिका का हिंदी अनुवाद साइक्लोटाइल रूप में निकला। यहाँ पर सन् 1935 से प्रकाशित 'शांतिदूत' पत्रिका ने भी 80 साल पूरे किए है। फीजी में स्वर्गीय प्रो. बृज लाल जी, पंडित भगवान दत्त पांडे, गुरुदयाल शर्मा जी, पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी ने 'प्रवासी भारतवासी' फीजी की समस्या, फीजी में भारतीय ऐसी कई पुस्तकें लिखी, इस दौर अन्य साहित्यकारों ने हिंदी साहित्य का सृजन किया हैं और जोगिंदर सिंह कवल, तोताराम सनाढ्य, सत्येंद्र नंदन ऐसे कई हिंदी साहित्यकार प्रवासी हिंदी साहित्य को समृद्ध कर रहे है।

मॉरीशस में प्रारंभिक साहित्यकारों में वसुदेव विष्णुदयाल, जयनारायण राय, बृजेंद्र भगत, भागवती देवी का नाम लिया जाता है। अपने साहित्य से प्रवासी भारतीयों की विपन्नता और सामाजिक विषमता का मार्मिक चित्रण उन्होंने किया है। सूरीनाम में कवि मुंशी रहमान, महादेव खुनखुन, रमण जी नारायण आदि कवियों और कथाकारों ने सूरीनाम में हिंदी साहित्य का सृजन किया है।

त्रिनिदाद में बी. एन. गोयल ने 'एरी' छोटा–से गाँव को पश्चिम का प्रथम हिंदी तीर्थ कहा है। वे कहते है कि यहाँ पर गिरमिटियों के भजन, संगीत हिंदी में रहा करते थे। त्रिनिदाद में सन् 1887 तक जहांजों में भारतीय मजदूर लाने का क्रम जारी रहा, जिससे 'एरी' में हिंदी बोलनेवालों की संख्या लगभग 20 हजार से अधिक है। सूरीनाम में सूरीनाम हिंदी परिषद के अध्यक्ष जानकी प्रसाद सिंह जी के सहयोग से विद्यानिवास सूरीनाम साहित्य संस्था निर्मित की जहां पर सप्ताहांत में सृजनात्मक लेखन की कक्षाएं हुई। उसी दौरान जो रचनात्मक साहित्य तैयार होता था, उसे पत्रिकाओं में प्रकाशन का अवसर मिलता। इसके परिणामस्वरूप यहाँ पर नए लेखक, कवि तैयार हुये जिनकी परंपरा जारी है। यहाँ पर सूरीनाम का सृजनात्मक साहित्य शीर्षक से 2012 में पहली बार हिंदी साहित्य प्रकाशित हुआ।

हिंदी शिक्षण एवं प्रशिक्षण :-

विश्व में हिंदी की लोकप्रियता को देखते हुये 150 से अधिक देशों में हिंदी शिक्षण एवं प्रशिक्षण के अनेक शिक्षण संस्थान–विद्यालय शुरू हो गए है। यह इस बात का प्रमाण है कि विश्व में हिंदी के प्रति अधिक झुकाव है। मॉरीशस सरकार ने सभी स्तरों पर अर्थात प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर हिंदी भाषा को अध्ययन की व्यवस्था की है। महात्मा गांधी संस्था में हिंदी पाठ्यक्रम के तहत हिंदी पढ़ाई जा रही है। मॉरीशस सनातन धर्म मंदिर परिषद हिंदी के माध्यम से कई वर्षों से प्रशिक्षण दे रहा है। वहीं गीता मण्डल, हिन्दू महासभा, तिलक विद्यालय, हिंदी प्रचारणी सभा, आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा, गहलोत राजपूत महासभा, मानव सेवा निधि, हिंदी संगठन (हिंदी स्पीकिंग यूनियन) से हिंदी का प्रचार–प्रसार एवं हिंदी शिक्षण हो रहा है। इसके अलावा यहाँ पर मॉरीशस हिंदी सचिवालय की स्थापना भी की गई है, जिसमें हिंदी के साहित्यकारों के लेखों, उनके नामों का संग्रहण होने के साथ–साथ यहाँ पर अधिकतर कार्य हिंदी भाषा में होता है। हिंदी शिक्षा के लिए दक्षिण अफ्रीका में 25 अप्रैल 1948 को स्थापित हिंदी शिक्षा संघ में पंडित नरदेव जी वेदालंकार की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण थी।

हिंदी अध्यापन अनेक हिंदी संघो, हिंदी संस्थाओं द्वारा विश्व में हिंदी अध्ययन के कार्यक्रम चलाए जा रहे

है। केंद्र सरकार द्वारा भी हिंदी अध्ययन हेतु हिंदी शिक्षण योजना चलाई जा रही है। विश्व के अनेक विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में हिंदी अध्ययन–अध्यापन का कार्य तेजी से चल रहा है। भारत में केंद्र सरकार के प्रयासों व स्वयं सेवी संस्थाओं के प्रयासों से हिंदी सीखने वालों की संख्या में भी निरंतर वृद्धि हो रही है।

विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन :–

दुनिया के विभिन्न देश फीजी, सूरीनाम, मलाया (मलेशिया), मॉरीशस आदि देशों में बसे भारतवंशियों के जीवन, इतिहास और भारत से जुड़ाव–लगाव की जानकारी, उनकी संघर्ष के समाचार, सूचना के लिए हिंदी भाषा में सृजित साहित्य प्रकाशित हो रहा है। यह प्रकाशित प्रवासी साहित्य भारतीय पाठकों तक सहज उपलब्ध हो, इसके लिए विदेश मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा विश्व हिंदी सम्मेलन, संगोष्ठियों एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। जिससे विश्व भर में फैले हुये भारतीयों की रचना से परिचित होने का अवसर हमें मिलता है। मॉरीशस में हिंदी सचिवालय बनाया है। हिंदी सचिवालय के द्वारा हिंदी के प्रचार–प्रसार में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। प्रवासी साहित्यकारों की रचनाएँ पाठकों के समक्ष आने के लिए वेबसाइट पर उनका परिचय उपलब्ध किया गया है। साथ ही हिंदी से जुड़ी गतिविधियों की जानकारी भी उपलब्ध की जा रही है। फीजी में 12वां विश्व हिंदी सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में फीजी के हिंदी रचनाकारों को एक मंच मिला, उनका साहित्य पाठकों के समक्ष और भी अच्छे से आया। देश के राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी को अधिक समृद्ध करने के लिए विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। कंठस्थ टूल 2.0 अनुवाद में सहायक है। हिंदी पुरस्कार, हिंदी दिवस प्रतियोगिता आदि विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन से हिंदी भाषा का विकास हो रहा है।

उपसंहार :–

वैश्वीकरण की वर्तमान स्थिति में हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए और भी प्रयत्न करने की आवश्यकता है। वह इसलिए क्योंकि हिंदी एक ऐसी समृद्ध भाषिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक परंपरा की वाहिनी है, जो हर पहलू पर भारत की एकता और अखंडता को प्रदर्शित करती है। प्रवासी साहित्य के रूप में हिंदी भाषा के विश्वभर में बढ़ते कदम हिंदी के विकास की अच्छी पहल है। यह साहित्य के रूप में हिंदी विकास में एक अच्छी कड़ी है। विश्वभर में फैले प्रवासी भारतीयों के लिए यह जरूरी है कि उनके द्वारा रचित साहित्य को एक मंच प्रदान किया जाए। प्रवासी साहित्यकारों के लिए हिंदी भाषा वहां पर रोजगार के अवसर पर पैदा करें। इस निर्माण में अनुसंधान एक है, जिससे साहित्य में छिपे विषयों पर अनुसंधान से विविध विषयों को उजागर किया जा सकेगा। इसलिए प्रवासी साहित्य में अनुसंधान कार्य को बढ़ावा देना चाहिए। नई–नई संकल्पनाओं से इसमें अनुसंधान कार्य होना जरूरी है। साथ ही विश्व में मानक हिंदी के साथ उसके विकास मान रूपों का भी अध्ययन होना चाहिए।

नई पीढ़ी को आकर्षित करने के लिए विविध कार्यक्रमों का आयोजन हो, लायक अवसर और भाषा प्रोद्योगिकी की आवश्यकता के अनुसार मदद लेने पर और मल्टीमीडिया की मदद से हिंदी के शिक्षण की सामग्री तैयार करने में विश्व के देशों से सहयोग लिया जा सकता है। जिससे प्रवासी साहित्य के नव साहित्यकारों को अनेक अवसर उपलब्ध होंगे। प्रवासी देशों में रचित हिंदी साहित्य को इतिहास लेखन और आलोचनात्मक

मूल्यांकन मंस स्थान दिया जाना चाहिए। आवश्यकता अनुसार पाठ्यसामग्री भी तैयार की जानी चाहिए। इन सभी से परे विविध देशों के भारतीय डायस्पोरा की ओर से भी नई पीढ़ी को आकर्षित करने के लिए विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इन सभी प्रयासों के साथ–साथ इस बात को बिलकुल भी नज़रअंदाज नहीं किया जाना चाहिए की, अन्य भाषा शब्दों से हिंदी के शब्दों पर हो रहा आघात हिंदी भाषा को कमजोर करने की स्थिति है। जिसे बदलना या इसमें सुधार करना वर्तमान की आवश्यकता है। नई पीढ़ी तक हिंदी के शब्द पहुंचना यानि हिंदी के लिए किए गए प्रयास सार्थक होंगे। हिंदी की उन्नति में आ रहीं दिक्कतों का निराकरन हो सकेगा। विश्व भर में फैले हिंदी भाषा के वर्ग को प्रोत्साहन भी मिलेगा।

संदर्भ :–

1. साहित्य : जोहान्सबर्ग से आगे, प्रधान संपादक, डॉ. कमल किशोर गोयनका, प्रकाशक, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, साउथ ब्लॉक नई दिल्ली–110011 पृ. सं. 21
2. वहीं पृ. सं. 25
3. सूरीनामी हिंदुस्तानी साहित्य में भारतीय संस्कृति का प्रभुत्व, प्रो. पुष्पिता अवस्थी, गगनांचल, अंक 1–2 जनवरी–अप्रैल 2023, पृ. सं. 179
4. प्रवासी साहित्य : संघर्ष, संस्कृति और यथार्थ बोध, सुश्री कोमल, गगनांचल, अंक 1–2 जनवरी–अप्रैल 2023, (12वां विश्व हिंदी सम्मेलन विशेषांक) पृष्ठ सं. 120

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 81-83

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी हिंदी साहित्य में स्त्री संवेदना

एम. सुब्रमण्यम

शोधार्थी, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापटनम–930003

प्रवासी शब्द का अर्थ है, विदेश गमन या विदेश यात्रा प्रवासी ऐसे लोगों का विस्तृत समुद्र है। जिसके विरासत या मातृभूमि एक समान है और जो विश्व के अन्य स्थानों में स्थानांतरित हो गए हैं। डायसपोरा शब्द ग्रीक शब्द से विकसित हुआ है लोग इसका मूल एक भौगोलिक विस्तार में हो या रामपुर मिश्र के अनुसार प्रवासी साहित्य ने हिंदी को नई जमीन दी है और हमारे साहित्य का दूसरा दलित विमर्श और स्त्री विमर्श की तरह विस्तृत किया है।

मृदुल गर्ग के अनुसार 'प्रवासी साहित्य ने हिन्दी को अलग करके देखने की बजाय उसे हिंदी की मुख्यधारा में स्थान दिया गया। विदेशों में रहने वाले लेखक जब संस्कृति के टकराव के बारे मैं लिखते हैं तो लोगों को उच्च श्रेणी के साहित्य से मुक्तित्व होने का अवसर मिला है। भारतीय मूल के लोग विश्व के विभिन्न देशों में फैले रहते हुए भी हिंदी लेखकों ने हिंदी साहित्य को जन–जन तक पहुंचाया। भारतीय मूल के लोग जो विदेशों में रहते हुए हिंदी के सृजनात्मक लेखन को विकसित कर रहा है। ऐसे लेखन कार्य को प्रवासी हिंदी साहित्य की श्रेणी में रखा जाता है। इन लेखकों ने हिंदी को केंद्र में रखकर साहित्य सृजन किया है। उन्हें प्रवासी हिंदी साहित्यकार की संज्ञा दी जाती है। प्रवासी हिंदी साहित्यकारों ने अपनी कृतियों में जिसका इतिहास, सभ्यता और संस्कृति को जीवित रखा। प्रवासी हिंदी साहित्य मारिशस, सूरीनाम, त्रिनिडाड, ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा आदि स्थानों पर लिखा गया हिंदी साहित्यकारों में उषाराजे का नाम अग्रणी है। इन्होंने इंग्लैंड को अपनी साहित्यिक कर्मभूमि बनाया। इनके साहित्य में भारत और भारतीय संस्कृति एवं भाषा के प्रति अधिक बल दिया है। उन्होंने अपनी रचनाओं में भारतीय संस्कृति को विस्तार से चित्रित किया है। आज साहित्य सृजन प्रवासियों के जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है।

उषा प्रियवंदा ने स्त्री मनोविज्ञान को अपने कथा साहित्य में विभिन्न दृष्टिकोण से उबारने का प्रयत्न किया। उदाहरण स्वरूप अहम की भावना युक्त नारी, व्यक्तित्व स्वातंत्र्य की और बढ़ती नारी काम अतृप्ति से कुंठित नारी, विद्रोही भावना से परिपूर्ण नारी अंतर्मुखी नारी। अकेली राह में गौरी अपनी सहेली के भाई रहमान से मित्रता कर बैठती है जो कि गौरी की अम्मा को पसंद न थी। उसकी अम्मा उसे बात–बात पर ताने सुनाती थी। अपने गुस्से व अहम के कारण गोरी घर छोड़कर चली जाती है। दृष्टिदोष में चंदा अपने माता–पिता के

घर बहुत ही ठाट–बाट से पली–बढ़ी थी। इसी कारण संयुक्त परिवार में वह अपने को नहीं ढाल पाई। रुकोगी नहीं राधिका में भारतीय एवं पाश्चात्य सामाजिक यथार्थ के साथ–साथ व्यक्ति की मानसिक स्थिति उसको प्रभावित करने वाले तत्वों का चित्रण किया है। जिसके कारण राधिका जैसे स्वतंत्रता पसंद युवतियों को अपने अस्तित्व एवं स्वतंत्र की खोज में भटकते रहने पड़ता है। विषमताओं की स्थिति आज भी दयनीय है। आधुनिक भौतिकवादी की दौड़ में स्त्री पारिवारिक स्नेह और मानवीय मूल्यों को मुर्दा जा रहा है। पाश्चात्य सभ्यता के आधुनिक कारण से व्यक्ति अपने भारतीय होने के दर्द को भूलता जा रहा है जिसको प्रदर्शित करने के लिए उपन्यास में राधिका के भाई–भाभी प्रवीण एवं कृष्णा जैसे पात्रों की रचना की गई है। विदेशों की प्रति आकृष्ट हो पढाई या व्यवसाय के लिए विदेशों में गए भारतीयों को वापस अपने देश में लौटकर समाज अपने बीच सामंजस्य करने में जो कठिनाईयां उठानी पड़ती है, उनसे राधिका की मन स्थिति पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है।

शेषयात्रा उपन्यास की प्रमुख पात्र अनु है। अनु भारतीय संस्कारों में पत्नी युवती है। जब उसके भारतीय संस्कारों का पाश्चात्य मूल से टकराव होता है तो उसका विश्वास बिखर जाता है। प्रबंध द्वारा छोड़ जाने पर वह निराश हो जाती है। उसके अत्याचार के बावजूद अन्य भारतीय पत्नियों की तरह वह भी प्रमाण से मन ही मन प्यार करती रहती है एवं उसका इंतजार करती है। अदालत मैं विविधता तलाक होने पर वह बहुत निराशा हो जाती है। अपनी सहेली दिव्या से प्रोत्साहन पाकर उनमें साहस आता है इसलिए कोशिश करके वह डाक्टर बनते हैं और दिव्या के भाई दीपांकर से शादी कर लेती है। अनु का चरित्र प्रत्येक भारतीय नारी के लिए प्रेरणा स्रोत एवं पुरुषों के लिए एक चुनौती है। जीवन के आत्मकथा को अपने व्यक्तिगत अनुभव और जीवन यात्रा संघर्ष में उषा प्रियवंदा ने सृजनात्मक आयाम दिया है। भारतीय की सीमाओं में नारी आधुनिक पुरुष को बांधने में असमर्थ है, जो आज के वातावरण में स्वतंत्र की बजाय स्वच्छंदता के व्यवहार करता है। शेष यात्रा में आधुनिक भारतीय स्त्री–पुरुष के सामाजिक संतुलन के लिए नारी की भारतीयता से जुड़ कर भी अपना एक नई पहचान अपनी आंतरिक क्षमताओं से साक्षात्कार करना है। कीरत अमेरिका में बसी एक भारतीय स्त्री है वह बहुत शराब पीता है। उसका रहन–सहन पाश्चात्य ढंग और संस्कारों जैसा है लेकिन वह भारतीय संस्कारों की बहुत इज्जत करती है। अपनी बेटी के लिए वह भारतीय लड़का ही पसंद करती है। स्त्री पुरुष के बीच स्वतंत्र संबंधों में वह विश्वास नहीं करती। वरमैन और उनकी पत्नी के संबंध में अपना स्पष्ट करती हुई कहती है हां अकेलापन तो है, पर पराये मर्द के साथ मजे करना तो शराफत नहीं।

उषा प्रियवंदा कथा साहित्य में नारी के अस्तित्व बोध और उनकी चेतना के केंद्र में मानो विज्ञान यथार्थ का समन्वय कर आधुनिक जीवन की गहरी त्रासदी और आत्म संघर्ष को सामने रखा। घर परिवार से दूर जाने के बाद स्त्री जब दूसरे परिवेश में जाती है, तब उसके मन मानस अंतर्दृष्टि स्थिति निर्मित होती है। उन्होंने अपने आप को दुःख से उभारने के लिए दूसरों पुरुषों का सहारा लिया। भारतीय स्त्री जानती है कि विदेश में पति के छोड़ दिए जाने के बाद भारत में कोई भी उन्हें सहारा नहीं देगा, इसी कारण वे वही की होकर रह जाती है। विदेश में ही नहीं भारत में यदि स्त्री किसी कारणवश पुरुष को छोड़े या पुरुष स्त्री को दोनों ही सूरतों में स्त्री

को ही दोषी ठहराया जाता है। आरंभ से ही स्त्री के मस्तिष्क में यह भावना उपज जाती है कि उसे सदा पुरुष के अधीन ही रहना है। इसी कारण वह अपने दुःख को मासिक में ढोती रहती है और वह त्रासदी से बच नहीं पाती स्त्री की यही मानसिक संवेदना उषा प्रियवंदा के कथा साहित्य में देखने को मिलती है।

संदर्भ :–

1. रुकोगी नहीं राधिका, उषा प्रियवंदा, पृष्ठ क्रम संख्या–39, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. शेष यात्रा, उषा प्रियवंदा, पृष्ठ क्रम संख्या 9, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

मोबाईल 7075553228,

ई–मेल : mangipudisiri1986@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 84-87

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों का विषय वैविध्य और 'ग्रीन कार्ड'

डॉ. रूचिरा ढींगरा

क

तेजेन्द्र शर्मा जी के पिता श्री नंदगोपाल मोहला 'नागमणि' उर्दू के प्रतिष्ठित लेखक थे। उन्होंने उपन्यास, अफ़साने, ग़ज़लें, नज़में और गीत विधाओं में सृजन किया। तेजेंद्र जी ने लेखन कला विरासत में अपने पिता से पाई, जिसे उनकी पत्नी इंदु जी ने पुष्ट किया।

दिल्ली कॉलेज सांध्य के श्री श्याम मोहन जुत्शी जी ने इनकी साहित्यिक रुचि को परिष्कृत व प्रभावित किया। ग्रेजुएशन के समय से ही तेजेन्द्र जी अंग्रेजी में कविताएं और कहानियां लिखने लगे थे। सन् 1977 में इन्होंने बायरन पर समीक्षात्मक पुस्तक एवं 1978 में जॉन कीट्स पर पुस्तक लिखी। इनके समीपस्थ परिवेश में घटित घटनाएं इन्हें मानसिक रूप से उद्वेलित कर लिखने के लिए प्रेरित करती हैं। उनसे संबद्ध प्रश्नों के संभावित उत्तर लेखन में ही उठने लगते हैं। इनके पात्र परिवेश की उपज हैं और अन्याय से पिसा हारा हर पात्र इनका आत्मीय हो जाता है। एअर इंडिया में फ़्लाइट परसर की नौकरी ने इनके जगत को पुष्ट और विस्तृत बनाया।'

1980 में 'प्रतिबिंब' कहानी से अपने कथा–लेखन का प्रारंभ करने वाले तेजेन्द्र जी की कहानियों मे समय–समय पर कथ्य की दृष्टि से परिवर्तन आया है यथा 'श्री वर्षा' पत्रिका में प्रकाशित इनकी दूसरी कहानी (एअर होस्टेस के जीवन पर आधारित) लोकप्रिय हुई।

'वर्तमान साहित्य' में छपी कहानी 'कड़ियाँ' का अंत लेखक ने पहले ही मॉस्को की उड़ान में लिख लिया था और शेष भाग मास्को के कॉस्मॉस होटल में लिखा। इस कहानी का कथ्य उनके अपने जीवन पर आधारित है। दादा, पिता, पोते के माध्यम से पाठकों से संवाद करती विवेच्य कहानी में पहली एवं दूसरी पीढ़ी के मध्य आपसी मतभेदों के परिणामस्वरूप उनकी संतति भी उनके प्रेम से वंचित हो जाती है। अपने परिवेश से अटूट जुड़े रहने के कारण उनकी कहानियों में एअरलाईन, विदेश, प्रवासी रिश्तों में पैठती अमानवीयता और खोखलापन, अर्थ, से संचालित होते रिश्ते, महानगर की समस्याएँ सभी स्थान पाते हैं। लिखे जाने से बहुत पहले तक कहानी का थी उनके मस्तिष्क को मथता रहता हैं। वे कहानी के शिल्प और स्ट्रक्चर को पूर्व निश्चित नहीं करते। विषय, चरित्र, घटनाक्रम सबको अपना रूप स्वयं तय करने का मौका देते हैं अतः कथ्य और शिल्प में बदलाव भी आते हैं।

'देह की कीमत' कथा संग्रह में कहानी 'देह की कीमत' भारत और जापान के मध्य तैरती है। लेखक ने

अर्थ से संचालित पारिवारिक संबंधों के खोखलेपन एवं एक विशेष वर्ग के अयोग्य भारतीयों के वैध–अवैध ढंग से विदेश जाकर कमाई करने की स्थिति को उजागर किया है।

बाबरी ध्वंस के वैश्विक प्रभाव, मानव मन से लेकर व्यावहारिक जीवन तक में गहरे पैठ चुके धर्म, आस्तिकता नास्तिकता की उलझन को बड़े सधे और साहसिक ढंग से लेखक ने 'चरमराहट' कहानी में लिपिबद्ध किया है। 'कैंसर' कहानी, पत्नी इंदु के कैंसर ग्रस्त होने से उनके हृदय और परिवार के लोगों में व्याप्त त्रासदी और विकृति की कथा है। इस भोगे हुए यथार्थ पर कथा वितान बुनते हुए भी उन्होंने अपनी लेखनी को भावनाओं के आवेग में बहने नहीं दिया और कहानी के कहानीपन को सुरक्षित रखा है। 'कैंसर' कहानी का बीज वह क्षण रहा जब इनकी पत्नी इंदु कैंसर से संघर्ष कर रहीं थीं। कालान्तर में कैंसर पर आधारित अन्य कहानियों का भी इन्होंने सृजन किया। 'मुझे मुक्ति दो' कहानी साहित्य में स्त्री विद्रूपता पर चोट करती है।

'ढिबरी टाईट' कथा संग्रह में 'ढिबरी टाइट' कहानी गल्फ देशों में बसे भारतीयों की पीड़ा को उद्घाटित करती है। 'नवयुग' और 'धुंधली सुबह' कहानियां साहित्यिक समाज की विडम्बनाओं, लेखक–संपादक की स्थिति पर तीखा व्यंग्य है तो 'धुंधली सुबह' कहानी सामाजिक उद्धार की अन्तहीन कथाएं लिखने वाले लेखकों के व्यक्तिगत धरातल पर अनैतिक और पतनशील आचरण की सत्यता को सामने रखती है। 'एक ही रंग' कहानी दिल्ली के नाई सुदर्शन लाल पर केंद्रित है। 'मुट्ठी भर रोशनी' तथा 'दूसरे श्रवण का शिकार' कहानियां सिनेमा को ध्यान में रखकर लिखी गई हैं।

'काला सागर' संग्रह में संकलित कहानियों यथा ग्रीन कार्ड, रेत के शिखर, उड़ान, ईंटों का जंगल, काला सागर, कड़ियां, रिश्ते, प्रतिबिंब, दंश और क्रमशः इत्यादि में शैशव कालीन संघर्षों से उत्पन्न रिश्तों के प्रति आक्रोश, महानगरीय जीवन की जद्दोजहद, विमानन क्षेत्र से संबंधित विषय हैं। कहानी 'काला सागर' में कनिष्क विमान के आतंकवादियों द्वारा बम से उड़ाने, ब्रिटेन व आयरलैंड के समुद्री क्षेत्र में कॉर्क के निकट समुद्र में गिरने, 329 यात्रियों और कर्मीदल के सदस्यों के जलसमाधि लेने को लेखक ने अपना विषय बनाया है। यह कहानी मृतकों के रिश्तेदारों की मानसिकता को उद्घाटित करती है जो उस हादसे से लाभ उठाने का प्रयास कर रहे थे। 'ईटों का जंगल' कहानी मुंबई में आवास की समस्या पर आधृत है।

कहानी संग्रह 'काला सागर' में संकलित 'ग्रीन कार्ड' कहानी विदेशी चाकचिक्य से प्रभावित हैं। अभय दिल्ली को वाहियात बेतुका शहर मानता है और यहां के लोगों को अभद्र। उसके अनुसार– 'यहां मनुष्य, मनुष्य को मनुष्य नहीं समझता। स्कूटर ड्राईवर हो या बस कंडक्टर, अध्यापक हो या नेता, किसी को भी बात करने की तमीज़ नहीं है। हर काम में धक्का–मुक्की, अव्यवस्था और राजनीति। हम हैं क्या? एक अनपढ़, गंवार, गंदे और गलीज़ लोगों का रेवड़! अनुशासन के तो हमें मायने ही नहीं मालूम। हमारा चरित्र क्या है? हमारी कीमत क्या है – पाँच रूपए की रिश्वत।' '(स्मृतियों के घेरे (समग्र कहानियाँ–1) तेजेन्द्र शर्मा, पृष्ठ 241)

महत्वाकाँक्षी अभय बैंक में कार्यरत है। अपनी तर्कशक्ति, विषय पर अधिकार तथा धारा–प्रवाह अंग्रेजी बोलने से वह सम्पर्कागत व्यक्ति को सहज ही आकृष्ट कर लेता था। वह 'हिंदुस्तान टाईम्स' का मैट्रिमोनियल कॉलम केवल इसलिए पढ़ता है कि कोई विदेश में बसा परिवार उसे बुला ले! अपने मित्र राज का हालचाल लेने गया अभय राज को दवा देने आई शारदा से टकराता है। यह जानकर कि वह अमरीका जाने वाली है वह उससे निकटता स्थापित कर सिनेमा और रेस्तरांओं मे समय व्यतीत करता है।

ये पल शारदा के लिए अमूल्य बन जाते हैं। पुरुष सम्पर्क से अछूती, दक्षिण भारतीय परिवार की लड़की शारदा अपने अस्पताल, रोगियों, और सहयोगी चिकित्सकों के मध्य नीरस जीवन जी रही थी। अतः अभय का पहला स्पर्श उसे रोमांचित करता है और उसके सूने एकांकी जीवन को पुनः सरसा जाता है। अभय की वास्तविकता, और स्वार्थ से अपरिचित शारदा को उसे छोड़कर अमरीका जाना अच्छा नहीं लगता किन्तु अभय उसे समझाता है –'शारदा डार्लिंग, केवल भावुकता जीवन नहीं है. जीवन है एक ठोस सच्चाई। और हमें भावना में बहकर सच्चाई को नकारना नहीं चाहिए। यह तुम्हारे कैरियर का प्रश्न है। और तुम चली भी गईं तो क्या हुआ? मैं भी बाद में वहीं आ जाऊंगा। हम कोई अलग थोड़े हो जाएंगे। हो सकता है तुम्हें वहां 'सेटल' होने में और मुझे वहां बुलाने में समय लग जाए, पर इसके लिए तुम्हें इतना अच्छा मौका हाथ से नहीं खोना चाहिए। तुम अमरीका अवश्य जाओ और ग्रीन कार्ड हासिल करने का प्रयत्न करो – अपने लिए भी और मेरे लिए भी.... तुम क्या समझती हो, तुम्हारे बिना मैं यहां चौन से रह पाऊंगा? पर नहीं... अपने स्वार्थ के लिए तुम्हें अमेरिका जाने से रोकूंगा नहीं।' '(स्मृतियों के घेरे – समग्र कहानियाँ– भाग 1, तेजेन्द्र शर्मा, पृष्ठ 242)

उस पर अपना विश्वास दृढ़ करने के लिए वह उससे माता–पिता की अनुमति के बिना ही मंदिर में विवाह कर रागात्मक संबंध स्थापित कर लेता है। शारदा के अमरीका जाने के पश्चात वह दिन रात यथाशीघ्र वहां पहुंचने के सपने देखने लगता है। अपने एकाकीपन को दूर करने के लिए वह शराब का अत्यधिक सेवन करने लगा। अपने पुराने अध्यापक डॉ० सोमदेव के विवाह की पंद्रहवी वर्षगांठ पर उसकी भेंट उनकी बी. ए. आनर्स फाइनल वर्ष की छात्रा सुगंधा से होती है।

वह शेक्सपियर से प्रभावित थी पर 'ओथेलो' नाटक में ओथेलो के चरित्र से नहीं। अभय उसे अपनी वाक–शक्ति से प्रभावित तो करता है किंतु उसके लेक्चरर बनने के पश्चात शोध करने के निश्चय को जानकर अभय किंचित चिन्तित होता है। निर्भीक, दृढ़ सुगन्धा उसके साथ रेस्तरां जाने से भी मना कर देती है, 'मैं आपके साथ अपने संबंधों की शुरुआत ऐसे रेस्तराओं के अंधेरों से नहीं करना चाहती। मैंने आप में एक प्रकाश की किरण देखी हैं। हमारे संबंध भी वैसे ही उजले रहें तो ठीक होगा। यदि आपको मुझसे मिलना ही हो तो मेरे कॉलेज जा सकते हैं या फिर मेरे घर। मैं छुपकर कोई भी काम नहीं करना चाहती।' (पृष्ठ 247)

अभय शारदा के पत्रों के प्रति भी धीरे–धीरे उदासीन होता गया। वह सुगन्धा से झूठ बोलता है कि उससे मिलने के उपरांत अमरीका जाने में उसकी रुचि नहीं रही। सुगन्धा को भी विदेश और विदेशी वस्तुओं में कोई रुचि नहीं थी। सुगन्धा की परीक्षाएँ समाप्त होने पर उसके माता पिता उसके विवाह का प्रस्ताव लेकर अभय के घर जाते हैं। अचानक विवाह की चहल–पहल के मध्य शारदा अभय का ग्रीन कार्ड लेकर आ जाती है जिससे सारी स्थितियां ही बदल जाती है। अभय और सुगन्धा का विवाह नहीं हो पाता और शारदा भी सारी वस्तुस्थिति से हतप्रभ और ठगी हुई अनुभव करती है। वह अभय का ग्रीन कार्ड–उसका सपना–लेकर वापिस अमरीका लौट जाती है। कहानीकार ने एक अत्यंत सामान्य कथ्य के माध्यम से ऐसे युवकों द्वारा सीधी सादी लड़कियों को अपने भ्रमजाल में फंसाने और उनका जीवन नष्ट कर अपनी महत्वाकांक्षा पूरी करने की घटना से अवगत और सचेत कराया है। शीर्षक मुख्य घटना से सम्बद्ध अत्यंत संक्षिप्त जिज्ञासा युक्त है।

लेखक ने अभय, शारदा और सुगन्धा तीन पात्रों को लेकर कहानी का ताना–बाना बुना है। शारदा और सुगंधा दोनों नारी पात्र अभय से जुड़े होने के कारण समान महत्व की हैं किंतु उनके चरित्र भिन्न हैं। शारदा अभय

की तर्कशक्ति से प्रभावित होकर उसके बनावटी प्रेम के झांसे में फंस जाती है दूसरी ओर सुगन्धा अभय के साथ शारदा की भाँति बिना आगा–पीछा सोचे आगे नहीं बढ़ती है। वह ऐसी आधुनिका युवती का प्रतिनिधित्व करती है जो कहीं से भी दब्बू नहीं है। सगाई होने के बाद भी शारदा के आकस्मात आगमन से सारी स्थिति को बड़ी ही आसानी से स्वीकार कर लेती है।

लेखक ने इस विषय में केवल 'सुगन्धा और अभय का विवाह नहीं हो पाया' लिखकर संकेत कर दिया है कि सुगंधा ने अपने को अभय द्वारा फैलाये जाल से सहजता से मुक्त कर लिया है। संवाद योजना की दृष्टि से भी कहानी प्रभावी है। शारदा का सीधापन, सुगन्धा की तेजस्विता और अभय का स्वार्थी, छलपूर्ण व्यवहार उनके संवादों से स्पष्ट हो जाता है। अस्पताल, सिनेमा हॉल, रेस्तरा, कॉलेज का गेट, अभय और सुगंधा का घर सारी गतिविधियों का केन्द्र हैं।

तेजेन्द्र जी की बहती भाषा शैली में सभी कथ्य रोचक हो उठते हैं। उनकी कहानी में महत्वकाँक्षा, रोमांचित, सशक्त, मंत्रोपचारण, अकाट्य, स्वर्णिम, अंतर्मन, प्रतिरोध, आलिंगनबद्ध सदृश तत्सम शब्दों के साथ ही तद्भव शब्दों (ऊहापोह, जानकारी) देशज (रेवड़) शब्द बिखरे मिलते हैं। उर्दू के कानूनन, वाहियात, हासिल, फिराक, ख़तरा, दिलचस्पी, तलाश, ज़हमत आदि शब्द भी अत्यंत सहज ढंग से प्रयुक्त हुए हैं। गंदे–गलीच, चहल–पहल, कूट–कूट कर शब्द युग्म तथा मिट्टी का शेर, खाते–पीते घर, भाग्य खुलना, मुहावरों एवं 'केवल भावुकता जीवन नहीं है, जीवन है एक ठोस सच्चाई' जैसी सूक्ति भी निरायास सजी मिलती है। 'तुम्हे मिलने' जैसे शब्दों पर पंजाबी भाषा की छाया दिखाई देती है।

तेजेन्द्र जी का अंग्रेजी पर अच्छा अधिकार है। उन्होंने 'अंग्रेजी वाली हिन्दी' का प्रयोग इतने कौशल से किया है कि अंग्रेजी के शब्दों का उभार अलग से पता नहीं चलता। विवेच्य रचना में अंग्रेजी के शब्दों का बाहुल्य मिलता है – स्कूटर ड्राइवर, मोटरसाईकिल, मैटरिमोनियल कॉलम, सरप्राईज़, प्रमोशन, हॉस्टल, ग्लैमर, हनीमून, कोर्टमैरिज, डार्लिंग आदि। चरित्रोद्घाटन के लिए कहानीकार ने वर्णानात्मक और नाटकीय दोनों प्रविधियों का अवलम्ब लिया गया है।

निष्कर्षतः आधुनिक कहानी घटना विहीन होती जा रही है पर तेजेन्द्र शर्मा जी कहानी में कहानीपन बनाए रखने में सफल दिखाई देते हैं। केवल शब्दों के साथ खिलवाड़ करना उन्हें पसन्द नहीं है। केवल घटना सुनाना भी उनका अभिप्रेत नहीं होता। इन कहानियों में लेखक की यथार्थ को उघाड़ने वाली विराट कल्पना शक्ति के साथ उनके कथा–कौशल का प्रकर्ष दिखता है। विषयवस्तु पर उनकी दृष्टि की गहरी पकड़ है।

तेजेन्द्र जी ने साहित्यिक विमर्शों पर ना लिखकर उन्हीं विषयों को अपना आधार बनाया जिनपर उनकी कलम स्वाभाविक रूप से चली। स्वाभाविकता उनकी कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता है जो इन्हें स्वाभाविकता के रचनाकार के रूप में भीड़ से अलग खड़ा करती है। अपनी कहानियों में विषय के प्रति वे बेहद ईमानदार हैं। उन्होंने अपनी लेखन शक्ति के अनुरुप विषय चुने हैं। उन्होंने ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित एक भी कहानी नहीं लिखी क्योंकि ग्रामीण परिवेश से उनका कभी निकट या दूर का संबंध नहीं रहा। तेजेन्द्र जी की कहानियों की प्रस्तुति भी अपनी तरह की है। पाठकों के हाथों में सूत्र का एक सिरा देकर वे उसे अपनी भाषा–शैली के आकर्षण में बाँध कथा के उस अन्तिम बिन्दु तक ले जाते हैं जहाँ से उसे रहस्यात्मक बना दूसरा सिरा और उसके साथ नवीन अनुभव मिलते हैं।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 88-90

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

ప్రవాసాంధ్ర కవితా సాహిత్యం - ఒక పరిశీలన

పేరు : నెమ్మలూరి భవాని

తెలుగు అధ్యాపకురాలు

సి.హెచ్.ఎస్. డి.సెయింట్ థెరిస్సా మహిళా డిగ్రీ కళాశాల,ఏలూరు.

ఆధునిక సమాజంలో మారుతున్న పరిస్థితులకనుగుణంగా మానవులు కూడా ఎంతగానో మారిపోతున్నారు. పోటీ ప్రపంచంలో పరిచయం లేని ప్రదేశాలలోకిపరిగెడుతున్నారు. వేరువేరు దేశాలలో స్థిరపడినా, భారతీయులు మాత్రం వారి దేశపు అలవాట్లను భాషను, సంస్కృతి సంప్రదాయాలను ఎన్నటికీ మరువలేరు. అలాంటి కొందరు భారతీయ భాషా భిమానులు స్వదేశ సాహిత్యం పై మమకారంతో వారి భావాలను, ఆలోచనలను కవిత రూపంలో వెలువడిస్తున్నారు. అలాంటి కొందరి ప్రవాసఆంధ్రుల కవితాధారలు తెలుగు సాహిత్యాన్ని మరింత అభివృద్ధి చేస్తున్నారు. స్వదేశంపై వారి అనుభవాలు, ప్రేమాభిమానాలు కవితల రూపంలో ప్రవహిస్తున్నాయి.
"అమెరికా ప్రయాణం" అనే శీర్షికతో బారు రు శ్రీనివాసరావు రచించిన కవిత వాస్తవమైన అమెరికా ప్రయాణాన్ని తలపిస్తుంది.

"ఇల్లు తాళం వేస్తుంటే
ఇల్లాలిని పురిటికి పంపినంత గుబులు
ఈడురాని కూతుర్ని అత్తారింట్లో దింపినంత దిగులు......
అయినవారు ఉన్న అగమ్య ప్రయాణం "...

వారి భావాలకు కవిత రూపం కల్పించి వాస్తవమైన అమెరికా ప్రయాణాన్ని చిత్రించి పాఠకులను ఆకట్టుకున్నారు. "నాలో నేనే "అనే మరో శీర్షికతో....

"పడగ్గదిలో కొంత, పెరట్లో కొంత
పక్కింట్లో కొంత, టీవీలో మరికొంత...
ఒంటరితనం ప్రతి రోజు నాలో మిగిలే ఉంటుంది
పరిచయం ఉన్న ముఖం కోసం కళ్ళు పరితపిస్తూనే ఉంటాయంటూ".....

అయినా తన ఇంటిని, ఇంటిలోని పాత ఫోటోలు వంటి తన జ్ఞాపకాలను, నిట్టూర్పుగా తన ఏకాంతాన్ని తెలియజేశారు. తెలుగు పద్యసాహిత్యాన్ని మరువలేని మరోకవి తెలుగు వెంకటేష్ "పిట్టలవేళ"అంటూ........

"బహుళ ప్రచారంలో ఉన్న దేశంలో
పద్యం జాడలేదు
కవి కాందిశీకుడయ్యాడు
కవి జీవించే తావు కొరకు"....

అంటూ తనలో కదిలే భావ ప్రకంపనలతో, అనుభూతులతో చక్కని కవితను రచించారు. "కాదేది కవితకనర్హం "అనిపించేలా చూరుకు వేలాడే కంకులు, మొలకెత్తే మట్టి వాసనను గుర్తు చేసుకుని వాటిపై పద్యాల్లల్లమని కవులకు ప్రేరణ నిచ్చేచక్కని కవితను రచించారు. శిష్టా వేంకటేశ్వరరావు గారు రచించిన కోనసీమ కవితలో కోనసీమ అందాలను చక్కని రుచులను, తలచుకుంటూ

" కోనసీమ కొబ్బరి బొండం,కంద్రిగ పాలకోవం
ఆత్రేయపురం పూతరేకులు, రావులపాలెం బిర్యానీ కుండలు
.... రావాలి మా సీమ"

అంటూ సీమ రుచులతో అందరికీ కోనసీమకు స్వాగతం పలికారు.

అంతర్వేది సముద్ర స్నానం
అప్పనపల్లిలో అన్నప్రసాదం
ఓడలరేవు సాగర తీరం

అంటూ కోనసీమ అందాలను వర్ణించి, కోనసీమకు ఆనందంతో ఆకాశమంత స్థానం కల్పించారు.

"మా ఊరు ఉత్తరం రాసింది నాకు
ఒకసారి చూసి పొమ్మని
కన్నీళ్లు పెడుతున్నచెరువుకు
ఈత కొడుతూ కలలో వచ్చావని "

అంటూ చెందలూరు నారాయణరావు రాసిన "ఓ ఉత్తరం ఆశ" కవిత వారి స్వదేశ అభిమానానికి నిలుస్తుంది. ఊరిలోని రచ్చబండ,గ్రంథాలయం వంటి వారి జ్ఞాపకాలను నెమరు వేసుకుంటూ తన ఊరిని పలకరించడం తన బాధ్యత అంటూ తన భావాలను అద్భుతంగా ఈ కవితలో చిత్రింప చేశారు. "అసహజ సహజం" అంటూ లలితానందు నేటి కాలపు జీవనాన్నిక్లుప్తంగా వివరించారు.

“ మతులు బదిలీ
గతులు బదిలీ
బతుకు బదిలీ
మెతుకు బదిలీ
స్మృతులు బదిలీ”

బదిలీ అయ్యేప్రపంచ సౌందర్యాన్నిసహజ సుందరంగా ఈ కవితలో కవి తెలియజేశారు. మనిషికి బంధాలు,విశ్రాంతి ఎంత అవసరమో తెలియచేస్తూ ఎలమర్తి అనురాధ రచించిన "విన్యాసం" కవిత పాఠకులను ప్రేరేపిస్తూ కాస్త ఆలోచనకు గురిచేస్తుంది. పరిగెట్టే ప్రపంచంలో ఒకరికి ఒకరు ఉన్నారనే అనే మాటలు మరిచిపోతున్నారని తెలియజేస్తుంది.

“మాట కలిపి
మది కబుర్లు వలకబోస్తూ
ఒకరి కోసం ఒకరనే మాటే మరిచిపోయారని
ప్రతి నిమిషం యంత్రాలతోనే సహవాసం
తప్పని తెలిసినా అదే ఒప్పని
ముందుకురికి మిత్రులారా
ఈ అలవాట్లు కాస్త దూరంగా జరగండి.”

ఇదే నేపథ్యంలో పరిగెత్తి అలసిపోయే మనిషికి సేద తీరేట్లా శిరీష కుంభారీ "బహుమతి "అనే కవితలో..

“నీ బాల్యాన్ని అపట్టిగి
స్వచ్ఛమైన రోజులని
ఇష్టమైన జ్ఞాపకాలని
నీకోసం తెచ్చానోయి”...

అంటూ మనిషిని కొంతసేపు అన్నీమరిచిపోయి తేలికపడమంటూ,హాయిగా చిన్నాటి జ్ఞాపకాలతో, చిరునవ్వులతో వేడిని చల్లారుస్తో మన్ని చక్కని కవితతో బహుమతి అందించారు.

ఈ విధంగా నేటి కాలపు ప్రపంచాన్నిప్రత్యక్షంగా సందర్శిస్తున్నకొందరు కవులు తమ ప్రాంతంపై అభిమానంతో,బంధాలను -అనుబంధాలను,చిన్నాటి జ్ఞాపకాలను నెమరు వేసుకుంటూ భారతీయ సాహితీ జగత్తును మెరుగుపరిచే ప్రయత్నంలో ఎన్నో అనుభవాలను అనుభూతులను వారి కవితా అక్షరాలలో ప్రతిబింబింపజేసి ప్రవాస సాహిత్యానికి వారి చేయూతనందించారు. అటువంటి అనుభవజ్ఞుల ఆలోచనలు,భావవీచికలు నేటి సమాజానికి ఆదర్శప్రాయమై,సమాజ సంస్కృతిని పరిరక్షించడంలో ఎంతగానో దోహద పడతాయి. జాతి సంస్కృతిని విదేశాలకు పరిచయం చేస్తాయి.

ఫోన్ :8143877881
ఇ మెయిల్ : bhavaninemmaluri123@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 91-96

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

'అమెరికా వంటింటి పద్యాలు'- సత్యం మందపాటి వారి చలోక్తులు

డా.కొలిపాక అరుణ

డా॥ కొలిపాక అరుణ, అధ్యాపకురాలు

తెలుగు శాఖ, సిహెచ్.ఎస్.డి. సెయింట్ థెరీసా స్వయం ప్రతిపత్తి మహిళా కళాశాల, ఏలూరు, ఆంధ్రప్రదేశ్.

బ్రతుకుతెరువు కొరకు బహు సంఖ్యలో పర

దేశములకు చనిరి తెలుగువారు;

మరచిపోయినారె మాతృ భాషను వారు?

తెలుసుకొనుడు, తెలుగు వెలుగు గనుడు!

ఎంత కాలమైన, నెటనున్న, తమ ప్రయ-

త్నములు మానకుండినారు మాతృ

భాష నిలుపుకొన ప్రవాసాంధ్రు లెందరో!

తెలుసుకొనుడు, తెలుగు వెలుగు గనుడు!

అని హనుమంతు రామచంద్రం గారు ' తెలుగు వెలుగు ' శతకంలో చెప్పిన మాటలు అక్షర సత్యాలు చేస్తూ మాతృభాషా మూలాలను మరిచిపోకుండా మరింత వన్నెలద్దుతూ తెలుగు సాహితీ సేవ చేస్తున్న విశిష్ట ప్రవాసాంధ్రులలో మేటి సత్యం మందపాటివారు.

సత్యం మందపాటి భారతదేశంలో మరియు USAలోని అన్ని ప్రముఖ తెలుగు పత్రికలలో 300 కంటే ఎక్కువ కథలు, 4 నవలలు, అనేక నాటకాలు మరియు డజను పీచర్లను ప్రచురించి, తెలుగులో బాగా ప్రాచుర్యం పొందిన రచయిత. ఆయన కథలు కొన్ని ఇతర భాషల్లోకి అనువదించబడ్డాయి.

1994-95లో, సత్యం "అమెరికా బేతాళుడి కథలు" రాశారు. USA నుండి వచ్చిన మొదటి తెలుగు సీరియల్ కథలు USAలోని భారతీయ వలసదారుల జీవితాన్ని వర్ణిస్తాయి. అవి 1995లో ఒక పుస్తకంగా విడుదలయ్యాయి. "అమెరికా బేతాళుడి కథలు" భారతదేశం/తెలుగు డయాస్పోరాపై మొట్టమొదటి పుస్తకంగా దాదాపు ఒక సంవత్సరంలో అమ్ముడయ్యాయి మరియు ఇది రెండవ ఎడిషన్‌లోకి వెళ్లి త్వరలో అన్ని కాపీలను విక్రయించింది.

సత్యం గారు ఇప్పటివరకు పదమూడు ముద్రణ పుస్తకాలను ప్రచురించారు, వాటిలో మూడు పుస్తకాలు రెండవ ముద్రణకు వెళ్లి అమ్ముడయ్యాయి. వీరి Kinige, Apple iBooks మరియు Kindleతో సహా అన్ని కీలక వెబ్‌సైట్‌లలో ప్రస్తుతం విక్రయించబడుతున్న ఎనిమిది ఇ-పుస్తకాలను కూడా ప్రచురించారు. సత్యం తన కథలకు వంగూరి ఫౌండేషన్ ఆఫ్ అమెరికా నుండి ఆరు అవార్డులు మరియు రచన పత్రిక నుండి రెండు అవార్డులు అందుకున్నారు. సత్యం 1997లో సినీ నటుడు అక్కినేని నాగేశ్వరరావు నుండి మరియు 2000లో భారత ప్రధాని శ్రీ పివి నరసింహారావు నుండి తెలుగు సాహిత్యానికి చేసిన కృషికి అనేక అవార్డులు అందుకున్నారు. వంశీ ఇంటర్నేషనల్, SAPNA, సిరి ఫౌండేషన్, వంశీ కల్చరల్ ట్రస్ట్ నుండి అందుకున్న ఇతర అవార్డులు. ఫ్రెండ్‌షిప్ ఫౌండేషన్ ఆఫ్ ఇండియా, చైతన్య భారతి, తానా, ATA, TAMA, TANTEX, TCA మొదలైనవి. సత్యం 1992 నుండి TXలోని ఆస్టిన్‌లో నెలవారీ తెలుగు సాహిత్య సదస్సులను నిర్వహిస్తోంది మరియు గత 21 సంవత్సరాలుగా రాష్ట్రవ్యాప్తంగా టెక్సాస్ తెలుగు సాహిత్య సదస్సులు సంవత్సరానికి రెండుసార్లు నిర్వహించబడుతున్నాయి.

సత్యం మందపాటి ప్రస్తుతం టెక్సాస్‌లోని ఆస్టిన్‌లోని మెట్రో ప్రాంతంలో నివసిస్తున్నారు. సత్యం బి.ఎస్సీ చదివారు. గుంటూరులోని హిందూ కళాశాల నుండి

భౌతికశాస్త్రం; కాకినాడలోని ఇంజినీరింగ్ కళాశాలలో బి.ఇ, వైజాగ్‌లోని ఆంధ్రా యూనివర్సిటీ నుండి ఎం.ఇ. ఇండియన్ స్పేస్‌రిసెర్చ్ ఆర్గనైజేషన్‌లో సీనియర్మేనేజర్‌గా పదేళ్లు పనిచేసి, 1982లో అమెరికాకు వెళ్లి, ఆస్టిన్‌లోని రెండు హైటెక్ కంపెనీల నుంచి ఆపరేషన్స్ వైస్ ప్రెసిడెంట్ మరియు జనరల్ మేనేజర్‌గా పనిచేసి ఇటీవలే పదవీ విరమణ చేశారు.

వీరు వృత్తి ప్రవృత్తులను సమన్వయపరచుకుంటూ, రాణిస్తూ చేసినటువంటి రచనలలో 'అమెరికా వంటింటి పద్యాలు' ఒకటి. ఈ పద్యాలు ప్రవాస భారతీయులు అయిన కిరణ్ ప్రభ గారి సంపాదకీయంలో నడపబడుతున్న 'కౌముది' మాసపత్రిక 52వ ఎడిషన్ లో ప్రచురించారు. 2013 వ సంవత్సరంలో 'తెలుగు సాహిత్య సౌరభం' వారు ఈ పుస్తకాన్ని ముద్రించారు.

ఆరుద్ర గారి ముద్రతో షడ్రుచులతో సాధ్యమైనంత రుచిగా అమెరికా వంటింటిలో వండి వడ్డించారు. ఆరుద్ర గారి 'ఇంటింటి పజ్యాలు' బాణీలోనే అంత్యప్రాసలతో, ముక్తక ప్రక్రియలో సాగిన 116 పద్యాలు ఇవి. ప్రారంభ పద్యంలో ఎంతో వినమ్రతతో ఆరుద్ర గారిని సంబోధిస్తూ....

" నమస్కారం గురువుగారు మీ ముందు వేస్తున్నాను కుప్పిగంతులు

ఎప్పుడు నచ్చకపోతే అప్పుడే చెబుదాం వీటికి అప్పగింతలు."

అంటూ ఆరంభించిన ఈ రచనలో 'అమెరికాకి దారి ఎటు' పద్యంలో... "అమెరికాకు వెళ్లాలంటే ముందుగా కావాలి వీసాలు" అంటూ ఆంధ్రాలో ఉన్న తూర్పు ఆంధ్ర, కోనసీమ, కృష్ణా, రాయలసీమ వారిని గూర్చి ప్రస్తావిస్తూ ఏ దారిన పోతున్నారు జాగ్రత్తగా గమనించుకొని అడుగులు వేయండి తొందర పడవద్దు అంటూ హెచ్చరిస్తూనే జాగ్రత్తలు చెప్పారు. ఈ పద్యంలో వీరి ప్రాంతీయాభిమానం ప్రస్ఫుటమవుతుంది. మరో పద్యంలో సాఫ్ట్ వేర్, హార్డ్ వేర్, నర్సింగు ఏ కోర్సులు ఏ ఉద్యోగాలు చేయడం కోసం వచ్చినా సరే ఇక్కడ జీవితాలతో 'బాక్సింగ్' మాత్రం తప్పదు అంటూ అక్కడి ఉరుకులు పరుగుల జీవన విధాన రేసింగ్ ల గూర్చి వివరించారు.

తమ పిల్లలు అమెరికా ప్రయాణమై వెళుతున్నప్పుడు కుటుంబ సభ్యులు విమాన ప్రయాణం గూర్చి.....

పిల్లల్ని విమానంలో చేతులు బయట పెట్టనీకు అడ్డమైన పక్షులూ ఉంటాయంది అమ్మమ్మ

ఎంతో దూరం వెడుతున్నారు ప్రయాణంలో అన్నం పెడతారో లేదో అంది అమ్మ

ఒరేయ్! మేఘాల్లో వెళ్లేటప్పుడు ఆకాశ వీధిలో నారదుడు కనపడతాడేమో చూడు

అంటాడు రెండు జేబుల్లో చేతులు పెట్టుకుని నవ్వుతూ బాల్యమిత్రుడు రంగడు.

అమెరికాలో ఉన్న బాల్యమిత్రుడి ఇంటికి చేరగానే ఇండియాకి ఫోన్ చేయగా..." డబ్బు పాస్పోర్టు జాగ్రత్తగా దాచుకున్నావురా??" అన్నాడు నాన్న. న్యూయార్కు వాతావరణం గూర్చి అడిగాడు అన్నయ్య." ప్లేన్ లో ఏం పెట్టారో ఏమో అన్నం తిన్నావురా..??" అని అడిగింది అమ్మ. పిల్లలు ఆంధ్ర, అమెరికా, ఆస్ట్రేలియా ఎక్కడ ఉన్నాఅమ్మ మాత్రమే బిడ్డ ఆకలి చూస్తుంది అనడానికి నిదర్శనంగా అమ్మ మనసుని పద్యంలో అందంగా ఆవిష్కరించారు రచయిత. విదేశాలకు వెళ్లిన భారతీయులు పేరు ఏదైనా, ప్రాంతం వేరైనా అందరి కష్టం సుఖం సంతోషం ఆవేదన ఒకటే అందరం కలిసి పంచుకుందాం అంటూ మరో పద్యంలో భరోసా ఇచ్చారు. అక్కడి పర్యావరణం గురించి, ట్రాఫిక్ రూల్స్ గూర్చి, వీకెండ్స్ లో పనిమనిషి, వంట మనిషి, చాకలి, తోటమాలి, డ్రైవర్, బేబీ సిట్టరు వంటి ప్రక్రియలతో అవధానం చేయాలంటూ అక్కడే జీవనశైలిని 'అష్టావధానం' అనే పద్యంలో కళ్ళకు కట్టినట్లు ఆవిష్కరించారు. అమెరికాలో ఉన్న వారి జీవితాలు త్రిశంకు స్వర్గంలా ఉంటాయని చెప్తూ.....

అక్కడుంటే ఇక్కడికి రావాలనీ

ఇక్కడుంటే అక్కడికి పోవాలనీ

ఎప్పుడూ తీపే కదా మరి డాలర్ల మనీ

ఇక త్రిశంకు స్వర్గంలోనే హనీమూనులన్నీ.

అక్కడి దేవాలయాల గురించి చెబుతూ గుడికి వెళ్ళినప్పుడు పురోహితుడు మంత్రాలన్నీ చదివి 'మమ' అనమంటాడు. సంస్కృత మంత్రాలన్నీ అర్థం కావు కనుక అవన్నీ మనం చదివినట్లే. ఇంతకీ గుడికి వెళ్లి వచ్చిన " పుణ్యం సంగతేమో కానీ బాగుంటాయి మా గుళ్ళో అమ్మో ఇడ్లీ ఉప్మా" నైవేద్యం సమర్పయామి పద్యాన్ని ముగించారు. 'వేడినీళ్ళకు చన్నీళ్లు' అనే పద్యంలో అమెరికా జీవనం లో ఎందుకు అర్థం లేని ఆరాటం, ఉరుకులు పరుగులు అని, ఒకరు కష్టపడితే సరిపోదా అని అందరూ అంటారు కానీ భార్యాభర్తలు ఇద్దరూ కష్టపడి పనిచేసి వేణ్ణీళ్ళ కు చన్నీళ్ళలా కాకపోతే బిడ్డలకు కన్నీళ్లు మిగులుతాయి అంటూ బాధ్యతలను గుర్తు చేశారు. అక్కడి నుండి మాతృదేశానికి వచ్చేటప్పుడు ఇక్కడి వాళ్ళు అడిగితే తేవడమో, లేక వారు ఆప్యాయంగా కొనడము అనేక బహుమతులు తెస్తుంటారు. ఆ తరుణంలో అమ్మని "నీకేం కావాలి?" అంటే " మీరు క్షేమంగా రండి, నాకు అదే కావాలి" అంటూ సమాధానం ఇవ్వడం తరచుగా గోచరిస్తుంది అని తల్లి ప్రేమను వ్యక్తం చేశారు.

మాతృభాష పై మమకారం లేక, పరాయి భాష పై పట్టు రాక అమెరికా వెళుతున్నామని రెండు భాషలకుదూరం అవుతున్న వారిని గూర్చి 'తెంగ్లీషు' అనే పద్యంలో....

ఎలాగూ అమెరికా వెడతాను కదా అని తెలుగు నేర్చుకోలేదు

అలా అని ఇంగ్లీషులో సరిగ్గా రెండు వాక్యాలు చెప్పటం రాదు

చివరికి నేర్చుకున్నదేమో అద్దా న్నపు టీవీ సినిమా ఇంగ్లీష్ బాస

రెండింటికి చెడ్డ రేవడి అంటే ఎవరో చెప్పుకో తిరుమలేశ?

ఇక్కడ ధరలు పెరుగుతున్నాయనో, పెరుగుతున్న ధరలకు సరిపడా సంపాదించలేకపోతున్నామనో, లంచగొండితనం అదుపు లేకుండా పోతుందనో, రోగాలు రొష్టులు మయం ఎక్కువగా ఉంటుందనో, రహదారులు బాగాలేదనో, కుళ్ళు కుల

రాజకీయాలు పెచ్చు పెరిగిపోతున్నాయనో, తమ పిల్లలకు సంపన్నుల తరహా సౌకర్యాలను ఇవ్వాలనో, విదేశాలలో విద్యనభ్యసించాలనో, తదుపరి తరాలకు విలాసవంత జీవితాలను అందించాలనో, పచ్చకార్డు సభ్యులుగా అక్కడ స్థిరపడాలనో, కాస్త కాసులు వెనకేసుకోవాలనో అమెరికా వెళ్ళిన వారిని ఉద్దేశించి... " అమెరికా భూతల స్వర్గం ఏమీ కాదు. ఇక్కడికి వచ్చి మన సంస్కృతికి దూరమవుతున్నాం! ఈ మర బొమ్మ బ్రతుకిక చాలండి చాలు! తిరిగి వెళ్ళిపోదామని గట్టిగా ఆలోచిస్తున్నాం" అంటూ అమెరికా ఆంధ్రుల అంతరంగాన్ని ఆవిష్కరించారు.

ఈ విధంగా కలసి ఉంటే కలదు సుఖం, బ్రహ్మ వాక్కు , వ్యాకులం, ఆనాడు ఈనాడు, కనకపు సింహాసనం, అడుగడుగునా గుడి ఉంది, సమ్మతం, ఎంతెంత దూరం, ఏకత్వంలో భిన్నత్వం, గుడ్ లక్, ఉత్తముడు, అద్దంలో బొమ్మ, దేవుడు పారిపోయాడు, చూపులు కలిసిన శుభవేళ, మధ్యతరగతి మందహాసం, ఉభయ భాషా ప్రవీణులు, సాహితీ పెత్తందారులు, అదృష్టం దురదృష్టం, పడమటి సంధ్యారాగం, అంగట్లో అన్ని ఉన్నాయి, విధి, రావాలని ఉంది, ధూపం దీపం, సరస్వతీ కటాక్షం వంటి 116 పద్యాలతో రచయిత సత్యం మందపాటి ఈ పుస్తకం అందించిన తీరు అత్యద్భుతం.

అమెరికాలో స్థిరపడినా తెలుగు సాహితీ పారిజాత పరిమళాలను ప్రపంచ నలుమూలల విస్తరింప చేయడానికి పలు సాహిత్య ప్రక్రియలతో సత్యం గారు చేస్తున్న కృషి మిక్కిలి ప్రశంసనీయం. భారతీయులకు అందునా ఆంధ్రులకు సర్వత్రా గర్వకారణం. తెలుగు తల్లి ముద్దుబిడ్డడిగా సత్యం మందపాటి వారి కలం నుండి మరిన్ని విశిష్ట రచనలు వెలువడాలని ఆశిస్తూ సెలవు తీసుకుంటున్నాను.

---ధన్యవాదాలు----

Email- kanuri.aruna800@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha
August 2023

ISSN : 2395-7115
Page No. : 97-101

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Cultural duality as a Major Vagary in the Indian Diaspora – Reflections from the Select novels of Shobhan Bantwal

M.K. Padma Lata,

Assistant Professor, Department of English,

CH. S. D. St. Theresa's College for Women (A), Eluru, Andhra Pradesh.

Prof S. Prasanna Sree

Dept. of English, Andhra University, Visakhapatnam.

Abstract :-

Diaspora are people who migrate from their native nation to a distant land for innumerable reasons. Diasporic literature is a literature written by the diaspora or by native writers about the various nuances of the diaspora. This literature functions as a mirror to the various socio-cultural upheavals of the diaspora. Frequently, this literature also underlines the cultural shocks, rootlessness and quest for identity experienced by the diaspora. Shobhan Bantwal is a contemporary diasporic English novelist who writes about the dilemma of the immigrants who are divided between the culture of the motherland and the foreign land. Her novels The Full Moon Bride (2013) and The Reluctant Matchmaker (2014) delves deep into the trauma suffered by the protagonists due to their cultural duality.

Keywords :- Diaspora, diasporic literature, Rootlessness, Quest for identity, diasporic dilemma, cultural duality.

Introduction :-

Diaspora are a set of population who live in a country outside their motherland and suffer dislocation, rootlessness and double identity. They have the firsthand experience of the displacement, expatriation and migration. Their psyche is seasoned with the social, political and economic conditions around them and is profound with the baggage of alienation. All this triggerin them a severe psychological trauma and a binary personality.

Diasporic literature is a literature which the diaspora writes and/or written by writers about

the immigrants and their experiences.This literature deals with the inner conflicts of the expatriates in the milieu of their migration. The diasporic writers derive their literary muse from their motherland and memories related to motherland. Using this ethnic inspiration as a cornerstone, they steer through the myriad experiences of self and other immigrants and explore them in multitude ways to traceways out for their psychic confusions.

Diasporic or immigrant writing occupies a great place of significance between cultures and countries ... The foremost characteristic features of diaspora writings involve the quest for identity, nostalgia, familial and marital relationships apart from re-rooting, uprooting, multi-cultural milieu etc. (Sailakshmi and Chitra 2016)

Major concerns of the Diasporic Literature :-

Diasporic literature is a negotiation with self and an effort to release the self from culture-specific trials while up keeping their individuality and independence. The anxieties of these writers hold together in them two different paradigms – love for nativity and love for the modernity. The characterization in the diasporic literature is unique and true to the nature of literature and display the evils of dislocation. As the immigrants are divided between two nations, two cultures, two identities and at times myriad languages, they develop rootlessness, sense of alienation and a quest for identity which is presented in the Diasporic literature …

Many Indian diaspora writers who write in English … focus on a particular region, community, and culture-specific conflicts in alien lands of relocation … raised different issues and aspects of immigrants' lives … Readers of diasporic literature occasionally experience different and disgusting trends in life in a foreign country. (Devi and Nagalakshmi 2021)

Shobhan Bantwal as a Diasporic Writer :-

Shobhan Bantwal is a contemporary diasporic writer from India who lives in New Jersy, USA. Though settled abroad, she carries a deep-rooted Indianism with her. Bantwal in America had experienced all fronts of an immigrant life and had proper experiences of a migrant like rootlessness, loneliness and a quest for self. All her experience in her life abroad helped her to become a seasoned writer who truly represents the upheavals in the lives of immigrants with women as protagonist. Her works spinsround the contemporary Indian women in foreign lands and cross-cultural issues which affect these women. She was listed as 'The Bestselling author' by the New York Times nearly every time she released a novel. Some of her renowned works are The Dowry Bride (2007), The Forbidden Daughter (2008), The Sari Shop Widow (2009), The Unexpected Son (2010), The Full Moon Bride (2011), and The Reluctant Matchmaker (2012).

Shobhan Bantwal writes … with humor and gives the reader an understanding of the Indian

culture … She takes the reader by the hand and guides them through Indian slang, names of food and family without making you feel stupid at all … Shobhan Bantwal is like the Sophie Kinsella ... (https://www.goodreads.com/en/book/show/13585557)

For the present paper the two novels of Bantwal -The Full Moon Bride (2013), and The Reluctant Matchmaker (2014) have been selected for study. The Full Moon Bride (2013) is a novel in which Bantwal appealingly depicts the perplexities of an Indo-American lawyer Siya Giri in her attempts to get wedded. Through the plot in novel, the author surfaces the similarities of the Indian immigrants and the Indians in India not only in their lifestyle but also in their adherence to the ethnicity. The Reluctant Matchmaker (2014) is another novel of Shobhan Bantwal which delves deep into the trails of the central character Meena Shenoy in finding her entity, her powers and her destiny while experiencing gender bias and facing the dilemmas of a diaspora. Shoban Bantwal herself analyses the plots of her novels and says…

My main focus in on the wide spectrum of issues faced by immigrants, positive as well as negative. Embracing the American way of life while preserving the elements of Indian culture can be a difficult yet rewarding transition. (https://www.indiastore.net)

As a part of her narrative, she focusses on their lives of the second-generation immigrants and traces the cultural contradictions and quest for identity which they experience due to their exposure to both native culture and foreign cultures at a time. Because of this predicament, they cannot resolve on vital and sensitive aspects of their life. Bantwalalso examines the sense of insecurity which pervade in them due to the cultural shocks. This cultural duality of the diaspora is rationalised by William Safran as follows.

It is a general characteristic of the diaspora that they continue to relate personally or vicariously, to the homeland in a way or other, and their ethno-communal consciousness and solidarity are importantly defined by the existence of such a relationship. (Safran 1991)

She also presents in her novels how these immigrants suffer severe traumaowing to their detachment with the rituals and customs of India. In the select novels of Shobhan Bantwal, the prime concerns faced by the protagonists are gender bias, criticism about their appearance, their choices, their personality, their demeanour which are all common experiences of Indian women in Indian scenario. But they are unable to reason out this idiosyncratic behaviour of the people around them owing to their liberal upbringing true to the foreign culture. Bantwal depicts how these second-generation diasporic women characters are forced to abide to all Indian norms strictly like in Indian scenario even while living abroad.

Cultural Duality as a major vagary in the select novels of Bantwal :-

Siya, the protagonist from The Full Moon Brideis troubled because of a series of criticisms regarding her appearance and western life style. Her troubles aggravate through the traditional arranged marriage pattern which she chooses owing to her belief that "Good Hindu girls didn't indulge in blatant disregard for convention. Conformity and duty to family … were deeply embedded in … DNA." (TFMB 9).

Siya experiences many shrewd examinations, questions and rejections in bride-viewing ritual which robs her of her self-esteem and loses positivity towards her marriage. The frequent criticism about her dark skin, big built and growing age are other important feminist concerns which Bantwal throws light upon. Her own grandmother repeatedly points out "Who will marry a girl … dark colour? Everyone will say she is not suitable for a Telugu boy." (194)

An important aspect of her cultural duality is her complete belief in the traditional gender roles in marriage and her fear of the consequences of the reversal of the roles on the health of the marriage. So, she wishes to have a highly qualified and successful man as her spouse. "Being married to a guy … working long hours … into a job that could bomb in the end … It was an alarming thought. (139)

Another significant concern Siya is compelled upon is to get married with a man from their community. The cultural duality of her family is made distinct by Bantwal when they strictly condemn Siya's affair with an Afro-American and disapproveher inter-racial marriage like ethnic Indian parents. Siya ruminates "Centuries of technological and cultural changes hadn't managed to bring about a shift in the double standards of our culture." (18)

Meena Shenoy from The Reluctant Matchmaker also suffers frequent feminist concerns like gender discrimination, mocking at her petite appearance and about her off-beat career apart from the pressure to get married like typical women back in India. She recollects her position in the family "They loved me, there is no doubt about that. But … I was … meant to … give … a reasonable send off by way of marriage." (TRM 53)"

Like any Indian woman, she faces a pressure to get married while living abroad. Though she is well-educated and well-settled in career, she is regarded next only to her male siblings and is given only restricted freedom when compared to her brothers. "… despite all his support, Dad was still very strict with me when it came to curfews and dating and such." (53)

Surprisingly, she is restrained from being forthright in the name of feminist behaviour by her sophisticated parents. She is also subjected to over-protection and many decisions in her personal and professional front are influenced by her highly parents. The Shenoy family justify their behaviour

in the name of ethnicity - showcasing their cultural duality. "In our culture, it is important to make sure that a girl is kept safe and healthy until she is handed over in marriage to a suitable boy. Then it is his responsibility to keep her safe and happy. (126)

A thorough study of the novels also bring to the notice of the readers that Bantwal lives up to her responsibility of being a diasporic feminist writer with a mission to narrate the concerns of her diasporic protagonists. Through the series of events in the lives of her protagonists from the select novels, Bantwal throws light on the impact of duality of culture which creates trauma to those youngsters. She clarifies through the progress of the narrative that ethnicity at home and liberal culture outdoors creates a snag in their behaviour and decision making. William Safran in the research article "Diasporas in Modern Societies: Myths of Homeland and Return" (1991).

It is a general characteristic of the diaspora that they continue to relate personally or vicariously, to the homeland in a way or other, and their ethno-communal consciousness and solidarity are importantly defined by the existence of such a relationship. (Safran 1991)

Conclusion :- A keen study of the select novels of Shobhan Bantwal makes it clear that expecting the second-generation immigrants who are born and brought up in a liberal foreign environment to adhere to the ethnic Indianism makes them prone to identity crisis. Their subjection to two types of cultures at a time becomes a burden on their psyche and hampers their decision-making. They are also baffled at the double-edged behaviour of their parents who at a time behave too ethnic regarding certain aspects and highly liberal in many other facets of their life. This leads to a confusion in them and make them behave chaotic. To sum up, Shobhan Bantwal proves an expert diasporic writer who depicts in her novels that cultural duality becomes the prime concern for the troubles of the Indian diaspora.

References :-

1. Bantwal, S. The Reluctant Matchmaker. Fingerprint publishing, 2013.
2. ----, The Full Moon Bride. Fingerprint publishing, 2016.
3. http://www.shobhanbantwal.com/
4. https://en.wikipedia.org/wiki/Shobhan_Bantwal
5. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/85357/8/08_chapter2.pdf
6. https://www.britannica.com/topic/assimilation-society
7. https://www.goodreads.com/en/book/show/13585557
8. https://www.indiabookstore.net/bookish/interview-shobhan-bantwal/
9. https://www.researchgate.net/publication/305724606_Literature_and_Diaspora
10. Safran, William. "Diasporas in Modern Societies: Myths of Homeland and Return." Diaspora: A Journal of Transnational Studies, vol. 1 no. 1, 1991, p. 83-99.
11. Sailakshmi. D. and V. B. Chitra. "Indian Diaspora Writers– A Study." AIJRELPLS. Vol 1, Iss 2, 2016. Pp 40-44

Mobile No. 9866736117, Email: padmalatachini@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 102-107

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

विदेशों में हिन्दी साहित्य सृजन

कविता अहिंगारे

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी, राजा भोज शासकीय महाविद्यालय, कटंगी, बालाघाट (म.प्र.)

सारांश :-

हिन्दी विश्व की वैज्ञानिक और समृद्ध भाषा है। इसके लिए अब कोई संदेह नहीं रहा और इसे सिद्ध करने में कुछ अंश तक विश्व हिन्दी सम्मेलनों का योगदान है। देश की स्वतंत्रता के पश्चात विदेशों के साथ हमारे राजनैतिक और सांस्कृतिक संबंध अधिक सुदृढ हुए है और इस क्षेत्र में कुछ सीमा तक हिन्दी का भी योगदान रहा है। आज इस बात का ज्ञान पूरे प्रबुद्ध वर्ग को है, कि हिन्दी मात्र भारत में ही नहीं, विश्व के अनेक देशों में बड़ी लोकप्रिय भाषा है। इसी पृष्ठभूमि के साथ नागपुर में 1975 के जनवरी माह में प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन हुआ। इस सम्मेलन में संसार के लगभग 30 देशों से अनेक विद्वान एवं प्राध्यापक आये तथा मारीशस का एक राजकीय प्रतिनिधिमंडल वहाँ के प्रधानमंत्री श्री शिव सागर रामगुलाम के नेतृत्व में भाग लेने आया। श्री शिवसागर रामगुलाम ने अपने भाषण में हिन्दी के संबंध में कहा कि हिन्दी की लोकप्रियता भारत में तो है ही लेकिन हमारे लिए इस भाषा की एक खास विशेषता है। हमें अनेक एशियाई– अफ्रीकी देश इस भाषा को एक अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करते हैं।

प्रस्तावना :-

भारत एक बहु सांस्कृतिक, बहु भाषिक देश है इसलिए यहाँ का साहित्य भी विभिन्न विमर्शों परिवेशों और भावनाओं को अभिव्यक्त करता हैं। प्रवासी साहित्य हिंदी भाषा के वैश्विक पटल पर हो रहे विस्तार को समझने की एक सम्यक दृष्टि भी विकसित करता है। प्रवासी साहित्य भारत से अपनी संस्कृति भाषा और समाज से दूर जीविका के लिए विदेशों में संघर्ष करते भारतीयों की मनोदशा और आंतरिक पीड़ा को व्यक्त करता है। अपने परिवार और समाज से दूर इन भारतीयों के लिए साहित्य लेखन अपने अकेलेपन को समाप्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। इसके अध्ययन के दो मूल आधार है, पहला आधार तो उन गिरमिटिया मजदूरों के वंशजों के लेखन का है जो अपने समाज से काटकर मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, में आदि स्थानों पर बसा दिये गए। उन गिरमिटिया मजदूरों के दूसरी पीढ़ी जो वहीं पैदा हुई लेकिन अपने पूर्वजों की पीड़ा को भूला नहीं पायी और उस दर्द को कहानी, उपन्यास, कविता आदि माध्यमों में व्यक्त किया। दूसरा आधार, उन भारतीय लोगों का है जो जीविकोपार्जन के लिए एनआरआई के रूप में सुख–सुविधा की चाह से विदेशों में बस तो गए लेकिन जल्द ही उन्हें अनुभव हो गया कि अपनी भाषा, संस्कृति और समाज की संवेदना उनसे छूट रही है इसलिए उन्होंने लिखना प्रारंभ किया। प्रवासी भारतीय अपने देश की ओर देख रहे हैं और चाहते हैं कि अपने मातृदेश देश, भाषा

और संस्कृति के साथ साथ लगाव और प्रगाढ़ हो तो ब्रिटेन के भारतीय इस स्थिति से अपने को अलग कैसे रख सकते हैं। भारत के ब्रिटेन के साथ ऐतिहासिक संबंध रहे हैं। इसके चलते भारतीय मूल के लोग बड़ी संख्या में ब्रिटेन में हैं। यहाँ तक कई महानगरों में वे बहुसंख्यक हो गए हैं जैसे लेस्टर। उनके सामने सवाल यह था कि वे किस तरह अपनी सभ्यता संस्कृति, अपनी पहचान, अपनी विशिष्टता को बनाए रखें इसके लिये जरूरी था कि अपनी मातृभाषा को बचाया जाए और आने वाली पीढ़ी को विरासत में सौंपा जाए।

हिंदी संबंधी सर्वेक्षण में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के प्राध्यापक सत्येन्द्र श्रीवास्तव ने स्पष्ट किया था कि हिंदी का अपना कोई क्षेत्र या सीमा नहीं हैं अर्थात हिन्दी भाषी किसी क्षेत्र विशेष में नहीं रहते जैसे कि गुजराती, पंजाबी या बांग्ला भाषी परंतु हिंदी भाषियों में अपनी भाषा को साहित्यिक क्षेत्र में जीवंत रखने की अभिलाषा दिखाई देती है। परिणाम स्वरुप साउथहॉल जैसे क्षेत्र भारतीय क्षेत्र के रूप में विख्यात होने लगे। जे.एम. कौशल, धर्मेन्द्र गौतम (प्रवासी भारतीय) डॉ. श्याम मनोहर पांडे, प्रेम चन्द सूद जैसे लोगों ने मानस सम्मेलन आदि के द्वारा हिंदी रूपी बीज को सींचना शुरू किया जिससे साहित्य रुपी वृक्ष के तने विविध क्षेत्रों में फैलने लगे। ६० के दशक में सक्रियता इस कदर बढ़ी कि विश्व हिंदी के मानचित्र पर ब्रिटेन एक महत्त्वपूर्ण केंद्र के रूप में सामने आया। विदेशों में मारिशस के बाद ब्रिटेन ही ऐसा स्थान है जहाँ हिंदी साहित्य सृजन की दृष्टि से सक्रियता सर्वाधिक है। प्रवासी साहित्य सृजन के विविध क्षेत्रों में को इस तरह से समझ सकते हैं।

हिंदी मीडिया :-

ब्रिटेन में हिंदी के प्रचार–प्रसार में रेडियो प्रसारण एक सशक्त माध्यम हैं, जो भी हिंदी भाषी ब्रिटेन में प्रवेश करता है और हिंदी में रेडियो प्रसारण सुनता है तो उसे सुखद अनुभव होता है। यहाँ के प्रसिद्ध प्रचारक रवि शर्मा को हाल ही में यू.के. हिंदी समिति द्वारा उनके योगदान के लिये सम्मानित भी किया है। रवि शर्मा, सरिता सब्बरवाल, राम भट्ट जैसे लोकप्रिय प्रसारकों का हिंदी के प्रचार–प्रसार में बहुमूल्य योगदान है। इसी प्रकार बर्मिंघम में ऐशियन नेटवर्क के संजय शर्मा, मॅनचेस्टर में ए. एस. रेडियो आदि स्थानों से चलने वाले रेडियो हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिये महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। जी टी. वी., स्टार और सोनी जैसे हिंदी के लोकप्रिय चैनलों के आने से ब्रिटेन में हिंदी को बल मिला है। बी.बी.सी. हिंदी सेवा की भूमिका इस संबंध में प्रत्यक्ष तौर पर तो नहीं पर अप्रत्यक्ष तौर पर बड़ी महत्त्वपूर्ण रही है। रत्नाकर भारतीय, ओंकारनाथ श्रीवास्तव, कैलाश बुधवार, अचला शर्मा, गौतम सचदेव, नरेश भारतीय, विजय राणा, अरुण अस्थाना आदि हिंदी जगत की रीढ़ है परंतु बी.बी.सी. हिंदी की प्रसारण सेवा ब्रिटेन में न होने के कारण यहाँ के श्रोता हिंदी सेवा का प्रत्यक्ष लाभ नहीं उठा पाते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन :-

ब्रिटेन के हिंदी प्रेमियों ने केवल अपने देश में ही नहीं बल्कि अन्य देशों में चल रही हिंदी गतिविधियों का समन्वय करने के लिये समय–समय पर अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलनों का आयोजन किया है। ऐसा पहला अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन १९९३ मे मॅनचेस्टर में इंडियन एसोसिएशन द्वारा लता पाठक, राम पांडे और रंजीत सुमरा ने आयोजित किया जिसमें डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी (तत्कालीन उच्चायुक्त) एवं मॅनचेस्टर के महापौर, गोपाल दास नीरज, डॉ. रूपर्ट स्नेल, पद्मा सचदेव, मार्गट गाट्जलाफ, मारिया नेगियसी, सुरेश चन्द्र शुक्ल आदि ने भाग लिया। दूसरा अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन १९९७ में यू.के. हिंदी समिति एवं गीतांजलि समुदाय के संयोजन ने सितंबर १९९७ में लंदन एवं बर्मिंघम में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में डॉ. रामदरश मिश्र, कुंअर बेचौन,

जगदीश चतुर्वेदी, शीन काफ निज़ाम, डॉ. दाऊ जी गुप्त, डॉ. श्याम मनोहर पांडे आदि ने भाग लिया। सम्मेलन के चार सत्रों में देश–विदेश में हिंदी की स्थिति, स्वरूप और प्रसार, भारतीयता की पहचान के रूप में हिंदी, ब्रिटेन में हिंदी के व्यावहारिक प्रयोग से संबंधित समस्याएँ और अंग्रेजी के वर्चस्व के सम्मुख हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय संपर्क भाषा के रूप में विकसित करने जैसे अनेक विषयों पर विचार हुआ। विश्व हिंदी सम्मेलन के कुछ महीनों में आयोजन की कहानी तो आश्चर्यचकित करने वाली है ही। इस पृष्ठभूमि में यूरोप के हिंदी प्रेमियों को एक मंच पर इकठ्ठा करने की और एक रणनीति बनाने की योजना के लिये लंदन में यू.के. हिंदी समिति द्वारा भारतीय उच्चायोग के तत्वावधान और कथा, संस्कार भारती, कृति यू.के. हिंदी भाषा समिति, मॅनचेस्टर, भारतीय भाषा संगम, यार्क और अन्य हिंदी संस्थाओं के सहयोग से तृतीय अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

हिंदी की संस्थाएँ :–

लंदन में काम कर रही संस्थाओं में यू.के. हिंदी समिति पद्मेश गुप्त की अध्यक्षता में सर्वाधिक सक्रिय है। श्री के.बी. एल सक्सेना, बृज गोयल, उषा राजे सक्सेना और दिव्या माथुर ने इस संस्था को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। चाहे विश्व हिंदी सम्मेलन हो, आंतर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलन, हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता, पुरवाई या किसी साहित्यकार का आगमन यू.के. हिंदी समिति सदा केंद्र में दिखाई देती है। यू. के. हिंदी समिति द्वारा पांडुलिपि चयन के अंतर्गत भारतेन्दु विमल के उपन्यास 'सोन मछली' एवं मोहन राणा के कविता संग्रह 'इस छोर पर' का चयन कर साहित्यकारों को प्रकाशन सुविधा उपलब्ध कराई है। हिंदी समिति हर वर्ष ब्रिटेन के हिंदी सेवियों को हिंदी सेवा सम्मान से सम्मानित करती है। लगातार सक्रियता रख एक व्यापक दृष्टि से सभी भारतीय भाषाओं को साथ लेकर चलने वाली गीतांजलि देश की अत्यंत महत्त्वपूर्ण संस्था है, यह बर्मिंघम में स्थित है। १९९९ में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. कृष्ण कुमार इस संस्था के प्रमुख हैं। कथा संस्था द्वारा प्रत्येक वर्ष ब्रिटेन और भारत के एक–एक लेखक की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक का चयन किया जाता है। चित्रा मुद्गल, संजीव कुमार, डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी जैसे लेखकों को सम्मानित कर चुकी यह संस्था साहित्यिक क्षेत्र में निरंतर सक्रिय रहती है। कथा की कहानी गोष्ठियाँ यहाँ के लेखकों को एक साहित्यिक परिवेश प्रदान करती हैं। तेजेन्द्र शर्मा का जीवंत व्यक्तित्व और उनकी संगनी नैना शर्मा के साथ से यह संस्था महत्त्वपूर्ण कार्य करने में सफल रही है। तितिक्षा शाह, डॉ नरेन्द्र अग्रवाल, डॉ. के.के. श्रीवास्तव, शैल अग्रवाल, अनुराधा शर्मा, स्वर्ण तलवार की सक्रियता से मिडलैण्डस में हिंदी के अच्छे भविष्य की आश बंधती है। मॅनचेस्टर में जहाँ राम पांडे, डॉ. सुमरा ने हिंदी का बीज लगाया था आजकल डॉ. अंजनी कुमार, निखिल कौशिक आदि सक्रिय हैं। हिंदी भाषा समिति कार्यक्रमों को भव्यता के साथ सम्पन्न करती है। यार्क में सरल सहज डॉ. महेंद्र वर्मा और उषा वर्मा भारतीय भाषा संगम के तत्वावधान में हिंदी का परचम लहराएँ हैं।

विश्वविद्यालय :–

ब्रिटेन में स्नातक, स्नातकोत्तर और शोध स्तर पर हिंदी की पढ़ाई लंदन के स्कूल ऑफ ओरिएँटल स्टडीज, लंदन विश्वविद्यालय और केम्ब्रिज विश्वविद्यालय में उपलब्ध है। लंदन विश्वविद्यालय में डॉ. रूपर्ट स्नेल और डॉ. लूसी रोजेन्टाइन जैसे विद्वान विद्यार्थियों के मार्गदर्शन के लिये उपलब्ध हैं, तो कैम्ब्रिज में डॉ. फ्रैंस्सिका आरसेनी। वहाँ हाल ही तक डॉ सत्येन्द्र श्रीवास्तव थे। यार्क विश्वविद्यालय में हिंदी के क्षेत्र में सर्वाधिक सक्रिय

डॉ महेन्द्र वर्मा हैं जो भाषा विज्ञान के प्राध्यापक हैं और भारतीय अध्ययन के एक भाग के रूप में हिंदी भी पढ़ाते हैं। ऑक्सफोर्ड में डॉ. इमरे बंगा स्कूल ऑफ ओरिएँटल स्टडीज में विद्यार्थियों को हिंदी पढ़ाते हैं। इमरे बंगा ने विश्व भारती विश्वविद्यालय से घनानंद के साहित्य पर शोध किया है और वृंदावन में रहकर सूरदास, बिहारी, चौरासी वैष्णव की वार्ता पर अध्ययन किया है। ऑक्सफोर्ड में हिंदी के प्राध्यापक का पद एक ट्रस्ट द्वारा पांच वर्ष के लिये प्रायोजित था, अतः इस वर्ष के पश्चात ऑक्सफोर्ड में और डॉ. महेन्द्र वर्मा की सेवानिवृत्ति के पश्चात यार्क में हिंदी अध्ययन के भविष्य पर खतरे के बादल मंडरा रहे हैं।

हिंदी समाचार पत्र और पत्रिका :-

हिंदी के प्रति समर्पित श्री जे. एन. कौशल ने आज से ३० साल पूर्व हिंदी का अखबार अमरदीप प्रारंभ किया था। उन्होंने अपना जीवन इस कार्य में लगा दिया। समर्पण और प्रतिबद्धता के बावजूद अमरदीप साधनों के अभाव में अपना मुकाम न पा सका। ६० और ७० के दशक में चेतक और प्रवासनी जैसी पत्रिकाओं ने हिंदी का परचम फहराए रखा। १९९७ से पुरवाई पत्रिका के पांच साल पूरे हो चुके हैं और पद्मेश गुप्त के संपादन में इसमें नित निखार आया है। यह न केवल पिछले ५ वर्षों में यहं की हिंदी गतिविधियों का आईना बनी है और इसके माध्यम से ब्रिटेन के साहित्यकारों को एक मंच मिला है। भारत के बाहर से प्रकाशित पत्रिकाओं में 'पुरवाई' का एक प्रमुख स्थान है। इसके अतिरिक्त भारतीय उच्चायोग की पत्रिका भारत भवन ने भी हिंदी के प्रचार–प्रसार में भूमिका का निर्वाह किया हैं।

हिंदी कहानी :-

ब्रिटेन में हिंदी कहानी पूरे जोश के साथ अपनी प्रस्तुति दर्ज करा रही है इसका काफी श्रेय तेजेन्द्र शर्मा और उनकी संस्था कथा को दिया जा सकता है। लेखिका त्रय दिव्या माथुर (आक्रोश), उषा राजे सक्सेना (प्रवास में) और शैल अग्रवाल लगातार रही हैं। उनकी रचनाएँ यहाँ के जीवन को न केवल भारतीय बल्कि एक नारी की दृष्टि से भी देखती हैं। दिव्या माथुर की आक्रोश की कहानियों में जहाँ पूर्व की संवेदना है वहीं पश्चिम की वस्तुनिष्ठता भी है। उषा राजे की कहानियाँ प्रवास में मिले चरित्रों के संस्मरणात्मक बिंदुओं को लेकर बुनी गई हैं परंतु उनमें भाषा और भाव की गहन संवेदना है। शैल अग्रवाल की एक विशिष्ट दृष्टि हैं जो संभावनाओं से ओतदृप्रोत है। किस्सागो कला में प्रवीण तेजेन्द्र शर्मा (देह की कीमत, काला सागर, ढिबरी टाइट) की कहानियों में रोचकता और भाव संपन्नता है, उनका विषयों का चुनाव भी विशिष्ट होता है। पद्मेश की कहानियाँ उनके सघन जीवन अनुभवों से उपजी हैं अतः दीर्घकालिक प्रभाव छोड़ती हैं। श्रीमती उषा वर्मा भी निरंतर सृजन कर्म में रत हैं और जीवनानुभूतियों को कविता और कहानी दोनों माध्यमों से प्रस्तुत कर रही हैं। उषा राजे सक्सेना द्वारा संपादित 'मिट्टी की सुगंध' और कथा लंदन द्वारा प्रकाशित 'कथा लंदन' कहानी संग्रह यहाँ के कहानीकारों की कहानी में समर्थता की प्रामाणिक तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। हाल में के.सी. मोहन का कहानी संग्रह 'कथा परदेश' हिंदी और पंजाबी दोनों में प्रकाशित हुआ है। गौतम सचदेव (शीघ्र प्रकाश्य, उस पार) की कहानियाँ विचार समर्थ और भाव समर्थ हैं उनके कहानी संग्रह की बड़ी आतुरता से प्रतीक्षा की जा रही है। कादम्बरी मेहरा (कुछ जग की) नई रचनाकार हैं।

यू.के. में हिंदी कविता की एक अत्यंत सशक्त परंपरा है। वरिष्ठ कवियों में डॉ. सत्येन्द्र श्रीवास्तव के काव्य संग्रह 'टेम्स में बहती गंगा की धार' और 'कुछ कहता है यह समय' यहाँ की ज़िंदगी का एक काव्यात्मक दस्तावेज़

है। सोहन राही (सुर रेखा) गीतों और गज़लों के लोकप्रिय शायर हैं जो हिंदी और उर्दू दोनों में लिखते हैं। उनकी पंक्तियाँ लोकजीवन में रची बसी हैं, गौतम सचदेव (अधर का पुल, एक और आत्मसर्पण) का काव्य कहीं छायावादी शब्दावली के साथ दर्शन की गहराई में चला जाता है तो कहीं सामाजिक यथार्थ से रूबरू होता हैं, मोहन राणा (जगह, जैसे जनम कोई दरवाजा, इस छोर से, सुबह की डाक) नई कविता के कवि हैं और हर पल सच से मुठभेड़ में व्यस्त, उनकी कविता आने वाले समय में प्रवासी कवियों को हिंदी कविता में नया मुहावरा और पहचान देने का काम कर सकती है, पद्मेश गुप्त (सागर का पंछी) ने अपनी शैली विकसित की है और उनकी कविताएँ उनके इस जीवन दर्शन को काव्य में सशक्त संप्रेषण के साथ प्रस्तुत करती हैं, वे मंच के भी सशक्त कवि एवं संचालक हैं। उषा राजे सक्सेना (विश्वास की रजत सीपियाँ, इंद्रधनुष की तलाश में) मुक्त छंद और नई कविता दोनों में अधिकार के साथ लिख रही हैं, निखिल कौशिक (अगर तुम लंदन आना चाहते हो, खड़ा होता नहीं अपने आप कोई) अपनी विशिष्ट काव्यात्मक संकल्पनाओं के साथ गहरी छाप छोड़ते हैं, दिव्या माथुर (अंतः सलिला, ख्याल तेरा, ११ सितंबर–सपनों की राख तले) और शैल अग्रवाल और उषा वर्मा (क्षितिज अधूरे) संवेदनशील कवयित्रियाँ हैं। डॉ. कृष्ण कुमार दर्शन के कवि हैं (मैं अभी मरा नहीं)। तेजेन्द्र शर्मा कविता विधा में समर्थता के साथ योगदान दे रहे हैं। पद्मेश गुप्त की दूर बाग में सौंधी मिट्टी (संपादित) यहाँ की कविता की पहचान स्थापित करने में सफल रहा। श्यामा कुमार, तोषी अमृता, तितिक्षा शाह एवं अनुराधा शर्मा भी अच्छा लिख रही हैं।

निष्कर्ष :-

साहित्य को एक देश से दूसरे देश में पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य आज इन्टरनेट के द्वारा संपन्न हो रहा है। भूमंडलीकरण और वैश्वीकरण के इस दौर में हिंदी का नवीन रूप हमारे सामने प्रस्तुत हो रहा है। इस अर्थ में विकास इन्टरनेट, वेब मीडिया, सोशल नेटवर्किंग साइट्स, ई–पत्रकारिता और ब्लॉग का महत्वपूर्ण योगदान है। देशी मिट्टी में देशी संस्कारों की सौंधी खुशबु से सराबोर इस साहित्य से गुजरते हुए अपने देश, अपनी मिट्टी और अपनी संस्कृति के प्रति आस्था और विश्वास में वृद्धि होती है। प्रवासी हिंदी साहित्यकारों ने ब्रिटेन जैसे देशों में रहते हुए अपनी भाषा से जुड़े रहकर हिंदी साहित्य को विस्तृत किया है। साहित्य ने विश्व मंच पर अपनी उपस्थिति दर्ज की है। अतः इन रचनाकारों की हिंदी साहित्य सेवा के मूल्यांकन, प्रोत्साहन, हिंदी साहित्य में उसके यथो स्थान को रेखांकित करने, उसकी साहित्यिक उपलब्धियों को स्वीकारने तथा अपेक्षाओं को साझा करने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची :-

1. डॉ. कमल किशोर गोयनका, विदेशों में हिंदी साहित्य, शब्दयोग, अप्रैल 2008, पृ. 12
2. उषा प्रियंवदा, अंतर्वंशी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2004, पृ. 79
3. डॉ. कमल किशोर गोयनका, हिंदी का प्रवासी साहित्य, अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, सं. 2011, पृ. 414
4. वर्तमान साहित्य', कुंवरपाल सिंह, नमिता सिंह (संपादक), जनवरी–फरवरी–20065
5. कमल 2– कमल किशोर गोयनका, विश्व हिंदी रचना, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, नई दिल्ली–2003
6. प्रवासी साहित्य : जोहान्सबर्ग से आगे, प्रधान संपादक, डॉ. कमल किशोर गोयनका, प्रकाशक–विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली, संस्करण–2015

7. डॉ. कमल किशोर गोयनका, हिंदी का प्रवासी साहित्य, प्रथम संस्करण 2011, अमित 10 वॉ विश्व हिन्दी सम्मेलन (स्मारिका)
8. अप्रवासी, मंजु कपूर, रैण्डम हाउस इंडिया, नोएडा, 2009
9. उड़ने से पेशतर, महेन्द्र भल्ला, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
10. गाथा अमरबेल की सुषम बेदी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2015
11. दिशाएँ बदल गई, नरेश भारतीय, राजपाल एंड संस, दिल्ली, 2014
12. पथरीला सोना, रामदेव धुरंधर, हिंदी बुक सेण्टर, नई दिल्ली, 2012
13. पूछो इस माटी से, रामदेव धुरन्धर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2012
14. लौटना सुषम बेदी, पराग प्रकाशन, दिल्ली, 2011
15. हवन सुषम बेदी, पराग प्रकाशन, दिल्ली, 2010

मो. 9424968215
kavitaahigare79@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 108-109

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

विष्णुचित्तसूरेः 'भट्टनाथः' इत्यभिधानप्राप्तिवैभवम्

Dr. B. Keshavaprapanna Pandey
Assistant Professor, Dept of Sanskrit,
Dwaraka Doss Goverdhan Doss Vaishnav College, Arumbakkam, Chennai – 106

गुरुमुखमनधीत्यप्राहवेदानशेषान्नरपतिपरिकृप्तंशुल्कमादातुकामः।
श्वशुरममरवन्द्यंरङ्गनाथस्यसाक्षाद्विजकुलतिलकंतंविष्णुचित्तंनमामि।।

परम कृपालुः श्रियः पतिः श्रीमन्नारायणः चेतनानाम् उज्जीवनायजात करुणयानैकान् उपायान्चिन्तयति। अतः स्वयं बहुभिः स्वीयावतारैः संसार सागरे निमग्नान् जीवान् उद्धर्तुं प्रयत्नं करोति नाम। परम् अन्ततो गत्वा निज प्रयत्ने असफलो भवति। यतोहि अज्ञानिनोजनाः तस्याति मानुष वैभवैः तंविजातीयं मन्वते। अतएव तस्य अनुष्ठाना दिमाध्यमेन उपदिष्टा निसद्वचांसिअपि उपेक्षन्ते। स्वयंगीतायां गीताचार्यः स्वशोकंप्रकटयति यथा :–

अवजानन्तिमांमूढामानुषींतनुमाश्रितीम्। इति

परंदयैक सिन्धुः भगवान्नारायणः पौनः पुन्येन शब्दादिभोग विषयेनिरतान् जीवान् सन्मार्गं प्रतिआनेतुं प्रयतते। अत :यदा तदा मार्गान्तरमपि आश्रयतेनाम। यथा कस्मिंश्चिद्गर्ते पतितः गजः अन्येन सजातीयेनगजेनबहिः आनीयते, तथैव भगवान्संसारगर्ते पतितान्एतान्चेतनान्उद्धारयितुंस जातीयान्नित्यसूरिणः अत्र अवतार यति। तेएव नित्यसूरिणः अत्रशठ कोपादिरूपेण दिव्यसूरिण इति प्रसिद्धिं भजन्ते। तेषामेव माध्यमे नचजीवान्मोक्षं प्रति अग्रेसरान् करोति, तेनचस्वयं नितराम् आनन्दितो भवति।

तत्रभगवतः आज्ञांपुरस्कृत्यसंसारिणाम्उद्धरणाय अवतीर्णेषुदिव्यसूरिषु "पेरियाळ्वार्" इतिनाम्ना प्रसिद्धः विष्णुचित दिव्यसूरिः श्रीवैष्णव सम्प्रदाये अनितर साधारणं स्थानं भजते। दिव्यसूरिरयंपाण्ड्य देशान्तर्गतेरम्ये श्रीधन्विपुरे (श्रीविळ्िळपुत्तूर्मध्ये) भगवद्वाहनांशेनअवततार। क्रोधनाब्दे, मिथुनराशौ, शुभेस्वातिनक्षत्रेचअवतीर्णः अयंसूरिःस्वजन्मना लोकमिमंधन्यंचकार। क्रमेण पितृभ्यांतत्तत्संसकारैः सुसंस्कृतः महात्मा विष्णुचित्तः बाल्यात् प्रभृतिएव भगवतः पादार विन्दयोः महान् भक्तिमान् आसीत्।

सदा भगवन्तमेव चित्तेध्यायति स्म अतः विष्णु चित्त इति तस्याभिधानमपि अन्वर्थमन्यते। कृष्णावतारे भगवन्तं कृष्णं सन्तोषयितुं मालाकारेण कृतं पुष्पकैङ्कर्यं, तेनचभगवतः मुखोल्लासं परिज्ञायत देवकैङ्कर्यं भगवतः प्रीति करंस्या दिति मत्वावट पत्रशायिनः सन्निधौतदेव कैङ्कर्यं नित्यं करोति स्म। एवम् आनन्देन भगवत् कैङ्कर्यमेव कुर्वाणः जीवनंया पयति स्म।

एकदा पाणड्य देशस्य राजा वल्लभ देवः वेद तत्त्वं परिज्ञातुं एकां पण्डित सभां आयोजयामास। विजेत्रेस शुल्कं बहुमान मपिकल्पयति स्म। तदर्थं भगवान् वटपत्रशायी विष्णुचित्त सूरिणः स्वप्ने प्रकटितः भवति, राज्ञा

आयोजितायां विद्वत्सभायां गन्तुं आज्ञांच ददाति। परन्तु विष्णु चित्त सूरिः स्वस्य शास्त्रेषु अनभिज्ञतां ज्ञापयति। तच्छ्रुत्वा भगवान्तं सर्वशास्त्रज्ञं करोति। तदनुभगवतः आज्ञां शिरोधार्यां कृत्वा प्रसन्न हृदयः समुनिः शास्त्रचर्चार्थं राज सभां गच्छति। राजसभां प्रति आगतं विष्णु चित्तं राजा सविनयं उपचरति। अत्र ान्तरेचतत्रवेद प्रतिपाद्यतां निरूपयितुं शास्त्र चर्चा आरभते। क्रमेण सर्वेषां उपन्यासान् श्रुत्वा अन्तिमे भगवत् कृपा प्रसाद लब्धः विष्णुचित्तसूरिः वेदे प्रतिपादितं तत्त्वं एकैकं स्पष्टं निरूपयति। यथा –

नारायण परंब्रह्म तत्त्वं नारायणः परः।
नारायण परोज्योतिरात्मा नारायणः परः।
सब्रह्मा सशिवस्सेन्द्रस्सोऽक्षरः परमःस्वराट्।

इत्यादिना भगवान् श्रीमन्नारायणएव वेदप्रतिपाद्यः इतिसम्यग्नि रूपयामास। अहो आश्चर्यं! निरूपणानन्तर मेव नरपति परिकृप्तं शुल्कंतस्य पुरतः पतति, तद् दृष्ट्वा तत्र उपस्थिताः सर्वेऽपि सभासदः आश्चर्यान्विता भूत्वातंजात श्रद्धया नमन्ति। राजापि झटति स्वासनादुत्थाय सहर्षं सप्रश्रयं तमभिनन्द्य भूरि पारितोषिकैः सम्मान यति। ततो जनानां पुरतः पुनः सम्मानयितुकामः सराजा वल्लभदेवः तं भक्त शिरोमणिं गजाधि रूढं कृत्वा राजवीथ्यां नगर भ्रमणार्थं नयति, तत्र चभट्टानाम् अर्थात् वेदान्त तत्त्वज्ञानां विदुषां अयंनाथः अतः अद्यप्रभृति भट्टनाथः इतिनाम्न ाख्यातिं भजेद् इत्युक्त् वातत् गौरवास्पदं नाम विदधे। तदाभगवान् नारायणोऽपि स्वभक्तमणिं साक्षात्कटाक्षयितुक ामः आकाशेश्रिया सह प्रकटितोऽभवत्। देव्याश्रिया सहसमाया तंगरुडाधिरूढं भगवन्तं नारायणं विलोक्यस सूरिः आनन्द सागरे निमग्न्नोऽभवत्। भगवतः निर्हेतुक करुणांस्मारंस्मारं असकृत् प्रणमतिच। स्वपुरतो भगवन्तं विद्यमानमपि इतर भक्तवत् स्वस्मै परम पुरुषार्थं मोक्षमपिन प्रार्थयामास। अपितु तस्मिन् समये आत्मानं मातृवद्वि भाव्यस्तौति। हे भगवन्! कलिकलुषेऽस्मिन् लोकेमद्विलोकनाय आगतस्यतवकोवाअनर्थः समापतेद् इति शङ्कितः "शतञ्जीव" इति दिव्यगाथयास परिकरस्य भगवतो नारायणस्य मङ्गलाशाशनं करोति। तादृशंमङ्गलाशाशनमेव द्वादशगाथा परिमितः "तिरुप्पळ्ळाण्डु" नाम्नाप्रसिद्धः दिव्यप्रबन्धोऽभवत्।

भट्टनाथ सूरीणाम् अनेन दिव्य वृत्तान्तेन ज्ञायते यत्निस्स्वार्थ भावनयाक्रियमाणं भगवत् कैङ् कर्यमेव अस्माकं स्वरूपं भवति। तेनचभगवन् मुखोल्लास एव जीवानां मुख्यं लक्ष्यं भवेत् इति सारः।

Email : keshavaprapanna@gmail.com
Mobile : 8124970316

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 110-113

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी साहित्य और उषा राजे सक्सेना

डॉ. प्रसेन जीत सागर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, डॉ0 राजेश्वर सेवाश्रम महाविद्यालय ढिंढुई प्रतापगढ़, उ0प्र0।

प्रवासी भारतीय साहित्य ने विगत कुछ वर्षों में हिन्दी साहित्य को बहुत समृद्ध किया है हिन्दी साहित्य में अन्य विमर्शों की भाँति प्रवासी साहित्य भी अपनी विशेष पहचान के साथ हिन्दी साहित्य में अपनी जड़े जमाता हुआ नजर आ रहा है। हिन्दी भाषा में किसी विशेष शक्ति और आर्कषण का ही कमाल है कि आज न केवल भारतीय साहित्यकार बल्कि विदेश में बसे भारतीय लेखक अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम हिंदी को बना रहे हैं, जिसके फलस्वरूप हिन्दी साहित्य संसार दिनों–दिन विस्तृत होता जा रहा है। कमल किशोर गोयनका ने प्रवासी हिन्दी साहित्य के विषय में लिखा है। ''आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास में हिन्दी प्रवासी साहित्य की उपस्थिति, उसका सर्वेक्षण और विवेचन उसके स्वतन्त्र अस्तित्व के साथ उसकी प्रतिष्ठा एवं महत्व का प्रमाण हैं। वास्तव में हिन्दी प्रवासी साहित्य तो हिंदी साहित्य की एक शाखा है और यदि हम इस शाखा को काट देंगे तो हिन्दी की जड़ें कैसे मजबूत हो सकेगी। हिन्दी भाषा और साहित्य की जड़ें चाहे स्वदेश में हो या परदेश में, वह मजबूत तभी होगी जब उसकी शाखाएं फूलती और फलती होंगी। हिन्दी प्रवासी साहित्य हिन्दी के विराट संसार का अंग है'' ।[1]

प्रवासी साहित्य का मतलब प्रवासी द्वारा लिखा गया साहित्य 'प्रवास' शब्द का अर्थ है विदेशगमन या विदेशयात्रा जिसका अर्थ है किसी दूसरे देश में रहने वाला व्यक्ति प्रवासी है, प्रवासी ऐसे लोगों का बड़ा समूह है, जिसकी विरासत या मातृभूमि एक समान है और विश्व के अन्य स्थलों में स्थानान्तरित हो गए है। ''विदेशों में हिन्दी 19वीं शताब्दी में गिरमिटिया लोगों द्वारा पहुँची थी, जिनके वंशज आज बड़े गर्व से कहते हैं कि हमारे पूर्वज एक रामचरितमानस की प्रति और दूसरा तुलसी का पौधा लेकर यहाँ आए थे, लेकिन अपनी मातृभाषा और अपनी संस्कृति को उन्होंने प्रदेश में भी जीवित रखा है, उनका गर्व करना सही है। फिजी, गुयाना, मारीशस तथा सूरीनाम में आज जो भारतीयता दिखाई देती है वह सब उन्हीं गिरमिटिया लोगों और उनके वंशजों के कारण हैं। हिन्दी बोलने तथा हिन्दी शिक्षण की जो भी सुविधाएं वहाँ है, वे सब उन्हीं लोगों के कारण है।''[2]

प्रवासी साहित्य हिन्दी भाषा के वैश्विक पटल पर हो रहे विस्तार एवं चर्चा को समझने की दृष्टि भी विकसित करता है। प्रवासी साहित्य भारत से अपनी संस्कृति, भाषा और समाज से कटकर जीविका के लिए विदेशों में संघर्ष करते भारतीयों की मनोदशा और आन्तरिक पीड़ा की अभिव्यक्ति करता है अपने परिवार और समाज से दूर भारतीयों के लिए लेखन और एकान्त को समाप्त करने का सबसे सशक्त जरिया है। प्रवासी साहित्य की दूसरी श्रेणी में 80 के दशक में खाड़ी देशों में गए अशिक्षित और अर्द्धशिक्षित, कुशल अथवा अर्द्धकुशल

मजदूर आते हैं तथा तीसरी श्रेणी में 80–90 के दशक में गए सुशिक्षित मध्यवर्गीय लोग हैं, जिन्होंने बेहतर भौतिक जीवन के लिए प्रवास किया। प्रवासी साहित्य के संदर्भ में अर्चना पैन्यूली ने हिन्दी के प्रति नई पीढ़ी के दृष्टिकोण पर चिंता व्यक्त करते हुए लिखा है ''विश्व भर में भारत एक ऐसा देश है जहाँ से एक कभी बड़ी तादात में हर वर्ग के लोग दूसरे मुल्कों में प्रवास करते हैं आज भूमण्डल के हर देश में भारतवासी बसे हैं। भारतवासियों ने जिन देशों में प्रवास किया वहाँ अपनी भारतीय संस्कृति, रीति–रिवाजों व धार्मिक प्रथाओं कों सहेजने–समेटने की भरसक कोशिश की। विश्व के सभी देशों में हिन्दी समितियां, हिन्दी सांस्कृतिक, अध्यात्मिक व धार्मिक संस्थाएं हैं, जो भारतीय तीज–त्यौहारों राष्ट्रीय दिवसों व अन्य अवसरों पर सांस्कृतिक धार्मिक कार्यक्रम आयोजित कर विदेशों में बसे भारतीयों को अपनी जड़ों से जोड़े रखता है । भारतीय कार्यक्रमों में अभिव्यक्ति का माध्यम हिन्दी ही है।''(3)

हिन्दी विश्व–भाषा बनने के पथ पर अग्रसर है आज हिन्दी की वैश्विक पहचान है। भूमण्डल के 30 प्रतिशत भूभाग पर हिन्दी बोली जाती है। लगभग 140 देशों में हिन्दी भाषा का उपयोग हो रहा है विश्व के लगभग 150 विदेशी विश्वविद्यालयों में हिन्दी शिक्षण हो रहा है। गत 50 वर्षों में हिन्दी विश्व की तीसरी सबसे बड़ी भाषा कही जाती है लगभग एक करोड़ तीस लाख भारतीय मूल के लोग विश्व के 132 देशों में बिखरें हुए हैं वे हिन्दी से परिचित ही नहीं उसे व्यवहार में भी लाते हैं। इन्हें बखूबी पता है की भारत में हिन्दी उपभोक्ता समाज की भाषा है। अतः विदेशी निवेशकों और कम्पनियों को भारत के धरातल पर उतारने के लिए एवं उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिए हिन्दी के सहारे की सख्त आवश्यकता है, ''वैश्विक स्तर पर भी लोग हिन्दी को प्रथम से लेकर तीसरे स्थान पर रखते हैं, जिसका प्रयोग 180 देशों में 80 करोड़ लोगों द्वारा किया जाता है, लेकिन फिर भी संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बन पाने में असमर्थ रही हैं। हिन्दी में वे सारे तत्व विद्यमान हैं जो किसी विचार या उत्पाद को वैश्विक बनाते हैं।''(4)

हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय पहचान दिलाने में प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों का महत्वपूर्ण योगदान है। उनके साहित्य में एक अलग–प्रकार की संवेदना प्रकट होती है, प्रवासी साहित्यकारों का मन तो भारतीय होता है पर प्रवास में निवास करने के कारण उन्हें अलग–अलग चीजों को ग्रहण करना पड़ता है अनेक प्रवासी साहित्यकार कालजयी रचनाओं का सृजन कर रहे हैं। प्रवासी हिन्दी साहित्य न केवल पूरी दुनिया में अपना स्थान बनाया है बल्कि अपनी पहचान भी बना चुका है प्रवासी साहित्य एक स्थापित साहित्य है, जिसे नकारा नहीं जा सकता। आज हिन्दी पूरे विश्व की भाषा बनती जा रही है, प्रवासी साहित्यकारों ने आज हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की पहचान दी है।

सृजनात्मक प्रतिभा सम्पन्न उषा राजे सक्सेना का जन्म 22 नवम्बर 1943 में उत्तर–प्रदेश के गोरखपुर जिले में हुआ था। एक कवियत्री एवं कथाकार के रूप में ख्यातनाम है, वे ब्रिटेन की एकमात्र हिन्दी साहित्य त्रैमासिक पत्रिका 'पुरवाई' की सहसम्पादिका एवं हिन्दी समिति यू0के0 की उपाध्यक्ष है तीन दशक तक आप ब्रिटेन की बॉरो ऑफ मर्टन के शैक्षिक संस्थाओं में विभिन्न पदों पर कार्यरत रही हैं, आपने बॉरो ऑफ मर्टन के पाठ्यक्रम का हिन्दी अनुवाद भी किया है। प्रवासी साहित्य में चर्चित कथाकार उषा राजे सक्सेना दशकों से कहानियों के साथ–साथ कविताएं, गजलों, निबंधो एवं समकालीन रपटों के लिए भी चर्चित है। सन् 2002 में प्रकाशित 'प्रवास' कहानी संग्रह में कुल 10 कहानियां संग्रहित है विदेश में रहते हुए भी इन्होंने सात समन्दर पार

बसे भारतीय लोगों के जीवन की मर्मस्पर्शी गाथाएँ अपने इस संग्रह में प्रस्तुत किया है। प्रवासी साहित्य को समृद्ध करने का श्रेय उषा राजे सक्सेना को हैं वे एक अलग तरह की कहानीकार हैं जिन्हें पढ़ने से दो संस्कृतियों के आपसी सामंजस्य के उदार मानवीय अनुभूति होती है। उषा जी की रचनाओं का मूल स्रोत ब्रिटेन भूमि पर बसे भारतीयों की विडम्बनाओं और उनकी परिवर्तित हो रही मानसिकताओं की अभिव्यक्ति है।

उषा राजे की कविताएं ओसाका विश्वविद्यालय जापान के पाठ्यक्रम में सम्मिलित है उनकी पुस्तक 'मिट्टी की सुगन्ध' एवं ' वाकिंग पार्टनर' पर कुरूक्षेत्र और महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के छात्रों ने एम0फिल0 किया है। आप की कहानी 'वह रात' मेरठ के चौधरी चरण सिंह वि0वि0 तथा अन्य कहानियाँ महर्षि दयानन्द वि0वि0, रोहतक के पाठ्यक्रम में शामिल है।

लेखन में रूचि रखती हुई 1968 में उषा राजे सक्सेना स्वंय ब्रिटेन के स्कूलों में शिक्षण कार्य करती हुई 1985 से लेखन कार्य प्रारम्भ किया। उषा राजे सक्सेना यूनाइटेड किंगडम में बसी भारतीय मूल की लेखक हैं, वे भारत में भी काफी लोकप्रिय हैं, इंग्लैण्ड में प्रवासी भारतीय के रूप में जीवनयापन करने वाली जानी–मानी लेखिका उषा राजे सक्सेना एक सृर्जनात्मक प्रतिभा सम्पन्न ऐसी लेखिका हैं जिनके साहित्य में अपने देश, सभ्यता, संस्कृति तथा भाषा के प्रति गहरा एवं सच्चा लगाव है, उनकी रचनाओं में प्रवासी जीवन के व्यापक अनुभव और गहन विचारधारा का चिंतन मिलता है, जिसे एक नई जीवन दृष्टि विकसित होती है। उषा जी की कहानियाँ घटनाओं के माध्यम से अत्यन्त गहरे प्रवासी यर्थाथबोध का मनोवैज्ञानिक परिचय देती है। हिन्दी के प्रचार–प्रसार से जुड़ी उषा राजे सक्सेना का लेखन (हिन्दी, अंग्रेजी) इस सदी के आठवें दशक में साउथ लंदन के स्थानिक पत्र–पत्रिकाओं एवं रेडियो प्रसारण के द्वारा प्रकाश में आया तदन्तर आपकी कविताएँ, कहानियां एवं लेख आदि भारत, ब्रिटेन अमेरिका एवं यूरोप के प्रमुख पत्र–पत्रिकाओं में छपते रहे आपकी कई रचनाएँ विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुदित हो चुकी है।

''ब्रिटेन में भारतीय मूल के लोग एक लम्बे अरसे से रह रहे हैं, यहाँ अधिकांश भारतवंशी या तो पंजाबी है या फिर गुजराती हिन्दी मातृभाषा वाले लोगों की संख्या बहुत कम है ब्रिटेन के स्कूलों में हिन्दी एक विषय के तौर पर नहीं पढ़ायी जाती विश्वविद्यालय स्तर पर कैम्ब्रिज, आक्सफोर्ड या सोआस में दो से दस तक विद्यार्थी होते हैं वहां भी हिन्दी अंग्रेजी माध्यम से पढ़ायी जाती है।''(5)

कहानी के क्षेत्र में उषा राजे सक्सेना का स्थान ऊँचा है। कहानीकार के रूप में हिन्दी कथा साहित्य को नई से नई कथावस्तु दी है, नई से नई भाषा दी, नए से नए मुहावरे दिये है और नया सा नया शिल्प भी दिया है, इनकी कहानियों के विषय प्राय यू0के0 से जुड़े हुए हैं, ब्रिटेन के हर तबके के आदमी का लेखा–जोखा है ब्रिटेन के हर तबके के आदमी का सुख–दुःख और उनकी आशा–निराशा है। ब्रतानवी परिवेश में सबसे ज्यादा लिखी गई है। इनकी कहानियाँ प्रवासी साहित्यकार तेजेन्द्र शर्मा ने ब्रिटेन के प्रवासी साहित्यकारों के विषय में लिखा है ''ब्रिटेन में स्त्रियाँ काफी बड़ी संख्या में साहित्य रचना कर रही हैं, यदि ऐसा हो रहा है तो उनके लेखन में स्त्री–विमर्श भी अवश्य उभरकर आ रहा होगा। दिव्या माथुर, उषा राजे सक्सेना, शैल अग्रवाल उषा वर्मा जैसे साहित्यकार कहानी एवं कविता, दोनों विधाओं में अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रही है। वही कदम्बरी मेहरा और ज़ाकिया जुबैरी कहानियाँ लिख रही हैं तो लंदन, बर्मिघंम एवं लेस्टर में बहुत सी हिन्दी कवियत्रियाँ कविता के माध्यम से अपना विमर्श प्रस्तुत कर रहीं है अभी हाल में ही प्रवासी साहित्य के एक सेमिनार में उषा राजे सक्सेना

ने एक विस्तृत पर्चा पढ़ा, जिसमें ब्रिटेन की हिन्दी कहानियों में स्त्री विमर्श की चर्चा की।''[6]

उषा जी इंग्लैंड में प्रवासी भारतीय के रूप में जानी–मानी लेखिका हैं। इनकी रचनाएं विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुदित एवं जापान के ओसाका वि0वि0 के पाठ्यक्रम में भी शामिल है। इनकी प्रमुख कृतियाँ काव्य संग्रह : विश्वास की रजत सीपियाँ, इन्द्रधुनष की तलाश में, देशान्तर। कहानी संग्रह : प्रवास में, वाकिंग पार्टनर, वह रात, मिट्टी की सुगन्ध। देश–विदेश की अनेक पुरस्कारों से सम्मानित। ''सन् 1999 से पूर्व ब्रिटेन के कहानीकार गुमनाम थे। 1997–98 में इस लेखिका ने कहानीकारों का एक नेटवर्क बनाया और सन् 1999 में आयोजित छठे विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर 17 लेखकों की कहानियों के संकलन 'मिट्टी की सुगंध' (राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली) के माध्यम से उन्हें मुख्यधारा में रूबरू कराया।''[7]

निष्कर्ष :–

प्रवासी साहित्य भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति का समन्वय हैं। कविता, कहानी, उपन्यास, गजल के अलावा अन्य साहित्यिक विधाओं में भी रचनाएं लिखी जा रही है। हिन्दी प्रवासी साहित्य का संसार व्यापक है। प्रवासी साहित्य भारत से अपनी संस्कृति, भाषा और समाज से कटकर जीविका के लिए विदेशों में संघर्ष करते भारतीयों की मनोदशा और आन्तरिक पीड़ा को अभिव्यक्ति करने का माध्यम बन गया है। प्रवासी साहित्य के लेखन से हिन्दी साहित्य समृद्ध हुआ है। उषा राजे सक्सेना यू0के0 में बसी भारतीय मूल की लेखिका हैं। वे भारत में भी काफी लोकप्रिय हैं। कविता, कहानी, लेख जैसी विधाओं में उषा राजे ने अपनी एक शैली विकसित की है।

सन्दर्भ :–

1. कमल किशोर गोयनका, प्रवासी साहित्य गवेषणा, अंक 103, जुलाई–सितम्बर–2014 पृ0, 11
2. सूरज पालीवाल : हिन्दी का वैश्विक भविष्य, नया ज्ञानोदय अंक 151, सितम्बर 2015 नई दिल्ली, सम्पादक : लीलाधर मंडलोई, पृ0, 35
3. वही, पृ0 73
4. वही, पृ0 69
5. वही, पृ0 71
6. तेजेन्द्र शर्मा, नजरिया–3 विदेश, हंस अंक : 2 सितम्बर, 2009 नई दिल्ली, सम्पादक : राजेन्द्र यादव, पृ0 58
7. उषा राजे सक्सेना, ब्रिटेन में हिन्दी साहित्य, हंस अंक : 8 मार्च 2012 नई दिल्ली, सम्पादकः राजेन्द्र यादव, पृ0 41

डॉ0 प्रसेन जीत सागर

असि0 प्रो0 हिन्दी, डॉ0 राजेश्वर सेवाश्रम महाविद्यालय ढिंढुई, प्रतापगढ़ उ0प्र0 पिन–230138

मो0–9450021157

ईमेल पता–prasenjeetsagarhindi@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 114-118

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

सुषम बेदी के उपन्यासों में सांस्कृतिक संवेदना

शीला

शोधार्थी, जुहारी देवी गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, कानपुर, उ0प्र0

'सांस्कृतिक संवेदना' साहित्य का उत्स होती है और परिणाम भी। ऐसा होना स्वाभाविक भी है क्योंकि साहित्य अपना जीवनरस समाज और संस्कृति से ही प्राप्त करता है। साथ ही कोई भी रचना समाज में ही पोषित होती है।

प्रवासी हिंदी साहित्य का इतिहास और वर्तमान काफी सम्पन्न है। प्रवासी साहित्य सृजन प्रवासियों के जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। प्रवासी लेखक का संवेदन संस्कार के रुप में परिवेश को ग्रहण करता है। परिवेश बदल जाने से प्रवासी के जीवन में विशेषताएं आती है, जिसके कारण नवीन संस्कार, नूतन दृष्टिकोण, नए विचार, नई सोंच बनने लगती है। विदेशी भूमि पर जाकर अपने सांस्कृतिक मूल्यों का निर्वाह करना प्रवासियों के लिए एक बड़ी चुनौती है फिर भी, आज प्रवासी हिंदी साहित्य ने भारतीय संस्कृति, समाज, भाईचारा एवं पंरपरा के चलते विशेष उपलब्धि हासिल की है। आज भले ही अनेकों प्रवासी साहित्यकार देश, दुनिया के अलग–अलग हिस्सों में बसते हों किन्तु उनके लेखन में अपने देश की मिट्टी की गंध, सम्मान के साथ आत्मीयता जुड़ाव की तीव्र लालसा दिखाई देती है। अपने देश की संस्कृति, भाषा, बोली आदि के प्रति लगाव ही आज प्रवासी हिंदी साहित्य की विशेषता बनी है। इस संदर्भ में यह दो पक्तियाँ उचित ही लगती हैं –

''जो कुछ पुराना है, मोहक लगता है।
टूटने का दर्द मगर, सहना ही पड़ता है।।''[1]

वैसे तो सुशम बेदी प्रवासी हिंदी कथा साहित्य में वह नाम है जो किसी परिचय का मोहताज नहीं हैं। प्रवासी हिंदी कथा साहित्य में इनका नाम और योगदान अविस्मरणीय है। वे प्रवासी हिंदी साहित्य की एक सशक्त रचनाकार हैं जिन्होंने प्रवासी जीवन के उतार–चढ़ावों को बड़ी बारीकी से अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। बहुमुखी प्रतिभा की धनी सुशम बेदी न केवल प्रसिद्ध लेखिका रहीं बल्कि हिंदी नाटक और रंगमंच की जानी–मानी और मँजी हुई कलाकार भी थीं। 1960 से 1970 के दशक में वे भारतीय टेलीविजन की प्रसिद्ध अदाकारा और सलाहकार भी रहीं। बैल्जियम के ब्रसल्स शहर में 1947 से 1970 तक वह 'टाईम्स ऑफ इण्ड़िया' समाचार पत्र की संवाददाता भी रहीं। 1979 में पति संग अमेरिका चली गई और 1990–91 में डायरेक्टर में उन्होंने बी.बी.सी. के साप्ताहिक कार्यक्रम ''Letters From Abroad'' में अपना योगदान दिया। इसके अलावा

उन्होंने कोलम्बिया यूनीवर्सिटी में हिंदी और उर्दू विभाग में डायरेक्टर के पद पर कार्य किया तथा समय–समय पर विज़िटिंग प्रोफेसर के तौर पर वे न्यूयार्क यूनीवर्सिटी भी जाती रहीं। उन्होंनें अनेंक साहित्यिक विधाओं में लेखन कार्य किया है जिनमें उनके उपन्यासों में – 'हवन', 'लौटना', 'इतर', 'गाथा अमरबेल की', 'नवाभूम की रसकथा', 'कतरा–दर–कतरा', 'मोरचे', 'मैंने नाता तोड़ा', 'पानी केरा बुदबुदा'।

कहानी सग्रंहों में– 'चिड़िया और चील', 'तीसरी आँख', 'सड़क की लय', 'यादगारी कहानियाँ'।

कविता सग्रंह– 'शब्दों की खिड़कियां', 'इतिहास से बातचीत'।

निबंध में– 'हिंदी भाषा का भूमण्डलीकरण'।

आत्मकथा– 'आरोह–अवरोह।

प्रकाशित कृतियाँ हैं।

इनके उत्कृष्ट कार्य और साहित्यिक लेखन के लिए इन्हें समय–समय पर विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्मान एवं पुरस्कार भी दिये गए। हिंदी के साहित्यिक योगदान के लिए इन्हें भारतीय साहित्य अकादमी, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, अक्षरम, तथा अभिव्यक्ति (इंटरनेट) द्वारा सम्मानित किया गया इसके अलावा न्यूयार्क यूनिवर्सिटी, छात्र संस्था एवं भारत के राष्ट्रपति द्वारा 'पद्मभूषण सत्यनारायण मोटूरि' पुरस्कार भी दिया गया।

सुषम बेदी के उपन्यासों में सांस्कृतिक संवेदना :-

अमेरिका में लंबे प्रवास के दौरान सुषम बेदी ने प्रवासी जीवन को गहराई के साथ अनुभव किया है। जिसका प्रभाव उनके उपन्यासों में देखने को मिलता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी संस्कृति से लगाव होता है। संस्कृति के प्रति विशेष लगाव सुषम बेदी के उपन्यासों में स्पष्ट रुप से नजर आता है। वे अपने उपन्यासों में भारतीय स्ंस्कृति को संजोने का प्रयास करती हैं तो कहीं भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति के बीच झूलते प्रवासी भारतीयों के मानसिक द्वन्दों का उल्लेख करती है। समय और स्थान परिवर्तित होनेपर संस्कृतियों में भी परिवर्तन आ जाता है। प्रवासियों के साथ संस्कृतियों में भी परिवर्तन होना सामान्य बात है किन्तु पुरानी पीढ़ी भले ही अपने से भिन्न संस्कृतियों के माहौल में वास करे लेकिन अपनी संस्कृति को नहीं भूलते। वे हमेशा अपनी संस्कृति से जुड़े रहना चाहते हैं, लेकिन उनकी नयी पीढ़ी, नये परिवेश में नये मूल्यों, नये संस्कारों के साथ जीना चाहती है। वे अपने पुराने संस्कारों और मूल्यों को नहीं अपनाना चाहते हैं। संस्कृति को लेकर दो पीढ़ियों के बीच द्वंद का चित्रण हमें उनके प्रथम उपन्यास 'हवन' में देखने को मिलता है। अमेरिका में बसे प्रवासी भारतीयों के जीवन का यथार्थ प्रस्तुत करता यह उपन्यास अपने आप में एक बेजोड़ उपन्यास है। इस उपन्यास में पुरानी पीढ़ी का अपनी संस्कृति से लगाव और नयी पीढ़ी का अलगाव स्पश्ट रुप से देखने को मिलता हैं।

उपन्यास की नायिका गुड्डों अमेरिका में बसने के बाद भी प्रतिवर्ष नववर्ष आने पर अपने अपार्टमेंट में भारतीय विधि अनुसार हवन का अनुष्ठान करती है। भारतीय पर्व आने पर भारतीय वस्त्र धारण करती है। भारतीय भोजन बनाती है। हवन में संस्कृत के श्लोकों का उच्चारण करती है। अमेरिका में बसी उसकी अन्य बहनें भी भारतीय संस्कृति का बखूबी निर्वहन करती हैं किन्तु भारतीय संस्कारों और संस्कृतियों से उनके बच्चों को कोई

सरोकार नहीं है। उनके लिए सभी भारतीय संस्कार और संस्कृति महत्वहीन हैं। मानों भारतीय रीति–रिवाजों को उन पर जबरदस्ती लादा जा रहा हों। गीता की बेटी राधिका अमेरिकी धरती पर जन्मीं है और बड़ी हुई है। उसमें भारतीय संस्कृति और रिवाजों के प्रति विद्रोह की भावना है, जबकि उसके माता–पिता हमेशा से ही उसके अंदर भारतीय संस्कारों का बीजारोपण करते आयें हैं। ''गुड्डो और गीता जब हवन मंत्रों को गाते हैं तो राधिका के लिए वहाँ बैठना एक सज़ा से कम नहीं होता। जिन बातों का रोजमर्रा की जिंदगी से वास्ता नहीं, जिनका अर्थ वह नहीं समझती, उनको राधिका पर क्यों जबरदस्ती लादा जाता है।''[2]

भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति की भिन्नता की टकराहट को उनके उपन्यास 'गाथा अमर बेल की' में देखा जा सकता है। भारतीय और पाश्चात्य रीति–रिवाजों की भिन्नता के कारण प्रवासी भारतीयों की नयी और पुरानी पीढ़ी के बीच कई बार तारतम्य नहीं बैठा पाती है। जिससे दोनों पीढ़ियों में वैचारिक मतभेद की समस्या सामने आती है। उनके इस उपन्यास की नायिका शन्नों व उसकी बहू दिव्या के बीच संस्कारों की भिन्नता होनें के कारण हमेशा तनाव की स्थिति बनी रहती है। शन्नों एक ओर जहां भारतीय रूढ़ीवादी मानसिकता की शिकार है, वहीं दिव्या पाश्चात्य समाज में आधुनिक विचारों के साथ पली–बढ़ी है। शन्नों को हमेशा दिव्या से भारतीय संस्कारों को न निभाने की बात को लेकर शिकायत बनी रहती है। विवाह के अवसर पर दिव्या के घर से आई सूती साड़ियों को देखकर शन्नों नाराज होती है और दिव्या को ताना मारते हुएकहती है –''हाय हाय! ये सूती साड़ियाँ भला कौन देता है। हमारे यहाँ तो बुरा मानते हैं। साड़ी तो सिल्क की होनी चाहिए।''[3]

शन्नों एक तरफ दिव्या को भारतीय संस्कारों का निर्वहन न करने के लिए हमेशा भला–बुरा कहती है तो दूसरी तरफ उसे नाराज भी नहीं करना चाहती है। पितृसत्ता भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों में से एक है। भारत में इस संस्कृति का शिकार सबसे अधिक स्त्री वर्ग होता है। उनके 'कतरा–दर–कतरा' उपन्यास में इस संस्कृति की साफ झलक देखने को मिलती है। उपन्यास की नायिका शशि इसी संस्कृति का शिकार है। जो स्वयं के अस्तित्व को भुलाकर अपने जीवन का हर क्षण मानसिक रुप से विक्षिप्त हुए भाई और बेटे को संभालने में लगा देती है।

सुषम बेदी को अपनी भारतीय संस्कृति से विशेष लगाव है। जब भी मौका मिला उपन्यासों में इस लगाव को वर्णित किया है। उनके इसी लगाव को उनके 'लौटना' और 'मोरचे' उपन्यास में देखा जा सकता है। 'लौटना' उपन्यास में वे मीरा और विजय का विवाह भारतीय विधि और रीति–रिवाज से सम्पन्न कराती हैं। मीरा के माता–पिता भारतीय रिवाजों को निभाते हुए मीरा के ससुराल वालों को शगुन के तौर पर उपहार स्वरुप कीमती वस्त्र, मिठाइयाँ व अन्य वस्तुएं भेंट करते हैं। वहीं उनके 'मोरचे' उपन्यास की नायिका तनु भारतीय संस्कारों को निभाती है। वे अपने पति की दीर्घायु के लिए करवा चौथ का व्रत भी करती है। जबकि वही पति उसे जीवन में महत्व न देते हुए उसकी अवहेलना करता है।

'इतर' उपन्यास में भारतीय पर्वोंका सुदंर वर्णन मिलता है। उपन्यास के मुख्य पात्र बाबा रामानंद स्वामी और पत्नी रुपा अमेरिका में रहते हैं, लेकिन भारतीय पर्वो को बड़ी धूमधाम से मनाते हैं।

वे गुरू पूर्णिमा और नवरात्र के पर्व पर भव्य आयोजन करते हैं। नवरात्र के अवसर पर वे विशाल पंडाल की व्यवस्था कर हवन का आयोजन करते हैं। ''पूजा के लिए तीन पंडित स्थानीय मंदिरों से बुलाए गए थे। ऑडिटोरियम के बीचों बडा सा हवन कुंड रखा गया था, उसके इर्द–गिर्द और सामग्री थी। हवन दिनभर चलता रहता। पुजारी बारी–बारी से मंत्र पाठ की जिम्मेदारी लेते। हवन खत्म होते ही भजन शुरु हो जाता। फिर कीर्तन।''[4]

'नवाभूम की रसकथा' उपन्यास प्रेम पर आधारित है। उपन्यास के मुख्य पात्र आदित्य और केतकी एक दूसरे से प्रेम करते है। दोनों भारतीय हैं, लेकिन अमेरिका में रहते हैं। केतकी अमेरिकी वस्त्रों के साथ भारतीय वस्त्रों को भी पहनती है। वह उनका त्याग नहीं करती है। आदित्य केतकी में भारतीय संस्कृति के अनुसार सफल गृहणी के सारे गुण देखता है। इसीलिए वह केतकी से विवाह भी भारतीय संस्कृति के अनुसार करना चाहता है और उसके साथ भारतीय पद्वति अनुसार जीवन व्यतीत करना चाहता है।

एक तरफ सुषम बेदी उन भारतीय संस्कृति, विचारों, मूल्यों की प्रशंसा करती है जो मनुष्य को ऊपर उठाते हैं, जिससे किसी का अहित नहीं होता है तो दूसरी तरफ जिन विचारों, मूल्यों या रीति–रिवाजों से किसी का अहित होता है, उसका विरोध भी करती नजर आती हैं। भारतीय संस्कृति में कुछ ऐसे रीति–रिवाज हैं जो व्यक्ति को बंधन में बांधते है। भारतीय समाज में न चाहते हुये भी व्यक्ति को निभाने पड़ते हैं। भारत में यदि किसी लड़की या महिला के साथ कोई दुर्घटना घटित हो जाती है तो सर्वप्रथम उसका पूरा दोश पहले उसे ही दिया जाता है। भले ही लड़की की कोई गलती न हो। 'मैने नाता तोड़ा' उपन्यास की नायिका रीतू बचपन में ही अपने पिता के करीबी मित्र द्वारा बलात्कार का शिकार होती है। लेकिन उसके खिलाफ कोई आवाज नहीं उठाता है। रीतू इस घटना के बाद हमेशा भारतीय मूल्य और सोच की अवहेलना करती है। वह उन सभी भारतीय रीति–रिवाजों, मान्यताओं और विश्वासों को नकारते हुए सबसे नाता तोड़ते हुए कहती है –''और मै नाता तोड़ती हूँ उन विश्वासों से, ऊल जूलूल मान्यताओं से, जो आज भी औरत को उसी तरह विषाक्त परिहार्य दृष्टि से देखते हैं। जैसे मुझे देखा गया था। तोड़ती हूँ नाता उन सड़े–गले रीति–रिवाजों से, जो आज भी दमन करते है–औरत का। एक छोटी सी चूक होने पर औरत को उम्र भर सज़ा देते हैं। एक बार रास्ता भूल जाने पर कभी माफ नहीं करते हैं और आगे के सारे रास्ते बंद कर डालते हैं।[5]

रीतू भारतीय संस्कृति और विचार की अपेक्षा पश्चिमी संस्कृति और खुले विचारों की मानसिकता को महत्व देती है और उसे अपनाने की बात सोचती है।

'पानी केरा बुदबुदा' उपन्यास में भारतीय संस्कृति और पश्चिमी संस्कृति का अनोखा मिश्रण देखा जा सकता है। उपन्यास की नायिका पिया दोनों संस्कृतियों के बीच सांमजस्य बनाकर चलती है। पिया उच्च शिक्षित है और अमेरिका में मनोचिकित्सक है। पिया अवसर के अनुसार दोनों संस्कृतियों का निर्वहन करती है। पिया अपने पुत्र रोहन को पाश्चात्य संस्कृति और विचार के अनुसार पालती है साथ भारतीय संस्कृति का बीजारोपण भी करती है। पिया लंबे वर्श तक अमेरिका में ही रहती है, लेकिन अपनी भारतीय संस्कृति का निर्वहन करना नहीं

भूलती है। वह पुत्र रोहन का विवाह अमेरिका में भारतीय रीति–रिवाज के अनुसार सम्पन्न कराती है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि संस्कृति मानव, जीवन की अमूल्य निधि है। हर व्यक्ति को अपनी संस्कृति से लगाव होता है और यह लगाव तब और बढ़ जाता है जब वह इन सबसे दूर हो जाता है। सुषम बेदी के उपन्यासों में अपनी भारतीय संस्कृति के प्रति विशेष जुड़ाव नजर आता है, इतना ही नहीं वे उन भारतीय मूल्यों और विचारों का विरोध भी करती हैं जो किसी के जीवन को कष्ट पहुंचाते हैं। इसके अलावा भिन्न संस्कृतियों के कारण उत्पन्न दो पीढ़ियों के बीच उत्पन्न द्वंदों को भी देखा जा सकता है। जो प्रवासी जीवन की मुख्य समस्याओं में से एक है। इन सब के बाद भी सुषम बेदी अपनी भारतीय संस्कृति से अटूट नाता बनाए रखती हैं। अंत में यही कहना चाहूँगी कि सुषम बेदी ने अपने उपन्यासों में बड़ी सजगता के साथ सांस्कृतिक संवेदना को रेखाकिंत किया है।

सन्दर्भ सूची :–

1. http://www.rekhta.co.in/ गिरजाशंकर माथुर
2. सुषम बेदी, 'हवन' अभिरुचि प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली, पृ0 सं0 13
3. सुषम बेदी, 'गाथा अमर बेल की', हिंदी बुक सेंटर, नयी दिल्ली, पृ0 सं0 184
4. सुषम बेदी, 'इतर', ग्रंथ अकादमी, नयी दिल्ली, संस्करण–2017, पृ0 सं0 115
5. सुषम बेदी, 'मैने नाता तोड़ा', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 2009, पृ0 सं0 235

ईमेल–sheela01manoj01@gmail.com

मो0नं0–8700537386

Address : H.No. 184, Mool Chand Colony, Adarsh Nagar, North West Delhi - 110033

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 119-121

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी कथा साहित्य में विविध पक्षों पर स्त्री चिंतन

पिंकी

स्नातकोत्तर हिंदी नेट, छात्रा बीएड

टीकाराम कॉलेज ऑफ एजुकेशन, सोनीपत, हरियाणा।

आमुख :–

भारत एक बहुसांस्कृतिक, बहुभाषिक देश है। इसीलिए यहां का साहित्य भी विभिन्न विमर्शों, परिवेश और भावनाओं को अभिव्यक्त करता है प्रवासी साहित्य हिंदी भाषा के वैश्विक पटल पर हो रहे विस्तार एवं चर्चा को समझने की एक दृष्टि भी विकसित करता है। प्रवासी साहित्य भारत से अपनी संस्कृति भाषा और समाज से कटकर जीविका के लिए विदेशों में संघर्ष करते भारतीयों की मनोदशा और आंतरिक पीड़ा को अभिव्यक्त करता है 'प्रवासी सहायता उस मानसिकता को भी प्रकट करता है जो प्रवास में रहकर आर्थिक रूप से संपन्न हो रहा है। भारतीय मुद्रा की तुलना में विदेशी मुद्रा भारतीय युवा वर्ग को अधिक आकर्षित कर रही है परंतु इसकी असलियत कुछ और ही है। विदेशों में पहुंचते ही व्यक्ति उन कामों को करने में भी तैयार हो जाता है जो अपने देश में उसे तुच्छ लगते हैं।'[1]

बीज शब्द :– प्रवास, प्रवासी, साहित्य, कथा साहित्य, स्त्री कथाकार।

परिचय :–

'भारतीयों के विदेश गमन, उनके संघर्ष और विकास को प्रकट करने वाला प्रवासी साहित्य अपने आपको नया आयाम प्रदान करने में अग्रसर है क्योंकि इससे हिंदी को वैश्विक विस्तार प्राप्त हुआ है जोकि दिन–प्रतिदिन विस्तार प्राप्त करने के लिए चर्चाओं का विषय भी बना हुआ है। प्रवासी लेखक स्वदेश प्रदेश के दबंद में जीता हुआ नए नए अनुभव, तनाव एवं बुराइयों से गुजरता है। जिसको वह अपने नए भाव बोध, दृष्टिकोण, जीवन मूल्यों के साथ सृजन कर देता है। प्रवासी कथा साहित्य भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

स्त्री प्रवासी कथा साहित्य की एक झलक :–

विदेशों में रचित हिंदी कथा साहित्य कई अर्थों में भिन्न है। इसमें स्थानीयता के तत्व प्रधान होते हैं किंतु मानवीय संवेदनाएं देशकाल की सीमाओं का अतिक्रमण करते हैं। इसमें प्रेम, राग, विराग आदि संवेदनाओं की अभिव्यक्ति प्रवासी साहित्य में भारतीय साहित्य की तरह ही दिखाई देती है। पश्चिमी सामाजिक परिवेश में स्त्री–पुरुष संबंधों तथा दांपत्य संबंधों की अनिश्चितता बहुचर्चित विषय है। प्रवासी कथा साहित्य भी मूल रूप से स्त्री केंद्रित ही है। प्रवासी कथा साहित्य की प्रमुख विशेषता स्त्री कथाकारों की प्रधानता है स्त्री प्रवासी कथा साहित्य में विभिन्न आयामों, मुद्दों पर ध्यान डाला गया है जो कि इस प्रकार है :–

पराएपन की अनुभूति,
अंतर्मन का द्वंद्व,
'नई पहचान को स्थापित करने की जद्दोजहद,
'पारिवारिक स्थितियों का मार्मिक चित्रण,
स्त्री का तनाव ग्रस्त जीवन,
'मनुष्य की निर्लज्जता एवं अय्याशी प्रवृत्ति को उजागर,
'शराबखोरी, वेश्यावृत्ति, इम्स, पैडलर्स कुरीतियों का उद्घोष,
विदेशों की झूठी चकाचौंध जिंदगी का खुलासा,
'भाषा की सीमा,
'गरीबी की मार आदि।

साहित्यावलोकन :–

प्रवासी साहित्य की स्त्री कथाकारों में सुषमा बंदी, सुधा ओम ढींगरा, जकिया जुबरी, नाना पॉल, दिव्या माथुर, उषा वर्मा, जय वर्मा उषा राजे सक्सेना, शैलजा सक्सेना, नीलम मलकानिया, पूर्णिमा वर्मन, आदि स्त्रियों ने लेखिकाओं के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन लेखिकाओं अपने कथा साहित्य मैं विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला है।

'सुषम बेदी के प्रसिद्ध कहानी संग्रह 'चिड़िया एवं चील में प्रवासी भारतीयों के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। खासकर इन्होंने अमेरिका में रहने वाले भारतीयों के जीवन में घटित होने वाली घटनाओं, परिस्थितियाँ, सुख–दुख आदि का बड़ा सटीक एवं स्पष्ट अंकन किया है।'[3]

वहीं जकिया जुबैरी जी के कहानी संग्रह 'सांकल' में स्त्री मन के कशमकश को चित्रित किया गया है। जकिया जी की कहानियों में अकेलेपन और परिवार के बीच की स्थितियों का मार्मिक चित्रण मिलता है। इसमें उन्होंने मां और बेटी के अलावा मां और पुत्र के बीच स्वाभिमान को बहुत ही संवेदनशील ढंग से व्यक्त किया है।

इसके अलावा दिव्या माथुर जी की शुरुआती कहानियों में कहानी में शिल्प कम और संवेदना अधिक है। वे कथ्य पर फोकस करती हैं। उनकी 'तमन्ना' कहानी एक ऐसी भारतीय बहू की कथा है जो लगातार तनाव में है। झांसी में उसका एक सड़कछाप प्रेमी था जो शादी के बाद भी उसे धमकी भरे खत लिखता है। एक तरफ ससुराल दूसरी तरफ ऐसी दोराहे की स्थिति की वजह से वह तनाव में रहती है।

सुधा ओम ढींगरा एक अन्य प्रवासी लेखिका हैं जिन्होंने 'कौन सी जमीन अपनी कहानी संग्रह में अमेरिका में मस्त भारतीय पीढ़ी के बीच वस्त एवं दुखी पीढ़ी के चित्र भी प्रस्तुत किए हैं। उनकी कहानियों में जहां एक ओर पीढ़ी अमेरिका में अपनी पहचान बनाते दिखाई गई है तो वहीं दूसरी ओर वहीं भारत की स्मृति के चित्र भी अंकित हुए हैं। उनकी अन्य कहानी 'टारनेडो' जहां भारत की याद की कहानी है। वही क्षितिज से परे कहानी में पड़ताड़ित स्त्री के विद्रोह को दर्शाया गया है। 'कौन सी जमीन अपनी' कहानी में जहां एक तरफ पराएपन की भावुकता को प्रकट किया वहीं दूसरी ओर जमीन जायदाद के लालच में रिश्तो को दांव पर लगाया दिखाया गया है। इसके अलावा इसमें अपने वतन की याद को भी दिखाया गया है।

'ओये मैने अपना बुढ़ापा यहां, नहीं काटना यह जवानों का देश है, मैं तो पंजाब के खेतों मे अपनी आखरी

सांसे लेना चाहता हूं।'[4]

उनकी एक अन्य कहानी सूरज क्यों निकलता है को पढ़ते ही प्रेमचंद जी की कफन कहानी याद आती है। कफन कहानी के घीसू और माधव की अपेक्षा इस कहानी के पात्र जेम्स और पीटर ज्यादा निर्लज्ज एवं अराजक है क्योंकि यह दोनों पात्र काम करना ही नहीं चाहते और अपनी सारी अय्याशी पूरी करना चाहते हैं। ये बेघर होने का बहाना कर भीख मांगते हैं, और मुफ्त में खाना खाते हैं। इसके अलावा इसमें वेश्यावृत्ति, शराब की लत को भी अंकित किया गया है।

इन सभी के अतिरिक्त भारतीय लोगों का विदेशों के प्रति मोह किस प्रकार खुशहाल परिवार को नरक बनाता है, यह शैलजा सक्सेना ने 'उसका जाना कहानी में दिखाया गया है। इसमें विदेशों से आए लोगों दद्वारा वहां की झूठी प्रशंसा व गुणगान सुनकर आर्थिक तंगी के चलते ना जाने कितने लोग वहां जाने के लिए लालायित हो उठते हैं। वहां जाकर वे स्वदेश की अच्छाइयों को नजरअंदाज कर नरकीय जीवन जीने पर भी मजबूर हो जाते हैं आदि को दिखाया गया है। यह कहानी कनाडा के परिवेश में भारतीयों की कहानी है। यह कहानी सिर्फ एक व्यक्ति या परिवार की नहीं बल्कि संपूर्ण समाज का प्रतिनिधित्व करती है। इसमें भाषा की सीमा गरीबी की मार अकेलेपन की पीड़ा नारी, बच्चों का शोषण आदि को दर्शाया गया है।

इसके अलावा थोड़ी देर और कहानी यहूदियों पर हुए अत्याचार की कहानी है। कई देशों में यहूदियों पर अत्याचार हुए उन्हें क्रूरता पूर्वक मारा ही नहीं बल्कि उन्हें इस्लामी तथा अन्य देशों से भागना भी पड़ा। इस कहानी में नारी मनोविज्ञान की बेहतरीन व्याख्या देखने को मिलती है।

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष तौर पर हम कह सकते हैं कि प्रवासी कथा साहित्य में स्त्रियों की अहम भूमिका है। उन्होंने अपने साहित्य में केवल स्त्री को केंद्र में रखा बल्कि विदेशी जमीन पर जो कुछ भी उन्होंने महसूस किया इसी को अपनी कहानियों में यथार्थ रूप से प्रकट किया है। उनकी इन कहानियों के माध्यम पाठक को उनकी आंतरिक गतिविधियों की सूचना के साथ–साथ एक नई दुनिया के विषय में अवगत कराने में सहायता मिलती है।

संदर्भ संकेत :-

1. रमा (संपा) प्रवासी हिंदी साहित्य विविध आयाम, दिल्ली : साहित्य संचय, प्रथम संस्करण 2017, पृष्ठ–39
2. Zan.blogspot.com
3. चिड़िया और चील : सुषम बेदी, अभिरुचि प्रकाशन, कर्ण गली, विश्वास नगर, दिल्ली– 1100325
4. कौन सी जमीन अपनी : डॉक्टर सुधा ओम ढींगरा, भावना प्रकाशन, पटपड़गंज, दिल्ली–110091

Email Address:- pinkipriyanka813@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 122-125

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी साहित्य के संदर्भ में मॉरीशस की कहानियों में संवेदना के नये स्वर

डॉ. सविता मसीह

(सहप्राध्यापक–हिंदी), शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिवनी (म.प्र.)

सार :–

प्रवासी भारतीय चाहे यूरोप, अफ्रीका, अमेरिका, मॉरीशस या दुनियाँ के किसी भी स्थान पर हो उनके मन में हिन्दी साहित्यक के प्रति अटूट आस्था है। उनके साहित्य के परिप्रेक्ष्य में भारत की बहुआयामी जीवन्त संस्कृति एवं भाषा का सशक्तर इन्द्रधनुषी रूप देखने को मिलता है। प्रवासी हिन्दी साहित्य संवदेना के नये स्वर के अन्तर्गत मॉरीशस का साहित्य प्रचुरता तथा गुणवत्ता दोनों ही दृष्टियों से समृद्ध है। यहाँ के रचनाकार भारत में भी पहचाने–पढ़ाए जाने के साथ ही पी.एच.डी की डिग्री के लिए मॉरीशस साहित्यकारों पर शोध कार्य भी हो रहा है। अभिमन्यु अनत रामदेव धुरन्धर स्वर्गीय डॉ. मुनीश्वर लाल चिंतामणि, डॉ. हेमराज सुन्दर प्रहलाद रामशरण, राज हीरामन, धनराज शंभू, जय जीऊत, सूर्यदेव, सोबोरत, स्वर्गीय भानुमति नागदान, पूजानंद नेमा, वीरसेन, जगसिंह, बीवी साहेबा फर्जली, मोहनलाल, ब्रजमोहन लोचन, विदेशी वेणी, माधव रामखेलावन, लक्ष्मी प्रसाद, रामवाद सोनलाल नेमधारी, पुष्पा बम्मा, दीपचन्द बिहारी, आस्तानंद सदासिंह आदि अनेक रचनाकार मॉरीशस के सृजनात्मक लेखन को नई पीढ़ी के साथ जोड़कर संवेदना के नये स्वर को अभिव्यक्ति कर रहे हैं।

'बीज शब्द :– मॉरीशस का कथा चिंतन, मॉरीशस के प्रतिनिधि कथाकार व उनके संवेदना के स्वर, मॉरीशस की कहानियों में अभिव्यक्त संवेदना।

प्रस्तावना :– मॉरीशस में पर्याप्त हिन्दी साहित्य का सृजन किया गया है। डॉ. कमल किशोर गोयन के विचार हैं कि प्रवासी साहित्य की बुनियाद प्रेम तथा स्वदेश–परदेश के हिन्दी पर टिकी है। बार–बार हिन्दी जीवन मूल्यों और सांस्कृतिक उपलब्धियों तथा उनके प्रति श्रेष्ठता का भाव की भी अभिव्यक्ति है। (कल्पांकत फरवरी 2009 पृ. 36) मॉरीशस की कहानियों में भारतीय संस्कार जीवन मूल्य अपने संदर्भों में किस्से होकर भी प्रभावशाली हैं। मॉरीशस के कहानीकारों ने अतीत का संघर्ष वर्तमान की स्वप्नज भंग स्थिति एवं नवीन पीढ़ी का आविर्भाव सब कुछ अभिव्यक्त किया है। उन्होंने अपनी संवेदना को गहनता एवं सूक्ष्मता के साथ विस्तार प्रदान किया। संवेदना की व्यापकता के कारण ये कहानियाँ मॉरीशस की सीमा से आगे बढ़कर भारत तक पहुँची। नैतिक मूल्यों में निरंतर परिवर्तन होने के कारण संवेदनात्मपक नैतिकता भी परिवर्तित होती जा रही है। प्रत्येक व्यक्ति ने अपने लिए पृथक–पृथक आयामों की संरचना की है।[1]

मॉरीशस का कथा चिंतन :-

मॉरीशस के जीवन पर भारतीय जीवन मूल्यों की गहरी छाप देखने को मिलती है। इसका मूल कारण गिरमिटिया मजदूरों का जीवन दर्शन है जिसे वे वर्षों पूर्व अपने साथ भारत से ले गये थे। मॉरीशस के कहानीकारों ने यद्यपि मॉरीशस की भूमि पर मिली पीड़ा संघर्ष और भारतीय जीवन मूल्यों की संवेदना को अभिव्यक्त किया है। साहित्य जीवन को प्रतिबिम्बित करता है और उससे जुड़ी संवेदना अन्योन्याश्रित है। मॉरीशस के प्रमुख कहानियों और कहानीकारों की संवेदना के नए स्वबरों की अभिव्युक्त स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

मॉरीशस के प्रतिनिधि कथाकार व उनके संवेदना के स्वर :-

मॉरीशस के प्रतिनिधि कहानीकार अभिमन्यु अनंत ने मॉरीशस के समाज का सटीक चित्र अपनी कहानियों में खींचा है। उनकी कहानी संग्रह खामोशी की दीवार की कहानी जहर और दवा पाश्चात्य प्रभाव से निर्मित रिश्ते की संभावना को दर्शाती है। यह कहानी सोफिया से एक व्यक्ति के साथ अवैध संबंध की कहानी है। एक थाली समन्द्र कहानी संग्रह की प्रसिद्ध कहानी मुट्ठी भर रेत ने मॉरीशस के सामाजिक जीवन को दर्शाया है। यह क्रिया लड़की अंजली की कथा है। वह अपने अतीत का पुनरावलोकन करती है। बलात्कार की शिकार लड़की का जीवन अस्त–व्यस्त हो जाता है। उसे अपना सारहीन जीवन केवल एक मुट्ठी रेत जितना निस्सार प्रतीत होता है। डॉ. कमल किशोर गोयनका ने एक थाली समन्दर कहानी संग्रह के फ्लैप पर लिखा है ये कहानियाँ मॉरीशस के जन–जीवन की ऐसी कलात्मक झॉकियाँ हैं जो हमारे मन मस्तिष्क को गहराई तक उद्धेलित करती हैं– कहीं भावविभोर और कहीं विचारोत्तेजित करके सोचने समझने को विवश करती हैं।[2]

अभिमन्यु अनत की कहानी मातमपुरसी मृत्यु जैसी संवेदनशील घटना पर आधारित है। विपन्नता अर्थोपार्जन के नये–नये तरीके अन्वेषित करती है। उनकी एक अन्य कहानी मशीन की मृत्यु सोनालाल नाम के श्रमिक की पीड़ा की अभिव्यक्ति है। मशीन बन गये श्रमिक के जीवन का कोई मूल्य मालिकों की दृष्टि में नहीं है। गोली की आवाज कहानी स्वेच्छाचारी गोरे मालिकों के आर्थिक शोषण में पिसते सजीवन महत्तों की गाथा है। मुट्ठी में बंद उजाला कहानी आर्थिक अभावों में जी रहे परिवार की लाचारी को अभिव्यक्त करती है। वह बीच का आदमी एक सशक्त रचना है। टूटा पहिया कहानी का केन्द्रीय पात्र युसुफ एक तांगेवाला है जो कि नगरीकरण से उत्पन्न यांत्रिकता का शिकार है। अभिमन्यु अनत ने स्वीकार किया है कि कहानियों में उन्होंने मॉरीशस का चित्र खींचा है– इनमें इतिहास और समय की भावनाओं के स्वर दे पाया हूँ। बस अपनी ईमानदारी का मुझे संतोष है।[3] अभिमन्यु अनत ने जीवन के विविध रूप को उसके सभी फलकों के साथ विश्लेषित किया है। जीवन में व्याप्त घुटन एवं संत्रास पूरी संजीदगी से सामने लाते हुए अनैतिकता के भीषण परिणामों की ओर संकेत करते हैं। भौतिकवादी जीवन दृष्टि और आत्मंपरकता ने जीवन के प्रति संवेदनात्मक बोध में परिवर्तन ला दिया है। परिणामतः मनुष्य की दृष्टि में भी परिवर्तन हुआ है। जो नैतिक मूल्य एक युग में अनैतिक लगते थे वो अगले कालखण्ड में नैतिक लगने लगे हैं। नैतिक मूल्यों में परिवर्तन आ गया। परिवार में स्थापित नैतिकता खोखली और निर्जीव लगने लगी।[4]

मॉरीशस की कहानियों में अभिव्यक्तर संवेदना :-

पश्चिमी चिंतन के प्रभाव से आज एकल और उससे भी आगे बढ़कर एकाकी अभिभाव की विचार पद्धति सामने आयी है। रामदेव धुरंधर की कहानी आदमखोर पर भारतीय संयुक्त परिवार की छाप देखने को मिलती है।

'जिन्दगी का बांकी हिस्सा' कहानी भी परिवारिक विघटन का चित्र खींचती है। पीढियों का हस्तांतरण एक सामाजिक क्रिया है किन्तु, पश्चिमी भौतिकवादी चिंतन में डूबी नयी पीढ़ी माता–पिता को साथ रखने के लिए तैयार नहीं है। संयुक्त परिवार की इसी सांस्कृतिक थी को समाज में क्रमशः तोला गया है। रामदेव धुरंधर की अधूरे पुरूष से मिला प्रेमदान प्रतिकाल विष मंथन और दिशाएं कहानियाँ परिवारिक विघटन की संवेदना के चित्र खींचती है। पूजानंद नेमा ने स्वातंत्त्रत् और मॉरीशस की आर्थिक समस्याओं पर प्रकाश डाला है। नया सफर सहने का कहानी में निम्न वर्ग के आर्थिक दौबल्य को प्रस्तुत किया है। उनकी तलाश अबोल पशु हिरण के शिकार पर आधारित है। तलाश कहानी में नेमा जी ने अहिंसा जैसे पवित्र जीवन मूल्य को उजागर किया है। अधूरा आदमी कहानी में नायक का दीन–हीन स्त्री रत्नाबाई को शरण देना उसके सामाजिक नैतिक दायित्व की तरफ संकेत करता है। डॉ. मुनीश्वर लाल चिंतामणि लिखते हैं– उन्होंने इन कहानियों के माध्यम से आम आदमी के जीवन मूल्यों, विश्वासों, संस्कारों और उसके संघर्षों की दिशाहीन टकराहटों आदि की मार्मिकता व्यक्त की है। ये कहानियाँ देश में व्याप्ता सामाजिक आर्थिक मनोवैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं को प्रस्तुत करती हुयी जीवन सत्य की खोज करती है।[5]

गिरमिटिया मजदूरों के मन में अपने वतन भारत लौटने की ललक को कहानी गिरमिटिया मजदूर अभिव्यक्त करती है। वृद्ध भागी के माध्यम से गंभीर संवेदना को स्पर्श किया है। भागी को एक खास चाह थी अपने गाँव का काली मांई का मंदिर देखने की। उनकी कहानी अनुबंध नायिका बिलास की विचारधारा विशुद्ध भारतीय मानसिकता पर आधारित है। परिवर्तन कहानी भी सामाजिक मानदण्डों पर जीवन जीते प्रेमियों की कथा है। पिताजी की तस्वीार भौतिकवादी सुख–सुविधाओं में डूबे पात्रों की कहानी है। बुझ गया दीपक पर्यटन उद्योग पर किया गया व्यंग्य है। पर्यटन उद्योग कभी–कभी सीमाओं को भी लांघ जाता है। धनार्जन हेतु नवयुवतियाँ वैश्या तक बनने को तैयार हो जाती हैं।

उत्सर्ग की भावना से प्रेरित कहानी बेबसी में बीबी साहेब फर्जली ने नवयुवतियों की मनोदशा का सुंदर चित्रण किया है। धनार्जन के लिए दूसरे देश जाकर वापस लौटी नायिका शुक्ला भौतिकवादी स्वार्थपरायण स्त्री नहीं है। वह नेत्र दान करके उच्च नैतिकता का मानदण्ड स्थापित करती है जिससे किसी के अंधकारमय जीवन में प्रकाश भर सके। मोहनलाल ब्रजमोहन की कहानी ममता का साया में भारतीय संस्कारों से प्रभावित नायक पश्चिमी देशों की तरह माँ को वृद्धाश्रम में भेजना नहीं चाहता है। और वृद्ध माँ के प्रति दुर्व्यवहार करने वाली पत्नी को धिक्कारता है।

समाज की प्रतिक्रिया अच्छे और बुरे के लिए एक जैसी होती है। चाहे वो भारतीय परिप्रेक्ष्य हो या मॉरीशस का। इस सार्वभौमिक सत्या को वेणी माधव रामखेलावन की कहानी एक लावारिस की मृत्यु इस बात का सटीक उदाहरण है। कहानी का पात्र नशीले पदार्थों की तस्करी के दुष्कर्म की छाया उसके परिवार को भी प्रभावित करती है। शिक्षा प्रत्यक समाज को सही दिशा देती है। लक्ष्मी प्रसाद रामवाद की कहानी स्कूल नहीं कॉलेज गोरे के शोषण में पिसते समाज की गाथा है। लोचन विदेशी की कहानी तीसरा प्राणी पारम्परिक पुत्र मोह पर आधारित है। पश्चिमी जीवन की गतिमयता एवं आधुनिकता ने युवा वर्ग में एकाकीपन ला दिया है। कुंठा एवं संत्रास में डूबी युवा पीढ़ी कई बार निष्कर्षों के धरातल पर शून्य हो जाती है। पुष्पाम बम्मा की कहानी फिसलन ऐसे ही एक युवा रिकेश की कहानी है जो बेकारी और कुण्ठा के संत्रास को ढोता है और स्थिरता की अपेक्षा वह

फिसलता जाता है।[6]

मॉरीशस गिरमिटिया मजदूरों ने अपने देश के बाहर विदेशी भूमि पर अपनी अस्मिता केवल अपने धार्मिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक एकजुटता के कारण बचायी थी। ये मजदूर भारत भूमि से अवश्य विस्थापित थे किन्तु पूरे मॉरीशस में न जाने कितने ऐसे ठिकाने इन प्रवासी मजदूरों ने बनाये थे। ये अपनी संवेदना से विस्थापित नहीं हुये।[7] दीपचंद बिहारी की कहानी गुरूजी इस बात का प्रभावशाली प्रमाण है। प्रवासी भारतीयों ने विधर्मियों के साथ कठिनाई से समायोजन किया था। मुनीश्वर लाल चिंतामणि की कहानी काटों पर चलते हुए उनकी इसी पीड़ा को अभिव्यक्त करती है। उनकी कहानी सच्चा सुख नवयुवकों के लिए प्रेरणास्पद कहानी है। ऐसी ही भावनाओं से अनुप्रेरित कहानी ठाकुर दन्त पाण्डेय की बिछुरत एक प्राण हर ले ही है। कहानी का नायक अपनी मातृभूमि भारत में निहीत भारतीय संस्कारों को अभिव्क्त करता है।

समाज में सम्मानपूर्वक जीवनयापन करने के लिए जयदन्त जीऊत की कहानी गिरवी रखी आत्मा नवयुवक नायक शंकर के उहापोह में छटपटाने को अभिव्यंजित करती है। महेश रामजियावन की कहानी चक्कर आम आदमी के भटकाव को अभिव्यक्त करती है। विख्यात कहानीकार हेमराज सुन्दर की कहानी धुएं की उठती लकीरें शिक्षकों पर छाये अर्थाभाव को प्रस्तुत करती है। समग्रतः हेमराज सुन्दर ने मॉरीशस में हिन्दी शिक्षक के आर्थिक संघर्ष को विवेचित किया है। उनकी कहानी आस्था स्त्री में निहीत भारतीय पत्नी के संस्कारों का लेखा जोखा प्रस्तुत करती है। मॉरीशस की कहानियों में निहित सामाजिक मूल्य भारतीय जीवन मूल्य का ही एक अंश है। प्रवासी भारतीयों की जीवन दृष्टि अभाव पीड़ा विपन्नता रोग एवं असहायता में भी नहीं बदली। उनके सामाजिक निष्कर्ष भी वहीं हैं जो किसी आम भारतीय के होते हैं।[8]

निष्कर्ष :- मॉरीशस की कहानियों में वहाँ बसे प्रवासी भारतीयों की पीड़ा संघर्ष बलिदान शोषण अत्याचार घुटन और व्यथा भारतीय संस्कार रीति–रिवाज अंधविश्वास दासता से स्वतंत्र होने की लालसा इत्यादि को संवेदना के स्वर में प्रस्तुत किया है। अस्तित्व एवं अस्मिता के संकट से जूझते प्रवासी भारतीयों ने विविध चुनौतियों का सामना किया है। उन्होंने अपनी अगली पीढ़ी के लिए शिक्षा के माध्यम से संभावनाओं के नवीन आयाम अन्वेषित किये हैं। विश्व के फलक पर आसीन प्रवासी हिन्दी साहित्य मॉरीशस के कथा साहित्य के संदर्भ में संवेदनाओं से ओत–प्रोत है एवं पर्याप्त जाग्रत व उन्तारोत्तेर विकास की दिशा में आगे बढ़ रहा है। मॉरीशस के कथा साहित्य और जीवन मूल्यों पर भारतीय जीवन की गहरी छाप देखने को मिलती हैं। जोकि संवेदना के नये स्वीर को अभिव्यक्त करती है।

सन्दर्भ :-

1. मॉरीशस की कहानियों में भारतीय जीवन मूल्य, पृ.सं. ४२ डॉ. तनूजा चौधरी–कानपुर प्रकाशन।
2. अभिमन्यु अनत की एक बातचीत पृ.सं. ६२ साहित्य अकादमी नई दिल्ली।
3. समकालीन कहानी की पहचान पृ.सं. ४६ डॉ. नरेन्द्र मोहन– नई दिल्ली।
4. मॉरीशस हिन्दी साहित्य, पृ.सं. १६, डॉ. मुनीश्वर लाल चिन्तामणि–हिन्दी बुक सेन्टर नई दिल्ली।
5. मॉरीशस हिन्दी साहित्य, पृ.सं. ४३, डॉ. मुनीश्वर लाल चिन्तामणि–हिन्दी बुक सेन्टर नई दिल्ली।
6. मॉरीशस हिन्दी साहित्य, पृ.सं. १२१, डॉ. मुनीश्वर लाल चिन्तामणि–हिन्दी बुक सेन्टर नई दिल्ली।
7. मॉरीशस की हिन्दी कहानी, पृ.सं. ५२, अभिमन्यु अनत–साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।

पता : ईश्वर नगर, ज्यारत नाका, जबलपुर रोड, सिवनी (म.प्र.) पिन कोड–480661

दूरभाष–मो.न. 09425446226, ई–मेल– drsmasih831@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 126-132

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में चित्रित प्रवासी जीवन की समस्याएँ

अनुज कुमार चौहान
शोधार्थी, ऐ०के०पी०(पी०जी०) कॉलेज, खुर्जा, चौ. चरण सिंह विवि, मेरठ।

आज भारत के बाहर भी एक भारत बसता है जिसके निवासी सच्चे मायने में भारतीय हैं। यह भारतवंशी 19वीं शताब्दी से ही अंग्रेजो के द्वारा उनके नए उपनिवेशों में मजदूरी करवाने के लिए गुलामों की तरह लाए गए थे और वह एक रोटी एवं लंगोटी के साथ वहाँ गए थे तथा फिर कभी भी भारत वापस न आ सके। इन प्रवासी भारतीयों में से कुछ पढ़े–लिखे भी थे जिन्होंने अपनी भाषा और संस्कृति को बचाकर पीढ़ी–दर–पीढ़ी सुरक्षित रखा। मॉरिशस, गुयाना, सूरीनाम, फीजी इत्यादि देशों में आज भी भारतवंशी 'हिंदी हिंदू हिंदुस्तान' को हृदय से लगाए हुए हैं और हिंदी साहित्य की शोभा बढ़ा रहे हैं।

आजीविका की तलाश में जो लोग अन्य देशों की ओर विस्थापित हुए उन्हें हम प्रवासी कहते हैं। इस विस्थापन में लोगों को जिन सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा एवं अपने अस्तित्व को स्थापित करने और आजीविका को चलाने के लिए उन्हें संघर्ष करना पड़ा। उस शोषण और संघर्ष को कुछ विद्वानों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से यथार्थ रूप में अभिव्यक्त किया है। उन्होंने आजीविका की तलाश में देश छोड़ा है भाषा नहीं। उनके साहित्य में उनका देश है, उनका समाज है, उनके सरोकार तथा उनकी अपनी अस्मिता है, लेकिन हिंदी भाषा उनकी अभिव्यक्ति एवं धर्म और संस्कृति की भाषा है, जो उनकी प्राणवायु है। इस संदर्भ में मॉरिशस के राष्ट्रीय साहित्यकार अभिमन्यु अनत ने लिखा है, "हमारे मॉरिशस के हिंदी साहित्य में कमजोरियाँ हो सकती हैं, परंतु उसमें अपनी मौलिकता भी है और वह मॉरिशस की देसी संस्कृति का चित्रण करता है।..... प्रवासी हिंदी साहित्य में मॉरिशस की संख्या एवं स्तर की दृष्टि से अहम भूमिका है, क्योंकि एक तो वह वादों एवं नारों के प्रदूषण से मुक्त है, दूसरे फ्रेंच के वर्चस्व तथा अंग्रेजी के सरकारी संरक्षण के बावजूद इन भाषाओं से दोगुनी संख्या में पुस्तकें हिंदी में छपती हैं।"[1]

अपना देश छोड़कर दुसरे देश में बसना और वहाँ अपना अस्तित्व स्थापित करने में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वहाँ आपके साथ भेदभाव किया जाता है, आपका शोषण किया जाता है और प्रताड़ित भी किया जाता है। प्रवासी अनेक समस्याओं को सहकर जीवन यापन करने को मजबूर हैं।

मुख्य बिंदु :– प्रवासी, अभिमन्यु अनत, संघर्ष, शोषण, मजदूर वर्ग और नारी।

अभिमन्यु अनत : एक परिचय :–

मॉरिशस के प्रख्यात एवं श्रेष्ठ उपन्यासकार अभिमन्यु अनत का जन्म 9 अगस्त 1937 ई० को मॉरिशस

के उत्तर प्रांत के त्रिओले गांव में हुआ। आपके दादा जी आगरा के निवासी थे। आपकी दादी बंगाल की थी। दादाजी का नाम अनत सिंह था। आपके दादा जी दलालों के बहकावे में आकर मॉरिशस में एक मजदूर के रुप में आए थे। उन्हें बताया गया था कि मॉरिशस में पत्थर उठाने पर उसके नीचे सोना निकलता है। अभिमन्यु अनत के पिताजी का नाम पत्ति सिंह और माताजी का नाम सुभागिया है। आपके दादा जी विद्रोही स्वभाव के थे। पिताजी हमेशा मजदूरों को संगठित करने और दास नियति को समाप्त करने के लिए प्रयास करते थे। पिताजी मजदूर से खेतिहर बने, लेकिन अपने दानी स्वभाव के कारण वे लेखक के लिए एक बीघा जमीन भी न छोड़ पाए थे। लेखक का जन्म मॉरिशस के समृद्ध परिवार के अभावग्रस्त दिनों में हुआ। उनका जीवन अभाव में ही गुजरा। घर की दयनीय स्थिति के कारण वे औपचारिक शिक्षा से वंचित रहे। जब 18 साल के थे तब उनके मां–बाप लंबी बीमारी झेल रहे थे। अनत जी की कॉलेज की पढ़ाई तीसरे वर्ष के बाद बंद हो गई थी। लेकिन जितनी शिक्षा प्राप्त की उसके लिए उन्होंने स्वयं कष्ट उठाए ट्यूशन किए, बस में कंडक्टर बने, मकैनिक की नौकरी की। स्पष्ट है कि लेखक को अपनी शिक्षा के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा। आर्थिक परिस्थितियों से कमजोर होने पर भी उनका साहित्य से लगाव और अध्ययन की ललक उनमें जगी रही। बचपन से ही उन्होंने रामायण महाभारत के अलावा महारानी झांसी, दुर्गादास राठौर, शिवाजी महाराज, महाराणा प्रताप, विवेकानंद जैसे महापुरुषों के जीवन चरित्र को पढ़ना आरंभ किया। इसी बीच उन्होंने भारत के स्वतंत्रता अभियान के सेनानियों की जीवनी भी पढीं। इसके साथ ही प्रेमचंद, शरत बाबू को भी इन्होंने बड़े चाव से बड़ा।

अभिमन्यु अनत भारतीय साहित्य का गहरा प्रभाव होने की बात को स्वीकारते हुए कहते हैं, "मेरी धमनियों में मॉरिशस दौड़ता है, क्योंकि बना तो मैं मॉरीशस की मिट्टी से ही हूँ, लेकिन रोशनी मुझे भारत ने दी। इसलिए मेरे अंग–अंग में मॉरिशस के साथ–साथ भारत हर वक्त विद्यमान रहता है।"[2]

अभिमन्यु अनत पर मार्क्सवाद, यथार्थवाद, आदर्शवाद, गांधीवाद का भी प्रभाव है। वे किसी एक विचार दर्शन से प्रतिबद्ध नहीं हैं। यदि उनकी कोई प्रतिबद्धता है तो मानव जाति से, मानवता से तथा मानव की नियति से। यही कारण है कि उन्हें न तो गांधीवादी कहा जा सकता है और ना ही मार्क्सवादी या समाजवादी। डॉ. श्यामधर तिवारी कहते हैं, "उनका यह साहित्यिक व्यक्तित्व कोई ओढी हुई बाहरी प्रवृत्ति का प्रतिफलन नहीं है। अपितुमातृ–दुग्ध–पान के साथ मिली जन्मजात संस्कारिक विद्रोहीचेतना एवं समाज परिवेशजन्य स्वयंभू चेतना का प्रतिफलन है।"[3]

रचनाएँ :– अनत जी की प्रमुख रचनाएँ निम्नवत है :

कहानी संग्रह :– एक थाली समन्दर, खामोशी के चीत्कार, इंसान और मशीन, वह बीच का आदमी, जब कल आएगा यमराज इत्यादि।

कविता संकलन :– कैक्टस के दांत, नागफनी में उलझी सांसें, एक डायरी बयान, गुलमोहर खौल उठा इत्यादि।

नाटक :– विरोध, तीन दृश्य, गूँगा इतिहास, रोक दो कान्हा, देख कबीरा हांसी इत्यादि।

उपन्यास :– इनके लगभग 35 उपन्यास हैं जिनमें प्रमुख इस प्रकार हैं – जम गया सूरज, लाल पसीना, हड़ताल कब होगी, गांधीजी बोले थे, और पसीना बहता रहा, मार्क ट्वेन का स्वर्ग, एक बीघा प्यार इत्यादि।

इसके साथ ही उन्होंने अनेक लेख, आलेख और सम्पादित पुस्तकें लिखी। इनके सशक्त लेखनी के बल पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, यशपाल पुरस्कार,

जनसंस्कृति सम्मान, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान पुरस्कार आदि पुरस्कारों से अलंकृत किया जा चुका है। शोषक, पीड़ित मजदूर प्रवासियों की आवाज बुलंद करने वाले और विदेश के धरती पर रहकर वहाँ की दमनकारी नीतियों और उनके अत्याचारों का विरोध करने वाले हिंदी साहित्य को समृद्ध कर 81वर्ष की अवस्था में अनत जी 4 जून 2018 को परलोक सिधार गए।

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में चित्रित प्रवासी जीवन की समस्याएँ :-

मॉरिशस में प्रवासी भारतीयों के साथ हो रहे अत्याचार, शोषण को अभिमन्यु अनत ने अपने साहित्य के माध्यम से उजागर किया है। अधिक धन की चाह में दूसरे देश में गए लोगों को वहाँ निकृष्ट जीवन जीने को मजबूर किया गया। उनका शारीरिक और मानसिक शोषण हुआ जो अनवरत चल रहा है। उन बेबस, मजबूर, लाचार प्रवासियों के जीवन में घटित हुईं मर्मांतक घटनाएँ एवं उनकी समस्याओं को अनत जी ने प्रमुखता एवं स्पष्टता के साथ यथार्थ रूप में अपने साहित्य में चित्रित किया है।

आजीविका हेतु विस्थापन एवं शोषण :-

दूसरे देश में जाकर वहाँ अपना अस्तित्व स्थापित करना बहुत ही कठिन है। रंगभेद होने के कारण वहाँ रोजी–रोटी के लिए संघर्ष करना पड़ता है। मॉरिशस में गए भारतीय लोग अधिकतर खेती करने वाले कुछ व्यापारी तथा अधिकतर नौकरीपेशा लोग हैं। मॉरिशस की आजादी से पूर्व यहाँ दास प्रथा रही थी। भारत के अशिक्षित श्रमिक रोजी–रोटी के लिए, रातों–रात धनवान बनने के लिए मॉरिशस गए। उन्हें सोने की खोज करने के बहाने वहाँ लाया गया। प्रवासी बनाकर उन भोले–भाले लोगों को नंगा, भूखा और विवश नागरिक बना दिया गया। उन्हें बताया जाता था कि वहाँ मिट्टी में से सोना निकलता है जिसे प्राप्त करके वे जल्द धनवान बन जाएंगे, लेकिन वहाँ जाने पर उन्हें जिस काम में लगाया जाता था, केवल मजदूरी होती थी। उस मजदूरी का भुगतान उन्हें पैसों के साथ–साथ कोड़ों की मार से भी किया जाता। भारतीय मजदूरों के स्वप्न धूल धूसरित हो जाते थे। वहाँ पहुंचने वाले कुली, मजदूरों की गाथा दर्द की महागाथा बन गई।

'जम गया सूरज' उपन्यास में इसका उदाहरण दृष्टव्य है, "बड़ी उम्मीद के संग हम सब हियाँ पहुंच लो जाकर उम्मीदों पर पानी फिर गया जब सवन को मालूम चला कि पत्थर के नीचे सोना नहीं, बिच्छू ही बिच्छू होवे। हो दुःख बर्बन कैरने होई। कुत्ता से भी गईल गुजरल जीवन बिताबे परल। एक दाना चावल के खातिर दो बूँद पसीना और दस बूँद खून।"[4] इसी प्रकार मजदूरों के प्रताड़ना की कहानी 'लाल पसीना' उपन्यास में भी बताई गई है। इस उपन्यास में भी यही वर्णित किया है कि भारतीय मजदूर सोना पाने की चाह में मॉरिशस पहुँच गए, किंतु वहाँ उन्हें सोने के बदले बाँसों की मार मिल रही थी, जिससे सभी मजदूरों की पीठ छिल रही थी। उनकी गति कोल्हू के बैल जैसी हो गई है, उन्होंने तो धनवान बनने के लिए अपना देश छोड़ा था, किंतु वह तो यहाँ कुली बनकर ही रह गए हैं, "सुनी के नाम हम मारीच के दीपवा हो....पहुँचे अरी हम पाने को सोनवा बदले में मिलेगा भारेबाँसों की मार हो छिलछिले जयली सब मजदेर की पीढवा मजबूरन कोल्हू के बैल बने इखवनपीसन को छोड़ा था देश अपना कुली बनन को कुली।"[5]

वे आजीविका के लिए संघर्ष कर रहे थे साथ ही अपनी बहू–बेटियों की लाज बचाना उनके लिए कठिन हो रहा था क्योंकि मजदूर वर्ग की कोई सुनने वाला न था। अंग्रेज उनसे खेत में बैल की तरह काम करवाते एवं जिसकी बीवी और बेटी पसंद आ जाती है उसका शारीरिक दोहन करते थे। 'लाल पसीना' उपन्यास में

मालिक रेमों साहब का बेटा अपने घोडे पर से मजदूर दाऊद को अपने पास बुलाते हुए पूछता है,

"तो तुम ही दाऊद हो?

'हां साहब!'

'ता फे ए त्रे वेल!'

'मालिक समझा नहीं।'

तुम्हारी औरत...त्रे जेप्ली बहुत सुंदर'

'मालिक मेरी मां और बहन कल ही मरी हैं... एक साथ'

'तुम अपनी औरत को मेरे पास भेजो..... तुम्हें एक गोरा बच्चा मिलेगा।"[6]

मजदूर अपनी अस्मिता को बचाने के लिए संघर्षरत थे। वह बैलों की तरह काम करते थे। उनकी मार सहते एवं अपनी बहू बेटियों की इज्जत बचाने में भी असमर्थ थे।

इस तरह लेखक ने प्रवासियों के साथ हो रहे दुर्व्यवहार एवं अमानवीय व्यवहार का यथार्थ चित्रण किया है। यहाँ से तो गए थे धनवान बनने के लिए, लेकिन वहाँ रोजी–रोटी के लिए मोहताज थे और लगातार शारीरिक और मानसिक शोषण का शिकार हो रहे थे।

शिक्षा एवं विविध कुरीतियाँ :-

प्रवासी भारतीयों के शोषण के लिए जिम्मेदार सबसे महत्वपूर्ण कारणों में शिक्षा का अभाव रहा है। अशिक्षा के कारण प्रवासी लोगों में शोषण के खिलाफ आवाज उठाने की क्षमता नहीं होती और साहूकार, जमींदार, बिचौलिए, ठेकेदार आदि लोग उनका अपने हितों के लिए दोहन करते रहते हैं। शिक्षा की कमी के कारण प्रवासियों में देश और समाज की घटनाओं के प्रति जागरूकता नहीं रहती और वे अक्सर शोषण के शिकार होते रहते हैं। पढ़ाई के बिना व्यक्ति बैल की तरह होता है जिसे हाँकते हुए अपना काम साधा जाता है। पूरे काम में बैल की इच्छा न होते हुए भी वह चुप रहकर अत्याचार सहकर काम में लगा रहता है। जमींदार, साहूकार एवं मालिकों के पढ़े–लिखे होने के कारण एवं होशियार होने के कारण वे उच्च होते रहते हैं जबकि गरीब अशिक्षित व्यक्ति की स्थिति निम्न से निम्न स्तर होती जाती है।

शिक्षा व्यक्ति में ऊर्जा भरने का काम करती है। शिक्षा के आधार पर व्यक्ति चेतनाशील बनता है और अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ता है। अशिक्षा प्रश्न और तर्क करने के अधिकार एवं लालसा पर पाबंदी लगाती है।

शोषक और सर्वहारा के बीच द्वंद है। मार्क्स का सिद्धांत यहाँ लागू होता है– यह कैसा कानून कि कुली बीमार होकर भी घर पर नहीं रह सकता। उन्हें किसी भी हालत में काम पर आना ही होता है। 'लाल पसीना' उपन्यास में लेखक ने एक मजदूर के माध्यम से इस समस्या पर प्रकाश डाला है,"कुली बीमार होकर भी घर पर नहीं रह सकता। ऐसा क्यों? जिस गोरे से वह प्रश्न करना चाहता था, उसके पास पहुँचते ही उसकी घिग्घी बंद हो जाती थी? क्यों?"[7] क्योंकि वह अशिक्षित था। उसके अंदर डर और भय था।

अशिक्षित व्यक्ति कमजोर होता है। वह जल्द ही बहकावे अर्थात् अंधविश्वास में भी आ जाता है। 'लाल पसीना' उपन्यास में जमीन के नीचे धन होने का अंधविश्वास सभी जगह फैल जाता है। "माटी कोडवा के पास इमली के पेड़ की जड़ से आवाजें आ रही हैं। पैसों की झनकार के साथ कोई बोल रहा था– इस जड़ के नीचे छिपा हुआ खजाना है। मैं इसका रखबार हूँ। तुम खुद को खोदोगी, तो सभी खजाना तुम्हारा हो जाएगा और

किसी दूसरे ने हाथ लगाया तो सिर्फ कोयले मिलेंगे।..... पूरी बस्ती माटी कोडवा पहुंच गई थी। हाथ भर की गहराई के बाद सभी मुँह बायें रह गए थे। कोयला ही कोयला।"[8]

अशिक्षा के कारण ही सामाजिक कुरीतियाँ उत्पन्न होती हैं। शिक्षा से मानसिक चेतना का संचार होता है। मॉरिशस में हिंदी के माध्यम से रोजगार मिलने की संभावना कम है। इसलिए लोग फ्रेंच, अंग्रेजी शिक्षा को ज्यादा ग्रहण करते हैं। अब जबकि मॉरिशस आजाद है, सभी शिक्षा अर्जन की ओर उन्मुख हुए हैं। लंबे चौड़े प्रमाण पत्र भी सभी ले रहे हैं। इस समय की शिक्षा में भी एक ही कठिनाई है कि अंग्रेजी एवं फ्रेंच की शिक्षा लेने वाले बड़े–बड़े पदों को सुशोभित कर रहे हैं और दूसरी भाषाओं की शिक्षा ग्रहण करने वाले अब भी बेरोजगार हैं और सम्मान की दृष्टि से वंचित हैं।

नारी की दयनीय स्थिति :–

गोरों द्वारा पुरुषों का शोषण तो होता ही था लेकिन महिलाओं का शोषण का स्तर दोहरा था। उनसे मजदूरी भी करवाते थे और उनसे अपनी कामेच्छाओं की पूर्ति भी करते थे। जहाज में भर–भरकर जब भारतीय किसान मजदूरों को मॉरिशस लाया गया तो उसमें पुरुषों की संख्या ज्यादा थी। बहुत कम ही महिलाएँ थी। गोरे इन महिलाओं का शारीरिक शोषण तो करते ही थे। इनका दोहरा शोषण भी होता था। महिलाओं की संख्या कम होने के कारण एक महिला को कई पुरुषों के साथ रहना पड़ता था। कई पुरुषों की शारीरिक आवश्यकताओं को पूरा करना होता था।

धनवान मजदूरों से सिर्फ शारीरिक परिश्रम ही नहीं करवाते थे बल्कि उनकी जवान लड़कियों का शारीरिक दोहन भी किया करते थे। वहाँ उस जंगल की शेर की तरह नियम बना रखा था कि आज इसकी बेटी को कोठी पर आना है तो आज उसकी बेटी को। 'लाल पसीना' उपन्यास में इस परिस्थिति को चित्रित करते हुए लेखक ने लिखा है, "जुबैदा, भगवतीया, तांगेची –ये सभी लड़कियाँ उन कीमती कपड़ों को पहनकर साहब की कोठी पर जा चुकी थीं। लक्षमन सिंह चाहकर भी उन लड़कियों को रोक नहीं सका था। आज रात नंदू की लड़की के जाने की बारी थी। नंदू उसके पाँवों पर गिरकर चिल्ला उठा था– लक्षमन भैया! हम अपनी बच्ची के खातिर कफन न ले यती थी त जास्ती अच्छा रहत।"[9]

'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में भी मालिक की क्रूरता को दर्शाया गया है। जब गोरे साल में एक दिन घुड़दौड़ करते थे, जिसे 'शो दे मार्स' कहते थे। उस रात मजदूरों की बीवियों पर वहाँ के मनचले भी अपना हाथ साफ कर जाते थे। लेखक लिखते हैं, "उस रात चोरी–चकारी के साथ–साथ मजदूरों की बीवी–बेटियों के साथ बलात्कार भी हो जाते हैं। .....गांव से आई औरतों के शरीर पर आगे पीछे हाथ फेरते हुए बड़े ही स्वाभाविक ढंग से उन मनचलों को आगे निकल जाते देख हरि का खून खौल उठता था।"[10] लेकिन बंधुआ मजदूर होने के कारण वे विद्रोह नहीं करते थे और शोषण को चुपचाप सहते रहते थे।

वहीं दूसरी तरफ लेखक ने नारी चेतना को भी चित्रितकिया है, "यह युग तो स्वतंत्रता और अधिकार प्राप्ति का है। जब सभी स्वतंत्रता और अधिकार मांग सकते हैं तो फिर क्या कारण है कि नारी इससे वंचित रहे।"[11] इस तरह अनत जी ने नारी के साथ हो रहे अन्याय शोषण की गाथा को अभिव्यक्त कर नारी के अंदर चेतना के भाव को निर्मित किया है। जब तक नारी इसका विरोध नहीं करेगी, उसका शोषण अनवरत होता रहेगा।

मजदूर वर्ग की स्थिति :-

'लाल पसीना' उपन्यास में पिछली शताब्दियों में गुलाम बनाये गए लोगों पर हुए अमानुषिक अत्याचारों की गाथा पिरोई गई है। इसे हम भारतीयों के संदर्भ में देखते हैं तो हमें यह न भूलना चाहिए कि जिन लोगों पर दासता थोपी गई वे चाहे जहाँ के भी होंवे सब गुलाम होते हैं। तथा उन्हें इसी तरह के यातना शिविरों में अपना जीवन बिताना पड़ता है। अनत जी के तीनों उपन्यास 'लाल पसीना','और पसीना बहता रहा' और 'गांधी जी बोले थे', इस अर्थ में महत्वपूर्ण हैं कि ये तमाम दूसरी गुलाम जातियों के साथ हुए बर्ताव की गाथा को कहते हैं। उनके ऊपर हो रहे अत्याचार शोषण के यह उपन्यास गवाह हैं। मॉरिशस समाज में ज्यादातर शोषक मालिकों का दबदबा रहता है। यह लोग किसान मजदूरों के साथ मानवीय व्यवहार नहीं करते। ये लोग स्वेच्छाचारी और विलाषी हैं एवं गरीबों का शोषण करके अपना घर भरते हैं। काम कराते समय अभद्र भाषा का प्रयोग भी करते हैं। 'लाल पसीना' उपन्यास में काम करते हुए एक मजदूर को जमींदार गाली दे रहा है, "अरे सात छोटे सूअरों के बाप औरत से मजा लूट–लूटकर बच्चे पैदा करना तो तुम्हें खूब आता है, पर खेत में जाँगर के चोर निकले।"[12] इस प्रकार यहाँ जमीदार एवं द्वारा मजदूरों के साथ बदसलूकी का चित्रण किया है। जमीदार मजदूरों को अपनी जागीर समझते हैं और मनमाने ढंग से अत्याचार करते हैं।

अभिमन्यु अनत ने 'लाल पसीना' उपन्यास में मालिक और मजदूरों के बीच अमीरी और गरीबी का अंतर इस प्रकार स्पष्ट किया है, "कि शायद कभी धरती और तारों के बीच के फासले को कम कर दिया जाए परंतु मजदूर और मालिक के बीच का अंतर भी कम हो जाए, ऐसी संभावना बहुत कम है।"[13]

आर्थिक शोषण :-

मॉरिशस को आजाद हुए लंबा वक्त गुजर गया है, लेकिन आज भी प्रवासी भारतीयों को विभिन्न स्तरों पर शोषण का सामना करना पड़ता है। उन्हें उनके श्रम का कम मूल्य दिया जाता है और अधिक कार्य करवाया जाता है। साथ ही प्रताड़ित भी किया जाता है। मॉरिशस में गरीब मजदूरों, किसानों को देखकर लगता है 'यह देश जितना धनी है, उससे आठ गुना ज्यादा गरीब है'। गरीब लोगों को स्वर्गवासी बताकर शोषण कर्ताओं और उच्चवर्गीय लोगों के गाल पर तमाचा मारा गया है।

'लाल पसीना' उपन्यास में बताया गया है, कि किस तरह मालिक मजदूर के एक दिन काम पर नहीं पहुँचने से उसकी चार दिन की पगार जब्त कर ली जाती थी। उनमें दासत्व भाव भरकर मालिक अपनी जेबों को गरम करते थे। किसन दासत्व की इस परिस्थिति पर विचार करता हुआ जब भी प्रश्न करता था तब रघु उसके मुँह पर हाथ रख उसे प्रश्न पूछने से रोक देता। रघु कहता 'दास प्रश्न नहीं करते, आज्ञा का पालन करते हैं' परन्तु किसन के प्रश्न रुकने की बजाय और बढ़ जाते थे कि आखिर प्रश्न क्यों नहीं किया जा सकता। "अपने इर्द–गिर्द के लोगों की हालत को देखते हुए उसे लगता कि इन सारे लोगों ने अपने प्रश्न करने अपनी ताकत को भुला दिया है, उनके अभावग्रस्त जीवन का यही कारण था। अपनी जीभ को भीतर चिपकाकर वे चुपचाप दारुण दंडों को झेलते आ रहे थे। किसन बार–बार पूछता यह चुप्पी क्यों?"[14]

इसी उपन्यास में पुष्पा की माँ अपनी दारुण व्यथा को बताती हुई कहती है, "चावल–दाल दूनों में खदखद पिलवा भरल बा। जोन चीज कुत्तियाँ भी न खाई खोजी ओके कैसे पकावल जाये?....मालिक के सामने चावल–दाल रखकर पूछे कि अनाज आदमी कैसे खाई?"[15] मजदूरों को इस तरह पीटा जाता था जैसे मनुष्य न

होकर जानवर हो। गरीब होने की उन्हें इतनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है कि उनकी गिनती आदमी में भी नहीं की जाती है।

अनत अपने देश की पीड़ा एवं जन–मुक्ति के साहित्यकार हैं। आपका साहित्य अतीत, वर्तमान, और भविष्य तीनों कालों की मानवीय पीड़ा, शोषण, अत्याचार, नियति, विवशता आदि को सशक्त रूप में अभिव्यक्त करता है। आप उपन्यासों, कहानियों, कविताओं, आदि में निर्धन एवं अशिक्षित के शोषण की कथा कहते हैं, अमानवीय परिस्थितियों एवं असामाजिक चरित्रों का उद्‌घाटन करते हैं। आपकी कृतियाँ मॉरिशस की अस्मिता, संस्कृति, आधुनिक जीवन के तनावों, संघर्षों, प्रवासियों के जीवन की समस्याओं एवं भारतीयता को भी समान रूप से अभिव्यक्त करती हैं। "अनत जी को मॉरिशस का कथा–सम्राट एवं 'प्रेमचंद' कहा जाता है। दूसरे शब्दों में अनत जी भारत में मॉरिशस के प्रेमचंद हैं।"[16]

सन्दर्भ :–

1. डॉ. कमल किशोर गोयनका, हिंदी का प्रवासी साहित्य, अमित प्रकाशन गाजियाबाद, प्रथम संस्करण 2011
2. डॉ. कमल किशोर गोयनका, अभिमन्यु अनत एक बातचीत, पृ० 58
3. डॉ. श्यामधर तिवारी, मॉरिशस में हिंदी साहित्य का उद्‌भव और विकास, पृ० 86
4. अभिमन्यु अनत, जम गया सूरज, पृ० 26
5. अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, पृ० 226
6. वही, पृ० 163–164
7. वही, पृ० 40
8. वही, पृ० 296
9. वही, पृ० 115
10. अभिमन्यु अनत, और पसीना बहता रहा, पृ० 69
11. अभिमन्यु अनत, जम गया सूरज, पृ० 172
12. अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, पृ० 59
13. वही, पृ० 126–127
14. वही, पृ० 39
15. वही, पृ० 61
16. डॉ. श्यामधर तिवारी, मॉरिशस में हिंदी साहित्य का उद्‌भव और विकास, पृ० 85

अनुज कुमार चौहान
पता – गाँव–नहर्रा, पोस्ट–बमान, थाना–खंदौली, जिला–आगरा, पिन–283126
मो० 8958328357

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 133-138

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Anita Desai as Diasporic Writer with Reference to "Bye Bye Black Bird"

SONIA PRIYADARSHINI. R
ASSISTANT PROFESSOR, PG DEPARTMENT OF ENGLISH
CHSDST THERESA'S COLLEGE FOR WOMEN (A), ELURU

ABSTRACT :-

The word 'Diaspora' in ancient Greek Language which means scatter. When it is applied to the people, it speaks about the scattering of people from their home land to different places across the globe. They spread their culture. Diaspora literature can be defined as the literature produced by the writers who are away from their homeland. The present paper is an attempt to discuss Anita Desai as diasporic writer with reference to her novel Bye-Bye black bird. The list of diaspora writers like V.S. Naipaul, Salman Rushdie, Rohinton Mistry, Bharati Mukherjee, Amitav Ghosh, Jhumpa Lahiri, M.G. Vassanji, Shyam Selvadurai, and Kiran Desai. Anita Desai has the mixed parentage as her mother belongs to German Christian and father is a Bengali Indian. This complex origin has given her the suitability to become a Diaspora writer. Diaspora literature can also be defined by based on the content of the writing irrespective of its place where it has been written. Therefore the present paper discuss about Anita Desai as a diasporic writer with reference to her novel Bye-Bye Black Bird.

Keywords :- Diaspora, Diaspora Literature, Complex.

INTRODUCTION :-

"This has brought two separate stands into my life. My roots are divided because the Indian soil on which I grew and English culture which I inherited from my mother.?

Anita Desai (The Book I Enjoyed Writig Most. Contemporary English Literature, XIII, 1973, 24).

The word **'diaspora'** has its origin in Greek Language. It refers the dispersion of people from their own land. Diaspora Literature can be defined as works that are written by authors who are away from their homeland or native land. The term identifies a work's particular geographic origin. Diaspora literature can also be defined by based on the content of the writing irrespective of its place where it

has been written. If a piece of literature or a piece of work, though written in motherland, speaks about the character's adoption and surviving outside the motherland it can be considered as **diaspora literature.** The Story of Joseph from Bible and The Book of Job are the best examples of this type. In the story of Joseph though the book is written in Isreal it speaks about Joseph's learning to survive outside motherland.

There are different types of the diaspora some of them were victim diaspora, Trading diaspora, Imperial diaspora and Labor diaspora. There are many diaspora writers like V.S. Naipaul, Salman Rushdie, Rohinton Mistry, Bharati Mukherjee, Amitav Ghosh, Jhumpa Lahiri, M.G. Vassanji, Shyam Selvadurai, and Kiran Desai and Anita Desai. Among these writers Anita Desai is the writer who penetrates into diaspora literature as her mother is German Christian and father is Bengali Indian.Different opinions are expressed by authors about diaspora. Migrant communities are called with different names such as diaspora, exile and expatriate. Migration take place for reasons such as historical, economical, social. Some times higher education also becomes a reason for the migration.

But in the case of Indians they have shown a greater sense of adjustment, adaptability and acceptability. But genuinely people experience the sense of homelessness. Sometimes the intensity would be more. Some of the characteristic features of diaspora are Nagging sense of guilt, nostalgia, insider and outsider syndrome, up-rooting and re-rooting and quest for identity Salaman Rushdie in his article "Imaginary Homeland" says about the identity of immigrants as "plural and partial".

The most engrossing topic is treatment of migrants. The emergence of inter-disciplinary and cultural studies in post-modernist world have become major thrust area of academic exploration. Elleke Boehmer states, "the postcolonial and migrant novels are seen as appropriate texts for such explorations because they offer multi-voiced resistance to the idea of boundaries and present texts open to transgressive and non-authoritative reading".

Anita Desai is the best example in this regard as she has complex origin as her parents belong to different origins. Her mother, Antoinette Nime, could trace her origin to France, and her father, Dhiren Mazumdar's native place was Dhaka (now in Bangladesh) but he had settled in New Delhi. Having the advantage of double perspective, the writings of Anita Desai can well describe India and Indians and as well as about migrants in India and Indian migrants to the West. She is both insider and outsider. She is outsider if seen from her mother's side. She is insider if seen from her father's side. She has spent a considerable part of her life in India and later moved to Girton College, Cambridge, UK, followed by her shift to Massachusetts Institute of Technology, USA. Being a global citizen she has chiseled her perspective still further and also explored the condition of the Diaspora in her fiction in a better way. The diasporic Indian can be seen in her novel Bye-Bye Blackbird.

The background of the novel Bye Bye Blackbird is set in 1960s England which is written by Anita Desai. The story revolves around two friends Dev, and Adit in London. Adit has stayed for a longer period in London and married an English woman, Sarah. Dev comes to London for his higher studies and subsequent employment. The words of Adit shows his disappointment when he says:

All I could find was a ruddy clerking job in some Government of India tourist bureau. They were going to pay me two hundred and fifty rupees and after thirty years I could expect to have five hundred rupees. That is what depressed me-the thirty years I would have to spend in panting after that extra two hundred and fifty rupees.

This has compelled him to leave his mother country and settle in abroad for a decent income. As Adit adopted England as his home he is able to withstand the insults hurled at him and humiliations. He admires the Western life and erstwhile masters. He says : I like the pubs, I like the freedom a man has here-economic freedom! Social freedom! … and I like the Thames. I like old Ma Jenkins who clean my rooms … And I like weekend at the seaside. I even like the B.B.C.

He falls in love with an English girl and marries her. He becomes a 'spineless immigrant lover'. Sarah agrees to follow him like a typical Hindu wife. Adit is overjoyed and remarked her :

You are like a Bengali girl ... Bengali women are like that Reserved, quiet. May be you were one in your previous life. But you are improving on it-you are so much prettier! Dev, on the other hand, gets infuriated by being called as 'wog' by a school boy. When they are walking down the street, they hear Mrs. Simpson muttering aloud, 'Littered with Asians!

Must get Richard to move out of Clapham, it is impossible now'. These lines suggest how emigrants, especially Asians are looked down as 'other' in England. 'Otherness' is defined by difference, typically difference marked by outward signs like race and gender. Dev understands that Adit is least bothered about insults he hurled at him and says, "Boot-licking toady.

Spineless imperialist lover….You would sell your soul, and your passport too, for a glimpse, at two shillings, of some draughty old stately home". But both have realized that they are opportunists after this juncture.

Few days later they have planned a gathering with other colored emigrants where they can eat and drink. "Modern diasporas are ethnic minority groups of migrant origins residing and acting in host countries but maintaining strong sentimental and material links with their countries of origin-their homeland." That gathering is a fusion of different migrants. One Pakistani claims "My religion forbids me to drink or smoke or touch a woman. But here, in this country, what am I to do? I also do the things I see other men doing". Sarah and Audit enjoy Bhangra dance and the enjoyment has reached its peak with the high volume of radio. All of sudden they hear a voice saying" Wrap it up, you blighters,

where d' you think you are, eh?" Next moment the scene has changed and the group is forced to reduce the intensity of its merry-making. Dev can't take this and says "The trouble with you emigrants is that you go soft. If anyone in India told you to turn off your radio, you won't dream of doing it. You might even pull out a knife and blood would spill. Over here all you do is shut up and look sat upon? (24). Samar recounts the day he was called a bloody Pakistani" (26) as he refused to close his umbrella at the order of an Englishman.

These incidents leave a deep scar in Dev, who is divided between the opportunity he has got in England and the moments of bearing suppression and differences. The feelings of alienation and identification overwhelmed him. Desai expressed his agony :

Dev ventures into the city…. The menacing slighter of the escalators strikes panic into a speechless Dev as he swept down with an awful sensation of being taken where he does not want to go. Down, down and farther down – like Alice falling, falling down the rabbit hole, like a Kafka stranger wondering through the dark labyrinth of a prison….Dev is swamped inkily, with a great dread of being caught, step in the underground by some accident, some collapse, and being slowly suffocated to a worm's death, never to emerge into freshness and light. (57-58)

Dev's anguish disappears as he is ushered by the fresh morning. He himself trying to meet the challenges of an immigrant. However, he tries to cope up with the arrogance of English people the constant humiliations irked him. When Dev asks about the feelings of Adit, he says "…the laziness of the clerks and the unpunctuality of the buses and trains, and the beggars and the flies and the stench – and the boredom, Dev yar, the boredom of it? (49). I live for the moment. I don't think, I don't worry".

One day Adit insists a visit to his former land lady where he stayed for three years. Strangely Sarah rejected and reluctant to come. Adit says "That's where I lived for three years, Dev. That's the only landlady I stayed with for more than a fortnight. The others all threw me out, but I stayed with them, with the millers, for three years. At the Millers'. Adit is treated as an outsider and his visit gives him a feeling of unwelcome when he observes the treatment given by the landlady. When Adit sincerely enquired about their daughter, she wishes to reject the fact that Adit has lived there for three years. Mrs Miller expresses a feeling that she does not like any personal questions about her house or family. Though Adit is taken aback he takes control of the situation and leaves the place. On their way back neighbours stare curiously from behind their technicolored rose trees and a dog barks. His visit is an unpleasant surprise to the white family and their neighbors. Like any other Indians abroad he has been infected by schizophrenia. He cannot digest the experience he faced when he visited the landlady. His uncertainty is best described by Desai :

In this growing uncertainty, he feels the divisions inside him divided further, and then

redivided once more. Simple reactions and feeling lose their simplicity and develop complex angles, facets, shades and tints… there are days in which the life of an alien appears enthrallingly rich and beautiful to him, and that of a homebody too dull, too stale to return to ever…..

Again they planned their visit to his mother-in–law's house and he expects that his motherin-law rather treat him differently. But he is annoyed with the treatment he meted out. He says "My mother-in-law hates and despises me. They make fun of the life I lead and the ideals I profess. Therefore, I am angry. I am hurt (176). These fleeting moods of anger are new to him and „…faced with one, he was unable to deal with it – he merely stood still and felt his leaden feet sink in as though in quick-sands". Adit has developed an extreme hatred for England he starts thinking everything English tom be insulting and depressing. He loses control of himself :

... he stood staring, not at one of the posters he so delighted in but at a piece of that Nigger, go home graffiti on the walls that had previously nearly skidded off the surface of his eyeballs without actually penetrating. Now he is screwed up his eyes and studied it as though it were a very pertinent sign board (181). ...the eternal immigrants who can never accept their new home and continue to walk the streets like strangers in enemy territory, frozen, listless, but dutifully trying to be busy, unobtrusive and, however superficially, to belong.

Diaspora expresses the oscillated mind, suffering and agony of cultural change. He decides to leave England and says Sarah "Sarah, you know I've loved England more than you, I've often felt myself half-English, but it was only pretence, Sally. Now it has to be the real thing. I must go. You will come?". Though Sarah agrees to his proposal she faces an alienation that is internal. Desai remarkably stated that Sarah "shed her name as she had shed her ancestry and identity, and she sat there, staring, as though she watched them disappear". Sarah is brave enough to face the situations in life though she has gnawing fears in her mind. Sarah is alone and her friends are having a meeting. She recollects her emotions:

She felt all the pangs of saying good bye to her past twenty- four years. It was her English self that was receding and fading and dying, she knew it, it was her English self to which she must say good bye. That was what hurt – not saying good bye to England would remain as it was, only at a greater distance from her, but always within the scope of a return visit. England, she whispered, but the word aroused no special longing or possessiveness in her. English, she whispered, and then her instinctive reaction was to clutch at something and hold on to what was slipping through her fingers already.

She is in cross roads. Sarah can neither shed her native English culture nor accept the adopted Indian culture completely. At the time of farewell Christine asks her about baby, Sarah says, "You mean boy or girl? I don't mind either. "Or do you mean who it will look like, Adit or me? I hope it will

look like Adit, brown as brown, with black hair and black, black eyes" (224).

Christine replies, "Well, in that case …I suppose it will be better to have the child in India". Now she lost her identity as an English woman. She can be considered as a multicultured, Mrs. Sen, the wife of an Asian, rather than Sarah, the English woman.

At the end of the story Dev who always complains about the country and its people decides to settle in England to reap a rich harvest. He is successful to establish his roots in England. But Adit and Sarah bid good bye to England. At the time of bidding goodbye, Dev calls out, "Bye-Bye Blackbird". This is how Anita Desai describes the diasporic element to the eyes of readers.

Conclusion :-

The list of women diaspora writers is long and elaborate. The roots of diaspora and it is scattering day by day. Their level of work is increasing at the enormously, which is made them prominent. Throughout their work, they have shown their native land, ancestors land and culture. The readers of such literature experienced a lot. They have been collecting mix memories in the immigrant land. They are spotting themselves as protagonists and other leading characters in their work. The stick of root to the ground is common in their some works, in which we can see that the feeling of nostalgia and native land. The number of writers has achieved precious tags and rewarded by numbers titles, which is commendable nationally and internationally. Not only diaspora women writers are in this race but also every woman, who is related to any field of subject and work, they are prideful for it.

References :-

1. B. A Background to the Study of English Literature. Macmillan. 2005. New Delhi.
2. Bande, Usha, Atma Ram. Woman in Indian Short Stories Feminist Perspectives. Rawat. 2003 New Delhi.
3. "Diaspora With Reference to the Indian English Literature" by Murshid Alam. Web. 12. 3.2016.
4. "Diasporic Element in Anita Desai's Novels Bye Bye Blackbird" by D.T. Angadi. Web. 12.3.2016.
5. "Loneliness in Diasporic Life as Depicted by Anita Desai" by Amit Saha. Web. 12.3.2016.
6. "Perspectives on Diaspora in the Fiction of Anita Desai" by C.G. Shyamala web.12.3.2016.
7. "The Literature of the Indian Diaspora: Between Theory and Archive" by Bed Prasad Giri .Web. 12.3.2016.
8. "Diaspora Literature" by Martien A Halvorsm- Taylor.

Soniarepudi4@gmail.com

Ph:9182663292

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 139-144

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

మాచిరాజు సావిత్రిగారి' అనుబంధం' కథ -పరిశీలన

Y. Aruna Jhansi Rani
Asst. Professor in Telugu, Ch.S.D.St.Theresa's college for women (A)

ఒక ప్రాంతం నుండి మరొక ప్రాంతంలో అనేక ఏండ్ల పాటు గానీ, శాశ్వతంగా గానీ నివసించేవాళ్ళు, తాము పుట్టి పెరిగిన ప్రాంతం మారినప్పుడు కలిగిన తమ జీవితానుభవాల్ని ఏదొక ప్రక్రియలో రాస్తే దాన్ని డయాస్పోరా సాహిత్యం అంటారు. దీన్నే "పలసవాద సాహిత్యం", "పలసాంధ్రసాహిత్యం", "ప్రాంతేతర ఆంధ్ర సాహిత్యం' అని కూడా పిలుస్తున్నారు.డయాస్పోర సాహిత్య కవులలో మాచిరాజు సావిత్రి గారు ఒకరు. మాచిరాజు సావిత్రి గారి జననం
ఏలూరు.పదేళ్ళ వయసు నుంచి అమెరికా, కెనడాలలోనే ఉన్నారు. నివాసం కేలిఫోర్నియాలో. వాతావరణ కాలుష్య రంగంలో పనిచేసారు.కథలు, కవితలు, నాటకాలు, ఓ నవల రాసారు.మాచిరాజు సావిత్రి రచనలు
పెళ్ళి బయటకథ, గణపతి బప్పా మోరియా!అనుబంధం,
నన్ను కాదు,పాస్ పోర్ట్,తెలుగు డయస్పోరా సాహిత్యం
వ్యాసాలు, కోహినూర్కథలు,తరవాణి కేంద్రంకథలు, నిమ్మకాయలుకథ,ఎంగిలాకుల కవితలు,తరగని దూరం
కవితలు.మొదలగు రచనలు చేసారు.
ప్రతిచోట మానవ సంబంధాలు బావుంటాయని. ఏదైనా మనం చూసే దృష్టిని బట్టి ఉంటుందని. సాటి మనిషిగా మనం సహాయం చేస్తే అవతలి వ్యక్తి కూడా మనకు చేరు అవుతాడని ఈ కథ ద్వారా చక్కగా వివరించారు. ఈ కథలో రాజు పాత్ర ద్వారా ఒక నిరుపేద యువకుడు చదువుకుని ఎంత ప్రయోజకుడయ్యాడో అనేది, తనకి ఎటువంటి సంబంధం లేని ఒక మాస్టారు రాజు ఒక ఉన్నతమైన స్థానానికి రావడానికి ఎలా సహకరించారు అనేది ఈ కథ ద్వారా మనకు తెలుస్తుంది.
కథలోకి వెళితే అమెరికాలో ఉండేటటువంటి తెలుగు వాళ్ళు ఉదయ్, నాగేంద్ర, గోపాల్ ఆరు సంవత్సరాల నుండి అక్కడే ఉంటున్నారు. కొత్తగా రాజు అనే వ్యక్తి అమెరికా వెళతాడు. వాళ్లు నలుగురు స్నేహితులవుతారు. వాళ్లు ఇలా అనుకుంటారు
మనదేశంలో మనుషుల మధ్య ఉండే ప్రేమ ఆప్యాత అనురాగం, అక్కడ మనుషుల్లో లేదు అని వాళ్ళ అభిప్రాయం.రాజు ఆరునెలలుఅవుతుంది అమెరికా వచ్చి, వారం అంత పనిచేసి శనివారం విశ్రాంతి తీసుకొని, తనకు ఇంట్లోకి కావలిసినవన్ని తెచ్చుకుంటాడు
వరసగా ఐదు రోజులు పనిచేసి,అలసటచెంది శనివారం విశ్రాంతి తీసుకుంటున్నా సమయం . ఆరు నెలలుగా అమెరికాలో ఉన్నా, అతనికి ఇంకా అంతా కొత్తగా, గజిబిజిగా ఉంది. సాటి తెలుగు వాళ్ళు

కనిపిస్తే ప్రాణం లేచివచ్చినట్టు ఉండేది.నరేంద్రని రాజు ఇలా అడుగుతాడు ఎంతయినా మన వాళ్ళతో కలిసి సరదాగా గడిపినట్టు ఇక్కడి వాళ్ళతో ఉండలేం."
"ఎందుకని అంటావు.
"ఎందుకంటే – అసలు మనకీ వాళ్ళకీ పొత్తు కుదరదు. మనమయితే హాయిగా ఏ ఫ్రెండింట్లోనో కబుర్లు చెప్పుకుంటాం. కాఫీతాగుతూ గంట సేపు బాతాఖానీ వేస్తాం. అదీ లేకపోతే, రోడ్డుమీద నడుస్తూనో, చెట్టుకింద నిలబడో కాలక్షేపం చేస్తాం. ఇక్కడి వాళ్ళతో అలా కుదరదుగా.ఎందుకు కుదరదు అనేది ఇంకా అర్థం కాదు రాజుకి.
అప్పుడు గోపాల్ అందుకున్నాడు.ఇక్కడి వాళ్ళతో అంతా అప్పాయింటుమెంట్ల గొడవ. ఫ్రెండ్స్ ని కలవటానికి కూడా అదే మనం అయితే ఎప్పుడో అప్పుడు మన ఇష్టమొచ్చినప్పుడు వెళతాం, మనకి ఇష్టమున్నంత సేపు ఉంటాం, ఇష్టమైనప్పుడు తిరిగి వచ్చేస్తాం. మనం కలుసుకున్నప్పుడుకూడా ఏదో ఫలానా పని చెయ్యాలని లేదు. ఆ క్షణాన ఏం చెయ్యాలని తోస్తే అది చేస్తాం.. అంతా కాం గా జరిగిపోతుంది."అంటాడు గోపాల్.రాజు ణి బజారు కి తీసుకెళ్లాటానికి తన స్నేహితుడు వస్తాడు.తీరా అతనొచ్చాక హఠాత్తుగా తన స్నేహితుడి ఇంటికి వెళ్దామని ఉదయ్ దగ్గరకి తీసుకువచ్చాడు.
సహజంగా మొహమాటం, బిడియం, రాజు కి ఎక్కువ.తనకి ఇలా ముఖ పరిచయమైనా లేని వాళ్ళింటికి భోజనాల వేళకి వెళ్ళటం చాలా ఇబ్బందిగా అనిపించింది.
ఇక్కడివాళ్ళంతా మరీ బిజినెస్ మైండెడ్. వర్కైనా, రిలాక్సేషనైనా, అంతా ఒకటే. అంతా చాలా యాంత్రికంగా గడిపేస్తారు."అనిపించింది రాజుకి అదే అంతాడు అపుడు
నిజమే, ఊరికే కలుసుకుని కబుర్లు చెప్పుకోవడం వీళ్ళు చెయ్యరనుకుంటాను. ఏదో ఒక పని ముందుగా నిర్ణయించుకుంటే తప్ప వాళ్ళకి తోచదు," అంటాడు నరేంద్ర..అయినా ఇక్కడి వాళ్ళతో మనం మాట్లాడ్డానికూడా అంత కంఫర్టబుల్ గా ఉండదు నాకు అంది ఉదయ్ భార్య సునీత.
"మనసులో మాట చెప్పుకునేందుకు ఫ్రీగా ఉండదు. ఎంత సేపూ మానర్స్ అనీ, ప్రైవసీ అనీ అదనీ, ఇదనీ, నోరు కట్టిపడేస్తారు. ఏమంటే ఏం ముంచుకొస్తుందోనని భయం. మనుషులకీ, మనుషులకీ మధ్య సంబంధాలు ఎలా ఉండాలో అసలు వీళ్ళకు తెలియదనుకుంటాను అంటుంది.మీరు వచ్చి రెండు నెలలేగా అయిందన్నారు, అని రాజు అడిగాడు.
నిజమేకానీ, ఉదయ్ ఇక్కడ ఎన్నో ఏళ్ళుగా ఉంటున్నారు కదా!ఎన్నాళ్ళనుంచీ ఉంటున్నారు మీరు?" అని ఉదయ్ ని అడిగాడు రాజు.
ఓ అయిదారేళ్ళయింది. ముందు ఎమ్మెస్ చేసేందుకు వచ్చాను. తర్వాత ఉద్యోగం ఓ రెండేళ్ళు చేశాక, రా ఊరికి వచ్చాను. ఇక్కడికి వచ్చి రెండేళ్ళు అవుతోంది.
మరిన్నేళ్ళుగా ఇక్కడున్నా, వేరే వేరే ఊళ్ళలో ఉన్నా, మీక్కూడా అలాగే అనిపిస్తోందా?" ఆశ్చర్యంగా అడిగాడు రాజు. నన్నడిగితే, ఎన్నేళ్ళున్నా, మనకి ఇక్కడ ఫ్రెండ్సంటూ దొరకరు," అని తేల్చేశాడు ఉదయ్.
నమ్మలేకపోయాడు రాజు. "అదేమిటి, ఆరేళ్ళలో మీకు ఒక్కరితో కూడా స్నేహమవలేదా? ఏది ఏమైనా వీళ్ళు కూడా మనుషులేకదా?"
ఆఁ, మనుషులే. మనుషులు కాకపోతే జంతువులన్నానా? కానీ వాళ్ళ లోకం వేరు, మన లోకం వేరు. ఆ రెండిటినీ కలపలేం."మాట్లాడకుండా కూర్చున్న రాజుని, "ఏమిటాలోచిస్తున్నావు?" అనడిగాడు నరేంద్ర.

“మీ అందరి మాటలూ వింటూంటే, నేనిక్కడకి రావడంలో పెద్ద పొరపాటు చేశాననిపిస్తోంది. కొత్త మూలాన తికమకగా ఉందనుకున్నానుగానీ, ఎప్పటికీ ఇక్కడ ఇమడననీ, ఎప్పుడూ ఒంటరిగా ఉంటాననీ తల్చుకుంటే చాలా భయంగా ఉంది.”
భయమెందుకు? నీ క్లాస్ మేట్స్ కూడా వస్తారుఅని ఓదార్చాడునరేంద్ర.
గోపాల్ మళ్ళీ మొదలుపెట్టాడు. “పోనీ మాట్లాడదామన్నా మనకేముంది వీళ్ళతో మాట్లాడడానికి?వాళ్లకు క్రికెట్ కూడా తెలియదు అంటాడు.నాకు మాత్రం తెలుసా?”అని నవ్వాడు రాజు.
అదేమిటి? మీరు ఇండియాలో క్రికెట్టెప్పుడూ చూళ్ళేదా?” గోపాల్ ఆశ్చర్యపోయాడు.లేదు అన్నాడు రాజు.
అదేమిటి? మీ పేరెంట్స్ అంత స్ట్రిక్ట్ గా ఉండేవారా? పాపం! ఏమిటి, ఒక్కసారి కూడా చూళ్ళేదా?” నరేంద్ర కూడా ఆశ్చర్యపడ్డాడు.దీన్ని బట్టి రాజు ఏంత పేదరికం అనుభవించాడో అర్థం అవుతాది. రాజు లేదు అన్నాడు. సునీత కూడా జాలి పడుతుంది.నేను గవర్నమెంట్ స్కూల్ లో చదివాను అని చెబుతాడు.. మా ఇంట్లో టీవీ లేదు, అని చెప్తే వీళ్ళేమనుకుంటారో అనే భయం అక్కడ ఉండనిస్తారో లేదో అనే అనుమానం తో తన పరిస్థితి చెప్పడు రాజు.
గోపాల్ మళ్ళీ ప్రారంభించాడు.అమెరికా వాళ్లు బార్ లకు వెళతారు అని అమ్మాయిలతో కలిసి వెళతారని ఆ కల్చర్ మనది కాదని వాళ్ళ ఉద్దేశ్యం.
ఉదయ్ అప్పుడు
బార్ అంటే గుర్తొచ్చింది. మనకింకొన్ని బాటిల్స్ తేవోయ్,” అన్నాడు ఉదయ్ భార్యనుద్దేశించి.సునీత లేవు అయిపోయాయి అంటుంది.నరేంద్ర నువ్వు కొంచెం తాగు అంటాడు. నాకు అలవాటు లేదు అంటాడు రాజు.
“అరె! అమెరికా వచ్చి కూడా మడికట్టుక్కూర్చుంటే ఎలా? ఇక్కడున్నన్నాళ్ళైనా ఇక్కడి లైఫ్ ఎంజాయ్ చెయ్యాలి.”
“లేదండి, నాకు తాగుడంటే ఇష్టం లేదు,” అన్నాడు రాజు.
తాగుడేమిటి? మరీ అంత పెద్ద మాటలు వాడకు. అసలు బీర్లో ఆల్కహాలే లేదు, తెలుసా?” అన్నాడు నరేంద్ర.
రాజు కొంచెం వింతగా చూస్తూ, “అదేమిటి? ఆల్కహాల్ ఉండవా అంటాడు అందరూ కలిసి నవ్వుకుంటారు. బార్ కి వెళ్దాం,కాస్త షికారుకెళ్ళినట్టు కూడా ఉంటుంది. పదండి,” అంటు అందర్నీ బయల్దేరదీశాడు ఉదయ్.
లికర్ షాపు దగ్గిర కారు పార్క్ చెయ్యగానే అందరూ బిలబిలమంటూ దిగారు. అందరి వెనకగా నెమ్మదిగా దిగాడు రాజు. హుషారుగా కేరింతలు కొడుతూ లోపలికెళ్ళబోతూంటే, “ఎక్స్ క్యూజ్ మీ,” అని సన్నటి గొంతు వినిపించింది. ఎవరా అని అటూ ఇటూ చూస్తే, గుమ్మానికి అయిదడుల దూరంలో ఓ చిన్న పిల్లాడు వీళ్ళని పిలుస్తున్నాడు. పదేళ్ళుంటాయేమో
“నువ్వేనా పిలిచింది?” ఇంగ్లీషులో అడిగాడు ఉదయ్.
“అవును,” అన్నాడా అబ్బాయి.
ఏం కావాలి?”
ఆ కుర్రాడు కొంచెం తటపటాయించి, “ఏం లేదు. కొంచెం లోపల్నించి నాకు ఒక విస్కీ సీసా తెచ్చిపెడతారా?” అనడిగాడు.

ఏమిటీ? విస్కీయా?!" అంటూ నవ్వేశాడు ఉదయ్. స్నేహితుల వైపు చూస్తూ, తెలుగులో, "చూశారా దారుణం? ఇంత చిన్న పిల్లాడు విస్కీ తాగుతాడట, విస్కీ" అన్నాడు.
"ఆఁ, తేరగా వస్తే అందరూ తాగుతారు," అన్నాడు నరేంద్ర. "మనం తీసుకొచ్చి పెట్టాలిట!" మళ్ళీ భాష మార్చి ఇంగ్లీషులో, "పద! పద! ఊళ్ళో అందరికీ ఫ్రీగా విస్కీ కొనేందుకు మాకు వేరే పనేంలేదనుకున్నావా అని అదిలించాడు.ఆ కుర్రాడి మొహం ఎర్రబడింది. "నేనేం ఊరికే ఇమ్మంటం లేదు. డబ్బులిస్తాను," అని జేబులోంచి డబ్బులు తీసి చూపించాడు.
చిన్నబోయిన ఆ అబ్బాయి వంకే చూస్తున్న రాజు, "నీ దగ్గిర డబ్బులుంటే నువ్వే ఎందుకు వెళ్ళి కొనుక్కోవు అనడిగాడు.వాళ్ళు నాకు అమ్మరు, " అన్నాడు ఆ అబ్బాయి నిస్సహాయంగా.అదేమిటి, నా వయసు వాళ్ళకు వాళ్ళు అమ్మరు," అన్నాడు అబ్బాయి.
ఎందుకమ్మరూ" అని రాజెంతో ఆశ్చర్యంగా అడుగుతూంటే, మిగతా వాళ్ళు, "ఆఁ, వీడితో పనేమిటి మనకి?" అంటూ రాజుని లోపలకి లాక్కెళ్ళారు.
బయట కుర్రాడు నిరాశగా వీళ్ళవంక చూడ్డం షాపు అద్దాల్లోంచి రాజుకి కనిపిస్తూనే ఉంది. అక్కడ క్లర్క్ ని బీర్ ఆ బాబు కి ఇవ్వరా అని అడిగాడు. అందుకు తను
ఇరవై ఒక్కేళ్ళ లోపు వాళ్ళకి ఆల్కహాల్ అమ్మకూడదు. అది చట్టం. ఆ చట్ట ప్రకారం నడుచుకోకపోతే, మా బిజినెస్ లైసెన్స్ తీసేస్తారు. ఇంకప్పుడు మా మొత్తం షాపు మూసేయాల్సొస్తుంది,అన్నాడు.
మరయితే ఆ అబ్బాయి తన కోసం మమ్మల్ని విస్కీ కొనుక్కు రమ్మన్నాడు. కానీ మీరమ్మరన్నమాట," అన్నాడు రాజు.క్లర్కు నవ్వేసి,అదేం లేదు. కొనేవాళ్ళు మీరైతే నిక్షేపం లా అమ్ముతాంఅన్నాడు.క్లర్కు మళ్ళీ నవ్వేసి, "తాగే వాళ్ళెవరైతే మాకేం పట్టె? కొనేవాళ్ళెవరనేదే మాకు ముఖ్యం. పెద్ద వాళ్ళు ఇంటికి తీసికెళ్ళి వాళ్ళ పిల్లలకు తాగిస్తారో, పసిపిల్లలకు పడతారో, అదంతా మాకనవసరం," అన్నాడు.
అంత దాకా ఇది చాలా మంచి చట్టమని లోలోపల సంతోషిస్తున్న రాజుకి ఈ మాట వినగానే విచారమేసింది. ఇలాంటి చట్టం ఉన్నందుమూలాన వచ్చిన లాభమేమి ఇంతలో మిగతా వాళ్ళు అక్కడికొచ్చి, వాళ్ళు తీసుకున్న సరుకులకి డబ్బులిచ్చారు. బయటికొచ్చినప్పుడు ఇంకా ఆ అబ్బాయి అక్కడే నుంచుని ఉండడం గమనించాడు రాజు. వీళ్ళ చేతుల్లోని సంచులలోని బుడ్లనీ ఆశగా చూస్తున్నట్టనిపించింది రాజుకి. అందరూ కారు దగ్గరికి వెళ్ళున్నా, రాజు వాళ్ళతో బాటు వెళ్ళలేకపోయాడు. ఒక్క నిముషం తటపటాయించి ఆ అబ్బాయి దగ్గిరకి వెళ్ళి, చూడు . నీ పేరేమిటి?" అనడిగాడు.
"మార్క్," అన్నాడా అబ్బాయి.
చూడు, మార్క్. నువ్వు ఇంత చిన్నవాడివి కదా. నువ్వు ఇప్పటినించే తాగడం మంచిది కాదు..చక్కగా ఇంటికి వెళ్ళి ఆడుకో," అని బుజ్జగించబోయాడు రాజు.
మార్క్ ఆవేశంగా, "ఇది నాక్కాదు. నేనేం తాగుతాననుకున్నావేమిటి? మా నాన్నకోసం," అన్నాడు.
మీ నాన్న కోసమా?" రాజు మనసులో ఏవేవో జ్ఞాపకాలు మెదిలాయి. ఒక్క క్షణం గొంతుపూడుకుపోయినట్టయింది. ఎలాగో సంబాళించుకుని, "ఫర్వాలేదులే. షాపు వాళ్ళు అమ్మరని మీ నాన్నకి చెప్పు,అన్నాడు.
ఆ సంగతి మా నాన్నకి తెలియదేమిటి, అందుకనే ఎవరినో ఒక పెద్ద వాళ్ళనడిగి కొనమంటాడు. నేనేం లేకుండా మళ్ళీ తిరిగి వెళ్తే నన్ను కొడతాడు. మార్క్ కళ్ళలోని నీళ్ళు జారకుండా ఉండడానికి చాలా ప్రయత్నం చేసాడు.
కొడతాడా?" అంటూ స్థంభించిపోయాడు రాజు.

ఇంతలో రాజు కోసమని నరేంద్రా, గోపాలూ తిరిగి వచ్చారు, "ఇక్కడే ఉండిపోయావేమిటి, అనడుగుతూ.
చూడండి పాపం, ఈ అబ్బాయి. ఇది కొనమని వాళ్ళ నాన్న పంపించాడట. అది లేకుండా ఇంటికి వెళ్తే కొడతాడుట," అన్నాడు రాజు బాధగా.
నరేంద్ర నవ్వేశాడు. "ఆ! ఇలాంటి కాకమ్మ కథలు నమ్మకూడదు. ఈ దేశం లో ఎవరైనా పిల్లలని కొడితే వాళ్ళని వెంటనే తీసుకెళ్ళి జైల్లో పెడతారు. అందుకనే ఇక్కడి పిల్లలకు ఎవరి మీదా భయమూ, భక్తీ ఉండవు. పద, వెళ్దాం. వీడితో మనకేమిటి
కానీ రాజు కదల్లేక పోయాడు. తన చిన్నప్పుడు ఇలాగే ఎన్నోసార్లు సారా దుకాణానికి వెళ్ళడం గుర్తుకొచ్చింది. కనీసం మార్క్ వాళ్ళ నాన్న అతనికి డబ్బులైనా ఇచ్చాడు. తనకొక్కోసారి అదీ ఉండేదు కాదు. అలాగే దుకాణం దగ్గిర పడిగాపులు పడుతూ, ఎలాగో అలాగ వాళ్ళ నాన్నకు కావాల్సిన సరుకు సంపాదించి తీసుకెళ్ళి ఇచ్చేవాడు. దొరకకపోతే తన్నులు తప్పేవి కావు. ఎన్ని సార్లు చీకటిలో తచ్చాడుతూ, ఇంటికి వెళ్ళలేక భయంతో బెదురెత్తి పోయాడో బాగా గుర్తు. ఎన్ని సార్లు తనని రక్షించే నాథుడెవరైనా ఉన్నాడోనని ఆశగా ఎదురుచూశాడో ఎవరికి తెలుసు? ఏం లాభం? తన పరిస్థితీ, తన నాన్న సంగతీ అందరికీ తెలిసినా, కల్పించుకున్న వాళ్ళు మాత్రం ఎవరూ లేకపోయారు. తండ్రి తనని చావబాదుతున్నప్పుడు అడ్డుపడేవాళ్ళే లేకపోయారు. కదుములతో, గాయాలతో, వెక్కి వెక్కి ఏడ్చి అలసటతో సొమ్మసిల్లి పోతుండే వాడు . ఒక్కరికికూడా తండ్రిని నిలదీసి "ఏమిటిది"అని అడిగే తీరికో, ఓపికో, ధైర్యమో లేకపోయింది.అదంతా మనసులో మెదులుతుంద? పోలీసులకు చెబుదాం అంటాడు రాజు... అప్పుడు నరేంద్ర ఇక్కడ పిల్లల్ని కొడితే తల్లి దండ్రులను జైలు లో వేస్తారు అది ఇక్కడ చట్టం అంటాడు.వీళ్ళకి మానవ విలువలూ, మానవ సంబంధాలూ అంటే ఏమిటో తెలియదు,"I అన్నాడు గోపాల్.పద, బయల్దేరుదాం," అని తొందర చేశాడు నరేంద్ర.కానీ రాజు మారుకుని వదల్లేక పోయాడు. "మీరు వెళ్ళండి. నేను తర్వాత కలుస్తాను," అన్నాడు.
నరేంద్ర ఆశ్చర్యంగా చూశాడు. "ఆదేమిటి? నువ్వేం చేస్తావు?"నేనీ అబ్బాయితో కొంచెం మాట్లాడుతాను," అన్నాడు రాజు.
నరేంద్రా, గోపాల్, ఇద్దరూ విసుగ్గా చూశారు. "ఈ అబ్బాయితోనా? వీడికోసమేమిటి నీ తాపత్రయం? వీడు నీకేమవుతాడని? వాడి కర్మకి వాణ్ణి ఒదిలేయ్. ప్రపంచం లో అందరినీ మనం ఉద్ధరించలేం," అన్నాడు నరేంద్ర.
రాజు వాళ్ళతో బాటు కారు దగ్గిరకి వెళ్ళి, ఉదయ్ కి కూడా సర్ది చెప్పి, చివరికి ఎలాగైతేనేం వాళ్ళందరినీ పంపించాడు.
మళ్ళీ మార్క్ దగ్గిరకి తిరిగొచ్చాడు. తన వైపే అనుమానంగా చూస్తున్న మార్క్ తో లాలనగా, "చూడు. మీ నాన్నంటే నీకు భయమా" అనడిగాడు.
అవునంటూ తలాడించాడు మార్క్.
భయపడక్కరలేదు. కావాలంటే నేను పోలీసులని పిలిచి మీ నాన్న నిన్ను కొడుతున్నాడని చెప్తాను. వాళ్ళొచ్చి ఆపిస్తారు," అన్నాడు రాజు ఓదార్పుగా.
వద్దు, వద్దు," అంటూ మార్క్ అడ్డొచ్చాడు.
ఏం? ఎందుకు వద్దు?" ఆశ్చర్యంగా అడిగాడు రాజు.
వద్దు. పోలీసులొస్తే మా నాన్నని ఏదైనా చేస్తారేమో. జైల్లో పెట్టేస్తారేమో."లేదు. ఫర్వాలేదు. ఊరికే వాళ్ళు మీ నాన్నని మందలిస్తారు, అంతే," అని నచ్చచెప్పబోయాడు రాజు.మార్క్ తల ఇంకా గట్టిగా

అడ్డంగా ఊపుతూ, "ఊహూఁ. అలా ఏం చెయ్యరు అన్నాడు. నేను మా నాన్న దగ్గరే ఉండాలి,నేనింట్లో లేకపోతే మా నాన్న నెవరు చూస్తారూఅంటాడు.
ఛెళ్ళుమన్నట్లయింది రాజుకి. అవును. ఇది కూడా తనకనుభవమే. ఇది రక్త సంబంధపు ప్రభావం కాబోలు. ఎంత నిరాదరించినా, ఎంత నిర్లక్ష్యం చేసినా, మళ్ళీ ఆ తండ్రి కోసమే తనూ పాకులాడేవాడు. ఒక్కసారి తనని గమనించాలనీ, తనంటూ ఒక వ్యక్తి ఉన్నట్టు గుర్తించాలనీ, ఒక్కసారంటే ఒక్కసారి, ఒక చిన్న మాట, ఒక చిన్న మెచ్చుకోలుగానీ, ఒక చిన్న ఓదార్పు గానీ, ఏదో ఒకటి, దొరుకుతుందేమోనని ఎదురు చూసేవాడు. వాత్సల్యం, ఆప్యాయతా, ఆదరణా, ఇలాంటి మాటలేవీ ఆ వయసులో తనకు తెలీవు. కానీ ఆ అనుభూతులని మాత్రం తన మనసు కోరుకునేది. అవి దొరకనప్పుడు, నీళ్ళు లేని మొక్క లాగా, తన మనసూ ఎండిపోయింది. అవి అన్ని గుర్తుకు వచ్చాయి రాజుకి.
రాజు ని ఒక స్కూల్ మాస్టారు ప్రోత్సహించి చదివించాడు. తన తండ్రి తనను పట్టించుకోకపోయినా ఆ మాస్టారు చందాలు వసూలు చేసి ప్రతిభవంతుని చేశారు. రాజు బాగా చదివి అమెరికా లో ఉద్యోగం వచ్చాక మాస్టార్ ని చూసినప్పుడు రాజు చాలా ఆనందపడ్డాడు. అదేవిధంగా
రాజు తదేకంగా ఆ కుర్రవాడి ముఖంలోకి చూశాడు. చివరిసారి మాష్టార్ని కలిసినప్పుడు ఆయన వంక ఇలాగే చూశాడు తను.కృతజ్ఞతతో, భక్తితో, ఆయన కాళ్ళకి నమస్కరించబోతే మధ్యలోనే వారించారు ఆయన. తన ఉద్యోగ వివరాలన్నీ చెప్పి, "ఇదంతా మీ దయమూలానే మాష్టారూ. మీ ఋణం ఎన్నటికీ తీర్చుకోలేను," అంటే ఆయన నవ్వేశారు.
నేను చేసిందేముందోయ్. చదివినవాడివి నువ్వు. కష్టపడిపైకొచ్చినవాడివి నువ్వు.కాదు, మాష్టారూ. మీరు పూనుకోకపోతే అసలు చదువనేదే నాకు తెలిసేది కాదు. అడుగడుగునా మీ సహాయం లేకపోతే అది ఇంత వరకూ వచ్చేదీ కాదు. నేను మీకేమవుతానని ఇంత శ్రద్ధా, శ్రమా తీసుకున్నారు మీరు"ఏమవుతావేమిటి? సాటి మనిషివి. అది చాలదూ?" అంటూ నిండుగా నవ్విన మాష్టారి ముఖం రాజు మదిలో మెరిసింది. మాష్టారి ఋణం ఎలా తీర్చుకోవాలో అనిపించింది.
పద. మీ ఇంటికి వెళదాం," అన్నాడు.
అర్ధం కాక చూస్తున్న మార్క్ తల నిమిరి, "నేను కూడా వస్తాను. ఇకనుంచీ ఇలాంటి పనులకు నిన్ను పంపించకూడదని మీ నాన్నకు నేను చెప్తాను. ఏం భయం లేదు. ఇక అన్నిటికీ నేనుంటానుగా, అని ధైర్యం చెప్పాడు.
మానవులున్న ప్రతిచోటా మానవ సంబంధాలూ, అనుబంధాలూ తప్పకుండా ఉంటాయి. ఎటొచ్చి అవతలి వ్యక్తిని మనిషిగా మనం గుర్తించి గౌరవించలి. అవతలి వ్యక్తి కి, మనకు పొత్తు కుదరదు అనుకోవటం పొరపాటు.

మొబైల్ నెంబర్.7036005001
Mail id: yarunajhansi5@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 145-150

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी साहित्य सुषमा बेदी के उपन्यासों के विशेष संदर्भ में

Smt. K.V. Shyamala Devi
S.K.S.D. Mahila Kalasala (A),Tanuku.
Dr. R.N.V.S. Raja Rao
Hindi Pandit, Telangana.

प्रवासी साहित्य में स्वदेशियों की मातृभूमि से दूर रहने वाले लोगों की भाषा, संस्कृति और अनुभवों का संग्रह होता है। यह साहित्य न केवल उन लोगों के अनुभवों और मनोवृत्तियों को व्यक्त करता है, जो दूसरी देशों में रहकर अपने गर्व को जीतते हैं, बल्कि भाषा और साहित्य के माध्यम से लोगों के बीच साथीपन्नता और सम्बन्ध भी बढ़ाता है।

प्रवासी साहित्य भाषा, कला, साहित्यिक ज्ञान और सभ्यता का महत्वपूर्ण स्रोत है। यह साम्राज्यवादी राज्यों, कोलोनियल शासन और प्रवासी भाषी लोगों के बीच की पारंपरिक संबंधों का पाठ पढ़ने का एक माध्यम है। प्रवासी साहित्य में कई विषय शामिल होते हैं जैसे कि मातृभाषा, संस्कृति, धर्म, जीवन का अनुभव, प्रेम और संगीत।

इस साहित्य का महत्वपूर्ण संपादकीय लक्ष्य है कि यह साम्राज्यवादी शक्ति और नश्वर मोद के खिलाफ विप्लव केन्द्र बनकर कार्य करे। प्रवासी साहित्य ने अपने लेखकों और कवियों के माध्यम से समाज की उपेक्षित तबके की आवाज बुलंद की है। यह साहित्य राजनीतिक और सामाजिक सुस्थिति पर प्रतिक्रिया करता है और उकसहवाद, त्याग, प्रेम और आधिकारिक कुरीला को मजबूत रखता है।

प्रवासी साहित्य में कई मशहूर लेखक, कवि और कथाकार हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से दूसरे लोगों के साथ अपना अनुभव और संघर्ष साझा किया है। उन्होंने अपने लेखों और कविताओं के माध्यम से अपनी भाषा, संस्कृति और धर्म की पहचान की है। इनके द्वारा लिखित रचनाओं का प्रकाशन करने के बाद, लोगों के बीच प्रेम और सम्बन्ध बढ़ने लगते हैं।

ये सभी धार्मिक एवं सांस्कृतिक ग्रन्थ शोषण और अत्याचार को सहन करते हुए उनकी जीवन शक्ति के स्त्रोत थे। अपनी भाषा व संस्कृति की रक्षा इन गिरमिटिया मजदूरों ने की। विश्व में फैले इन भारतवासियों से सम्पर्क का रास्ता महात्मा गांधी ने खोला। १९वीं शताब्दी के अंतिम दशक में भारतीयों की मदद के लिए वे दक्षिण अफ्रीका तथा मॉरिशस भी गये थे।

पराये देश में जाकर उनकी सभ्यता एवं संस्कृति के साथ तालमेल बिठाना सरल नहीं होता कई

समस्याओं का सामना व्यक्ति को करना होता है। ऐसे में प्रवास कर विदेश गया व्यक्ति 'नास्ट्रेलिज्या' का शिकार हो जाता है अर्थात् अपने घर, राज्य या राष्ट्र के प्रति एक मोहोविष्ट स्थिति। गृह वियोग और फिर अतीत की यादों में खो जाना, अपनी पहचान गंवाने का गम उसे घेर लेता है किन्तु कई ऐसे व्यक्ति हैं, जिनमें लिखने की प्रतिभा है, वे अपने परिवेश के यथार्थ को अपनी रचनाओं में उतारते हैं और विदेशों में रहकर भी साहित्य की सेवा करते हैं। इस तरह प्रवासी भारतीय साहित्य को हम भारतीयता के विस्तार के रूप में देखें। जिस तरह दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श को साहित्य में स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। उसी तरह प्रवासी साहित्य हिन्दी साहित्य की एक धारा है और नवयुग का साहित्यिक विमर्श है और इसकी खास विशेषता है विदेशी भूमि पर बैठ कर लिखने के बाद भी इसमें देशीपन है और यह इस बात का द्योतक है कि परायी संस्कृति और समाज के बीच रहकर हम अपनी मातृभूमि को नहीं भूलते। प्रवासी साहित्य के अवलोकन के पश्चात यह स्पष्ट होता है कि महिला साहित्यकारों की भागीदारी पुरुष साहित्यकारों से अधिक है और स्त्री द्वारा लिखित साहित्य में यथार्थ है, संवेदना है और अपना विशिष्ट कथ्य है।

अमेरिका में सुषम बेदी, सुदर्शन प्रियदर्शिनी, अनिल प्रभा कुमार, सुधा ओम ढींगरा, रेनू राजवंशी गुप्ता, पुष्पा सक्सेना, प्रतिभा सक्सेना, इला प्रसाद, रचना श्रीवास्तव एवं आस्था नवल वहीं ब्रिटेन से जकिया जुबैरी, दिव्या माथुर, उषा राजे सक्सेना, अचला वर्मा, नीना पॉल, उषा वर्मा का साहित्य सुन्दर ढंग से प्रस्तुत हुआ है। पराये देश में जाकर अपनी लेखनी द्वारा परिवेश के यथार्थ को उकेरने की कला में सिद्धहस्त एक नाम है सुषम बेदी का, जो कथा साहित्य की एक सशक्त हस्ताक्षर है, वह अमेरिका के शहर न्यूयार्क में रहती हैं। १९८५ से २००९ तक वह कोलंबिया यूनिवर्सिटी में हिन्दी और उर्दू प्रोग्राम के डायरेक्टर के पद पर कार्यरत रहीं। आज–कल वह कोलंबिया और न्यूयार्क यूनिवर्सिटी में विजिटिंग प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं उनके कुल सात उपन्यास और एक कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। तीस वर्षों के लंबे प्रवास के दौरान सुषम बेदी ने भारतीयों के जीवन को बड़ी नजदीकी से देखा और परखा है।

'हवन' १९८९ में लिखा गया सुषम बेदी का प्रथम उपन्यास है, साहित्यिक पत्रिका 'गंगा' में धारावाहिक के रूप में प्रकाशित होने के साथ–साथ उर्दू तथा अंग्रेजी में इसका अनुवाद भी हुआ है। विदेशी सभ्यता की भौतिक चमक–दमक से आकर्षित होकर विदेश जाने वाले व्यक्ति वहां पहुंचकर उल्लास और आनंद को प्राप्त करने के प्रयास में अपने जीवन को कैसे होम कर रहे हैं, उनकी मनःस्थिति वैसी है इसका बेजोड़ चित्रण हवन में हुआ है। पिंकी जो न्यूयार्क में वास कर रही है, उसके पास रोजगार को तलाशती उसकी बहन गुड्डो अपने पति की मृत्यु के पश्चात जाती है। अपनी दोनों बेटियों को होस्टल छोड़ अपने बेटे राजू को साथ लेकर संघर्षमय जीवन की शुरुआत गुड्डो करती है। भारत में पला–बढ़ा राजू विदेशी परिवेश से अनभिज्ञ है, वह अकेलेपन का शिकार होता चला गया। बहन के परिवार के साथ ज्यादा समय वह नहीं रह पाती और सेल्सगर्ल का काम करते हुए जीवन का निर्वाह करती है। दोनों बेटियां जब अमेरिका छुट्टियां बिताने आती हैं तो वहां की चमक–दमक खुलेपन से प्रभावित होती है। भारतीय डॉक्टर से विवाह के पश्चात वे भी अमेरिका आ जाते हैं। सारा परिवार अमेरिका में इकट्ठा रहने लगता है और विदेशी रंग में खो जाते हैं। नतीजा एक बेटी का रिश्ता सदैव के लिए

अपने पति से टूट जाता है। वही राधिका जैसी पात्र की दुखद गाथा भी उपन्यास में है, जो विदेशी चमक–दमक में इतना खो जाती है कि अंत में बलात्कार का शिकार होती है। निश्चय ही 'हवन' में सभी की पूर्णाहुति स्पष्ट नजर आती है।

अपने जीवन को आर्थिक तंगी से बचाने के लिए प्रवासी भारतीयों को छोटी–छोटी नौकरियों में धक्के खाने पड़ते हैं। भारत में स्त्री चाहे काम करे या न करे किन्तु उसका रुतबा पति के ओहदे से ही होता है। किन्तु विदेश में इन बातों के कोई मायने नहीं है। यहां स्त्री हो या पुरुष उसकी पहचान केवल अपने व्यक्तित्व से होती है। शुरू–शुरू में विदेश पहुंचे भारतीयों को निम्न स्तर की नौकरियां करना बहुत मुश्किल लगता है बाद में मजबूरी उन्हें प्रत्येक कार्य करवाती है ऐसा ही गुड्डो के साथ होता है–

''पिंकी के जान–पहचान के एक हिंदुस्तानी ने तभी–तभी पिंकी के घर से तीन–चार ब्लॉक दूर अंडरग्राऊंड ट्रेन स्टेशन के प्लेटफार्म पर एक अखबार मैगजीन और सिगरेट आदि बेचने का स्टॉल लगाया था। उसे एक सेल्सपर्सन की जरूरत थी। तनख्वाह दूसरे स्टोरों की सेल्स की नौकरियों से कुछ ज्यादा थी, ओवरटाइम की भी सँभावना थी। स्टॉल सुबह से लेकर रात बारह–एक बजे तक खुला रहता था। मन विरोध तो कर रहा था कि अखबार बेचने का काम इतने बड़े अफसर की बीवी करेगी...पर हाथ में धेला तक तो था नहीं। शहर में आने–जाने का किराया तक तो वह पिंकी से लेती थी। गुड्डो ने शुरू कर दिया काम।''[२]

'लौटना' सुषम बेदी द्वारा लिखित दूसरा उपन्यास है। 'लौटना' एक औरत की अस्मिता की खोज की कहानी है, जो एक नए परिवेश में टिकने के लिए एक सही बिंदु तलाश रही है। नायिका मीरा का विवाह विजय से होता है अब वह अमेरिका पहुँचती है। वह एक नर्तकी है उसे अपने शौक को आगे बढ़ाना है, किन्तु मशीनी जिन्दगी में उसकी ख्वाहिशें पिस कर रह जाती है। पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए उसे अपनी इच्छाओं का गला घोंटना पड़ता है। अब पति भी उसकी ओर से मुंह मोड़ लेता है। इस उपन्यास में बदलते रिश्तों के यथार्थ की पर्तों को खोला गया है।

विदेशी शिक्षा को सदैव ऊँचा माना गया है। जबकि भारतीय शिक्षा के स्तर को निम्न माना जाता है। प्रवासी भारतीय लोग इस हीन भावना के शिकार हो जाते हैं। इस ज्वलंत समस्या को सुषम बेदी ने 'लौटना' उपन्यास के माध्यम से स्पष्ट किया है। मीरा भारत से पीएचडी करके विदेश जाती है परन्तु यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर उसे कहते हैं देखो, हिन्दुस्तान से पीएचडी कर लेना कोई बड़ी बात नहीं। ''यह सुनकर मीरा का सारा आत्मविश्वास जड़ से हिल गया अपनी भारतीय शिक्षा को लेकर एक अजीब हीन भाव उत्पन्न हो गया। मन में कहीं बैठता जा रहा था कि उसकी अर्जित विद्या यहाँ के स्तर से हीन है।''[३]

'कतरा दर कतरा' एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है, जिसमें कक्कू अपने पिता की उम्मीद पर पूरा न उतरने के कारण हीन भावना का शिकार हो जाता है और अन्त में उसकी मानसिक स्थिति पागलपन तक पहुंच जाती है। वही 'इतर' उपन्यास अमेरिका में बसे भारतीयों के जीवन की पृष्ठभूमि पर आधारित है। साथ ही तथाकथित संत–महात्माओं और बाबाओं का भंडाफोड़ किया है, जो अपनी कुटिलताओं से मानवीय दुर्बलताओं का भरपूर लाभ उठाते हैं। माधव और उसकी पत्नी रूपा को बाबा पर बहुत श्रद्धा है परन्तु रूपा बाबा के आडम्बरों के घेरे

में ऐसा फँसती है कि उसी की होकर रह जाती है, जिससे माधव की हालत पागलों जैसी हो जाती है। '''इतर' में ढोंग का खोखलापन दिखलाने की मजबूरी थी तो साथ ही उन लोगों की तकलीफ भी जो जाल में फंसकर निकल नहीं पाते।''[४]

इसी तरह जयंत भी अमेरिका में अपने बिजनेस को फैलाने में इतना व्यस्त है कि अपनी पत्नी विभूति को समय नहीं दे पाता। विभूति भी स्वामी रामानंद की ओर आकर्षित होती है और उनके शोषण और वशीकरण का शिकार हो जाती है। यह देख जयंत पागल हो जाता है। एक दिन आश्रम जाकर बाबाजी पर बरस पड़ता है। ''आपको मालूम है यह औरत कितना काम करती थी? घर संभालने के बावजूद आठ घंटे रेस्तरां चलाती थी और हीरे के बिजनेस में भी मेरी मदद करती थी। अब न रेस्तरां है...न घर देखती है...मेरे रेस्तरां में घाटा पड़ रहा है...मेरा बिजनेस ..।'[५]

'गाथा अमरवेल की' उपन्यास नारी मन की पड़ताल करता है। शन्नो का विश्वा से विवाह, विश्वा का शन्नो को आधुनिक नारी के रूप में देखने की इच्छा तथा विश्वा का अपाहिज हो जाना और फिर अपने पुत्र गौतम की पढ़ाई और घर की सारी जिम्मेदारी को संभालना 'शन्नो' की मजबूरी है समय अंतराल के पश्चात गौतम अपनी पसंद की लड़की दिव्या से विवाह करता है और सभी पेरिस में सैटल हो जाते हैं। विदेशी जिन्दगी में शन्नो तालमेल नहीं बिठा पाती है और विश्वा की मृत्यु के बाद वह पूरी तरह से टूट जाती है। अपने पुत्र पर अधिकार की भावना के कारण गौतम और दिव्या का रिश्ता टूट जाता है और गौतम अपने जीवन का अन्त कर लेता है। उपन्यास की नायिका शन्नो अंत में खलनायिका प्रतीत होने लगती है।

सदैव बहू की शिकायत करने वाली शन्नो को लगता है बहू दिव्या चौबीसों घंटे उसकी देखभाल करती रहें। ''शन्नो के मुंह पर था कि तेरी बीबी खुशकिस्मत है जो बाहर ही रहती है इसलिए उसे इंतजार नहीं करना होता वरना सभी औरतें अपने पतियों का इंतजार करती हैं पर कह नहीं पायी। कहीं यह उसके बाहर रहने पर शिकायत करने जैसा न लगे। यूँ भी शन्नो को लगता था कि दिव्या वैसी कोई दफ्तर की नौकरी तो करती नहीं थी, फिर भी जब–तब घर से बाहर होती थी और यह बात वह बेटे तक पहुँचा ही देना चाहती थी कि अगर कुछ गलत हो रहा है तो उसे खबर तो होनी ही चाहिए। पर गौतम इस पर ज्यादा गौर नहीं करता था। उसमें उसकी सहमति थी। पर शन्नो को इसका कोई अंदाजा नहीं था। जहाँ तक वह जानती थी बेटा उसका अपना था, लड़की परायी। इसलिए बेटे को हर बाहर वाले से होशियार करना शन्नो का फर्ज बनता था।''[६]

'नवाभूम की रस कथा' आदित्य और केतनी की प्रेम कहानी है। अमेरिका में पेपर पढ़ने आई केतकी की आदित्य से मुलाकात और अपने पहले पति से अलगाव और फिर उपन्यास का तीन तरह से अन्त पाठक को स्वतंत्र करते हैं, अपनी तरह से सोचने के लिए।धीरे–धीरे आदित्य को केतकी में वह सारे गुण दिखाई देने लगते हैं, जो एक सफल गृहणी में होने चाहिए। वह केतकी के साथ गृहस्थ जीवन के रोमांस की सुखद कल्पना करने लगता है। जब वह अपने भाव केतकी को बताता है तो उसकी रोमांचिक बातें केतकी को कोई सुख नहीं पहुँचाती। वह घरेलू जिंदगी का विरोध करती है। वह शादी का अर्थ जीवन का रुकना मानती है। आदित्य केतकी की इन बातों से सहमत नहीं होता। वह जीवन को स्वयं बनाने में विश्वास रखता है। शादी को वह इसमें रुकावट

नहीं मानता। उसे अपने और केतकी के रिश्ते में प्रौढ़ता दिखाई देती है। वह केतकी की बातों का विरोध करता हुआ कहता है, ''पर जिंदगी के जिस पड़ाव पर हम दोनों हैं हमारी गृहस्थी बहुत अलग होगी। हम दोनों प्रोफेशनल काम करने वाले लोग हैं। वैसी अपेक्षाएं तुम से किसी को नहीं होंगी जो तुम्हारी पहली शादी में तुमसे रही होंगी, और मैं जिस तरह की गृहस्थी की कल्पना तुम्हारे साथ करता हूँ, उसमें खूबी यही है कि तुम्हारा पूरा स्पेस तुम्हें मिलता है।'[७]

'मोरचे' २००६ में प्रकाशित हुआ। सुषम बेदी का नारी शोषण पर आधारित उपन्यास है।

''एक हिंसक पति के चक्कर में फंसी तनु न तो रिश्ते के बाहर निकल पाती है, न ही उसके बीच रहने के काबिल। तनु के पापा की मृत्यु उसे बहुत सदमा पहुँचाती है, माँ पर तीनों बच्चों की जिम्मेदारी है। तनु अपनी डॉक्टरी की पढ़ाई के लिए भारत में रुक जाती है और माँ अमेरिका चली जाती है। अनुज का सपना अमेरिका जाने का है। अतः वह तनु से प्रेम करता है ताकि उसी के जरिए वह अपना सपना पूरा कर सकें। वह तनु से विवाह कर अमेरिका पहुँचता है और फिर वह दो बेटों की माँ बन जाती है। शादी के बाद से पति अनुज द्वारा सदैव वह पीटी जाती है, गालियाँ खाना उसके दिनक्रम में है अनुज के शोषण का पता माँ को लगता है किन्तु अपने बच्चों की खातिर वह घर छोड़ने को तैयार नहीं है। यहाँ तक कि कोर्ट में तनु को पागल सिद्ध किया जाता है और अनुज अपने बच्चों की कस्टडी को लेकर केसे जीत जाता है बाद में तनु की मुलाकात 'रजीनो' से होती है और वह उसके साथ जिन्दगी व्यतीत करने का फैसला करती है। विदेश हो या भारत नारी पतिव्रता ही होनी चाहिए, वह चाहे सुन्दर हो अथवा नहीं। नारी की पवित्रता, नैतिकता, शील के प्रश्न सदैव उठाए जाते हैं। 'मोरचे' उपन्यास में अमेरिका से भारत शादी कराने आई तनु को जब पति के अन्य औरतों से संबंध के बारे में पता चलता है तो वह चुपचाप सहती नहीं बल्कि इसके विरुद्ध आवाज उठाती है किन्तु बदले में उसे मारा जाता है और तनु के विद्रोह को रोकने का एक ही तरीका था मार–पीट। अर्थात विदेशों में गए भारतीय परिवारों में स्त्री का शारीरिक शोषण जारी है।

सुषम बेदी के कथा साहित्य की नायिकाएँ शिक्षित और विद्रोही हैं किन्तु अपने पति के सामने लाचार है। ''अमेरिका में कहानी और उपन्यास लिखने की प्रवृत्ति में महिला लेखिकाओं का वर्चस्व है। संभवतः इसका कारण यह है कि प्रवासी भारतीय महिलाएँ जिस प्रकार स्वदेश–परदेश तथा दो भिन्न संस्कृतियों के द्वंद्व में जीती हुई घर–गृहस्थी को संचालित करती है, वह उनमें अनुभवों एवं संवेदनाओं को कथा एवं पात्रों में पिरोकर अभिव्यक्त करती रही हैं।''[८]

सुषम बेदी का उपन्यास जगत प्रवासी समाज की स्थितियों को आधार बनाकर लिखा गया है। अपने अनुभवों को आधार बनाकर प्रवासी समाज की समस्याओं को व्यक्त करने के लिए वहां के जीवन का यथार्थ चित्रण आपके द्वारा किया गया है। इतना ही नहीं सिर्फ सामाजिक समस्याएँ ही नहीं अपितु आर्थिक, भावनात्मक और सांस्कृतिक समस्याओं की तह में उतरकर उन्हें उजागर किया है, जिससे भारतीय पूर्ण रूप से अनभिज्ञ हैं।

प्रवासी साहित्य राष्ट्रीय स्तर पर औरों के बारे में ज्ञान, समझदारी और विचारशीलता का संग्रह करता है। इससे लोग अपने बाहर रहने के लिए प्रेरित होते हैं और अपनी मातृभूमि के विभिन्न पहलुओं को सराहते हैं।

इससे ज्ञान, समृद्धि और सामरिक बेहतरी बढ़ती है, क्योंकि लोग अपने देश की समृद्धि के लिए काम करने के लिए प्रेरित होते हैं।

इन सभी कारणों से प्रवासी साहित्य भाषा, संस्कृति, साहित्यिक ज्ञान, अनुभव और मानवीय सम्बन्धों का महत्वपूर्ण स्रोत है। यह लोगों के बीच साहित्यिक और सांस्कृतिक सहयोग को बढ़ाता है, जो उनकी साहित्यिक और राष्ट्रीय गरिमा को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण है।

संदर्भ :-

1. सुषम बेदी 'हवन' १९९६, पृ. १४
2. 'लौटना' सुषम बेदी, पृ. १३२
3. युद्धरत आम आदमी, रमणिका गुप्ता, जुलाई सितंबर २००६, पृ. १७
4. इतर, सुषम बेदी, पृ. १४४
5. गाथा अमरवेल की (१९९९) सुषम बेदी, पृ. १८१
6. नवाभूम की रस कथा (२००२) सुषम बेदी, पृ. ९४
7. डॉ. कमकिशोर गोयनका, प्रवासी साहित्य जोहन्सबर्ग से आगे, पृ. ४२

Ph : 8341681315

Ph : 8247510961

डॉ. सीहेच. वी. महालक्ष्मी

नाम : डॉ. सीहेच. वी. महालक्ष्मी
माता : श्रीमती नागरत्नम
पिता : श्री सूर्यप्रकाश राव
पति : श्रीटी.वी.एम.यू महेश्वर (स्टेशन सूपरिंटेंडेंट, दक्षिण मध्य रेलवे)
शिक्षा : आंध्र विश्वविद्यालय से एम.ए, पी एच डी...1996 में (स्वर्ण पदक विजेता)
विषय : मोहन राकेश और बलिवाडा कांताराव की कहानियों में प्रस्तुत सामाजिक यथार्थ
रूचि : अध्ययन एवं अध्यापन।
पद : सह...आचार्या एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी और तेलुगुं विभाग,
जनसंपर्क अधिकारी,
सीहेच.एस.डी. सेंट थेरेसा महिला महाविद्यालय, एलूरू, आंध्र प्रदेश।
आदिकवि नन्नय विश्वविद्यालय के स्नातक स्तर पर
पाठ्यक्रम निर्णायक मंडली की अध्यक्षा 2021...2023
पुरस्कार : बी.एस.एन एल एलूरू उगादि कवि पुरस्कार,
साहित्य मंडली, एलूरू का उगादि कवयित्री सम्मान...अप्रेल 2023
गीना देवी प्रवासी साहित्य रत्न सम्मान....अगस्त 2023
प्रकाशन : 25 से ज्यादा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्र...पत्रिकाओं में शोध...आलेख प्रकाशित।
सहभागिता : विभिन्न राष्ट्रीय एवंअंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों/ वेबीनारों में मुख्य वक्ता के रूप में
विभिन्न सरकारी...गैरसरकारी कार्यालयों में हिंदी और तेलुगु में भाषण।
निवास : एलूरू...आंध्र प्रदेश।
संपर्क : दूरभाष नंबर....9490970021
मेलआईडी : dr.lakshmi@stcelr.ac.in

डॉ. पायल लिल्हारे

नाम – डॉ. पायल लिल्हारे
जन्म – 15 जुलाई 1986, वार्ड नं. 4 देवटोला, बालाघाट (म. प्र.)
शिक्षा – एम. ए.(हिन्दी, स्वर्ण पदक प्राप्त)
एम.ए. (राजनीति विज्ञान)
बी. एङ, नेट– जे.आर.एफ.
पी–एच.डी. – 'राष्ट्रीय चेतना के विकास में प्रमुख आधुनिक कवियों का योगदान'
(भारतेंदु युग से छायावाद तक)
संप्रति – सहायक प्राध्यापक (हिंदी), अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद शासकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय निवाड़ी, जिला–निवाड़ी (म. प्र.)

संपादित कृतियाँ :–

1. आधुनिक काव्य में राष्ट्रीय चेतना।
2. हिंदी साहित्य में थर्ड जेंडर विमर्श।
3. हिंदी साहित्य : विमर्श के आईने में।
4. हिंदी साहित्य और दलित चेतना : नव मूल्यांकन।
5. डॉ. भीमराव अंबेडकर का वैचारिक चिंतन।
6. हिंदी साहित्य : आदिवासी चेतना की परख।
7. अस्मिता के आलोक में नारी विमर्श।
8. प्रेमचंद का कथा साहित्य : विविध आयाम।
9. समकालीन साहित्य : दलित एवं आदिवासी विमर्श।

प्रकाशनाधीन :–

1. राष्ट्रीय चेतना के विकास में प्रमुख आधुनिक कवियों का योगदान।
2. हिंदी साहित्य में दलित विमर्श (पत्रिका विशेषांक)
3. हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श (पत्रिका विशेषांक)

शोध–पत्र/आलेख :–

राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में अनेक शोध–पत्र प्रकाशित व राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय सेमिनार, वेबिनार में सहभागिता।

2021–22 में प्राप्त सम्मान :–

1. विलक्षणा रत्न सम्मान।
2. समाज सारथी सम्मान।
3. निर्मला स्मृति संपादन साहित्य सम्मान।
4. साहित्य संचय शोध सम्मान।
5. अवगत अवार्ड 2021, 2022
6. इंडियन एक्सीलेंस अवॉर्ड
7. इंटरनेशनल टीचर प्राइड अवॉर्ड
8. काव्यश्री सम्मान (बुलंदी)
9. कोरोना कर्मवीर सम्मान।
10. नन्हीं देवी स्मृति हिंदी भूषण सम्मान।
11. के.बी. स्मृति भामाशाह सम्मान।
12. साहित्य संचय शोध सम्मान।
13. मध्य प्रदेश नारी गौरव सम्मान।
14. अंतर्राष्ट्रीय साहित्यकार साहित्य सम्मान।
15. डॉ. विश्वकीर्ति नारी गौरव सम्मान।
16. भीमराव अंबेडकर समानता व समरसता पुरस्कार।

संपर्क सूत्र :– 8103536987, 7987131767
ईमेल :– payalgurukul@gmail.com

Ch. S.D. St. Theresa's College for Women (A), Eluru

Affiliated to Adikavi Nannaya University

Autonomous Since 1987 College of Excellence NAAC A+ 3.56/4 CGPA

In Collaboration with

Gina Devi Research Institute, Bhiwani

INTERNATIONAL CONFERENCE

2 अगस्त 2023 को ऑनलाईन/ऑफलाईन आयोजित की जा रही है।

मुख्य विषय - प्रवासी साहित्य : विविध आयाम

उपविषय

- प्रवासी साहित्य : अवधारणा और स्वरूप।
- प्रवासी साहित्य और संस्कृति।
- प्रवासी साहित्य में स्त्री संवेदना।
- विदेशों में हिन्दी साहित्य सर्जन।
- प्रवासी हिन्दी साहित्य में मानवीय संवेदना।
- प्रवासी साहित्य में समाज।
- विभिन्न देशों में हिन्दी।

प्रवासी साहित्यकार :-

1. राकेश शंकर भारती।
2. हरिशंकर आदेश।
3. जकिया जुबेरी।
4. अर्चना पैन्यूली।
5. रेखा राजवंशी।
6. तेजेन्द्र शर्मा।
7. उषा प्रियवंदा।
8. रामदेव धुरंधर आदि

किसी भी भाषा के साहित्यकार पर व किसी भी भाषा में लेख दिया जा सकता है।

Papers can be submitted in any language for publication.

संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध आलेखों का प्रकाशन बोहल शोध मंजूषा पत्रिका इम्पेक्ट फैक्टर 7.523 मे किया जाएगाा।

Papers presented in conference will be published in International Peer Reviewed Journal Bohal Sodh Manjusha 7.523 Impact factor

पंजीकरण शुल्क :-

सहभागिता ई प्रमाण पत्र+ई पब्लिकेशन/पीडीएफ = 701/-

सहभागिता ई प्रमाण पत्र+प्रिंट कॉपी = 1100/-

केवल सहभागिता ई प्रमाण पत्र = 350/-

Phonepay
Googlepay
Paytm
8103536987

अंतिम तिथि :- 26 जुलाई 2023

www.bohalshodhmanjusha.com
www.ginajournal.com

Convener :
Dr. Sr. Mercy P
Principal
stcelr.ac.in
08812-251210

Co-Convener :
Dr. Rekha Soni
Director
GDRI, Bhiwani (Hry.)

Coordinator :
Dr. Ch.V.Mahalakshmi
HOD, Hindi & Telugu
M. : 9490970021

Organizer :
Dr. Naresh Sihag, Adv.
Sec,. GDRI Bhiwani (Hry.)
M. : 8708822674

PRINTED MATTER/PRINTING BOOK CLAUSE 121 (A) P & T GUIDE

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गुगनराम सोसायटी रजि. के लिए डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट ने मनभावन प्रिन्टर्ज, भिवानी से छपवाकर गीना प्रकाशन, 202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड भिवानी-127021 (हरि.) से वितरित की।

ISSN 2395:7115